आदम अलैहिस्सलम

से

मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

तक

विषय-सूची

तम्हीद	3
अर्ज़ है कि...	5
शुरू करते वक़्त	6
अपनी बात	8
कायनात की पैदाइश और पहला इंसान	11
पहला इंसान	11
इल्मी बहसों से मुताल्लिक़ इस्लामी नुक़्ता-ए-नज़र (दृष्टिकोण)	15
हज़रत आदम ﷺ	16
आदम ﷺ की पैदाइश, फ़रिश्तों को सज्दे का हुकम, शैतान का इंकार	16
सज्दे से इन्कार करने वाले पर इब्लीस का मुनाज़रा	16
इब्लीस ने मोहलत तलब की	18
आदम ﷺ और दूसरे फ़रिश्ते	18
आदम ﷺ की तालीम (इल्म का सिखाना)	
और फ़रिश्तों का इज्ज़ का इक़रार	19
हज़रत आदम का जन्नत में ठहरना और हव्वा का ज़ौजा बनना	21
आदम ﷺ का जन्नत से निकलना	21
आदम ﷺ के ज़िक्र से मुताल्लिक़ कुरआनी आयतें	22
आदम के क़िस्से में कुछ अहम इबरतें (नसीहतें)	23
हज़रत आदम ﷺ के क़िस्से से मुताल्लिक़ मस्अले	24
हज़रत हव्वा की पैदाइश किस तरह हुई?	25
नबियों की इस्मत का मतलब	26
हज़रत आदम ﷺ की इस्मत	27
फ़रिश्ता	28
जिन्न	28
इब्लीस या शैतान	29
लेखक का इज़ाफ़ा	29
फ़रिश्ते आदम ﷺ को जन्नत से रुख़्सत करते हैं	30
रूहे अरज़ी आदम ﷺ का इस्तक़्बाल करती है	30
क़ाबील व हाबील	31
इबरत की जगह	32
हज़रत नूह ﷺ	34

Maktab-e-Ashraf

हज़रत नूह ﷺ पहले रसूल हैं	34
नूह ﷺ की क़ौम, दावत व तब्लीग़ और क़ौम की नाफ़रमानी	19
नाव की बुनियाद	37
जूदी पहाड़ (अज़ाब का ख़त्म होना)	38
अहम नतीजे	39
क़ौल	40
नूह ﷺ के तूफ़ान से मुताल्लिक़ कुछ अहम बातें	40
नूह ﷺ का बेटा	40
नूह ﷺ का तूफ़ान आम था या ख़ास	41
हज़रत नूह ﷺ की उम्र	42
हज़रत इदरीस ﷺ	43
नाम-नसब और ज़माना	43
हज़रत-इदरीस की ख़ास बातें	44
हज़रत इदरीस ﷺ की तालीम का ख़ुलासा	45
बाद में आने वाले नबियों के बारे में बशारत	45
हज़रत इदरीस ﷺ की ज़मीनी ख़िलाफ़त	46
हज़रत इदरीस से मुताल्लिक़ ख़ास बातें	46
हज़रत इदरीस ﷺ की नसीहतें	46
हज़रत हूद ﷺ	48
आद का ज़माना	48
आद के रहने की जगह	48
आद का मज़हब	48
हज़रत हूद ﷺ	48
इस्लाम की तब्लीग़	49
हूद की क़ौम पर अज़ाब	53
हज़रत हूद ﷺ की वफ़ात	54
कुछ इबरतें	55
हज़रत सालेह ﷺ	56
समूद क़ौम	56
समूद की बस्तियां	56
समूद का ज़माना	56
समूदियों का मज़हब	56

Marfat.pk-Ashraf

Maktab-e-Ashraf

III

	57
क़ुरआन मजीद में आए क़िस्सों का मतलब	57
अल्लाह की ऊंटनी	59
समूद पर अ़ज़ाब	60
कुछ इबरतें	61
हज़रत इब्राहीम ﷺ	61
हज़रत इब्राहीम ﷺ का ज़िक्र क़ुरआन पाक में	61
हज़रत इब्राहीम ﷺ के वालिद का नाम	61
हज़रत इब्राहीम ﷺ और दूसरे अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम	62
हज़रत इब्राहीम ﷺ की अ़ज़्मत	63
बाप को इस्लाम की दावत और बाप-बेटे का मुनाज़रा	64
क़ौम को इस्लाम की दावत और उससे मुनाज़रा	65
सितारा परस्ती	73
बादशाह को इस्लाम की दावत और उसका मुनाज़रा	77
आग का ठंडा हो जाना	81
और किलदानीयीन की ओर हिजरत	82
फ़लस्तीन की ओर हिजरत	82
हज़रत इब्राहीम ﷺ से मुताल्लिक़ दूसरे मसले	86
हज़रत हाजरा रज़ि० की हैसियत	87
सूरः मुम्तहिनः में हज़रत इब्राहीम की दुआ़	88
सूरः शुअ़रा में हज़रत इब्राहीम की दुआ़	89
हज़रत इब्राहीम ﷺ की ज़िंदगी का एक अहम वाक़िया	90
हज़रत इब्राहीम ﷺ की औलाद और उम्र	91
हज़रत इस्माईल ﷺ	91
पैदाइश	91
बंजर घाटी और हाजरा व इस्माईल	91
नेक बीवी का किरदार	94
ख़त्ना	95
काबा की बुनियाद	97
हज़रत इस्माईल की औलाद	99
क़ुरआन में हज़रत इस्माईल ﷺ का तज़्किरा	99
हज़रत इस्माईल ﷺ की वफ़ात	99
हज़रत इस्हाक़ ﷺ	100

पैदाइश	100
ख़त्ना	100
इसहाक़ की शादी	100
इस्हाक़ का ज़िक्र क़ुरआन में	101
हज़रत लूत ﷺ	101
लूत व इब्राहीम	101
मिस्र से वापसी	101
क़ौमे लूत	101
हज़रत लूत और तब्लीग़े हक़	102
हज़रत इब्राहीम ﷺ और अल्लाह के फ़रिश्ते	103
हज़रत इब्राहीम मुजद्दिदे अंबिया (नबियों के मुजद्दिद)	105
इन वाक़ियात से मुताल्लिक़ कुछ नसीहतें	109
हज़रत याक़ूब ﷺ	113
नाम और ख़ानदान	113
हज़रत याक़ूब का ज़िक्र क़ुरआन में	113
हज़रत यूसुफ़ ﷺ	114
ख़ानदान	114
हज़रत यूसुफ़ ﷺ का ख़्वाब और यूसुफ़ के भाई	114
कनआ़न का कुंवां	115
यूसुफ़ और ग़ुलामी	116
अज़ीज़े मिस्र की बीवी और यूसुफ़	117
यूसुफ़ ﷺ जेल में	117
क़ैदख़ाने में दावत व तब्लीग़	119
फ़िरऔ़न का ख़्वाब	120
अकाल और याक़ूब ﷺ का ख़ानदान	122
याक़ूब का ख़ानदान मिस्र में	128
वफ़ात	130
अहम अख़्लाक़ी बातें	130
हज़रत शुऐब ﷺ	132
शुऐब की क़ौम	132
मदयन या अस्हाबे ऐकः	132
हक़ की दावत	133

Maktab-e-Ashraf

अ़ज़ाब की क़िस्में	137
हज़रत शुऐब अ़ल० की क़ब्र	138
सबक़ भरी नसीहतें	138
हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र क़ुरआन पाक में	140
हज़रत मूसा व हारून अ़लैहिमस्सलाम	140
हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की शुरूआ़ती ज़िंदगी	140
बनी इसराईल मिस्र में	140
फ़िरऔ़न	141
फ़िरऔ़न का ख़्वाब	141
हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश	142
फ़िरऔ़न के घर में तर्बियत	142
मूसा का मिस्र से निकलना	145
हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की मदयन के लिए हिजरत	145
मूसा और मदयन का इलाक़ा	145
मदयन का पानी	146
शेख़ की बेटी से निकाह का रिश्ता	147
मुक़द्दस वादी	138
रसूल बनाए गए	149
अल्लाह की निशानियां	
हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की एक नबी की हैसियत से मिस्र को वापसी और हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम को रिसालत का मंसब अ़ता किया जाना	151
मिस्र में दाख़िला	151
फ़िरऔ़न के दरबार में हक़ की दावत	152
हज़रत हारून का किरदार	154
फ़िरऔ़न का रद्देअ़मल (प्रतिक्रिया)	155
हामान	155
फ़िरऔ़न के दरबार में मुज़ाहरा	155
जादूगरों की हार और फ़िरऔ़न का रद्देअ़मल (प्रतिक्रिया)	157
बनी इसराईल की बेचैनी	159
फ़िरऔ़न की जवाबी कार्रवाई	160
मिस्री मर्दे मोमिन	160
फ़िरऔ़न का एलान	162

Maktabe-e-Ashraf

मिस्रियों पर ख़ुदा का क़हर	162
बनी इसराईल का मिस्र से लौटना	164
बनी इसराईल की रवानगी	164
फ़िरऔन का डूबना	164
फ़िरऔन की लाश	165
समुद्र का फटना	166
बड़ा मोजज़ा	167
फ़िरऔन, फ़िरऔन की क़ौम और क़ियामत का अ़ज़ाब	167
हज़रत मूसा ﷺ और बनी इसराईल समुद्र पार करने के बाद	168
बनी इसराईल पर अल्लाह के इनाम और खुली निशानियां	168
चश्मों का जारी होना	168
मन्न व सलवा	168
बादलों का साया	169
बनी इसराईल की नाशुक्री	169
तूर पर एतिकाफ़	169
तजल्ली-ए-ज़ात	170
तौरात का उतरना	170
बनी इसराईल की गौशालापरस्ती	171
बनी इसराईल को माफ़ी	173
सत्तर सरदारों का इंतिख़ाब	174
सरदारों की हठधर्मी, अ़ज़ाबे इलाही और नई ज़िंदगी	175
बनी इसराईल का फिर इंकार और तूर पहाड़ का सरों पर बुलन्द होना	176
अर्ज़े मुक़द्दस का वायदा और बनी इसराईल	178
बनी इसराईल की नाफ़रमानी और उसका नतीजा	179
हज़रत हारून की वफ़ात	181
हज़रत मूसा ﷺ की वफ़ात	181
हज़रत मूसा ﷺ की नुबूवत के ज़माने से मुताल्लिक़ दूसरे वाक़िए	182
गाय के ज़िब्ह का वाक़िया	182
हज़रत मूसा और क़ारून	183
क़ारून का वाक़िया कब पेश आया?	185
हज़रत मूसा और ख़िज़्र	185
हज़रत ख़िज़्र से मुताल्लिक़ अहम बातें	189

Maktaba-e-Ashraf

हज़रत मूसा ﷺ और बनी इसराईल का ईज़ा पहुंचाना	191
सनीचर का दिन	191
हज़रत मूसा की नुबूवत के ज़माने से मुताल्लिक़ दूसरे मामले	192
फ़िरऔन नई तस्कीक़ की रोशनी में	192
देखो मुझे जो दीदा-ए-इबरत निगाह हो	193
फ़लक़ बह्र (समुद्र के फटने) से मुताल्लिक़ क़ियास आराइयां	194
जादू और मज़हब	195
मोजज़ा और जादू में फ़र्क़	196
मरने के बाद की ज़िंदगी	197
मोजज़ों का ज़्यादा होना	198
बनी इसराईल पर इनामों की ज़्यादती	200
हज़रत मूसा ﷺ का रुत्बा, एक पैग़म्बर की हैसियत से	200
नसीहतें क्या मिलीं?	201
मुसीबतों में सब्र किया जाए	201
कामियाबी के लिए शर्त	201
इश्क़े इलाही की ताक़त	202
अल्लाह की मदद	202
ईमानी लज़्ज़त के असरात	202
सब्र का फल	202
गुलामी के असरात	202
ज़मीन की विरासत के लिए शर्तें	203
बातिल की नाकामी	203
ज़ालिम क़ौमों का अंजाम	203
ताक़त का ख़ुमार और उसका अंजाम	203
सरकशी का अंजाम	203
दीन में इस्तिक़ामत (जमाव)	204
अल्लाह की बरदाश्त	204
इंसानी इल्म की अहमियत	204
गुलामी एक लानत है	205
अहम नुक्ते	205
अल्लाह की वह्य की हैसियत	205
मुसलसल गुलामी के असरात	205

Maktabe-e-Ashraf

ईमान की वरकतें	206
तर्जीव देने वाले की तरफ़ से इज़ाफ़ा : एक वद्दू मुसलमान का ईमान	207
सहाबा किराम की बेमिसाल अ़ज़्मत (बड़ाई)	208
हज़रत यूशेअ् बिन नून ﷺ	209
हज़रत यूशेअ् का ज़िक्र क़ुरआन में	209
अर्ज़े मुक़द्दस (पाक सरज़मीन) में दाख़िला	209
नाशुक्री	210
अल्लाह का अ़ज़ाब	211
सबक़ और नसीहत	211
हज़रत हिज़क़ील ﷺ	212
क़ुरआन और हज़रत हिज़क़ील ﷺ	212
अहम बातें	213
मरने के वाद की ज़िंदगी	213
जिहाद से पहलू बचाना	213
नतीजे	214
हज़रत इलयास ﷺ	216
क़ुरआन और हज़रत इलयास	216
नसीहत	217
हज़रत अल-यसअ् ﷺ	218
नबी बनाया जाना	218
क़ुरआन और हज़रत अल-यसअ्	218
नसीहत	218
हज़रत शमूईल ﷺ	219
क़ुरआन पाक और हज़रत शमूईल	219
हज़रत तालूत ﷺ (Saul)	219
जालूत (Goliath)	219
हज़रत दाऊद (David)	220
हज़रत शमूईल का नबी बनाया जाना	220
हज़रत तालूत का मुक़र्रर किया जाना	220
ताबूते सकीना	222
तालूत और जालूत की लड़ाई और बनी इसराईल का इम्तिहान	222
हज़रत दाऊद की बहादुरी	223

Maktabe Ashraf

सबक़ और नतीजे	224
हज़रत दाऊद ﷺ	225
हज़रत दाऊद और ख़लीफ़ा का लक़ब	225
ज़बूर	226
हज़रत दाऊद ﷺ की ख़ुसूसियतें	226
पहाड़ों और चिड़ियों पर क़ब्ज़ा और उनकी तस्बीह	227
हज़रत दाऊद ﷺ के हाथ में लोहे का नर्म होना	228
परिंदों से बातचीत करना	229
ज़बूर की तिलावत	229
हज़रत दाऊद ﷺ से मुताल्लिक़ दो अहम वाक़िए	230
खेती का मामला	230
दुंबियों का मामला	231
ऊपर वाली आयत की तफ़्सीर	232
मुबारक उम्र और कफ़न-दफ़न	234
क्या सबक़ मिला?	234
एक अहम नुक्ता	237
इसराईली पैग़म्बरों के हालात से मुताल्लिक़ एक अहम वज़ाहत	238
हज़रत सुलैमान ﷺ	239
ख़ानदान और बचपन	239
दाऊद ﷺ की विरासत	239
सुलैमान ﷺ की ख़ुसूसियतें	239
परिंदों की बोलियां समझना	240
हवा पर क़ाबू	240
जिन्नों और हैवानों को क़ाबू में रखना	241
बैतुलमक़्दिस की तामीर	242
तांबे के ज़ख़ीरे	243
हज़रत सुलैमान और मलिका सबा	243
सबा की तह्क़ीक़	248
हुद हुद	249
सबा की मलिका का तख़्त	249
मलिका सवा का इस्लाम क़ुबूल कर लेना	249
मलिका-ए-सबा का हज़रत सुलैमान के साथ निकाह	249

Maktab-e-Ashraf

हज़रत सुलैमान ﷺ की वफ़ात	250
हज़रत सुलैमान ﷺ के वाक़ियों से मुताल्लिक़ तफ़्सीरी नुक्ते	251
हज़रत सुलैमान ﷺ की आज़माइश	252
सुलैमान ﷺ की फ़ौज और चींटियों की घाटी	253
मलिका-ए-सबा का तख़्त उठाकर लाने वाले की शख़्सियत	255
हज़रत सुलैमान ﷺ पर बनी इसराईल का बोहतान	256
ख़ुलासा	258
सबक़ और ख़ुलासा	259
हज़रत अय्यूब ﷺ	263
हज़रत अय्यूब और क़ुरआन पाक	263
कुछ तफ़्सीरी हक़ीक़तें	265
हज़रत अय्यूब ﷺ का मरज़	265
'मस्सनियश्शैतानु' से क्या मुराद है?	265
दूसरे वाक़िए	267
सबक़ और नसीहत	269
हज़रत यूनुस ﷺ	271
हज़रत यूनुस ﷺ का ज़िक्र क़ुरआन मजीद में	272
नसब व ज़माना	273
दावत की जगह	273
वफ़ात	273
कुछ दूसरी बातें	274
यूनुस ﷺ की फ़ज़ीलत	274
नबियों (अ़लैहिमुस्सलाम) के फ़ज़ाइल	275
कुछ सबक़, कुछ नसीहतें	276
हज़रत ज़ुलकिफ़्ल ﷺ	278
क़ुरआन और ज़ुलकिफ़्ल	278
हालात	279
सबक़	279
हज़रत उज़ैर ﷺ	279
क़ुरआन और हज़रत उज़ैर ﷺ	279
हज़रत उज़ैर की मुबारक ज़िंदगी	280
हज़रत उज़ैर ﷺ और अल्लाह का बेटा होने का अ़क़ीदा	280

	280
सूरः बक़रः में ज़िक्र किया गया वाक़िया	282
सबक़	282
हज़रत जक़रिया ﷺ	282
क़ुरआन और हज़रत ज़कारिया ﷺ	282
ज़िंदगी के हालात	283
हज़रत ज़कारिया ﷺ के यहां औलाद	285
तफ़्सीरी नुक्ते	286
ज़कारिया ﷺ की वफ़ात	287
हज़रत यह्या ﷺ	287
क़ुरआन और यह्या ﷺ	287
हज़रत ज़कारिया और बेटे की विलादत	288
तफ़्सीरी नुक्ते	290
दावत व तब्लीग़	292
शहादत का वाक़िया	293
मक़्तल (क़त्लगाह)	293
शबे मराज और यह्या ﷺ	293
नतीजा और सबक़	294
बाग़ वाले	295
वाक़िए से मुताल्लिक़ क़ौल	296
सबक़	297
मोमिन व काफ़िर	297
मोमिन और काफ़िर का वाक़िया	299
वाक़िए की तशरीह (व्याख्या)	300
सबक़ और नतीजे	301
क़रिया वाले या अस्हाबे यासीन	301
क़रिया वाले और क़ुरआन	304
वाक़िए से मुताल्लिक़ बातें	304
हासिल	305
हज़रत लुक़मान रज़ि०	305
लुक़मान	305
क़ुरआन और हज़रत लुक़मान	306
नुबूवत या हिक्मत	

Maktab-e-Ashraf

कुछ अहम तफ़्सीरी नुक्ते	307
हज़रत लुक़मान की हिक्मत	308
नसीहत और सबक़	310
अस्हाबे सब्त (सनीचर वाले)	311
सब्त और उसकी हुर्मत	312
वाक़िया क्या था?	313
वह जगह	317
हादसे का ज़माना	317
कुछ अहम तफ़्सीरी हक़ीक़तें	317
बिगाड़ने की हक़ीक़त	318
मस्ख़ की गई क़ौमों का अंजाम	318
नतीजे और सबक़	318
अस्हाबुर्रस्स	319
रस्स	319
कुरआन और अस्हाबुर्रस्स	319
सही बात	320
सबक़ और नसीहत	320
बैतुलमक़्दिस और यहूद	321
बैतुल मक़्दिस	321
बनी इसराईल को तंबीह (चेतावनी)	322
यहूद की शरारत का पहला दौर	322
बख़्त नस्र	326
ग़ुलामी से निजात	328
तौरात के बयान और तारीख़	329
हज़रत यह्या ﷺ का क़त्ल	329
अ़मल का बदला	331
तीसरा सुनहरा मौक़ा और यहूदियों का मुंह मोड़ना	333
हमेशा की ज़िल्लत और नुक़्सान	334
नतीजे	335
ज़ुलक़रनैन	336
नम्रीद	338
	338

Marfat-e-Ashraf

	338
जुलक़रनैन की शख़्सियत	340
जुलक़रनैन से मुताल्लिक़ सवाल की शक्ल	341
यहूदी, क़ुरैश और सवालों का इंतिख़ाब	342
बनी इसराईल के नबियों की पेशीनगोइयां	343
तारीख़ी गवाहियां	343
पश्चिमी मुहिम	345
पूरबी मुहिम	345
तीसरी (उत्तरी) मुहिम	346
बाबिल की जीत	348
ख़ोरस का मज़हब	349
ईरान और ज़ुरतुश्त मज़हब	350
जुलक़रनैन और क़ुरआन	357
याजूज व माजूज	359
सद्द	361
क़ुरआन और सद्द	362
ज़ुलक़रनैन की सद्द (दीवार)	363
दूसरी सद्दें	363
याजूज व माजूज का ख़ुरूज	368
हज़रत मौलाना अनवर शाह साहब कश्मीरी (रह०) की तफ़्सीर	369
बुख़ारी और मुस्लिम की हदीसें	371
क्या ज़ुलक़रनैन नबी थे?	371
नतीजे	372
'बसाइर' के हिस्से	374
अस्हाबुल कह्फ़ वर्रक़ीम	374
कह्फ़ और रक़ीम	375
क़ुरआन और अस्हाबे कह्फ़ और अस्हाबे रक़ीम	377
वाक़िया	380
अहम तफ़्सीरी हक़ीक़तें	384
सबक़ और नतीजे	388
सबा और सैले इरम	388
तम्हीद (प्रस्तावना)	389
सबा और क़ौमे सबा	

Maktabe Ashraf

सबा और हुकूमत के तबक़े	390
सबा की इमारतें और उनका रहन-सहन	390
सद्दे मआरिब (मआरिब का बांध)	391
अह्ले सबा और अल्लाह की नाफ़रमानी	394
सैले इरम	395
पहली सज़ा	395
दूसरी सज़ा	397
सैले इरम का फैलाव	399
सबा की मज़हबी हालत	400
कुछ तफ़्सीरी नुक्ते	400
नतीजे और सबक़	401
अस्हाबुल उख़्दूद या क़ौमे तुब्बअ	402
उख़्दूद	402
क़ुरआन और अस्हाबे उख़्दूद	402
वाक़िए की तफ़्सील	403
क़ौम तुब्बअ़	406
तुब्बअ़ की हक़ीक़त	406
क़ुरआन और क़ौम तुब्बअ़	407
सबक़ और नसीहत	407
अस्हाबुल फ़ील (570 ई०)	409
हब्शा और नजाशी	409
अबरहा अल अशरम	409
अस्हाबे फ़ील (हाथी वाले)	410
क़ुरआन और अस्हाबे फ़ील	415
वाक़िए की हक़ीक़त	415
सबक़ और नसीहत	417
हज़रत ईसा ﷺ	424
क़ुरआन और हज़रत ईसा ﷺ	424
इमरान व हन्ना	425
हज़रत मरयम का ज़ुह्द व तक़्वा (संयम व ईश-भय)	426
हज़रत मसीह ﷺ के हालात	427
मुबारक हुलिया	430

Maktab e Ashraf

रसूल बनाए गए	430
खुली निशानियां	432
क़ुरआन के क़िस्से	432
तवज्जोह के क़ाबिल बात और मोजज़ों की हक़ीक़त	433
हज़रत ईसा और मोजज़े	436
हज़रत ईसा और उनकी तालीम का खुलासा	443
हवारी ईसा अलैहिस्सलाम	445
ईसा अलैहिस्सलाम के हवारी और क़ुरआन व इंजील का मवाज़ना	446
माइदा का उतरना	448
'रफ़अ् इलस्समाइ' यानी ज़िंदा आसमान पर उठा लिया जाना	451
हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से मुताल्लिक़ कुछ तफ़्सीरी और दूसरे अहम मसले और क़ुरआन के वाज़ेह बयान	463
हज़रत ईसा अ़लैहिसल्लाम की ज़िंदगी	465
ल यूमिनन-न बिही क़ब-ल मौतिही	465
हज़रत ईसा की ज़िंदगी और उनका उतरना और सहीह हदीसें	467
उतरने के वाक़िए सहीह हदीसों की रोशनी में	470
मसीह अलैहिस्सलाम की वफ़ात	472
हज़रत ईसा और आख़िरत का दिन	473
हज़रत ईसा की इस्लाही दावत और बनी इसराईल के फ़िरक़े	475
चारों इंजीलें	477
क़ुरआन और इंजील	478
क़ुरआन और तस्लीस का अ़क़ीदा	481
हज़रत मसीह अल्लाह के क़रीबी और बरगज़ीदा रसूल हैं	482
हज़रत मसीह न ख़ुदा हैं, न ख़ुदा के बेटे	482
कफ़्फ़ारा	484
तवज्जोह करने की बात	486
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम	487
हज़रत मुहम्मद और क़ुरआन मजीद	487
नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बशारतें (ख़ुशख़बरियां)	491
ज़ुहूरे क़ुद्सी	492
मुबारक सुबह	493
विलादत की तारीख़ की तहक़ीक़	497

Maktaba-e-Ashraf

तारीख़ व सीरत लिखने वाले तमाम बड़े लोगों का तीन बातों पर इत्तिफ़ाक़ है।	497
मुबारक नसब	498
यतीमी	502
बुत-परस्ती से नफ़रत, तंहाई पसन्दी और अल्लाह की इबादत का ज़ौक़	506
पैग़म्बर बनाए गए	507
वह्य आने का पहला दौर	510
वह्य उतरने का दूसरा दौर	511
दावत व इर्शाद के एलान की पहली मंज़िल	513
दावत व इर्शाद की दूसरी मंज़िल	514
आम बेसत	515
इस्लाम की दावत का मुज्मल ख़ाका और हज़रत जाफ़र रज़ि० की तक़रीर	516
मेराज	519
वाक़िया सिर्फ़ एक ही बार हुआ	519
तहक़ीक़ तारीख़ व सन्	520
क़ुरआन और मेराज का वाक़िया	520
हदीसें और मेराज के वाक़िए का सबूत	521
वाक़िए की शक्ल	522
मेराज का वाक़िया और क़ुरआन	522
सूरः बनी इसराईल और वाक़िया मेराज	523
मेराज शरीफ़ से मुताल्लिक़ तफ़्सील	526
मेराज में अल्लाह को देखना	529
इज़ाफ़ा	530
हिजरत	530
हब्शा की हिजरत	531
मदीना की हिजरत की वजहें	532
नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत	534
दारुन्नदवा	534
क़ुरआन मजीद और मदीने की हिजरत	436
हिजरत	538
लड़ाइयां	540
बद्र की लड़ाई	540

Maktab-e-Ashraf

अहम लड़ाइयां और नतीजे और नसीहतें	588
ग़ज़वा बदरुल-कुबरा	588
उहुद की लड़ाई	588
अहज़ाब की लड़ाई	588
मक्का की फ़त्ह	589
हुनैन की लड़ाई	590
तबूक	591
हुदैबिया का वाक़िया	590
गोद लेकर बेटा बनाना	591
हज़रत ज़ैद रज़ि०	591
बेटा बनाने की रस्म की रोक-थाम	593
सबक़ और नसीहत	596
बनू नज़ीर	596
क़ुरआन और बनू नज़ीर	598
नतीजा और नसीहत	598
इफ़्क़ का वाक़िया	599
सबक़ और नसीहत	601
फ़ासिक़ की दी हुई ख़बर	603
मस्जिदे ज़रार (रजब सन् 06 हिजरी)	606
सबक़	607
वफ़ात या वस्ल बिर्रफ़ीक़िल आला	608
सबक़ और नसीहत	610
नुबूवत व रिसालत का ख़ात्मा	610

MaktabeAshraf

Maktab-e-Ashraf

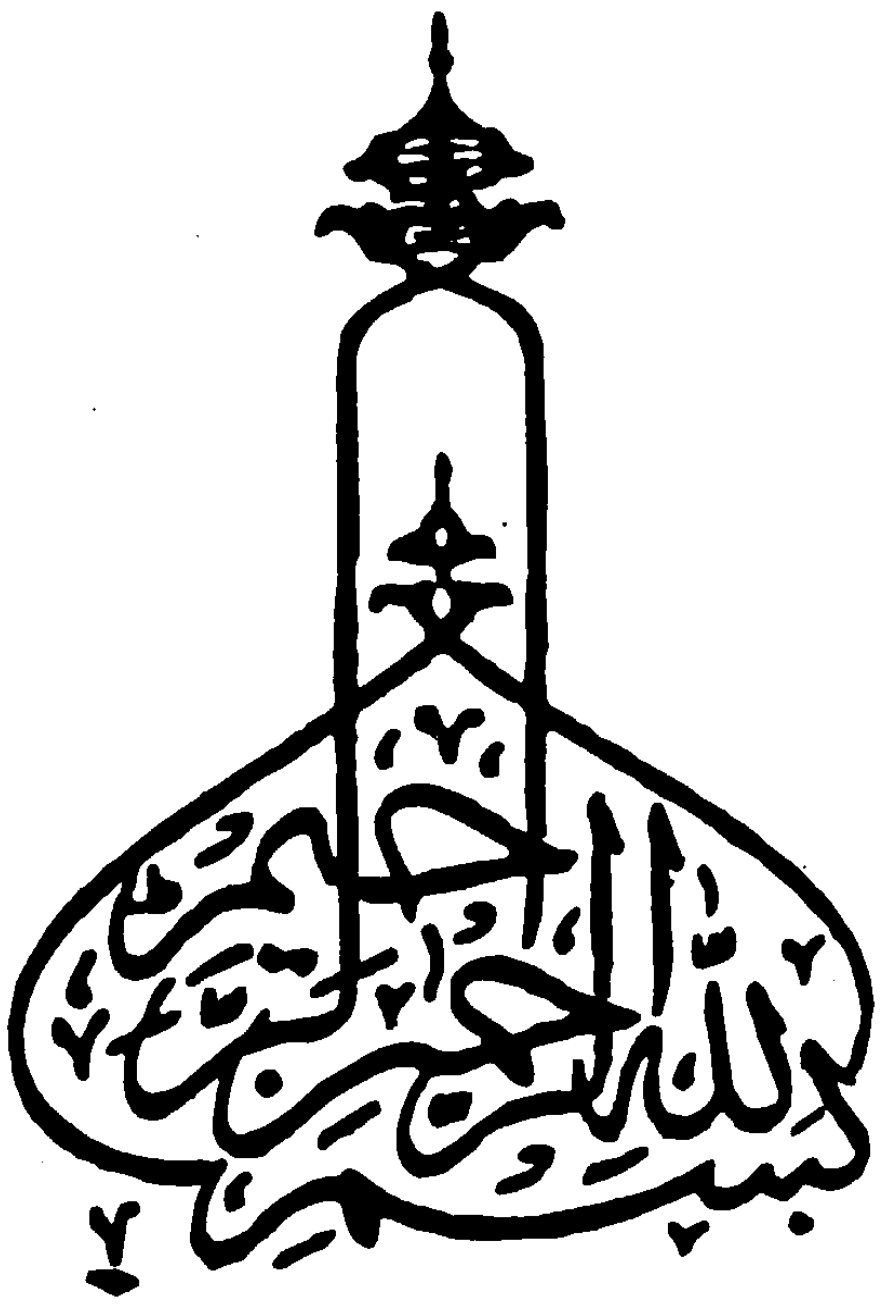

Maktab-e-Ashraf

बिस्मिल्लाहिर्ररहमानिर्रहीम

तम्हीद

क़ुरआन पाक इन तारीख़ी वाक़ियों को सिर्फ़ इसलिए नहीं बयान करता कि वे वाक़िए हैं, जिनका एक तारीख़ में लिखा होना ज़रूरी है, बल्कि इसका एक ही मक़्सद है, वह यह कि वह इन वाक़ियों से पैदा होने वाले नतीजों से इंसान की हिदायत व रहनुमाई के लिए नसीहत और इबरत बनाए और इंसानी अक़्ल व जज़्बात से अपील करे कि वे फ़ितरत के क़ानूनों के सांचे में ढले हुए इन तारीख़ी नतीजों से सबक़ हासिल करें और ईमान लाएं कि अल्लाह की हस्ती एक इंकार न की जा सकने वाली हक़ीक़त है और क़ुदरत का यही हाथ इस कायनात पर कारफ़रमा है और इसी मज़हब के हुक्मों की पैरवी में फ़लाह व नजात और हर क़िस्म की तरक़्क़ी का राज़ छिपा हुआ है, जिसका नाम 'फ़ितरत का मज़हब' या इस्लाम है।

—'क़ससुल क़ुरआन' से लिया गया

Maktabe-Ashraf

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

गरामी क़द्र हज़रत मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० की मुस्तनद और जामे तस्नीफ़ 'क़ससुल क़ुरआन' किसी तआरुफ़ की मुहताज नहीं, अलबत्ता हमारे मोहतरम दोस्त जनाब सैयद तंज़ीम हुसैन साहब ने जिस मक़्सद के तहत इस मोटी-भारी किताब को मुख़्तसर किया है, वह बेशक वक़्त की अहम ज़रूरत है। उन्होंने मुख़्तसर करने का ऐसा अन्दाज़ अपनाया है कि नबियों और दूसरी बुज़ुर्ग हस्तियों से मुताल्लिक़ न सिर्फ़ हर उस बात को लिया है जिसका ताल्लुक़ इबरत और नसीहत से है, बल्कि दूसरी अहम बातों को भी थोड़े में बयान कर दिया है। उम्मीद है कि अल्लाह की मेहरबानी से इस किताब के पढ़ने में लगे लोग पूरी तरह फ़ायदा उठा सकेंगे।

बुढ़ापे में जनाब सैयद तंज़ीम हुसैन के सोचने का अन्दाज़ और उसके तहत उनकी यह कोशिश हर तरह तारीफ़ के क़ाबिल है। अल्लाह पाक उनकी इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए। (आमीन)

—क़ारी सैयद रशीदुल हसन हसनी नदवी
इमाम व ख़तीब
जामा मस्जिद न्यूटाउन, अल्लामा बन्नोरी टाउन, कराची
5 मुहर्रमुल हराम 1408 हि०

Maktab-e-Ashraf

अर्ज़ है कि...

गरामी क़द्र मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० पाक व हिंद उप महाद्वीप के नामी उलेमा में नुमायां हैसियत रखते हैं। उनकी मशहूर व मक़बूल किताब 'क़ससुल कुरआन' अपने मौज़ू (विषय) के एतबार से मुंफ़रिद (एक ही) समझी जाती है। इसकी जो ख़ूबी सबसे ज़्यादा नुमायां है, वह यह है कि हर क़िस्से के आख़िर में मौलाना ने गहरी नज़र और सूझ-बूझ से जो बातें पेश की हैं, वे हर ख़ास व आम के लिए क़दम-क़दम पर रहनुमाई करती हैं। दीनी मदरसों के असातज़ा, (टीचर्स), मस्जिदों के ख़ु त बा (ख़िताब करने वाले ख़तीब हज़रात) और दीनी तलबा के लिए इस किताब का पढ़ना बेहद फ़ायदेमंद समझा जा रहा है।

यह किताब चार हिस्सों में 1800 से ज़्यादा सफ़हों पर फैली हुई है। अंजुमन इशाअते क़ुरआन अज़ीम के शोबा तस्नीफ़ व तालीफ़ से वाबिस्ता जनाब सैयद तंज़ीम हुसैन साहब ने इस मोटी किताब का ख़ुलासा सिर्फ़ 600 सफ़हों में पेश किया है, जिसे हर हलक़े में पसन्दीदा नज़रों से देखा गया, ख़ास तौर से इसलिए कि इस तरह उन्होंने वक़्त के तक़ाज़े को पूरा किया है और बेकार की बहसों से नज़रें हटा कर मश्ग़ूल व मस्रूफ़ लोगों को भी इससे फ़ायदा उठाने का पूरा-पूरा मौक़ा जुटा दिया है। अल्लाह पाक उनको भला बदला दे।

ज़िया ब्रदर्स बुक सेन्टर इस ख़ुलासे की अहमियत और फ़ायदों को देखते हुए अंजुमन इशाअते क़ुरआन अज़ीम के छपे आठ भागों को इकट्ठा करके एक जिल्द में बेहतरीन कम्प्यूटर कम्पोज़िंग करवा कर 'क़ससुल अंबिया व अस्हाबुस्सालिहीन' की तलख़ीस (ख़ुलासा) 'क़ससुल क़ुरआन अज़ मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० के उन्वान से छाप कर इस नेक काम में हिस्सा ले रहा है।

अल्लाह पाक इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए। (आमीन)

Maktab-e-Ashraf

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुरू करते वक़्त

अल्लाह पाक ने जो क़िस्से और वाक़िए क़ुरआन अज़ीज़ में बयान फ़रमाए हैं, उनके बारे में उर्दू ज़ुबान में गरामी क़द्र मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी साहब रह० की किताब 'क़ससुल क़ुरआन' इस दौर में लिखी जाने वाली कुछ फ़ायदेमन्द किताबों में से एक है। इस किताब के बारे में मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी मद्द ज़िल्लहुल आली ने इस तरह अपने ख़्याल ज़ाहिर किए हैं—

'हज़रत मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रहमतुल्लाहि अलैहि की लिखी दो किताबें—एक तो 'क़ससुल क़ुरआन' दूसरी, 'इस्लाम का इक़्तिसादी निज़ाम' ख़ास तौर से ज़िक्र के क़ाबिल है। उर्दू में हमारे इल्म में 'क़ससुल क़ुरआन' अंविया ﷺ की हयात और उनकी दावते हक़ की मुस्नद तारीख़ व तफ़्सीर जो क़ुरआन मजीद के गहरे मुताले, नई-पुरानी मज़हबी किताबों की तह्क़ीक़ की मदद से तर्तीब दी गई हो, इससे पहले नहीं थी। मौलाना ने यह किताब लिख कर एक बड़ी ज़रूरत पूरी की और इस्लामियात और इल्मे क़ुरआन के तालिब इल्मों के लिए एक क़ीमती ज़ख़ीरा मुहय्या कर दिया।'

—कारवाने ज़िंदगी, भाग 4, पृ. 263

यह किताब चार भागों में लगभग दो हज़ार सफ़हों (पृष्ठों) पर शामिल हैं। मौजूदा मस्रूफ़ियात के दौर में बहुत से लोगों की यह ख़्वाहिश होती है कि किताब मुख़्तसर और जामेअ् हो। लिखने वाले ने इस ख़्याल को ज़ेहन में रखकर इंग्लिश लिट्रेचर के Abridged Edition के अन्दाज़ पर 'क़ससुल क़ुरआन' का इख़्तिसार (संक्षिप्तीकरण) सिर्फ़ 600 सफ़हों की एक जिल्द (भाग) में पेश कर दिया है। इस इख़्तिसार में उन इल्मी, फ़लसफ़ियाना (दार्शनिक) और तारीख़ी बहसों को नज़रअंदाज़ कर दिया है जिनका ताल्लुक़

वाज़ व नसीहत से नहीं है।

इस नेक काम के अज्र व सवाब के सच्चे हक़दार मोहतरम मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान साहब स्योहारवी रह० ही हैं। इस नाचीज़ बन्दे के लिए तो बस इतना ही काफ़ी है—

बहुस्ने एहतमामत कारे जामी
तुफ़ैले दीगरां यावद तमामी

अल्लाह पाक इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए।

कमतरीन
सैयद तंज़ीम हुसैन (1416 हि.)
शोबा तस्नीफ़ व तालीफ़

अंजुमन इशाअते क़ुरआन अज़ीम, कराची

Maktabe-Ashraf

Maktab-e-Ashraf

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अपनी बात

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना बिल किताबिल मुबीन व अन-ज़-ल अलैनल क़ुरआ-न बिलिसानिन अ-रबीयिम मुबीन व क़स-स फ़ीहि अहसनल क़-स सि मौइज़तन व ज़िकरा लिल मोमिनीन वस्सलातु वस्सलामु अलन्नबीयिस्सादिक़िल अमीन मुहम्मदिन रसूलिल्लाहि व ख़ातमिन्नबीयीन व अला आलिही व अस्हाबिहिल्लज़ी-न हुम हुदातुल लिल मुत्तक़ीन० अम्मा बाद

क़ुरआन पाक में अल्लाह तआ़ला ने इंसानी दुनिया की हिदायत के लिए अलग-अलग मोजज़ों वाले तरीक़े अपनाए हैं, उनमें एक यह भी है कि पिछली क़ौमों के वाक़ियों और क़िस्सों के ज़रिए उनके नेक व बद-आमाल और उन आमाल के फलों और नतीजों को याद दिलाए और सबक़ हासिल करने का सामान जुटाए, इसीलिए वह बयान करने के तारीख़ी उस्लूब के पीछे नहीं पड़ता, बल्कि हक़ पहुंचाने और अल्लाह की ओर बुलाने के अहम मक़्सद को सामने रख कर सिर्फ़ उन्हीं वाक़ियों को सामने लाता है, जो इस ग़रज़ व ग़ायत को पूरा करते हों और इसीलिए क़ुरआन अज़ीज़ में उनकी तकरार (बार-बार) पाई जाती है, ताकि सुनने वालों के दिल में वे घर कर सकें और फ़ितरी और तबई रुझानों को इन हक़ीक़तों की ओर मुतवज्जह किया जा सके और यह तभी मुम्किन है कि एक बात को बयान करके अलग-अलग तरीक़ों से और जैसे हालात हों, उसी हिसाब से उस्लूब निगारिश से बार-बार दोहराया जाए और सोच की सोई हुई ताक़तों को बार-बार बेदार किया जाए।

क़ुरआन मजीद के क़िस्सों और वाक़ियों का सिलसिला ज़्यादातर पिछली क़ौमों और उनकी ओर भेजे गए पैग़म्बरों से वाबस्ता है और थोड़ा-थोड़ा करके कुछ और वाक़िए भी इस सिलसिले में आ गए हैं और यह तमामतर हक़ व

वातिल के संघर्षों और औलिया-उल्लाह और औलिया-उश्शैतान (शैतान के साथियों) के मारकों का एक सबक़ भरा हुआ और नसीहत हासिल करने वाला बेमिसाल ज़ख़ीरा है।

लेकिन दूसरों का क्या ज़िक्र, हम मुसलमानों में भी बहुत कम ऐसे हैं जो अल्लाह के इस सबसे मुकम्मल और आख़िरी क़ानून (क़ुरआन पाक) से फ़ायदा उठाते और अपने मुरदा दिलों में ईमान और यक़ीन की ज़िंदगी पैदा करते हों, इसलिए कि यह अल्लाह का क़ानून है और हम इसे जारी करने पर लगाए गए हैं इसलिए हमें चाहिए कि मानी व मतलब पर ग़ौर करते रहें यह समझ कर कि यह रहती दुनिया तब अबदी और हमेशा की ज़िंदगी और दोनों दुनिया की फ़लाह व सआदत का मुकम्मल दस्तूर है।

क़ुरआन उतरते वक़्त पैग़म्बरे ख़ुदा ﷺ ने मुश्रिकों के दुश्मनी भरे रवैए से तंग आकर यह शिकायत की थी।

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कहाः *'ऐ मेरे परवरदिगार! बेशुबहा मेरी क़ौम ने क़ुरआन को महजूर (झक-झक) बना लिया है।'*

(अल-फ़ुरक़ान 25/30)

लेकिन इस चौदहवीं सदी में अगर हम अपने दिलों को टटोलें, तो इस्लाम के दावे और क़ुरआन को ख़ुदा का कलाम यक़ीन करने के बाजवूद कितने हैं जो इस कलामे इलाही को अपनी ज़िंदगी के लिए बेहतरीन निज़ामे अ़मल बनाते और इस नज़र से उसकी तिलावत करते हैं।

अपनी और अपनी क़ौम की इस हालत को देखते हुए जी चाहा कि इबरत और बसीरत के इस सरमाए को उर्दू में (अब हिन्दी में भी) लाया जाए ताकि नक़ल से बचे रहने के बाद ख़ुद-ब-ख़ुद असल की जानिब रग़बत पैदा हो और इस तरह दोनों दुनिया की सआ़दत का पता मिले।

अपने लिखने के सादा तरीक़े के बावजूद इस मज्मूए में कुछ ख़ुसूसियतों का ख़ास तौर पर लिहाज़ किया गया है—

1. किताब में तमाम वाक़ियों की बुनियाद क़ुरआन को बनाया गया है और मुस्तनद हदीसो और तारीख़ी वाक़ियों से उनकी वज़ाहत और तशरीह की गई है।

2. तारीख़ और पुराने ज़माने की किताबों के दर्मियान और क़ुरआन अज़ीज़ के मुहकम यक़ीन के दर्मियान अगर कहीं टकराव आ गया है तो उसको रोशन दलीलों के ज़रिए या मेल दिखाने की कोशिश की गई है और या फिर क़ुरआन की सदाक़त को वज़ाहत से साबित किया गया है।

3. इसराईली ख़ुराफ़ात और मुख़ालिफ़ों के एतराज़ों की बकवास की हक़ीक़त को रोशनी में ज़ाहिर किया गया है।

4. ख़ास-ख़ास जगहों पर तफ़्सीरी, हदीसी और तारीख़ी उलझनों पर बहस व तम्हीस के बाद पिछले बुज़ुर्गों के मस्लक के मुताबिक़ उनका हल पेश किया गया है।

5. हर पैग़म्बर के हालात क़ुरआन अज़ीज़ की किन-किन सूरतों में बयान हुए हैं, उनको नक़्शे की शक्ल में एक जगह दिखाया गया है।

6. इन तमाम बातों के साथ-साथ 'नतीजों और इबरतों' या 'इबरतों और बसीरतों' के उन्वान से असल मक़्सद और हक़ीक़ी ग़रज़ व ग़ायत यानी इबरत व वसीरत के पहलू को ख़ास तौर पर नुमायां किया गया है।

—ख़ादिमे मिल्लत
मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी
लेख : 22 रज्जबुल मुरज्जब सन् 1360 हि०

Maktab-e-Ashraf

Maktab-e-Ashraf

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कायनात की पैदाइश और पहला इंसान

पहला इंसान

हज़रत आ॰म अ़लैहिस्सलाम के बारे में क़ुरआन मजीद ने जो हक़ीक़तें बयान की हैं, उनके तफ़सीली तज़्किरे से पहले यह साफ़ हो जाना ज़रूरी है कि इंसान के आलमे वुजूद में आने का मसूअला आज इल्मी निगाह से बहस का एक नया दरवाज़ा खोलता है, यानी Evolution (विकास) का यह दावा है कि मौजूदा इंसान अपनी शुरूआती पैदाइश ही से इंसान पैदा नहीं हुआ, बल्कि मौजूद कायनात में उसने बहुत से दर्जे तय करके मौजूदा इंसानी शक्ल हासिल की इसलिए कि ज़िंदगी की शुरूआत ने कंकड़-पत्थर, पेड़-पौधों की अलग-अलग शक्लें अख़्तियार करके हज़ारों-लाखों वर्ष बाद एक-एक दर्जा तरक़्क़ी करते-करते पहले लबूना (पानी की जोंक) का जामा पहना और फिर ऐसी ही लम्बी मुद्दत के बाद जानदारों के अलग-अलग छोटे-बड़े तबक़ों से गुज़र कर मौजूदा इंसान की शक्ल अपनाई। और मज़हब यह कहता है कि कायनात के पैदा करने वाले ने पहला इंसान हज़रत आदम की शक्ल ही में पैदा किया और फिर उसकी तरह एक हमजिंस मख़्लूक़ हव्वा को वजूद देकर दुनिया में इंसानी नस्ल का सिलसिला क़ायम किया और यही वह इंसान है जिसको कायनात के पैदा करने वाले ने तमाम पैदा की हुई चीज़ों पर बरतरी और बुज़ुर्गी अता फ़रमाई और अल्लाह की अमानत का भारी बोझ उसके सुपुर्द फ़रमाया और कुल कायनात को उसके हाथ में सधा कर अल्लाह के ख़लीफ़ा और नायब होने का शरफ़ उसी को बख़्शा।

'बेशक, हमने इंसानों को बेहतरीन अन्दाज़ से बनाया है।'

(तीन 95/4)

'बेशक हमने आदम की नस्ल को तमाम कायनात पर बुज़ुर्गी और बरतरी बख़्शी।'

(अल-इसरा 14/7)

'मैं ज़मीन पर आदम को अपना ख़लीफ़ा बनाने वाला हूं।'

(अल-बक़र: 2/30)

'हमने अमानत के बोझ को आसमानों और ज़मीन पर पेश किया, तो उन्होंने (यानी कुल कायनात ने) अल्लाह की अमानत के बोझ को उठाने से इंकार कर दिया, और इससे डर गए और इंसान ने उस भारी बोझ को उठा लिया।'

(अल-अहज़ाब 33/72)

अब सोचने की बात यह है कि Evolution और धर्म के बीच इस ख़ास मसअले में इल्मी तज़ाद (विरोधाभास) है या ततबीक़ (मेल) की गुंजाइश निकल सकती है, ख़ास तौर से जबकि इल्म और तजुर्बे ने यह सच्चाई खोल कर रख दी है कि दीनी और मज़हबी हक़ीक़तों और इल्म के दर्मियान किसी भी मामले में टकराव नहीं है। अगर ज़ाहिरी सतह पर कहीं ऐसा नज़र भी आता है तो वह इल्म की हक़ीक़तों के छुपे होने की वजह से नज़र आता है, क्योंकि बार-बार यह देखा गया है कि जब भी इल्म की छुपी हक़ीक़तों पर से परदा उठा, तो उसी वक़्त तज़ाद भी जाता रहा और वही हक़ीक़त निखर कर सामने आ गई जो अल्लाह की वह्य के ज़रिए ज़ाहिर हो चुकी थी। दूसरे लफ़्ज़ों में कह दीजिए कि इल्म और मज़हब के दर्मियान अगर किसी वक़्त भी तज़ाद नज़र आया, तो नतीजे के तौर पर इल्म को अपनी जगह छोड़नी पड़ी और अल्लाह की वह्य का फ़ैसला अपनी जगह अटल रहा।

इस बुनियाद पर इस जगह भी कुदरती तौर पर यह सवाल सामने आ जाता है कि इस ख़ास मसअले में हक़ीक़ते हाल क्या है और किस तरह है? जवाब यह है कि इस मामले में भी इल्म और मज़हब के दर्मियान कोई टकराव नहीं है, अलबत्ता यह मसअला चूंकि बारीक और गूढ़ बातें अपने भीतर समोए हुए है, फिर भी यह हक़ीक़त इस जगह हमेशा नज़रों में रहनी चाहिए कि पहला इंसान, (जो कि मौजूदा इंसान की नस्ल का बाबा आदम है, भले ही

तरक़्क़ी (Evolution) के नज़रिए के मुताबिक़ दर्जा-ब-दर्जा इंसानी शक्ल तक पहुंचा हो या पैदाइश की शुरूआत ही में इंसानी शक्ल में वुजूद में आया हो इल्म और मज़हब दोनों का इस पर इत्तिफ़ाक़ (सहमति) है कि मौजूदा इंसान ही इस कायनात की सबसे बेहतर मख़्लूक़ है और अक़्ल और सूझ-बूझ का ढांचा ही अपने अ़मल और किरदार के लिए जवाबदेह है और दस्तूर व क़ानून का मुकल्लफ़ है या इस तरह समझ लीजिए कि इंसानी किरदार और उसके इल्मी और अ़मली, साथ ही अख़्लाक़ी किरदार को देखते हुए इस बात की कोई अहमियत नहीं है कि इसके पैदा होने, ढलने और वजूद की दुनिया में आने की तफ़सील क्या है, बल्कि अहमियत की बात यह है कि इस पैदा हुई दुनिया में उसका वुजूद यों ही बे-मतलब और बेमक़्सद है या उसकी हस्ती अपने भीतर बहुत बड़ा मक़्सद लेकर वजूद में आई है? क्या उसके अफ़आल व अक़वाल और किरदार व गुफ़्तार (कर्म-कथन, चरित्र-आचरण) के असरात (प्रभाव) बहुत अधिक हैं? क्या उसकी माद्दी और रूहानी क़ुदरतें सब की सब बेकार और बे-नतीजा हैं या क़ीमती फलों से लदी हुई और हिक्मत से भरी हुई हैं? और क्या उसकी ज़िंदगी अपने भीतर कोई रौशन व ताबनाक हक़ीक़त रखती है और घोर अंधेरे वाले भविष्य (मुस्तक़्बिल) का पता देती है और उसका माज़ी व हाल अपने मुस्तक़्बिल को नहीं जानता?

पस अगर इन हक़ीक़तों का जवाब 'नहीं' में नहीं, बल्कि 'हां' में है तो फिर क़ुदरती तौर पर यह मानना ही होगा कि उसकी पैदाइश की कैफ़ियत (दशा) पर बहस की जाए, उसके वुजूद के मक़्सद पर पूरी निगाह रखी जाए और यह मान लिया जाए कि पैदा की हुई चीज़ों में सबसे बेहतर हस्ती का वुजूद बेशक बड़े मक़्सद का पता देता है और इसलिए उसकी अख़्लाक़ी क़द्रों का ज़रूर कोई 'मसलें आला' (बड़ी नज़ीर) और उसकी पैदा करने का कोई मक़्सद है।

क़ुरआन पाक ने इसीलिए हज़रत इंसान से मुताल्लिक़ पॉज़िटिव और निगेटिव हर दो पहलू को वाज़ेह करके इंसानी हस्ती के बड़प्पन का एलान किया है और बतलाया है कि कायनात के पैदा करने वाले और बनाने-संवारने वाले की क़ुदरत में इंसान की पैदाइश 'सबसे बेहतर' का दर्जा रखती है और

इसी वजह से वह तमाम कायनात के मुक़ाबले में 'बड़े होने और अज़ीम होने' का हक़दार है और अपने कामों और तरीक़ों की वजह से बेहतर। वही अल्लाह की अमानत का अलमबरदार होकर 'अल्लाह का ख़लीफ़ा' के मंसब पर बने रहने का हक़ रखता है और जब यह सब कुछ उसमें मौजूद है तो फिर यह कैसे मुम्किन था कि उसकी हस्ती को यों ही बेमक़्सद और बेनतीजा छोड़ दिया जाता।

'क्या लोगों (इंसानों) ने यह गुमान कर लिया है कि वे बेमक़्सद छोड़ दिए जाएंगे?'

(अल-क़ियाम : 75/36)

और ज़रूरी है कि अक़्ल व शऊर के इस पैकर को तमाम कायनात में नुमायां बनाकर नेकी व बुराई की तमीज़ अता की जाए और बुराई से परहेज़ और भलाई के अख़्तियार का मुकल्लफ़ (ज़िम्मेदार) बनाया जाए।

'(अल्लाह तआला ने) इंसान को पैदा किया और फिर (नेकी और बदी की) राह दिखाई।'

(ताहा 20/50)

'फिर हमने इंसान को दोनों रास्ते (नेकी और बुराई) दिखाए।'

(अल-बलद 90/10)

ग़रज़ क़ुरआन मजीद की याददेहानी और दावत, भलाइयों को करने और बुराइयों को रोकने और रुश्द व हिदायत का मुख़ातब और शुरू और आख़िर का मेह्वर व मर्कज़ सिर्फ़ यही हस्ती तो है, जिसको 'इंसान' कहते हैं और यही वजह है कि क़ुरआन ने पहले इंसान की पैदाइश की कैफ़ियतों और तफ़्सीलों को नज़रअंदाज़ करके उसके शुरू और आख़िर को ही यह अहमियत दी है—

ख़िरदमंदों से क्या पूछूं कि मेरी इब्तिदा क्या है
कि मैं इस फ़िक्र में रहता हूं मेरी इंतिहा क्या है

—इक़बाल

इल्मी बहसों से मुताल्लिक़ इस्लामी नुक़्ता-ए-नज़र (दृष्टिकोण)

असल में इसकी इल्मी बहसों के लिए इस्लाम की तालीम यह है कि जो मसुअले यक़ीन और मुशाहदे के इल्म की हद तक पहुंच चुके हैं और क़ुरआनी इल्म और अल्लाह की वह्य इन हक़ीक़तों का इंकार नहीं करती, क्योंकि 'क़ुरआन मुशाहदे और हिदायत का कभी भी इंकार नहीं करता' तो उन को बिना किसी शक के मान लिया जाए, इसलिए कि ऐसी हक़ीक़तों का इंकार बेजा तअस्सुब और तंगनज़री के सिवा और कुछ नहीं और जो पहले अभी तक यक़ीन की इन मंज़िलों तक नहीं पहुंचे जिनको मुशाहदा और हिदायत कहा जा सके जैसा कि बहस में आया मसुअला है, तो इनके बारे में क़ुरआन के मतलबों में तावील नहीं करनी चाहिए और ख़ामख़ाही उनको नई तहक़ीक़ के सांचे में ढालने की कोशिश हरगिज़ जायज़ नहीं, बल्कि वक़्त का इंतिज़ार करना चाहिए कि वे मसुअले अपनी हक़ीक़त को इस तरह ज़ाहिर कर दें कि उनके इंकार से मुशाहदा और हक़ीक़त का इंकार लाज़िम आ जाए, इसलिए कि यह हक़ीक़त है कि इल्मी बहसों को तो बार-बार अपनी जगह से हटना पड़ा है। मगर क़ुरआनी इल्मों को कभी एक बार भी अपनी जगह से हटने की ज़रूरत पेश नहीं आयी और जब कभी इल्मी मसुअले बहस व नज़र के बाद यक़ीन और मुशाहदे की हद तक पहुंचे हैं, वे एक नुक़्ता भी इससे आगे नहीं गए जिसको क़ुरआन ने पहले वाज़ेह कर दिया है।

Maktab-e-Ashraf

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम

आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश, फ़रिश्तों को सज्दे का हुक्म, शैतान का इंकार

अल्लाह तआला ने आदम को मिट्टी से पैदा किया और उनका ख़मीर तैयार होने से पहले ही उसने फ़रिश्तों को यह ख़बर दी कि वह बहुत जल्द मिट्टी से एक मख़्लूक़ पैदा करने वाला है जो 'बशर' कहलाएगी और ज़मीन में हमरी ख़िलाफ़त का शरफ़ हासिल करेगी।

आदम का ख़मीर मिट्टी से गूंधा गया और ऐसी मिट्टी से गूंधा गया जो नित नई तब्दीली क़ुबूल कर लेने वाली थी। जब यह मिट्टी पक्की ठीकरी की तरह आवाज़ देने और खनखनाने लगी तो अल्लाह तआ़ला ने उस मिट्टी के पुतले में रूह फूंकी और वह एक ही वक़्त में गोश्त-पोस्त, हड्डी-पुट्ठे का ज़िंदा इंसान बन गया और इरादा, शऊर, हिस्स, अक़्ल और विज्दानी जज़्बात व कैफ़ियात का हामिल नज़र आने लगा। तब फ़रिश्तों को हुक्म हुआ कि तुम उसके सामने सज्दे में गिर जाओ, फ़ौरन तमाम फ़रिश्तों ने इर्शाद की तामील की, मगर इब्लीस (शैतान) ने घमंड और सरकशी के साथ साफ़ इंकार कर दिया।

सज्दे से इन्कार करने पर इब्लीस का मुनाज़रा

अल्लाह तआ़ला अगरचे ग़ैब का इल्म रखने वाला और दिलों के भेदों तक को जानने वाला है और माज़ी, हाल और मुस्तक़्बिल (भूत, वर्तमान, भविष्य) सब उसके लिए बराबर हैं, मगर उसने इम्तिहान व आज़माइश के

लिए इब्लीस (शैतान) से सवाल किया–

'किस बात ने झुकने से रोका, जबकि मैंने हुक्म दिया था?'

(आराफ़ 7/12)

इब्लीस ने जवाब दिया–

'इस बात ने कि मैं आदम से बेहतर हूं, तूने मुझे आग से पैदा किया, इसे मिट्टी से।' (आराफ़ 7/12)

शैतान का मक़्सद यह था कि मैं आदम से अफ़ज़ल हूं, इसलिए कि तूने मुझको आग से बनाया है और आग बुलन्दी और बरतरी चाहती है, और आदम 'ख़ाकी मख़्लूक़' भला ख़ाक को आग से क्या निस्बत? ऐ अल्लाह! फिर यह तेरा हुक्म कि नारी (नार यानी आग से बना हुआ) ख़ाकी (ख़ाक यानी मिट्टी से बना हुआ) को सज्दा करे, क्या इंसाफ़ के मुताबिक़ है? मैं तमाम हालतों में आदम से बेहतर हूं इसलिए वह मुझे सज्दा करे, न कि मैं उसके सामने सज्दा करूं? मगर बदबख़्त शैतान अपने घमंड में चूर होने की वजह से भूल गया कि जब तुम और आदम दोनों अल्लाह की मख़्लूक़ हो तो मख़्लूक़ की हक़ीक़त ख़ालिक़ से बेहतर, ख़ुद वह मख़्लूक़ भी नहीं जान सकती, वह अपने घमंड और ग़ुरूर में यह न समझ सका कि मर्तबा की बुलन्दी और पस्ती उस माद्दे की बुनियाद पर नहीं है, जिससे किसी मख़्लूक़ का ख़मीर तैयार किया गया है, बल्कि उसकी उन सिफ़तों पर है जो कायनात के पैदा करने वाले ने उसके अन्दर रख दिए हैं।

बहरहाल शैतान का जवाब, चूंकि घमंड और ग़ुरूर की जहालत पर क़ायम था, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उस पर वाज़ेह कर दिया कि जहालत से पैदा होने वाले घमंड व ग़ुरूर ने तुझको इतना अंधा कर दिया है कि तू अपने पैदा करने वाले के हक़ और पैदा करने वाला होने की वजह से उसके एहतराम से भी मुन्किर हो गया इसलिए मुझको ज़ालिम क़रार दिया और यह न समझा कि तुझको तेरी जहालत ने हक़ीक़त के समझने से आजिज़ बना दिया है, पस तू अब इस सरकशी की वजह से अबदी हलाकत का हक़दार है और यही तेरे अ़मल का क़ुदरती बदला है।

इब्लीस ने मोहलत तलब की

इब्लीस ने जब देखा कि कायनात के पैदा करने वाले के हुक्म के ख़िलाफ़ करने, तकब्बुर और रऊनत और अल्लाह पर ज़ुल्म के इलज़ाम ने हमेशा के लिए मुझको रब्बुलआलमीन की आग़ोशे रहमत से मरदूद और जन्नत से महरूम कर दिया, तो तौबा और नदामत की जगह अल्लाह से यह दरख़्वास्त की कि क़ियामत आने तक मुझको मोहलत दे और इस लम्बी मुद्दत के लिए ज़िंदगी की रस्सी लम्बी कर दे।

अल्लाह की हिक्मत का तक़ाज़ा भी यही था, इसलिए उसकी दरख़्वास्त मंज़ूर कर ली गयी। यह सुनकर अब उसने फिर एक बार अपनी शैतानी का मुज़ाहरा किया, कहने लगा : जब तूने मुझको रांदा-ए-दरगाह कर ही दिया, तो जिस आदम की बदौलत मुझे यह रुस्वाई नसीब हुई, मैं भी आदम की औलाद की राह मारूंगा और उनके सामने-पीछे, आस-पास और चारों ओर से होकर उनको गुमराह करूंगा और उनकी अक्सरीयत को तेरा नासपास और नाशुक्रगुज़ार बना छोड़ूंगा अलबत्ता तेरे 'मुख़्लिस बन्दें' मेरे इग़्वा के तीर के घायल न हो सकेंगे और हर तरह महफ़ूज़ रहेंगे।

अल्लाह ने फ़रमाया, हम को इसकी क्या परवाह हमारी फ़ितरत का क़ानून, मुकाफ़ाते अ़मल और पादाशे अ़मल अटल क़ानून है। पस जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा और जो बनी आदम मुझसे रूगरदानी करके तेरी पैरवी करेगा, वह तेरे ही साथ अल्लाह के अज़ाब का हक़दार होगा। जा, अपनी ज़िल्लत और रुस्वाई और ख़राब क़िस्मत के साथ यहां से दूर हो और अपनी और अपने पैरोकारों की अबदी लानत (जहन्नम) का इंतिज़ार करा।

आदम ﷺ और दूसरे फ़रिश्ते

आदम ﷺ की ख़िलाफ़त—जैसा कि पहले बयान किया गया है, जब अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम ﷺ को पैदा करना चाहा तो फ़रिश्तों को ख़बर दी कि मैं ज़मीन पर अपना ख़लीफ़ा बनाना चाहता हूं जो एख़्तियार और इरादे का मालिक होगा और मेरी ज़मीन पर, जिस क़िस्म का तसर्रुफ़

(इस्तेमाल का हक़ हासिल) करना चाहेगा, कर सकेगा और अपनी ज़रूरतों के लिए अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ काम ले सकेगा, गोया वह मेरी क़ुदरत और मेरे तसर्रुफ़ (इस्तेमाल) व अख़्तियार का 'मज़्हर' होगा।

फ़रिश्तों ने यह सुना तो हैरत में रह गए और अल्लाह के दरबार में अर्ज़ किया कि अगर इस हस्ती की पैदाइश की हिक्मत यह है कि वह दिन-रात तेरी तस्बीह व तहलील में लगा रहे और तेरी तक़्दीस और बुज़ुर्गी के गुन गाए तो इसके लिए हम हाज़िर हैं, जो हर लम्हा तेरी हम्द व सना करते और बे-चून व चरा तेरा हुक्म 'बजा लाते हैं। हम को तो इस 'ख़ाकी' से फ़ित्ना व फ़साद की बू आती है। ऐसा न हो कि यह तेरी ज़मीन में ख़राबी और ख़ूंरेज़ी पैदा कर दे? ऐ अल्लाह! तेरा यह फ़ैसला आख़िर किस हिक्मत पर मब्नी है?

बारगाहे इलाही से एक तो उनको यह अदब सिखाया गया कि मख़्लूक़ को ख़ालिक़ के मामलों में जल्दबाज़ी से काम न लेना चाहए और उसकी जानिब से हक़ीक़ते हाल के ज़ाहिर होने से पहले ही शक व शुब्हा को सामने न लाना चाहिए और वह भी इस तरह कि इसमें अपनी बरतरी और बड़ाई का पहलू निकलता हो, कायनात का पैदा करने वाला इन हक़ीक़तों को जानता है, जिनको तुम नहीं जानते और उसके इल्म में वह सब कुछ है, जो तुम नहीं जानते।

आदम अलैहिस्सलाम की तालीम (इल्म का सिखाना) और फ़रिश्तों का इज्ज़ का इक़रार

इस जगह फ़रिश्तों का सवाल इसलिए न था कि वे अल्लाह तआ़ला से मुनाज़रा या उसके फ़ैसले के मुताल्लिक़ मूशगाफ़ी करें, बल्कि वे आदम की पैदाइश का सबब मालूम करना चाहते थे और यह कि उसको ख़लीफ़ा बनाने में क्या हिक्मत है? उनकी ख़्वाहिश थी कि इस हिक्मत का राज़ उन पर भी खुल जाए, इसलिए उनके तर्ज़े अदा और मक़्सद की ताबीर में कोताही पर तंबीह के बाद अल्लाह तआ़ला ने यह पसन्द फ़रमाया कि उनके इस सवाल का जवाब जो ज़ाहिर में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की तहक़ीर पर मब्नी है, अ़मल व फ़ेल के ज़रिए इस तरह दिया जाए कि उनको अपने आप आदमी

की बरतरी और अल्लाह की हिक्मत की बुलन्दी और ऊंचाई को न सिर्फ़ मानना पड़े, बल्कि अपनी दरमांदगी और इज्ज़ का भी बदीही तौर पर मुशाहदा हो जाए, इसलिए हज़रत आदम को अपनी सबसे बड़ी मर्तबे वाली सिफ़त 'इल्म' से नवाज़ा और उनको चीज़ों का इल्म अता फ़रमाया और फिर फ़रिश्तों के सामने पेश करके इर्शाद फ़रमाया कि तुम इन चीज़ों के बारे में क्या इल्म रखते हो? उनके पास इल्म न था, क्या जवाब देते? मगर अल्लाह की दरगाह से क़ुर्ब रखते थे, समझ गए कि हमारा इम्तिहान मक़्सूद नहीं है, क्योंकि इससे पहले हमको इसका इल्म ही कब दिया गया है कि आज़माइश की जाती, बल्कि यह तंबीह़ मक़सूद है कि 'ख़िलाफ़ते इलाहिया का मदार तस्बीह व तहलील की कसरत और तक़्दीस व तम्जीद पर नहीं बल्कि 'इल्म' नामी सिफ़त पर है, इसलिए कि इरादा, अख़्तियार, क़ुदरत व तसर्रुफ़ और क़ुदरत का अख़्तियार या दूसरे लफ़्ज़ों में यों कहिए कि हुकूमत इल्म की ज़मीनी सिफ़त के बग़ैर नामुम्किन है। पस जबकि आदम को अल्लाह तआ़ला ने अपने इल्म की सिफ़त का मुकम्मल मज़्हर बनाया है तो बेशक वही अरज़ी ख़िलाफ़त का हक़दार है, न कि हम और हक़ीक़त भी यह कि अल्लाह के फ़रिश्ते अपनी ज़िम्मेदारियों के अलावा हर क़िस्म की दुन्यवी ख़्वाहिशों और ज़रूरतों से बे-नियाज़ हैं। इसलिए वे उनके इल्म को भी नहीं जानते थे और आदम को चूंकि इन सबसे वास्ता पड़ता था, इसलिए उनका हाल इसके लिए एक फ़ितरी बात थी जो रब्बुल-आलमीन की कामिल रबूबियत की बख़्शिश से अता हो और उसको वह सब कुछ बता दिया गया हो जो उसके लिए ज़रूरी था।

गोया हज़रत आदम को इल्म की सिफ़त से इस तरह नवाज़ा गया कि फ़रिश्तों के लिए भी उनकी बरतरी और ख़िलाफ़त के हक़ के इक़रार के अलावा कोई रास्ता न रहा और यह मानना पड़ा कि अगर हम फ़रिश्ते ज़मीन पर अल्लाह के ख़लीफ़ा बनाए जाते तो कायनात के तमाम भेदों को जानते होते और क़ुदरत ने जो ख़वास और उलूम दिए हैं, उनसे एक साथ वाक़िफ़ होते, इसलिए कि हम न खाने-पीने के मुहताज हैं कि ज़मीन में दी गई रोज़ी और ख़ज़ानों की खोज करते, न मरज़ का ख़ौफ़ कि क़िस्म-क़िस्म की दवाओं, चीज़ों की ख़ासियतों, कीमियाई मिलावटों, तबई चीज़ों और आसमानी बातों

के फ़ायदे, डाक्टरी ईजादों, नफ़्सानी और वज्दानी मालूमात और इसी तरह के बहुत से और क़ीमती उलूम व फ़ुनून के भेद और उसकी हिक्मतों को जान सकते। बेशक यह सिर्फ़ हज़रत इंसान के लिए मौजूं था कि वह ज़मीन पर अल्लाह का ख़लीफ़ा बने और उन तमाम हक़ाइक़, मआरिफ़ और उलूम व फ़ुनून से वाक़िफ़ होकर नियाबतो इलाही का सही हक़ अदा करे।

हज़रत आदम का जन्नत में ठहरना और हव्वा का ज़ौजा बनना

हज़रत आदम ﷺ एक मुद्दत तक अकेले ज़िंदगी बसर करते रहे मगर अपनी ज़िंदगी और राहत व सुकून में एक वहशत और ख़ला महसूस करते रहे थे और उनकी तबियत और फ़ितरत में किसी मूनिस व ग़मख़्वार की याद नज़र आती थी। चुनांचे अल्लाह तआ़ला ने हज़रत हव्वा को पैदा किया और हज़रत आदम 'अपना हमदम और साथी' पा कर बहुत ख़ुश हुए और दिल में इत्मीनान महसूस किया। हज़रत आदम व हव्वा को इजाज़त थी कि वे जन्नत में रहें-सहें और उसकी हर चीज़ से फ़ायदा उठाएं, मगर एक पेड़ को निशान-ज़द करके बता दिया गया कि उसको न खाएं, बल्कि उसके पास तक न जाएं।

आदम ﷺ का जन्नत से निकलना

अब इब्लीस को एक मौक़ा हाथ आया और उसने हज़रत आदम व हव्वा के दिल में यह वस्वसा डाला कि यह पेड़ जन्नत का पेड़ है। इसका फल खाना जन्नत में हमेशा आराम व सुकून और अल्लाह का क़ुर्ब पाने की ज़मानत देता है और क़स्में खाकर उनको बताया कि मैं तुम्हारा ख़ैरख़्वाह हूं, दुश्मन नहीं हूं। यह सुनकर हज़रत आदम के इंसानी और बशरी ख़्वास में सबसे पहले निस्यान (भूल-चूक) ने ज़ुहूर किया और यह भुला बैठे कि अल्लाह का यह हुक्म ज़रूरी था, न कि रब की ओर से कोई मश्विरा। आख़िरकार जन्नत के हमेशा के क़ियाम और अल्लाह के क़ुर्ब के अ़ज़्म में लग़्ज़िश पैदा कर दी और उन्होंने उस पेड़ का फल खा लिया। उसका खाना था कि बशरी लवाज़िम (इंसानी ज़रूरतें) उभरने लगीं। देखा तो नंगे हैं और लिबास से महरूम। जल्द-जल्द आदम व

हव्वा दोनों पत्तों से सतर ढांकने लगे—गोया इंसानी तमद्दुन की यह शुरूआत थी कि उसने ढांकने के लिए सबसे पहले पत्तों का इस्तेमाल किया।

इधर यह हो रहा था कि अल्लाह तआ़ला का इताब (ग़ज़ब) उतरा और आदम से पूछ-ताछ हुई कि मना करने के बावजूद यह हुक्म का न मानना क्यों? आदम आख़िर आदम थे, अल्लाह के दरबार के मक़्बूल थे, इसलिए शैतान की तरह मुनाज़रा नहीं किया और अपनी ग़लतियों को तावीलों के परदे में छुपाने की बेमतलब की कोशिश से बाज रहें। नदामत व शर्मसारी के साथ इक़रार किया कि ग़लती ज़रूर हुई लेकिन इसकी वजह तमर्रुद व सरकशी नहीं, बल्कि इंसान होने के नाते भूल-चूक इसकी वजह है, फिर भी ग़लती है, इसलिए तौबा व इस्तग़फ़ार करते हुए माफ़ कर दिए जाने की दर्ख़्वास्त करता हूं।

अल्लाह तआ़ला ने उनके इस उज्र को क़ुबूल फ़रमाया और माफ़ कर दिया, मगर वक़्त आ गया था कि हज़रत आदम ﷺ अल्लाह की ज़मीन पर 'ख़िलाफ़त का हक़' अदा करें, इसलिए हिक्मत के तक़ाज़े के तौर पर साथ ही यह फ़ैसला सुनाया कि तुमको और तुम्हारी औलाद को एक तय वक़्त तक ज़मीन पर क़ियाम करना होगा और तुम्हारा दुश्मन इब्लीस अदावत के अपने तमाम सामान के साथ वहां मौजूद रहेगा और तुमको इस तरह मलकूती और ताग़ूती दो टकराने वाली ताक़तों के दर्मियान ज़िंदगी बसर करनी होगी। इसके बावजूद अगर तुम और तुम्हारी औलाद मुख़्लिस और सच्चे बन्दे और सच्चे नायब साबित हुए तो तुम्हारा असल वतन 'जन्नत' हमेशा की तरह तुम्हारी मिल्कियत में दे दिया जाएगा, इसलिए तुम और हव्वा यहां से जाओ और मेरी ज़मीन पर बसो और अपनी मुक़र्रर की हुई ज़िंदगी तक उबूदियत का हक़ अदा करते रहो और इस तरह इंसानों के बाप और अल्लाह तआ़ला के ख़लीफ़ा आदम अ़लैहि० ने जीवन-साथी हज़रत हव्वा के साथ अल्लाह की ज़मीन पर क़दम रखा।

आदम ﷺ के ज़िक्र से मुताल्लिक़ क़ुरआनी आयतें

क़ुरआन मजीद में हज़रत आदम ﷺ का नाम 25 बार पचीस आयतों में आया है। और अंबिया ﷺ के तज़्किरों में सबसे पहला तज़्किरा अबुल

बशर हज़रत आदम ﷺ का है जो नीचे लिखी सूरतों में बयान किया गया है–

सूरः बक़रः, आराफ़, इसरा, कह्फ़ और ताहा में नाम और सिफ़तों दोनों के साथ और सूरः हजर व साद में से सिर्फ़ सिफ़तों के ज़िक्र के साथ और आले इमरान मायदा और मरयम और यासीन में सिर्फ़ ज़िम्नी तौर पर नाम लिया गया है।

आदम के क़िस्से में कुछ अहम इबरतें (नसीहतें)

यों तो आदम ﷺ के वाक़िए में अनगिनत पंद और नसीहतों और मस्अलों का ज़ख़ीरा मौजूद है और उनका एहाता इस मक़ाम पर नामुम्किन है फिर भी कुछ अहम इबरतों की तरफ़ इशारा कर देना मुनासिब मालूम होता है।

1. अल्लाह तआ़ला की हिक्मतों के भेद अनगिनत और बेशुमार हैं और यह नामुम्किन है क कोई हस्ती, चाहे वह जितनी ही अल्लाह की बारगाह में मुक़र्रब हो, इन तमाम भेदों को जान जाए। इसीलिए अल्लाह के फ़रिश्ते इंतिहाई मुक़र्रब होने के बावजूद आदम ﷺ की ख़िलाफ़त की हिक्मत के जानकार न हो सके और जब तक मामले की सारी हक़ीक़त सामने न आ गई, वे हैरान व परेशान ही रहे।

2. अल्लाह तआ़ला की इनायत व तवज्जोह अगर किसी मामूली चीज़ की ओर भी हो जाए तो यह बड़े से बड़े मर्तबा और जलीलुलक़द्र मंसब पर पहुंच सकती है और शरफ़ व बुज़ुर्गी के ओहदे से नवाज़ी जा सकती है। ख़ाक की एक मुट्ठी को देखिए और फिर 'अल्लाह के ख़लीफ़ा' होने के मंसब पर नज़र डालिए और फिर उसके नुबुव्वत व रिसालत के मंसब पर नज़र डालिए, मगर उसकी तवज्जोह का फ़ैज़ान बख़्त व इत्तिफ़ाक़ की बदौलत या हिक्मत के बग़ैर नहीं होता, बल्कि उस चीज़ की इस्तेदाद के मुनासिब बेनज़ीर हिक्मतों और मस्लहतों के निज़ाम से जुड़ा होता है।

3. इंसान को अगरचे हर क़िस्म का शरफ़ मिला और हर तरह की बुज़ुर्गी और बडप्पन नसीब हुआ, फिर भी उसकी पैदाइशी और तबई कमज़ोरियां

अपनी जगह उसी तरह क़ायम रहीं और बशर और इंसान होने की वह कमज़ोरी अपनी जगह बाक़ी रही। असल में यही वह चीज़ थी जिसने हज़रत आदम ﷺ पर इस बुज़ुर्गी और बड़े दर्जे के होते हुए ऐसी भूल लगा दी और वह इब्लीस के वस्वसे में आ गए।

4. ख़ताकार होने के बावजूद अगर इंसान का दिल शर्म और तौबा की तरफ़ माइल हो तो उसके लिए रहमत का दरवाज़ा बन्द नहीं है और उस बारगाह तक पहुंचने में नाउम्मीदी की अंधी घाटी नहीं पड़ती। अलबत्ता ख़ुलूस व सदाक़त शर्त है और जिस तरह हज़रत आदम ﷺ की भूल-चूक की माफ़ी उसी दामन से वाबस्ता है, उसी तरह उनकी तमाम नस्ल के लिए भी अफ़्व और दुनिया की रहमत का भारी-भरकम दामन फैला हुआ है। किसी आरिफ़ ने क्या ख़ूब कहा है–

बाज़ आ, बाज़ आ हर आंचे हस्ती बाज़ आ
गर काफ़िर व गब्र व बुतपरस्ती बाज़ आ।
ईं दर गहे मादर गहे नाउम्मीदी नीस्त
सद बार अगर तौबा शिकस्ती बाज़ आ।

अल्लाह के दरबार में गुस्ताख़ी या बग़ावत बड़ी-से-बड़ी नेकी और भलाई को भी तबाह कर देती है और हमेशा की ज़िल्लत व घाटे की वजह बन जाती है। इब्लीस का वाक़िया इबरतनाक वाक़िया है और उसकी हज़ारों साल की इबादतगुज़ारी का जो हश्र अल्लाह के दरबार में गुस्ताख़ी और बग़ावत की वजह से हुआ, वह सैंकड़ों बार इबरत हासिल करने की चीज़ है–

गया शैतान मारा एक सज्दे के न करने से
अगर लाखों बरस सज्दे में सर मारा तो क्या मारा।

पस इबरत हासिल करो, ऐ इबरत की आंख रखने वालो! कि किस तरह–

तकब्बुर अज़ाज़ील रा ख़्वार कर्द। बज़िंदाने लानत गिरफ़्तार कर्द।

हज़रत आदम ﷺ के क़िस्से से मुताल्लिक़ मसाअले

मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्युहारवी रह० ने हज़रत आदम के क़िस्से

के तअ़ल्लुक से बारह मसअ़लों का ज़िक्र किया है, इनमें से ज़्यादातर की शक्ल सिर्फ़ इल्मी (Academic) है, यानी इनका ताल्लुक़ वाज़ व नसीहतों से नहीं है। इनमें से तीन मसअलों को बयान किया जाता है, क्योंकि इनका जानना पढ़ने वालों के लिए ज़रूरी है।

हज़रत हव्वा की पैदाइश किस तरह हुई?

(क) कुरआन मजीद में इसके बारे में सिर्फ़ इतना ही ज़िक्र है—

'और उस (नफ़्स) से इस जोड़े को पैदा किया।' (अन-निसा 4 : 1)

यह कुरआनी नज़्म हव्वा की पैदाइश की तफ़्सील नहीं बताती, इसलिए दोनों बातें हो सकती हैं—

एक यह कि हव्वा हज़रत आदम ﷺ की पसली से पैदा हुई हैं, जैसा कि मशहूर है और बाइबिल में भी इसी तरह ज़िक्र किया गया है।

दूसरे यह कि अल्लाह ने इंसानी नस्ल को इस तरह पैदा किया कि मर्द के साथ उसी की जिंस से एक दूसरी मख़्लूक़ भी बनाई, जिसको औरत कहा जाता है और जो मर्द की जीवन-साथी बनती है।

जहां तक पहली बात का ताल्लुक़ है तो बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायतों में भी ज़रूर आता है कि औरत पसली से पैदा हुई है। इसका मतलब मशहूर तह़क़ीक़ करने वाले और पारखी अल्लामा क़ुरतबी रह० ने यह बयान किया है कि असल में औरत की पैदाइश को पसली से तश्बीह (उपमा) दी गई है, यानी उसका हाल पसली ही की तरह है। अगर इसकी टेढ़ को सीधा करना चाहोगे तो वह टूट जाएगी, तो जिस तरह पसली के तिरछेपन के बावजूद उससे काम लिया जाता है और उसकी टेढ़ को दूर करने की कोशिश नहीं की जाती। उसी तरह औरतों के साथ नर्मी और मुलायमत का मामला करना चाहिए, वरना सख़्ती के बरताव से ख़ुशगवारी की जगह ताल्लुक़ के बिखरने-टूटने की शक्ल पैदा होगी।

मुख़्तसर यह कि ऊपर की आयत की तफ़्सीर में तह़क़ीक़ करने वालों की राय उस दूसरी तफ़्सीर की ओर माइल है, जिसका हासिल यह है कि

Maktabe Ashraf

कुरआन अज़ीज़ सिर्फ़ हव्वा की तख़्लीक़ का ज़िक्र नहीं कर रहा है, बल्कि 'औरत की पैदाइश' के बारे में यह हक़ीक़त भी बताता है कि वह भी मर्द ही की जिंस से है और इसी तरह मख़्लूक़ हुई है।

(ख) हज़रत आदम ﷺ जबकि नबी हैं, तो उनसे अल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी का क्या मतलब? नबी तो मासूम होता है और 'इस्मत' नाफ़रमानी और गुनाह की ज़िद (उलट) है?

इस मस्अले के वाज़ेह करने से पहले थोड़े से लफ़्ज़ों में 'इस्मत' (बे-गुनाह) के मानी और उसका मतलब बयान किया जाता है।

नबियों की इस्मत का मतलब

कायनात के पैदा करने वाले ने इंसान की तख़्लीक़ एक दूसरे की ज़िद्द ताक़तों के साथ फ़रमाई है, यानी उसको नेक व बद दोनों क़िस्म की ताक़तें दी गई हैं। वह गुनाह भी कर सकता है और नेकी भी; वह बुराई का इरादा भी रखता है और ख़ैर का इरादा भी; और यही उसके इंसानी शरफ़ की ख़ास बात है। इन टकराने वाली ताक़तों के रखने वाले 'इंसान' में से अल्लाह तआ़ला इंसानी रुश्द व हिदायत और अल्लाह से मिलने के लिए कभी-कभी किसी आदमी को चुन लेते और उसको अपना रसूल, नबी और पैग़म्बर बना लेते हैं। इस सिलसिले की आख़िरी कड़ी ज़ाते अक़दस मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हैं। जब यह हस्ती 'नुबूवत' के लिए चुन ली जाती है तो उसके लिए यह ज़रूरी है कि वह अ़मल और इरादे की ज़िंदगी में हर क़िस्म के गुनाह से पाक और हर तरह की नाफ़रमानियों से दूर हो, ताकि पैग़ामे इलाही के मंसब में अल्लाह की सही नियाबत कर सके। इस तरह वह एक इंसान और बशर भी है। खाता है, पीता है, सोता है, बाल-बच्चों की ज़िंदगी से भी जुड़ा हुआ है और वह हर क़िस्म के अ़मली और इरादी गुनाहों से पाक भी है। क्योंकि वह हर क़िस्म की नेकी के लिए हादी व मुर्शिद और अल्लाह का नायब है और अगरचे वह दूसरे इंसान की तरह एक दूसरे की ज़िद ताक़तों का रखने वाला ज़रूर है, लेकिल अ़मल और इरादे में उससे हर क़िस्म के बदी के ज़ाहिर होने को नामुम्किन और मुहाल कर गया दिया है, ताकि उसका हर

एक इरादा, हर एक अ़मल और एक-एक क़ौल व ग़रज़, हर एक हरकत व सुकून, कायनात के लिए उस्वा और नमूना बन सके।

अलबत्ता बशर और इंसान होने की वजह से भूल-चूक और लग़्ज़िश का इम्कान बाक़ी रहता है और कभी-कभी अ़मली शक्ल भी अख़्तियार कर लेता है, मगर फ़ौरन उस पर चेतावनी दे दी जाती है और वह उससे किनारापन अख़्तियार कर लेता है। भूल-चूक तो अपने मफ़हूम में ज़ाहिर है, लेकिन लग़्ज़िश एक ऐसी हक़ीक़त को कहते हैं जहां न अ़मल और किरदार में तमर्रुद और सरकशी का दख़ल हो और न क़स्द व इरादे के साथ हुक्म के ख़िलाफ़ चलने का और साथ ही वह अ़मल अपनी हक़ीक़त और माहियत के एतबार से बहुत बुरा और बेशर्मी न हो, बल्कि इन तमामों को सामने रखकर वह अपनी ज़ात में अगरचे इबाहत और जवाज़ का दर्जा रखता हो, मगर करने वाले की हस्ती की शान के मुताबिक़ न हो, बल्कि उसके भारी दर्जे के सामने सुबुक और हल्का नज़र आता हो। यह सब कुछ होते हुए इसलिए अ़मल में आ गया कि अ़मल करने वालों की निगाह में उसका इस तरह करना अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ न था, लेकिन नबी पर चूंकि अल्लाह की मुस्तक़िल हिफ़ाज़त व निगरानी रहती है, इसलिए फ़ौरन उसको चेतावनी दे दी जाती है कि यह तुम्हारी जलालते क़द्र और रुत्बे की बुलन्दी की शान के ख़िलाफ़ है और क़तई ग़ैर-मुनासिब है। हक़ीक़त के इस मज्मूए का नाम नबियों की इस्मत है।

हज़रत आदम ﷺ की इस्मत

इस हक़ीक़त के वाज़ेह कर देने के बाद अब हज़रत आदम ﷺ के वाकिए पर ग़ौर किया जाता है, तो पता चलता है कि सूरः बक़रः में यह साफ़ कह दिया गया कि हज़रत आदम ﷺ की यह ग़लती न गुनाह थी और न नाफ़रमानी, बल्कि मामूली क़िस्म की लग़्ज़िश थी—

'शैतान ने इन दोनों से लग़्ज़िश करा दी।' (बक़रः 2 : 36)

और इसके बाद सूरः आराफ़ में फ़रमाया, *'शैतान ने इनको फ़ुसला दिया।'* (आराफ़ 7 : 20) बल्कि सूरः ताहा में इस लग़्ज़िश और वस्वसे की

वजह ख़ुद ही बयान करके हज़रत आदम ﷺ को हर क़िस्म के इरादी और अ़मली गुनाह से पाक ज़ाहिर कर दिया—

'और बेशक हमने आदम से एक इक़रार लिया था, पस वह उसको भूल गया और हमने पक्के इरादे वाला नहीं पाया।' (ताहा 20 :116)

यह फ़रमाकर अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम ﷺ की अस्मत के मस्अले को ज़्यादा-से-ज़्यादा मुहकम और मज़बूत बना दिया।

3. हज़रत आदम ﷺ के वाक़िए में 'मलिक' (फ़रिश्ता) और 'जिन्न' का ज़िक्र भी आया है। ये दोनों अल्लाह की मुस्तक़िल मख़्लूक़ हैं या सिर्फ़ दो क़ूवतों (ताक़तों) का नाम है जो 'मलूकूती क़ूवत' और 'शैतानी क़ूवत' के नाम से जाने जाते हैं।

फ़रिश्ता

क़ुरआन पाक और रसूल ﷺ की हदीसों ने जो कुछ हमको बताया है, उसका हासिल यह है कि हमको न 'फ़रिश्ता' की तख़्लीक़ी हक़ीक़त बताई गई है और न वे हमको नज़र आते हैं। अलबत्ता हमारे लिए यह यक़ीन व एतक़ाद ज़रूरी करार दिया गया है कि हम उनके वजूद को मान लें और उनको मुस्तक़िल मख़्लूक़ जानें।

जिन्न

इसी तरह 'जिन्न' भी अल्लाह तआ़ला की मुस्तक़िल मख़्लूक़ हैं जिनकी पैदाइश की हक़ीक़त को हम पूरी तरह नहीं जानते और न आम इंसानी आबादी की तरह वे हमको नज़र नहीं आते हैं। लेकिन क़ुरआन हकीम ने जो तफ़्सील इस मख़्लूक़ के बारे में बताई है, वह हमारे लिए ज़रूरी क़रार देती है कि हम यह एतक़ाद और यक़ीन रखें कि वे भी इंसान की तरह मुस्तक़िल मख़्लूक़ हैं और उसी की तरह शरीअत पर चलने को मजबूर भी। इनमें पैदा करने और बढ़ने का भी सिलसिला है और इनमें नेक और बद भी हैं।

इब्लीस या शैतान

कुरआन मजीद की आयतों से मालूम होता है कि शैतान भी 'जिन्न' ही की नस्ल से है और इब्लीस (शैतान) ने अल्लाह के सामने ख़ुद यह माना कि इसकी तख़्लीक़ (आग) से हुई है।

लेखक का इज़ाफ़ा

वाज़ व नसीहत के अलावा हज़रत आदम ﷺ का क़िस्सा इसलिए अहम है कि इससे इंसान की तख़्लीक़ के मक़्सद, धरती पर उसकी हैसियत और इस हैसियत की रोशनी में उनके अ़मल और कोशिशों के फैलाव पर रोशनी पड़ती है, जिसका ख़ुलासा यह है—

1. अल्लाह तआ़ला ने धरती पर इंसान को अपना ख़लीफ़ा बनाकर भेजा है जो उसकी क़ुदरत और तसर्रुफ़ और अख़्तियार को ज़ाहिर करता है और इस हैसियत से उसकी कोशिश और अ़मल उसके पैदा किए जाने का मक़्सद है।

2. अल्लाह की ख़िलाफ़त का मदार तस्बीह व तह्लील के ज़्यादा होने और तक़्दीस व तम्जीद पर नहीं, बल्कि 'इल्म' की सिफ़त पर है, जिसके बग़ैर दुन्यावी हुकूमत नामुम्किन है—

3. अल्लाह तआ़ला ने इंसान को 'चीज़ों का इल्म' अता फ़रमाया है और अपनी सबसे भारी-भरकम सिफ़त 'इल्म' से नवाज़ा है, जिसका वह पूरी तरह मज़्हर है।

4. इंसान की फ़रिश्ते पर बरतरी की वजह 'इल्म' की सिफ़त है, तस्बीह व तह्लील नहीं। किसी ने कहा और क्या ख़ूब कहा है—

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इंसान को
वरना ताअ़त के लिए कुछ कम न थे कर्र व बयां।

अल्लामा इक़बाल के हज़रत आदम के जन्नत से रुख़्सत होने और ज़मीन पर तशरीफ़ लाने के मनाज़िर को विचार-आंख से देखते हुए नज़्म (कविता) में पेश किया है। इन नज़्मों को ज़ौक़ वालों की दिलचस्पी के लिए नीचे लिखा जाता है—

फरिश्ते आदम ﷺ को जन्नत से रुख़सत करते हैं

अता हुई है तुझे रोज़ व शब की बेताबी
ख़बर नहीं कि तू ख़ाकी है या कि सीमाबी
सुना है ख़ाक से तेरी नुमूद है लेकिन
तेरी सरिश्त में है कौकबी व महताबी
जमाल अपना अगर ख़्वाब में भी तू देखे
हज़ार होश से ख़ुश्तर तेरी शकर ख़्वाबी
गरांवहा है तेरा गिरया-ए-सहरगाही,
इसी से है तेरे नख़्ले कुहन की शादाबी
तेरी नवा से है बे-परदा ज़िंदगी का ज़मीर
कि तेरे साज़ की फ़ितरत ने की है मिज़राबी

रूहे अरज़ी आदम ﷺ का इस्तक़्बाल करती है

खोल आंख, ज़मीं देख, फ़लक देख, फ़ज़ा देख
मश्रिक़ से उभरते हुए सूरज को ज़रा देख!
इस जलवा-ए-वेपरदा को परदों में छुपा देख,
अय्यामे जुदाई के सितम देख, जफ़ा देख!
वेताव न हो, मा रका-ए-वीम व रज़ा देख।
हैं तेरे तसर्रुफ़ में ये बादल,ये घटाएं
यह गुंबदे अफ़लाक, ये ख़ामोश फ़ज़ाएं
यह कोह, यह सहरा, यह समुन्दर, ये हवाएं,
थीं पेशे नज़र कल तो फ़रिश्तों की अदाएं!
आईना-ए-अय्याम में आज अपनी अदा देख
समझेगा ज़माना तेरी आंखों के इशारे,
न देखेंगे तुझे दूर से गरदूं के सितारे
नावेद तेरे बहरे तख़य्युल के किनारे,
पहुंचेंगे फ़लक तक तेरी आंखों के शरारे
तामीर ख़ुदी कर असरे आहे रसा देख

क़ाबील व हाबील

कुरआन मजीद ने हज़रत आदम ﷺ के इन दोनों बेटों का नाम ज़िक्र नहीं किया सिर्फ़ 'आदम के दो बेटे' कहकर मुज्मल छोड़ दिया है, अलबत्ता तौरात में उनके नाम बयान किए गए हैं। कुछ रिवायतों में इन दोनों भाइयों में अपनी शादियों से मुताल्लिक़ ज़बरदस्त इख़्तिलाफ़ का ज़िक्र किया गया है। इस मामले को ख़त्म करने के लिए हज़रत आदम ने यह फ़ैसला फ़रमाया कि दोनों अपनी-अपनी कुरबानी अल्लाह के हुज़ूर में पेश करें। जिसकी क़ुर्बानी मंज़ूर हो जाए, वही अपने इरादे के पूरा कर लेने का हक़दार है।

जैसा कि तौरात से मालूम होता है, उस ज़माने में क़ुर्बानी के क़ुबूल होने का यह इलहामी तरीक़ा था कि नज़्र व क़ुर्बानी की चीज़ किसी बुलन्द जगह पर रख दी जाती और आसमान से आग ज़ाहिर होकर उसको जला देती थी। इस क़ानून के मुताबिक़ हाबील ने अपने रेवड़ में से एक बेहतरीन दुंबा अल्लाह को नज़्र किया और क़ाबील ने अपनी खेती के ग़ल्ले में से रद्दी क़िस्म का ग़ल्ला क़ुरबानी के लिए पेश किया। दोनों की अच्छी और बुरी नीयतों का अन्दाज़ा इसी अ़मल से हो गया। इसीलिए दस्तूर के मुताबिक़ आग ने आकर हाबील की नज़्र को जला दिया और इस तरह क़ुरबानी क़ुबूल होने का शरफ़ उसके हिस्से में आया। क़ाबील अपनी इस तौहीन को किसी तरह बर्दाश्त न कर सका और उसने ग़ैज़ व ग़ज़ब में आकर हबील से कहा कि मैं तुझको क़त्ल किए बग़ैर न छोड़ूंगा, ताकि तू अपनी मुराद को न पहुंच सके।

हाबील ने जवाब दियाः मैं तो किसी तरह तुझ पर हाथ न उठाऊंगा, बाक़ी तेरी जो मर्ज़ी आए, वह कर। रहा क़ुरबानी का मामला, सो अल्लाह के यहां नेक नीयत ही की नज़्र क़ुबूल हो सकती है। वहां बद-नीयत की न धमकी काम आ सकती है और न बेवजह ग़म व ग़ुस्सा और इस पर क़ाबील ने ग़ुस्से से बहुत ज़्यादा भड़क कर अपने भाई हाबील को मार डाला। क़ुरआन पाक में न शादी से मुताल्लिक़ इख़्तिलाफ़ का ज़िक्र है और न इन दोनों के नामों का ज़िक्र है, सिर्फ़ क़ुरबानी (नज़्र) का ज़िक्र है और इस रिवायत से ज़्यादा हाबील की लाश के दफ़न से मुताल्लिक़ यह इज़ाफ़ा है।

Maktab e Ashraf

क़त्ल के बाद क़ाबील हैरान था कि इस लाश का क्या करे? अभी तक आदम की नस्ल मौत से दोचार नहीं हुई थी और इसीलिए हज़रत आदम ﷺ ने मुर्दे के बारे में अल्लाह का कोई हुक्म नहीं सुनाया था। यकायक उसने देखा कि एक कौवे ने ज़मीन कुरेद-कुरेद कर गढ़ा खोदा। क़ाबील इसे देखकर चेता कि मुझे भी अपने भाई के लिए इसी तरह गढ़ा खोदना चाहिए और कुछ रिवायतों में है कि कौवे ने दूसरे मुर्दे कौवे को उस गढ़े में छुपा दिया।

क़ाबील ने यह देखा तो अपनी नाकारा ज़िंदगी पर बेहद अफ़सोस किया और कहने लगा कि मैं इस जानवर से भी गया गुज़रा हो गया कि अपने इस जुर्म को छुपाने की भी अह्लियत नहीं रखता। शर्मिंदगी और अफ़सोस से सर झुका लिया और फिर उसी तरह अपने भाई की लाश को मिट्टी के हवाले कर दिया। इस वाक़िए के बयान के वाद क़ुरआन पाक में आता है कि—

'इसी वजह से लिखा हमने वनी इसराईल पर कि जो कोई क़त्ल करे एक जान को विला एवज़ जान के, या फ़साद करने की ग़रज़ से तो गोया क़त्ल कर डाला उन सव लोगों को और जिसने ज़िंदा रखा एक जान को तो गोया ज़िंदा कर दिया सव लोगों को। (सूरा माइदा 5 : 32)

इमाम अहमद ने अपनी मुस्नद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ؓ से एक रिवायत की है—

'अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया में जव भी कोई ज़ुल्म से क़त्ल होता है तो उसका गुनाह हज़रत आदम ﷺ के पहले वेटे (क़ावील) की गरदन पर ज़रूर होता है, इसलिए कि वह पहला आदमी है, जिसने ज़ालिमाना क़त्ल की शुरूआत की और यह नापाक सुन्नत जारी की।'

इवरत की जगह

सूरः माइदा की ज़िक्र की गई आयत और ऊपर लिखी हदीस हम पर यह हक़ीक़त ज़ाहिर करती है कि इंसान को अपनी ज़िंदगी में हरगिज़ किसी गुनाह की ईजाद न करनी चाहिए, क्योंकि कायनात में जो आदमी भी आगे

इस 'बिदअत' (नए काम) का इक़दाम करेगा, तो बिदअत की बुनियाद रखने वाला भी बराबर उस गुनाह का हिस्सेदार बनता रहेगा और ईजाद करने वाला होने की वजह से हमेशा वाली ज़िल्लत और घाटे का हक़दार ठहरेगा। *(नऊज़ु बिल्लाहि मिन ज़ालिक)*

(हज़रत आदम ﷺ के इन दो बेटों का ज़िक्र सूराः माइदा में किया गया है।)

नोट : मुसन्निफ़ (लेखक) की तर्तीब के मुताबिक़ हज़रत आदम ﷺ के तज़्किरे के बाद हज़रत नूह ﷺ का ज़िक्र किया जाता है।

Maktabah-e-Ashraf

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पहले रसूल हैं

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बाद यह पहले नबी हैं जिनको रिसालत अ़ता की गई। सहीह मुस्लिम बाबे शफ़ाअत में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से एक रिवायत में यह आया है कि–

'ऐ नूह! तू जमीन पर सबसे पहला रसूल बनाया गया।'

नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम, दावत व तब्लीग़ और क़ौम की नाफ़रमानी

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के नबी बनाए जाने से पहले तमाम क़ौम अल्लाह की तौहीद और सही मज़हबी रोशनी से पूरी तरह अनजान बन चुकी थी और हक़ीक़ी माबूद की जगह ख़ुद के गढ़े हुए बुतों ने ले ली थी। ग़ैरुल्लाह और बुतों की पूजा उनका शिआर था। आख़िर अल्लाह की सुन्नत के मुताबिक़ उनके रुश्द व हिदायत के लिए भी उन ही में से एक हादी और अल्लाह के सच्चे रसूल नूह अलैहिस्सलाम को मबूऊस किया गया। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को राहे हक़ की तरफ़ पुकारा और सच्चे मज़हब की दावत दी लेकिन क़ौम ने न माना और नफ़रत व हक़ारत के साथ इंकार पर इसरार किया। क़ौम के अमीरों और सरदारों ने उनके झुठलाने और उन्हें ज़लील करने का कोई पहलू न छोड़ा और उनके (अमीरों और सरदारों के मानने वालों ने उन्हीं की तक़लीद और पैरवी के सबूत में हर क़िस्म के तज़लील व तौहीन के तरीक़ों को हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पर आज़माया। उन्होंने इस बात पर ताज्जुब ज़ाहिर किया कि जिसको न हम पर धन-दौलत में बरतरी हासिल है और न वह इंसानियत के रुत्बे से बुलन्द 'फ़रिश्ता हैकल' है, उसको क्या हक़ है कि वह हमारा पेशवा बने और हम उसके हुक्मों को मानें?

वे क़ौम के ग़रीब और कमज़ोर लागों को जब हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के पीछे

चलने वाले और पैरवी करने वाले देखते तो घमंड भरे अन्दाज़ में ज़लील समझ कर कहते, 'हम इनकी तरह हैं कि तेरे फ़रमान पर चलने लगें और तुझको अपना सरदार मान लें कि जिसकी पैरवी की जाए।' वे समझते थे कि कमज़ोर और पस्त लोग नूह ﷺ के अंधे मुक़ल्लिद हैं, न इनके पास कोई समझ है कि हमारी तरह अपनी जांची, परखी राय से काम लेते और न इतना शऊर है कि हक़ीक़ते हाल को समझ लेते और अगर वे हज़रत नूह ﷺ की बात की तरफ कभी तवज्जोह भी देते, तो उनसे इसरार करते कि पहले इन क़ौम के पस्त और ग़रीब लोगों को अपने पास से निकाल दे, तब हम तेरी बात सुनेंगे, क्योंकि हमको इनसे घिन आती है और हम और ये एक जगह नहीं बैठ सकते।

हज़रत नूह ﷺ इसका एक ही जवाब देते कि ऐसा कभी न होगा, क्योंकि ये अल्लाह के मुख़्लिस बन्दे हैं अगर मैं इनके साथ ऐसा मामला करूं जिसकी तुम ख़्वाहिश रखते हो, तो अल्लाह के अज़ाब से मेरे लिए कोई पनागाह नहीं है। मै उसके दर्दनाक अज़ाब से डरता हूं। उसके यहां इख़्लास की क़द्र है। अमीर व ग़रीब का वहां कोई सवाल नहीं है। साथ ही इर्शाद फ़रमाते कि मैं तुम्हारे पास अल्लाह की हिदायत का पैग़ाम लेकर आया हूं, न मैं ने ग़ैबदानी का दावा किया है और न फ़रिश्ता होने का। अल्लाह का बरगज़ीदा पैग़म्बर और रसूल हूं और दावत व इर्शाद मेरा मक़्सद और नस्बुलऐन है। उसको सरमायादाराना बुलन्दी, ग़ैबदानी या फ़रिश्ता हैकल होने से क्या वास्ता? क़ौम के ये कमज़ोर और ग़रीब लोग, जो अल्लाह पर सच्चे दिल से ईमान लाए हैं, तुम्हारी निगाह में इसलिए हक़ीर व ज़लील हैं कि वे तुम्हारी तरह धन-दौलत वाले नहीं हैं और इसीलिए तुम्हारे ख़्याल में ये न ख़ैर हासिल कर सकते हैं और न सआदत, क्योंकि ये दोनों चीज़ें दौलत व हश्मत के साथ हैं, न कि ग़रीबी और इफ़्लास के साथ।

सो वाज़ेह रहे कि अल्लाह की सआदत व ख़ैर का क़ानून ज़ाहिरी दौलत व हश्मत के ताबे नहीं है और न उसके यहां सआदत और हिदायत का हासिल करना और पाना सरमाए की रौनक़ के असर में है, बल्कि इसके ख़िलाफ़ नफ़्स का इत्मीनान, अल्लाह की रिज़ा, क़ल्ब का ग़िना और नीयत व अमल के इख़्लास पर मौक़ूफ़ है।

हज़रत नूह ﷺ ने यह भी बार-बार तंबीह की कि मुझे अपनी दावत पहुंचाने में और हिदायत के रास्ते पर लगाने में न तुम्हारे माल की ख़्वाहिश है, न जाह व मंसब की, मैं उजरत का तलबगार भी नहीं हूं। इस ख़िलाफ़त का हक़ीक़ी अज्र व सवाब अल्लाह तआ़ला के हाथ में है और वही बेहतरीन क़द्र करने वाला है।

बहरहाल हज़रत नूह ﷺ ने इंतिहाई कोशिश की कि बदबख़्त क़ौम समझ जाए और अल्लाह की रहमतों की पनाह में आ जाए, मगर क़ौम ने न माना और जितना इस ओर से हक़ की तब्लीग़ में जद्दोजेहद हुई, उसी क़दर क़ौम की ओर से बुग़्ज़ और दुश्मनी में सरगर्मी ज़ाहिर की गई और तक्लीफ़ पहुंचाने और चोट देने के तमाम तरीक़ों का इस्तेमाल किया गया और उनके बड़ों ने आम लोगों से साफ़-साफ़ कह दिया कि तुम किसी तरह वुद्द, सुवाअ, यग़ूस और नस्र जैसे बुतों की पूजा को न छोड़ो और आख़िर में तंग आकर कहने लगे—

'ऐ नूह! तूने हमसे झगड़ा किया और बहुत झगड़ा किया, अब उसको ख़त्म कर और जो तूने हमसे (अल्लाह के अ़ज़ाब) का वायदा किया है, वह ले आ।'

(हूद 11 : 32)

हज़रत नूह ﷺ ने यह सुनकर जवाब दिया—

'नूह ने कहा, ज़रूर, अगर अल्लाह चाहेगा तो उस अ़ज़ाब को भी ले आएगा और तुम उसको थका देने वाले नहीं हो।' (हूद 11 : 33)

इस तरह जब क़ौम की हिदायत से पहले हज़रत नूह ﷺ बिल्कुल मायूस हो गए और उसकी बातिलपरस्ती, ज़िद्द और हठधर्मी उन पर वाज़ेह हो गई और क़ुरआन के मुताबिक़ साढ़े नौ सौ साल तक बराबर की जा रही दावत व तब्लीग़ का उन पर कोई असर नहीं देखा गया तो बहुत ज़्यादा मलूल और परेशान-ख़ातिर हुए, तब अल्लाह तआ़ला ने उनको तसल्ली के लिए फ़रमाया—

'और नूह पर वह्य की गई कि जो ईमान ले आए, वह ले आए, अब इनमें से कोई ईमान लाने वाला नहीं है, पस उनकी हरकतों पर ग़म न कर।'

(हूद 11 : 36)

तब हज़रत नूह ﷺ को यह मालूम हो गया कि उनके हक़ पहुंचाने में

कोताही नहीं है, बल्कि ख़ुद न मानने वालों की इस्तेदाद का क़सूर है और उनकी सरकशी का नतीजा। तब उन के आमाल और हरकतों का असर क़ुबूल करके अल्लाह तआ़ला की दरगाह में यह दुआ़ फ़रमाई–

'ऐ परवरदिगार! तू काफ़िरों में से किसी को भी ज़मीन में बाक़ी न छोड़। अगर तू उनको यों ही छोड़ देगा तो ये तेरे बन्दों को भी गुमराह करेंगे और उनकी नस्ल भी उन्हीं की तरह नाफ़रमान पैदा होगी।' (नूह 71 : 27)

नाव की बुनियाद

अल्लाह ने हज़रत नूह ﷺ की दुआ़ क़ुबूल फ़रमाई और बदले के क़ानून और आमाल के मुताबिक़ सरकशों की सरकशी और मुतमर्रिदों के तमर्रुद का एलान कर दिया और पेशगी ही कोई मस्अला न बने, पहले हज़रत नूह ﷺ को हिदायत फ़रमाई कि वह एक नाव तैयार करें, ताकि ज़ाहिरी अस्बाब के एतबार से वह और पक्के मोमिन उस अज़ाब से बचे रहें, जो अल्लाह के नाफ़रमानों पर नाज़िल होने वाला है।

हज़रत नूह ﷺ ने जब नाव बनानी शुरू की, तो कुफ़्फ़ार ने हँसी उड़ाना और मज़ाक़ बनाना शुरू कर दिया और जब कभी उधर से उनका गुज़र होता तो कहते कि 'ख़ूब! जब हम डूबने लगें तो तुम और तुम्हारे पीछे चलने वाले इस नाव में महफ़ूज़ रहकर नजात पा जाएंगे। कैसा मूर्खता वाला ख़्याल है?'

हज़रत नूह ﷺ भी उनको अंजामेकार से ग़फ़लत और अल्लाह की नाफ़रमानी पर जुरात देखकर उन ही के ढंग से जवाब देते और अपने काम में लगे रहते, क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने पहले ही उनकी हक़ीक़ते हाल को बता दिया था।

'ऐ नूह! तू हमारी हिफ़ाज़त में हमारी वह्य के मुताबिक़ नाव तैयार किए जा और अब मुझसे उनसे मुताल्लिक़ कुछ सवाल न हो। ये बेशक डूबने वाले हैं।' (हूद 11 : 37)

आख़िर नूह की नाव बनकर तैयार हो गई अब अल्लाह के वायदे (अज़ाब) का वक़्त क़रीब आया; और हज़रत नूह ﷺ ने उनकी पहली निशानी को देखा, जिसका ज़िक्र उनसे किया गया था, यानी धरती के नीचे से पानी

का चश्मा उबलना शुरू हुआ, तब अल्लाह की वह्य ने उनको हुक्म सुनाया कि नाव में अपने खानदान वालों को बैठने का हुक्म दो और तमाम जानदारों में से हर एक का एक जोड़ा नाव में पनाह ले और छोटी जमाअत (लगभग चालीस लोग) भी, जो तुम पर ईमान ला चुकी है, नाव में सवार हो जाए। जब अल्लाह की वह्य की तामील की गई तो अब आसमान को हुक्म हुआ कि पानी बरसना शुरू हो और धरती के सोतों को हुक्म दिया गया कि वे पूरी तरह उबल पड़ें। अल्लाह के हुक्म से जब यह सब कुछ होता रहा, तो नाव भी उसकी हिफ़ाज़त में पानी पर एक मुद्दत तक तैरती रही, यहां तक कि तमाम इंकार करने वाले और दुश्मन डूब गए और अल्लाह तआ़ला के क़ानून 'जज़ा व आमाल' के मुताबिक़ अपने किए को पहुंच गए।

जूदी पहाड़ (अ़ज़ाब का ख़त्म होना)

ग़रज़ जब अल्लाह के हुक्म से अ़ज़ाब ख़त्म हुआ तो नूह ﷺ की नाव जूदी पर ठहर गई–

तर्जुमा– *'और हुक्म पूरा हुआ आर नाव जूदी पर जा ठहरी और एलान कर दिया गया कि ज़ुल्म करने वाली क़ौम के लिए हलाकत है।'* (हूद 44)

पानी धीरे-धीरे सूखना शुरू हो गया और नाव में पनाह लेने वालों ने दूसरी बार अम्न व सलामती के साथ अल्लाह की धरती पर क़दम रखा। इसी वजह से हज़रत नूह ﷺ का लक़ब 'अबुल बशर सानी' या 'आदमे सानी' (यानी इंसानों का दूसरा बाप) और शायद इसी एतबार से हदीस में उनको 'अव्वलुर्रुसुल' कहा गया। (जिस इंसान पर अल्लाह की वह्य नाज़िल होती है, वह 'नबी' और जिसको नई शरीअ़त भी अता की गई हो, वह 'रसूल' है। रसूल नबी भी होता है, मगर नबी का रसूल होना ज़रूरी नहीं।) जहां तक जूदी पहाड़ की जगह का ताल्लुक़ है, तो क़ुरआन ने सिर्फ़ उस जगह का तज़्किरा किया है, जहां नाव जाकर ठहरी थी अलबत्ता तौरात की शरह लिखने वालों का ख़्याल है कि जूदी पहाड़ के उस सिलसिले का नाम है जो अरारात और जॉर्जिया के पहाड़ी सिलसिले को आपस में मिलाता है।

अहम नतीजे

1. हर इंसान अपने किरदार व अ़मल का ख़ुद ही जवाबदेह है, इसलिए बाप की बुज़ुर्गी बेटे की नाफ़रमानी का इलाज नहीं बन सकती और न बेटे की सआदत बाप की सरकशी का बदल हो सकती है। *'कुल्लुंय-यअ़मलु अला शाकिलतिही'* 'हर आदमी अपने-अपने ढंग पर काम करता है।'

2. बुरी सोहबत भयानक ज़हर से भी ज़्यादा बड़ी क़ातिल है और उसका फल व नतीजा ज़िल्लत व घाटा और तबाही के अलावा और कुछ नहीं है। इंसान के लिए जिस तरह नेकी ज़रूरी चीज़ है, उससे ज़्यादा नेक सोहबत ज़रूरी है और जिस तरह बदी से बचना उसकी ज़िंदगी की नुमायां ख़ास बात है, उससे कहीं ज़्यादा बुरों की सोहबत से ख़ुद को बचाना ज़रूरी है—

सोहबते सालेह तुरा सालेह कुनद, सोहबते तालेह तुरा तालेकुनुद

(सादी)

सगे अस्हाबे कह्फ़ रोज़े चंद प-ए-नेकां गिरफ़्त मर्दुम शुद (सादी)

3. अल्लाह पर सही एतमाद और भरोसे के साथ ज़ाहिर अस्बाब का इस्तेमाल तवक्कुल के मनाफ़ी नहीं है, बल्कि तवक्कुल अलल्लाहि के लिए सही तरीक़ा-ए-कार है, तभी तो नूह ﷺ के तूफ़ान से बचने के लिए कश्ती ज़रूरी ठहरी—

कोशिश में शर्ते इब्तिदा इंसान से,
फिर चाहिए दुआ यज़दान से,
जब तक कि न काम दस्त व बाज़ू से लिया
पाई न नजात नूह ने तूफ़ान से।

4. अंबिया ﷺ से 'पैग़म्बरे ख़ुदा और मासूम होने के बावजूद', बशर होने के तक़ाज़े की शक्ल में लग़्ज़िश हो सकती है, मगर वे उस पर क़ायम नहीं रह सकते, बल्कि अल्लाह की तरफ़ से उनको तंबीह कर दी जाती है और उससे हटा लिया जाता है साथ ही वे आलिमुल ग़ैब (ग़ैब को जानने वाले) भी नहीं होते, जैसा कि हज़रत नूह ﷺ के वाक़िए से अच्छी तरह ज़ाहिर है।

5. अगरचे अ़मल के बदले का ख़ुदाई क़ानून कायनात के हर हिस्से में अपना काम कर रहा है, लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि हर जुर्म और हर ताअत

की सज़ा या जज़ा इसी दुनिया में मिल जाए, क्योंकि यह कायनात अ़मल की खेती है, किरदार के बदले के लिए मआद और आख़िरत की दुनिया को ख़ास किया गया है, फिर भी ज़ुल्म और घमंड इन दो बदआमालियों की सज़ा किसी न किसी अन्दाज़ से यहां दुनिया में भी ज़रूर मिलती है।

क़ौल

इमाम अबू हनीफ़ा रह० फ़रमाया करते थे कि ज़ालिम और घमंडी अपनी मौत से पहले ही अपने ज़ुल्म और किब्र की कुछ न कुछ सज़ा ज़रूर पाता है और ज़िल्लत और नामुरादी का मुंह देखता है। चुनांचे अल्लाह के सच्चे पैग़म्बरों से उलझने वाली क़ौमों और तारीख़ की ज़ालिम और घमंडी हस्तियों की इबरतनाक हलाकत और बरबादी की दास्तानें इस दावे की बेहतरीन दलील हैं।

नह ﷺ के तूफ़ान से मुताल्लिक़ कुछ अहम बातें

नूह ﷺ का बेटा

तारीख़ के माहिरों ने हज़रत नूह ﷺ के इस बेटे का नाम कनआन बताया है, यह तौरात की रिवायत के मुताबिक़ है। क़ुरआन उसका नाम बताने से ख़ामोश है, जो नफ़्से वाक़िया के लिए ग़ैर ज़रूरी था अलबत्ता हज़रत नूह ﷺ का उस बेटे से ख़िताब और उसके जवाब का ज़िक्र किया गया है—

तर्जुमा—*'कहा, मैं बहुत जल्द किसी पहाड़ की पनाह लेता हूं कि वह मुझको डूबने से बचा लेगा।'* (हूद-43)

लेकिन कुछ उलेमा ने हज़रत नूह के इस बेटे के मुताल्लिक़ यह कहा है कि यह सगा बेटा न था और फिर इस बारे में दो अलग-अलग दावे किए हैं। एक जमाअत कहती है कि वह 'रबीब' था (यानी हज़रत नूह ﷺ की बीवी के पहले शौहर का लड़का था) जो हज़रत नूह ﷺ से निकाह के बाद उनकी गोद में पला था और दूसरी जमाअत हज़रत नूह ﷺ की काफ़िर बीवी पर अस्मत व आबरू में ख़ियानत का इलज़ाम लगाती है। इन उलमा को इन ग़ैर

सनद याफ़्ता और दूर की कौड़ी लाने की ज़रूरत इसलिए पेश आई कि इनके ख़्याल में पैग़म्बर का बेटा काफ़िर हो, यह बहुत दूर की बात और अजीब मालूम होती है जबकि हक़ीक़त यह है कि नबी और पैग़म्बर का काम फ़क़त रुश्द व हिदायत का पैग़ाम पहुंचाना है। औलाद, बीवी, ख़ानदान, क़बीला और क़ौम पर उसको ज़बरदस्ती चस्पां करना और उनके दिलों को पलट देना नहीं है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–

'तू उन (काफ़िरों पर) मुसल्लत नहीं किया गया।'

(अल-ग़ाशिया 28 : 32)

'और तू उनको हक़ के क़ुबूल करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता।'

(क़ाफ़ 55 : 45)

बहरहाल सही यही है कि कनआन हज़रत नूह का बेटा था, मगर उस पर हज़रत नूह ﷺ की हिदायत व रुश्द की जगह अपनी काफ़िर वालिदा की तर्बियत की गोद ने और ख़ानदान और क़ौम के माहौल ने बुरा असर डाला और वह नबी का बेटा होने के बावजूद काफ़िर ही रहा। असल में–

पिसरे नूह बाबदां नशिस्त खानदाने बनू तश गुम शद!

नूह ﷺ का तूफ़ान आम था या ख़ास

क्या नूह का तूफ़ान पूरी दुनिया में आया था या किसी ख़ास ख़ित्ते पर, इसके बारे में पुराने और नए उलेमा में हमेशा से दो राएं रही हैं। यही सूरत यहूदी और ईसाई उलेमा, फ़लकियात के इल्म के और तबक़ातुल-अर्ज़ के माहिरों की है। एक तबक़े का ख़्याल है कि यह सिर्फ़ उसी ख़ित्ते में महदूद था, जहां हज़रत नूह ﷺ की क़ौम आबाद थी और यह हलक़ा फैलाव के एतवार से एक लाख चालीस हज़ार मुरब्बा किलो मीटर होता है, लेकिन सही मस्लक यही है कि तूफ़ान ख़ास था, आम न था, अलबत्ता क़ुरआन मजीद ने अल्लाह की सुन्नत के मुताबिक़ सिर्फ़ उन्हीं तफ़्सीलों पर तवज्जोह की है, जो नसीहत के लिए और सबक़ हासिल करने के लिए ज़रूरी थीं। वह तो सिर्फ़ यह बताना चाहता है कि तारीख़ का यह वाक़िया सोचने-समझने वालों को भुलाना न चाहिए कि हज़ारों साल पहले एक क़ौम ने अल्लाह की नाफ़रमानी

पर इसरार किया और उसके भेजे हुए हादी हज़रत नूह ﷺ के सबक़ व हिदायत के पैग़ाम को झुठलाया, ठुकराया और मानने से इन्कार कर दिया, तो अल्लाह ने अपनी क़ुदरत का मुज़हारा किया और ऐसे सरकशों और मुतमर्रिदों को हवा-बारिश के तूफ़ान में ग़र्क़ कर दिया और इसी हालत में हज़रत नूह ﷺ और थोड़े से लोगों की ईमानदार जमाअत को महफ़ूज़ रखकर कर नजात दी।

'इन-न फ़ी ज़ालि-क ल-इबरतल्लि उलिलअलबाब''

हज़रत नूह ﷺ की उम्र

क़ुरआन मजीद ने साफ़ कहा है कि हज़रत नूह ने अपनी क़ौम में साढ़े नौ सौ साल तब्लीग़ व दावत का फ़र्ज़ अंजाम दिया।

तर्जुमा—*''और बिला शुबहा हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा, पस वह रहा उनमें पचास कम एक हज़ार साल।''*

(अंकबूत 27 : 14)

यह उम्र मौजूदा तबई उम्र के एतबार से अक़्ल से परे मालूम होती है, लेकिन मुहाल और नामुम्किन नहीं है, इसलिए कि कायनात के शुरू के दिनों में ग़मों, फ़िक्रों और मरज़ों की यह बहुतात नहीं थी, साथ ही पुरानी तारीख़ भी मानती है कि कुछ हज़ार साल पहले की तबई उम्र का तनासुब मौजूदा तनासुब से बहुत ज़्यादा था। हज़रत नूह ﷺ की तवई उम्र का मामला भी इसी क़िस्म के इस्तिस्ना (अपवाद) में से समझना चाहिए जो अंबिया ﷺ की तरीख़ में अल्लाह की आयत और उसकी निशानी की फेहरिस्त में गिनी जाती है और जिनकी हिक्मत व ग़ायत का मामला ख़ुद अल्लाह तआ़ला के सुपुर्द है। हक़ और सही मस्लक यही है और इस मुद्दत को घटाने के लिए दूर-दूर की तावीलें करने की बिल्कुल ज़रूरत नहीं।

क़ुरआन मजीद में हज़रत नूह ﷺ का ज़िक्र अठाईस सूरतों में तैंतालीस जगह आया है।

हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम

हज़रत इदरीस का ज़िक्र क़ुरआन में सिर्फ़ दो जगह आया है— सूरः मरयम में और सूरः अंबिया में।

तर्जुमा—*'और याद करो क़ुरआन में इदरीस को, बिला शुब्हा वह सच्चे नबी थे और बुलन्द किया है हमने उनका मुक़ाम।'* (मरयम 19 : 56)

तर्जुमा—*और इस्माईल और इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल, इनमें से हर एक था सब्र करने वाला।* (अंबिया 21 : 85)

नाम-नसब और ज़माना

हज़रत इदरीस के नाम-नसब और ज़माने के बारे में तारीख़ लिखने वालों को सख़्त इख़्तिलाफ़ है और तमाम इख़्तिलाफ़ी वजहों को सामने रखने के बाद भी कोई आख़िरी या तरजीह देने वाली राय क़ायम नहीं की जा सकती। वजह यह है कि क़ुरआन करीम ने तो रुश्द व हिदायत के अपने मक़्सद के पेशे नज़र, तारीख़ी बहस से जुदा होकर सिर्फ़ उनकी नुबूवत के रुत्बे की बुलन्दी और उनकी ऊंची सिफ़तों का ज़िक्र किया है और इसी तरह हदीस की रिवायतें भी इससे आगे नहीं जातीं। इसलिए इस सिलसिले में जो कुछ भी है, वे इसराईली रिवायतें हैं और वे भी आपसी टकराव और इख़्तिलाफ़ से भरी हुई हैं। (इसीलिए थोड़े में लिखने के पेशेनज़र इन दूर-दराज़ से लाई गई बहसों से बचने की कोशिश की जा रही है)

एक जमाअत का यह ख़्याल है कि हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम बाबिल में पैदा हुए और वहीं पले-बढ़े। उम्र के शुरूआती दिनों में उन्होंने हज़रत शीस बिन आदम अलैहिस्सलाम से इल्म हासिल किया। बहरहाल जब इदरीस अलैहिस्सलाम ख़ुद से सोचने-समझने की उम्र को पहुंचे तो अल्लाह ने उनको नुबूवत से सरफ़राज़ फ़रमाया तब उन्हान शरीरों (बदमाशों) और फ़सादियों के राहे हिदायत की तबलीग़ शुरू की, पर फ़सादियों ने उनकी एक बात न सुनी और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम व शीस अलैहिस्सलाम की शरीअत के मुख़ालिफ़ ही रहे, अलबत्ता एक छोटी-सी

जमाअत ज़रूर मुसलमान हो गई।

हज़रत इदरीस ﷺ ने जब यह रंग देखा तो वहां से हिजरत का इरादा किया और अपने मानने वालों को हिजरत कर जाने के लिए कहा। इदरीस ﷺ की पैरवी करने वालों ने जब यह सुना तो उनको वतन का छोड़ना बहुत गरां गुज़रा और कहने लगे कि बाबिल जैसा वतन हमको कहां नसीब हो सकता है? हज़रत इदरीस ﷺ ने तसल्ली देते हुए फ़रमाया कि अगर तुम यह तक्लीफ़ अल्लाह के रास्ते में उठाते हो, तो उसकी रहमत बहुत फैली हुई है, उसका अच्छा बदला ज़रूर देगा, पस हिम्मत न हारो और अल्लाह के हुक्म के आगे सरे नियाज़ झुका दो।

मुसलमानों की रज़ामंदी के बाद हज़रत इदरीस और उनकी जमाअत मिस्र की तरफ़ हिज़रत कर गई और नील के किनारे एक अच्छी जगह चुनकर के सकूनत अपना ली। हज़रत इदरीस और उनकी पैरवी करने वाली जमाअत ने पैग़ामे इलाही और भलाई का हुक्म देने और बुराई रोकने वाले का फ़र्ज़ अंजाम देना शुरू कर दिया। कहा जाता है कि उनके ज़माने में बहत्तर जुबानें बोली जाती थीं और अल्लाह की अता व बख़्शिश से वह वक़्त की तमाम जुबानों को जानते थे और हर एक जमाअत को उसकी ज़बान में तब्लीग़ फ़रमाया करते थे। एक रिवायत के एतबार से हज़रत इदरीस ﷺ पहले आदमी हैं जिन्होंने क़लम को इस्तेमाल किया।

हज़रत इदरीस की ख़ास बातें

हज़रत इदरीस ने दीने इलाही के पैग़ाम के अलावा तमद्दुनी रियासत और शहरी ज़िंदगी, तमद्दुनी तौर-तरीक़ों की तालीम व तलक़ीन की और उनके ट्रेंड तालिब इल्मों ने कम व बेश दो सौ बस्तियां आबाद कीं। हज़रत इदरीस ﷺ ने इन तलबा को दूसरे इल्मों की भी तालीम की, जिसमें इल्मे हिक्मत और इल्मे नुजूम भी शामिल हैं। हज़रत इदरीस ﷺ पहली हस्ती हैं जिन्होंने हिक्मत व नुजूम के इल्म की शुरूआंत की, इसलिए कि अल्लाह तआला ने उनको अफ़लाक और उनकी तर्कीब, कवाकिब और उनके जमा होने और अलग होने के नुक्तों और उनके आपसी कशिश के राज़ों की तालीम दी और

उनको अदद व हिसाब के इल्म का आलिम बनाया और अगर ख़ुदा के उस पैग़म्बर के ज़रिए से इल्म सामने न आते, तो इन्सानी तबीयतों की वहां तक पहुंच मुश्किल थी। उन्होंने अलग-अलग ज़ातों और गिरोहों के लिए उनके मुनासिबे हाल क़ायदे क़ानून मुक़र्रर किए और पूरी दुनिया को चार हिस्सों में बांट कर हर चौथाई के लिए एक हाकिम मुक़र्रर किया जो ज़मीन के उस हिस्से की सियासत और बादशाही का ज़िम्मेदार क़रार पाया और इन चारों के लिए ज़रूरी क़रार दिया कि तमाम क़ानूनों से बढ़-चढ़कर शरीयत का वह क़ानून रहेगा, जिसकी तालीम अल्लाह की वह्य के ज़रिए मैंने तुमको दी है।

हज़रत इदरीस عليه السلام की तालीम का ख़ुलासा

अल्लाह की हस्ती और उसकी तौहीद पर ईमान लाना सिर्फ़ कायनात पैदा करने वाले की परस्तिश करना, आख़िरत के अ़ज़ाब से बचाने के लिए भले अ़मलों को ढाल बनाना, दुनिया से बे-नियाज़ी, तमाम मामलों में अद्ल व इंसाफ़ को सामने रखना, मुक़र्रर किए हुए तरीक़ों पर अल्लाह की इबादत करना, अय्यामे बीज़ के रोज़े रखना, इस्लाम के दुश्मनों से जिहाद करना, ज़कात अदा करना, पाकी-सफ़ाई के साथ रहना, ख़ास तौर से जनाबत, कुत्ते और सूअर से बचना, हर नशीली चीज़ों से परहेज़ करना।

बाद में आने वाले नबियों के बारे में बशारत

हज़रत इदरीस ने अपनी उम्मत को यह भी बताया कि मेरी तरह इस दुनिया की दीनी व दुन्यवी इस्लाह के लिए बहुत-से नबी तशरीफ़ लाएंगे और उनकी नुमायां ख़ास बातें ये होंगी।

वे हर एक बुरी बात से दूर और पाक होंगे। तारीफ़ के क़ाबिल और फ़ज़ाइल में कामिल होंगे। ज़मीन व आसमान के हालात को और उन मामलों को कि जिनमें कायनात के लिए शिफ़ा है या मरज़, वह्य इलाही के ज़रिए इस तरह जानते होंगे कि कोई मांगने वाला भूखा-प्यासा न रहेगा। वे दुआ़ओं को सुनने वाले होंगे। उनके मज़हब की दावत का ख़ुलासा कायनात की इस्लाह होगा।

हज़रत इदरीस ﷺ की ज़मीनी ख़िलाफ़त

जब हज़रत इदरीस अल्लाह की ज़मीन के मालिक बना दिए गए, तो उन्होंने इल्म व अ़मल के एतबार से अल्लाह की मख़्लूक़ को तीन तबकों में वांट दिया– काहिन, बादशाह, रियाया (प्रजा) और तर्तीब के एतबार के उनके दर्जे ते किए। काहिन सबसे पहला और ऊंचा दर्जा क़रार पाया, इसलिए कि वह अल्लाह तआ़ला के सामने अपने नफ़्स के अलावा बादशाह और रियाया के मामलों में भी जवाबदेह है। 'बादशाह' का दूसरा दर्जा रखा गया इसलिए कि वह नफ़्स और राज्य के मामलों के बारे में जवाबदेह है और रियाया सिर्फ़ अपने नफ़्स के लिए जवाबदेह है, इसलिए वह तीसरे तबक़े में शामिल है लेकिन ये तबके ज़िम्मेदारियों के एतबार से थे, नस्ल व ख़ानदान के आख़्तियारों के एतबार से नहीं। हज़रत इदरीस ﷺ 'अल्लाह तक जाने' तक शरीयत और सियासत के इन्हीं क़ानूनों की तब्लीग़ फ़रमाते रहे।

हज़रत इदरीस से मुताल्लिक़ ख़ास बातें

उनकी अंगूठी पर यह इबारत खुदी हुई थी, *'अल्लाह पर ईमान के साथ-साथ सब्र फतहमंदी की वजह है।'* उनके कमर से बंधने वाले पटके पर यह लिखा हुआ था, 'सच्ची ईदें तो अल्लाह के फ़र्ज़ों के अदा करने में छिपी हुई हैं। दीन का कमाल शरीअ़त से जुड़ा हुआ है और मुरव्वत में दीन के कमाल की तकमील है।'

नमाज़े जनाज़ा के वक़्त जो पटका बांधते थे, उस पर नीचे लिखे जुमले खुदे हुए थे। 'सआ़दतमंद वह है जो अपने नफ़्स की निगरानी करे और परवरदिगार के सामने इंसान की शफ़ाअत करने वाले उसके नेक अ़माल हैं।'

हज़रत इदरीस ﷺ की नसीहतें

हज़रत इदरीस ﷺ की वहुत-सी नसीहतें और आदाव व अख़्लाक़ के जुम्ले मशहूर हैं, जो अलग-अलग जुवानों में ज़र्वुल मसल (कहावत) और रुमूज़ व अमार (गूढ़ रहस्य) की तरह इस्तेमाल में आते हैं और उनमें से कुछ नीचे

दिए जाते हैं–

1. अल्लाह की बेपनाह नेमतों का शुक्रिया इंसानी ताक़त से बाहर है।

2. जो इल्म में कमाल और अ़मले सालेह का ख़्वाहिशमंद हो, उसको जिहालत के अस्बाब और बद-किरदारी के क़रीब भी न जाना चाहिए। क्या तुम नहीं देखते कि हरफ़न मौला कारीगर अगर सीने का इरादा करता है तो सूई हाथ में लेता है, न कि बर्मा। पस हर वक़्त यह उसूल नज़रों में रहना चाहिए।

3. दुनिया की भलाई 'हसरत' है और बुराई 'नदामत'।

4. अल्लाह की याद और अ़मले सालेह के लिए ख़ुलूसे नीयत शर्त है।

5. न झूठी क़स्में खाओ, न अल्लाह तआ़ला के नाम को क़स्मों के लिए तख़्ता-ए-मश्क़ बनाओ और न झूठों को क़समें खाने पर आमादा करो, क्योंकि ऐसा करने से तुम भी गुनाह में शरीक हो जाओगे।

6. ज़लील पेशों को अख़्तियार न करो (जैसे सींगी लगाना, जानवरों की जुफ़्ती पर उजरत लेना, वग़ैरह)

7. अपने बादशाहों की (जो कि पैग़म्बर की तरफ़ से शरीअ़त के हुक्मों के नाफ़िज़ करने के लिए मुक़र्रर किए जाते हैं) इताअ़त करो और अपने बड़ों के सामने पस्त रहो और हर वक़्त अल्लाह की तारीफ़ में अपनी ज़ुबान को तर रखो।

8. हिक्मत रूह की ज़िंदगी है।

9. दूसरों की ख़ुश ऐशी पर हसद न करो, इसलिए कि उनकी यह मस्रूर ज़िंदगी कुछ दिनों की है।

10. जो ज़िंदगी की ज़रूरतों की ज़्यादा तलब रखता हो वह कभी क़ानेअ़ नहीं रहा।

नोट : कुछ तहक़ीक़ करने वालों और तज़्किरा लिखने वालों ने हज़रत इदरीस ﷺ और यूनानी फ़र्ज़ी अफ़्सानवी (Greek Mythology) के (Hermes) हरमज़ में मुताबक़त पैदा करने की कोशिश की है, जो सही नहीं है। हरमज़ (Hermes) को उन फ़र्ज़ी अफ़्सानों में हिक्मत व फ़साहत का देवता कहा जाता है। रूमी उसको 'अ़तारद' कहते हैं।

Maktabe-Ashraf

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम

आद का ज़माना

आ़द का ज़माना लगभग दो हज़ार साल क़ब्ल मसीह माना जाता है और क़ुरआन मजीद में आ़द को *'मिम बादि नूह'* कहकर नूह क़ौम के ख़लीफ़ों में गिना गया है, साथ ही उनको *आ़दे ऊला* कहा है और आ़द के साथ इरम का लफ़्ज़ लगा हुआ है।

आ़द के रहने की जगह

आ़द का मर्कज़ी मक़ाम अरज़े अहक़ाफ़ है। यह हज़र मौत के उत्तर में इस तरह वाक़े है कि इसके पूरब में ओमान और उत्तर में राबेअ़ अल-ख़ाली। मगर आज यहां रेत के टीलों के सिवा कुछ नहीं है।

आद का मज़हब

आद बुत-परस्त थे और अपने पेशे और नूह की क़ौम की तरह सनमपरस्ती और बुततराशी में माहिर थे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से एक असर मंक़ूल है। इसमें है कि इनके एक सनम का नाम समूद और एक का नाम हतार था।

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम

आ़द अपनी ममलक्त की सतवत व जबरूत, जिस्मानी सूरत व ग़ुरूर में ऐसे चमके कि उन्होंने एक अल्लाह को बिल्कुल भुला दिया और अपने हाथों के बनाए हुए बुतों को अपना माबूद मानकर हर क़िस्म के शैतानी आमाल बे-ख़ौफ़ व ख़तर करने लगे, तब अल्लाह तआ़ला ने उन्हीं में से एक पैग़म्बर हज़रत हूद को भेजा। हज़रत हूद अलैहिस्सलाम आ़द की सबसे ज़्यादा इ़ज़्ज़तदार शाख़ा 'ख़ुलूद' के एक फ़र्द (व्यक्ति) थे। सुर्ख़ व सफ़ेद रंग और बहुत ख़ूबसूरत थे। उनकी दाढ़ी बड़ी थी।

इस्लाम की तब्लीग़

उन्होंने अपनी क़ौम को अल्लाह की तौहीद और उसकी इबादत की तरफ़ दावत दी और लोगों पर ज़ुल्म व जौर करने से मना फ़रमाया। मगर आ़द ने एक न मानी। उनको सख़्ती के साथ झुठलाया और ग़ुरूर और घमंड के साथ कहने लगे, 'मन अशद्दु मिन्ना क़ुव्वः' (हम में से ज़्यादा कौन है क़ुव्वत में आगे) (हामीम सज्दा 41)

आज दुनिया में हम से ज़्यादा शौकत व जबरूत का कौन मालिक है? मगर हज़रत हूद ﷺ लगातार इस्लाम की तब्लीग़ में लगे रहे। वह अपनी क़ौम को अल्लाह के अ़ज़ाब से डराते और ग़ुरूर व सरकशी के नतीजों को बताकर नूह की क़ौम के वाक़िए याद दिलाते और कभी इर्शाद फ़रमाते—

'ऐ क़ौम! अपनी जिस्मानी ताक़त और हुकूमत के ज़बरदस्त होने पर घमण्ड न कर, बल्कि अल्लाह का शुक्र अदा कर कि उसने तुझको यह दौलत बख़्शी। नूह क़ौम की तबाही के बाद ज़मीन का तुझको मालिक बनाया, ख़ुशऐशी, फ़ारिगुलबा.ली और ख़ुशहाली अ़ता की, इसलिए उसकी नेमतों को न भूल और ख़ुद के गढ़े हुए बुतों की परस्तिश से बाज़ आ, जो न नफ़ा पहुंचा सकते हैं और न दुख दे सकते हैं। मौत व ज़िंदगी, नफ़ा-नुक़्सान सब एक अल्लाह ही के हाथ में है। ऐ क़ौम के लोगो! माना कि तुम सरकशी और उसकी नाफ़रमानी में मुब्तला रहे हो, मगर आज भी अंगर तौबा कर लो और बाज़ आ जाओ तो उसकी रहमत फैली हुई है और तौबा का दरवाज़ा बंद नहीं हुआ है। उससे मग़्फ़िरत चाहो, वह बख़्श देगा। उसकी तरफ़ रुजू हो जाओ, वह माफ़ कर देगा और माल व इज़्ज़त में सरफ़राज़ी बख़्शेगा।

आ़द को हज़रत हूद ﷺ की ये नसीहतें बहुत गरां गुज़रती थीं और वे यह नहीं सह सकते थे कि उनके ख़्यालों, उनके अ़क़ीदों और उनके कामों, ग़रज़ यह कि उनके इरादों में कोई आदमी रुकावट पैदा करे, उनके लिए मेहरबान नसीहत करने वाला बने, इसलिए अब उन्होंने यह रवैया अपनाया कि हज़रत हूद ﷺ का मज़ाक़ उड़ाया, उनको बेवक़ूफ़ समझा और उनकी मासूमिय़त भरी हक़ वाली सच्चाइयों की तमाम यक़ीनी दलीलों और मिसालों को झुठलाना शुरू कर दिया और कहने लगे—

तर्जुमा– *'ऐ हूद! तू हमारे पास एक दलील भी न लाया और तेरे कहने से हम अपने ख़ुदाओं को छोड़ने वाले नहीं और न हम तुझ पर ईमान लाने वाले है।'* (हूद 11 : 35)

'और हम इस ढोंग में आने वाले नहीं कि तुझको ख़ुदा का रसूल मान लें और अपने ख़ुदाओं की इबादत छोड़कर यह यक़ीन कर लें कि वे 'बड़े ख़ुदा' के सामने हमारे सिफ़ारिशी नहीं होंगे।'

हज़रत हूद ﷺ ने उनसे कहा कि न मैं बेवक़ूफ़ हूं और न पागल, बिला शुब्हा अल्लाह का रसूल और पैग़म्बर हूं। अल्लाह अपने बन्दों की हिदायत के लिए बेवक़ूफ़ को मुंतख़ब नहीं किया करता कि उसका नुक़सान उसके नफ़ा से बढ़ जाए और हिदायत की जगह गुमराही आ जाए। वह इस ज़ोरदार ख़िदमत के लिए अपने बन्दों में से ऐसे आदमी को चुनता है जो हर तरह से उसका अह्ल हो और हक़ की असल ख़िदमत को ख़ुशी के साथ अंजाम दे सके।

तर्जुमा– *'और अल्लाह ख़ूब जानने वाला है कि रिसालत के अपने मंसब को किस जगह रखे।'* *(अल-अनआम 6 : 124)*

मगर क़ौम की सरकशी और मुख़ालफ़त बढ़ती रही और उनपर सूरज से ज़्यादा रोशन दलीलों और नसीहतों का ज़रा भी असर न पड़ा और हज़रत हूद ﷺ को ज़लील करने और झुठलाने पर और ज़्यादा उतर आए और (अल-अयाज़बिल्लाह) मजनून और ख़ब्ती कहकर और ज़्यादा मज़ाक़ उड़ाने लगे और कहने लगे, ऐ हूद! जबसे तूने हमारे बुतों को बुरा कहना और हमको उनकी इबादत न करने पर उभारना शुरू किया है, हम देखते हैं कि उस वक़्त से तेरा हाल ख़राब हो गया है और हमारे ख़ुदाओं की बद-दुआ से तू पागल और मजनून हो गया है, तो अब हम इसके अलावा तुझको और क्या समझें? उनकी इस गुस्ताख़ी भरी जुर्रात और हिम्मत से यह ख़्याल हो चला था कि अब कोई आदमी हज़रत हूद ﷺ की तरफ़ ध्यान न देगा और उनकी बातों को तवज्जोह से न सुनेगा।

हज़रत हूद ﷺ ने यह सब कुछ निहायत सब्र व ज़ब्त से सुना, फिर उनसे यूं बोले–

'मैं अल्लाह को और तुम सबको गवाह बनाकर सबसे पहले यह एलान करता हूं कि मैं इस अ़क़ीदे से बिल्कुल अलग हूं कि इन बुतों में न यह क़ुदरत है कि मुझको या किसी को किसी क़िस्म की भी कोई बुराई पहुंचा सकते हैं, इसके बाद तुमको और तुम्हारे इन झूठे माबूदों को चैलेंज करता हूं कि अगर इनमें ऐसी कुदरत है तो वे मुझको नुक़्सान पहुंचाने में जल्दी से कोई क़दम उठाएं। मैं अपने अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से अक़्ल रखने वाला और सूझ-बूझ रखने वाला हूं। सोचने-समझने का मालिक हूं और हिक्मत और दानाई का हामिल, मैं तो सिर्फ़ अपने अल्लाह पर ही भरोसा करता हूं, और उसी पर पूरा यक़ीन रखता हूं जिसके क़ब्ज़े व कुदरत में कायनात के तमाम जानदारों की पेशानियां हैं, जो ज़िंदगी और मौत का मालिक है। वह ज़रूर मेरी मदद करेगा और हर नुक़्सान पहुंचाने वाले के नुक़्सान से बचाए रखेगा।

आख़िर हज़रत हूद ﷺ ने उसकी लगातार बग़ावत और सरकशी के ख़िलाफ़ यह ऐलान कर दिया कि अगर आ़द का यही रवैया रहा और हक़ से पलटने और मुंह फेरने की रविश में उन्होंने कोई तब्दीली न की और मेरी नसीहतों को पूरे दिल से न सुना, तो मैं अगरचे अपनी डाली ज़िम्मेदारियों के लिए हर वक़्त चुस्त और हिम्मत रखने वाला हूं, मगर उनके लिए हलाकत यक़ीनी है। अल्लाह बहुत जल्द उनको हलाक कर देगा और दूसरी क़ौम को ज़मीन का मालिक बनाकर उनकी जगह क़ायम कर देगा और बिला शुब्हा वे अल्लाह तआ़ला को ज़र्रा बराबर भी नुक़सान नहीं पहुंचा सकते वह तो हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला और हर चीज़ की हिफ़ाज़त करने वाला और निगहबान है। और पूरी कायनात उसकी कुदरत की मुट्ठी में है।

ऐ क़ौम! अब भी समझ और अक़्ल व होश से काम ले नूह ﷺ की क़ौम के हालात से इबरत हासिल कर और अल्लाह के पैग़ाम के सामने सरे नियाज़ झुका दे वरना क़ज़ा व क़द्र का हाथ ज़ाहिर हो चुका है और बहुत क़रीब है वह ज़माना कि तेरा यह सारा ग़ुरूर व घमंड ख़ाक में मिल जाएगा और उस वक़्त शर्मिंदगी से भी कोई फ़ायदा न होगा।

हज़रत हूद ﷺ ने बार-बार उनको भी यह बावर कराया कि मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूं, दोस्त हूं। तुमसे सोना-चांदी और तख़्त व ताज की तलब नहीं

करता हूं, बल्कि तुम्हारी फ़लाह व नजात चाहता हूं। मैं अल्लाह तआ़ला के पैग़ाम के बारे में ख़ियानत करने वाला नहीं बल्कि अमीन हूं। वही करता हूं जो मुझसे कहा जाता है। जो कुछ कहता हूँ क़ौम की सआ़दत और हाल व माल की भलाई के लिए कहता हूं, बल्कि दायमी व सरमदी नजात के लिए कहता हूं।

तुमको अपनी ही क़ौम के एक इंसान पर अल्लाह के पैग़ाम नाज़िल होने से अचम्भा नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह पुराने ज़माने से अल्लाह की जारी व सारी सुन्नत है कि इंसानों की हिदायत व सआ़दत के लिए उन्हीं में से एक आदमी को चुन लेता और अपना रसूल बना कर उसको ख़िताब करता है और अपनी मर्ज़ी और नामर्ज़ी से उसकी मारफ़त अपने बन्दों को मुत्तला करता रहता है और फ़ितरत का तक़ाजा भी तो यही है कि किसी क़ौम की रुश्द व हिदायत के लिए ऐसे आदमी ही को चुना जाए, जो बोल-चाल में उन्हीं की तरह हो, उनके अख़्लाक़ और आदतों का जानकार हो, उनकी ख़ुसूसी बातों से आश्ना और उन्हीं के साथ ज़िंदगी गुज़ारता रहा हो कि उसी से क़ौम मानूस हो सकती है और वही उसका सही हादी व मुश्फ़िक़ बन सकता है।

आ़द ने जब यह सुना तो वे अजीब हैरत में पड़ गए। उनकी समझ में न आया कि एक अल्लाह की इबादत का मतलब क्या है? वे ग़म व ग़ुस्सा में आ गए कि किस तरह हम बाप-दादा की 'अस्नाम परस्ती' (मूर्तिपूजा) को छोड़ दें? यह तो हमारी और हमारे बाप दाद की सख़्त तौहीन है। उनका ग़ैज़ व ग़जब भड़क उठा कि उनको काफ़िर और मुश्रिक क्यों कहा जाता है? जबकि वे बुतों को अल्लाह के समान अपनी शफ़ाअ़त करने वाला मानते हैं? उनके नज़दीक हूद की बात मान लेने में उनके माबूदों और बुज़ुर्गों की तौहीन थी और उन्हें हक़ीर समझा जा रहा था, जिनको वह बड़े ख़ुदा के दरबार में अपना वसीला और शफ़ी मानते थे और इसी को इन तस्वीरों और मूर्तियों के लिए पूजते थे कि वे ख़ुश होकर हमारी सिफ़ारिश करेंगे और अल्लाह के अ़ज़ाब से नजात दिलाएंगे। आख़िर वे शोले की तरह भड़क उठे और हज़रत हूद ﷺ से बिगड़ कर कहने लगे, तूने हमको अपने ख़ुदा के अ़ज़ाब की धमकी दी और हमको उससे यह कहकर डराया कि—

तर्जुमा—'मै तुम्हारे ऊपर बड़े दिन के अ़ज़ाब के आने से डरता हूं (कि कहीं) तुम उसके हक़्क़दार न ठहर जाओ।' (अश-शोअ़रा 26 : 135)

तो ऐ हूद! अब हमसे तेरी रोज़-रोज़ की नसीहतें सुनी नहीं जातीं। हम ऐसी नसीहत करने वाले मेहरबान से बाज़ आए, अगर तू वाक़ई अपने क़ौल में सच्चा है तो वह अ़ज़ाब जल्द ले आ कि हमारा-तेरा क़िस्सा साफ़ हो।

तर्जुमा—'पस ला तू हमारे पास उस चीज़ को, जिसका तू हमसे वायदा करता है, अगर तू वाक़ई सच्चों में से है।' (अल-आराफ़ 7 : 70)

हज़रत हूद ﷺ ने जवाब दिया कि अगर मेरे ख़ुलूस और मेरी सच्चाई वाली नसीहतों का यही जवाब है तो 'बिस्मिल्लाह' और तुमको अ़ज़ाब का अगर इतना की शौक़ है, तो वह भी कुछ दूर नहीं।

तर्जुमा—'बिला शुबहा तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर अ़ज़ाब व ग़ज़ब आ पहुंचा। (अल-आराफ़ 7 : 71)

तुमको शर्म नहीं आती कि तुम ख़ुद अपने गढ़े हुए बुतों को उनके नाम गढ़ कर पुकारते हो और तुम्हारे बाप-दादा उनको अल्लाह की दी हुई दलील के बग़ैर मनगढ़त तरीक़े पर उनको अपना शफ़ीअ़ और सिफ़ारिशी मानते हैं और तुम मेरी रोशन दलीलों से मुंह फेर कर और सरकशी करके अ़ज़ाब के तलबगार होते हो, अगर ऐसा शौक़ है तो अब तुम भी इन्तिज़ार करो और मैं भी इंतिज़ार करता हूं कि वक़्त क़रीब आ पहुंचा।

तर्जुमा—'क्या तुम मुझसे उन मनगढ़त नामों (बुतों) के बारे में झगड़ते हो, जिनको तुमने और तुम्हारे बाप-दादों ने गढ़ लिया है कि जिसके बारे में तुम्हारे पास ख़ुदा की कोई हुज्जत नहीं। पस अब तुम (अल्लाह के अ़ज़ाब का) इन्तिज़ार करो। मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूं। (अल-आराफ़ 7 : 71)

हूद की क़ौम पर अ़ज़ाब

हासिल यह कि हूद की क़ौम (आ़द) इंतिहाई शरारत व बग़ावत और अपने पैग़म्बर की तालीम से बेपनाह बुग़्ज़ और दुश्मनी की वजह से अ़मल के बदले और जज़ा के क़ानून का वक़्त आ पहुंचा और ग़ैरते हक़ हरकत में आई और अल्लाह के अ़ज़ाब ने सबसे ख़ुश्कसाली की शक्ल अख़्तियार की। आद सख़्त घबराए हुए परेशान हुए और तंग दिखाई पड़ने लगे, तो हज़रत हूद ﷺ

को हमदर्दी के जोश ने उकसाया और मायूसी के बाद फिर उनको एक बार समझाया कि हक़ का रास्ता आख़ियार कर लो, मेरी नसीहतों पर ईमान ले आओ, यही निजात की राह है दुनिया में भी और आख़िरत में भी, वरना पछताओगे। लेकिन बदबख़्त व बदनसीब क़ौम पर कोई असर न हुआ बल्कि दुश्मनी कई गुना ज़्यादा बढ़ गई, तब हौलानाक अ़ज़ाब ने उन को आ घेरा। आठ दिन और सात रातें बराबर तेज़ व तुंद हवा के तूफ़ान उठे और उनको और उनकी आबादी को तह व बाला करके रख दिया। तनोमंद और हैकल इंसान जो अपनी जिस्मानी ताक़तों के घमंड में सरमस्त और सरकश बने हुए थे, इस तरह बेहिस व हरकत पड़े नज़र आते थे, जिस तरह आंधी से भारी-भरकम पेड़ बेजान होकर गिरता है। ग़रज़ उनकी हस्ती को नेस्त व नाबूद कर दिया गया, ताकि आने वाली नस्लों के लिए इबरत बनें और दुनिया और आख़िरत की लानत और अ़ज़ाब उन पर मुसल्लत कर दिया गया कि वे उसी के हक़दार थे। हज़रत हूद ﷺ और उनके मुख़्लिस इस्लाम को मानने वाले साथी अल्लाह की रहमत और नेमत में अल्लाह के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहे और सरकश क़ौम की सरकशी और बग़ावत से बचे रहे।

यह है आ़दे ऊला की वह दास्तान जो अपने अन्दर इबरत के सामान रखती है। इसमें अनगिनत नसीहतें पाई जाती हैं और अल्लाह तआ़ला के हुक्मों की तामील और तक़्वा व तहारत की ज़िंदगी की तरफ़ दावत देती है। शरारत, सरकशी और अल्लाह के हुक्मों से बग़ावत के बुरे अंजाम से आगाह करती और वक़्ती ख़ुशऐशी पर घमंड करके नतीजे की बदबख़्ती पर मज़ाक़ उड़ाने से डराती और बाज़ रखती है।

हज़रत हूद ﷺ की वफ़ात

हज़रत अ़ली ؓ से एक असर नक़ल किया जाता हैं कि उनकी क़ब्र हज़र मौत में कसीफ़े अहमर (लाल टीला) पर है और उसके सरहाने झाऊ का पेड़ खड़ा है। दूसरी रिवायतों के मुक़ाबले में यही रिवायत सही और माक़ूल मालूम होती है कि आद की बस्तियां हज़र मौत के क़रीब थीं और उनकी (आ़द की) तबाही के बाद क़रीब ही की बस्तियों में हज़रत हूद ﷺ ने क़ियाम फ़रमाया होगा और वहीं वफ़ात हो गई होगी।

कुछ इबरतें

अल्लाह के नेक बन्दे जब किसी का भला चाहते और टेढ़ों की टेढ़ को सीधा करने के लिए नसीहत फ़रमाते, तो बुरों और ज़लीलों की कमीनगी, मज़ाक़ उड़ाने, फब्ती कसने, छोटा बनाए रखने की परवाह नहीं करते। दुखी और रंजीदा होकर या नाराज़ होकर भला चाहने और नसीहत करने को नहीं छोड़ते और इन तमाम ख़ुसूसियतों में नुमायां बात यह होती है कि वे अपनी इसी नसीहत और भला चाहने के लिए क़ौम से किसी नफ़ा की उम्मीद या ख्वाहिश ज़रा-सी नहीं रखते। उनकी ज़िंदगी बदला और एवज़ से पूरी तरह बुलन्द और बरतर होती है।

अपने इस्लाह चाहने वालों और नबियों और सच्चों के ख़िलाफ़ क़ौमों की वैर और दुश्मनी इसी एक अ़क़ीदे पर टिक रही है कि हमारे बाप-दादा की रीति व रस्म और उनकी ख़ुद की गढ़ी हुई मूर्तियों के ख़िलाफ़ क्यों कुछ कहा जाता है? ये बातें क़ौमों की ज़िंदगी के लिए हमेशा तबाही मचाने वाली और उनकी फ़लाह व अबदी सआ़दत के लिए हलाक करने वाली हैं।

तब्लीग़ व हक़ के पैग़ाम के रास्ते में बदी का बदला नेकी से दिया जाए और कडुवाहट का जवाब मीठे बोल से पूरा किया जाए। (अलबत्ता तब्लीग़ करने वाले) अपनी बदकिरदारी और लगातार सरकशी पर अल्लाह तआ़ला के बनाए हुए क़ानून 'जज़ा-ए-अ़मल' या 'पादाशे अ़मल' को ज़रूर याद दिलाएं और आने वाले बुरे अंजाम पर यक़ीनन तंबीह करें और यह सच्चाई बार-बार सामने लाएं कि जब कोई क़ौम इज्तिमाई सरकशी, ज़ुल्म और बग़ावत पर तैयार हो जाती है और उस पर बराबर इसरार करती रहती है, तो फिर अल्लाह तआ़ला का क़हर व ग़ज़ब उसको सफ्हा-ए-आ़लम से मिटा देता है और उसकी जगह दूसरी क़ौम ले लेती है।

हज़रत हूद ﷺ और आ़द क़ौम का ज़िक्र क़ुरआन में सूरः आराफ़, हूद और शुअ़रा में आया है जबकि आ़द क़ौम का ज़िक्र आराफ़, हूद, मोमिनून, शुअ़रा, फ़ुस्सिलत, अहक़ाफ़, अज़्ज़ारियात, अल-क़मर और अल-हाक़्क़ा में हुआ है।

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम

समूद क़ौम

समूद, क़ौम के वही लोग हैं जो पहले आ़द की हलाकत के बाद हज़रत हूद अलैहिस्सलाम के साथ बच गए थे और उनकी नस्ल आ़दे सानिया (द्वितीय आ़द) कहलाई। उनको 'समूदे इरम' भी कहा गया–

समूद की बस्तियां

समूद की आबादियां हिज्र में थी। हिजाज़ और शाम के दर्मियान वादी क़ुरा तक जो मैदान नज़र आता है, यह सब उनके रहने की जगह है। समूद की बस्तियों के खंडर और निशान आज तक मौजूद हैं। इनकी ख़ास बात यह है कि इन बस्तियों में मकान पहाड़ों को काट कर बनाए गए थे, गोया समूद तामीरात के मामले में बहुत ज़्यादा माहिर थे।

समूद का ज़माना

समूद के ज़माने के मसले के बारे में कोई तै शुदा बाक़ायदा वक़्त नहीं बताया जा सकता, अलबता यक़ीनी तौर पर कहा जा सकता है कि इनका ज़माना हज़रत इबराहीम अ़लैहिस्सलाम से पहले का ज़माना है।

समूदियों का मज़हब

समूद अपने बुतपरस्त पुरखों की तरह बुतपरस्त थे। वे ख़ुदा के अलावा बहुत से बातिल माबूदों के परस्तार थे और शिर्क में डूबे हुए थे। इसलिए उनकी इस्लाह के लिए भी और उन पर हक़ वाज़ेह करने के लिए भी उन्हीं के क़बीले में से हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को नसीहत करने वाला पैग़म्बर और रसूल बनाकर भेजा, ताकि वह उनको सीधे रास्ते पर लाए, उन पर वाज़ेह करे कि कायनात की हर चीज़ अल्लाह के एक होने और अकेले होने पर गवाह है। उन्हें अल्लाह की नेमत याद दिलाए और बताए कि परस्तिश और इबादत के लायक़ एक ज़ात के अलावा दूसरा कोई नहीं है।

क़ुरआन मजीद में आए क़िस्सों का मतलब

क़ुरआन मजीद की यह सुन्नत है कि वह इंसानों की हिदायत के लिए पिछली क़ौमों के और उन्हें हिदायत के रास्ते पर लगाने के वाक़िए और हालात बयान करके नसीहतों और वाजों का सामान जुटाता है, ताकि यह मालूम हो सके कि जिन उम्मतों ने उनकी बातों का इंकार किया, और उनका मज़ाक़ उड़ाया और उन्हें झुठलाया, तो अल्लाह तआला ने अपने सच्चे रसूल की तस्दीक़ के लिए कभी अपने आप और कभी क़ौम के मांग करने पर ऐसी निशानियां नाज़िल फ़रमाईं जो नबियों और रसूलों की तस्दीक़ की वजह बनीं और 'मोजजा' कहलाईं, लेकिन अगर क़ौम ने इस निशानी और मोजज़ा के बाद भी झुठलाने को न छोड़ा और न दुश्मनी छोड़ी, बल्कि ज़िद पर अड़े रहे, तो फिर 'अल्लाह के अ़ज़ाब' ने आकर उनको तबाह व हलाक कर दिया और उनके वाकियों को आने वाली क़ौम के लिए इबरत व नसीहत का सामान बना दिया।

अल्लाह की ऊंटनी

हज़रत सालेह ﷺ क़ौम को बार-बार समझाते और फ़रमाते रहे, पर क़ौम पर बिल्कुल असर न हुआ, बल्कि उसकी दुश्मनी तरक़्क़ी पाती रही और उसका विरोध बढ़ता ही रहा और वह किसी तरह बुतपरस्ती से बाज़ न आई। अगरचे एक छोटी और कमज़ोर जमाअ़त ने ईमान क़ुबूल कर लिया और वह मुसलमान हो गई, मगर क़ौम के सरदार और बड़े-बड़े सरमायादार उसी तरह बातिल-परस्ती पर क़ायम रहे और उन्होंने दी हुई हर क़िस्म की नेमतों का शुक्रिया अदा करने के बजाए नाशुक्री का तरीक़ा अपना लिया। वे हज़रत सालेह ﷺ का मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा करते कि सालेह! अगर हम बातिल परस्त होते, अल्लाह के सही मज़हब के इंकारी होते और उसके पसंदीदा तरीक़े पर क़ायम न होते, तो आज हमको यह सोने-चांदी की बहुतात, हरे-भरे बाग़ और दूसरी नेमते हासिल न होतीं। तुम ख़ुद को और अपने मानने वालों को देखो और फिर उनकी तंगहाली और ग़ुर्बत पर नज़र करो और बतलाओ कि

अल्लाह के प्यारे और मक़्बूल कौन हैं?

हज़रत सालेह ﷺ फ़रमाते कि तुम अपने इस ऐश और अमीरी पर शेख़ी न मारो और अल्लाह के सच्चे रसूल और उसके सच्चे दीन का मज़ाक़ न उड़ाओ, इसलिए अगर तुम्हारे घमंड और दुश्मनी का यही हाल रहा, तो पल में सब कुछ फ़ना हो जाएगा और फिर न तुम रहोगे और न यह तुम्हारा समाज, बेशक ये सब अल्लाह की नेमते हैं, बशर्ते कि इनके हासिल करने वाले उसका शुक्र अदा करें और उसके सामने सरे नियाज़ झुकाएं और बेशक यही अ़ज़ाब व लानत के सामान हैं, अगर इनका इस्तिक़बाल शेख़ी व ग़ुरूर के साथ किया जाए। इसलिए यह समझना ग़लती है कि ऐश का हर सामान अल्लाह की ख़ुश्नूदी का नतीजा है।

समूद को यह हैरानी थी कि यह कैसे मुम्किन है कि हमीं में का एक इंसान अल्लाह का पैग़म्बर बन जाए और वह अल्लाह के हुक्म सुनाने लगे। वे बड़े ताज्जुब से कहते–

तर्जुमा– *'कि हमारी मौजूदगी में उस पर (ख़ुदा की) नसीहत उतरती है।'*

(साद 38 : 8)

यानी अगर ऐसा होना ही था तो इसके अह्ल हम थे, न कि सालेह और कभी अपनी क़ौम के कमज़ोर लोगों (जो कि मुसलमान हो गए थे) को ख़िताब करके कहते– ,

तर्जुमा– *'क्या तुमको यक़ीन है कि बिला शुबहा सालेह अपने परवरदिगार का रसूल है?'*

(अल-आराफ़ 7 : 59)

और मुसलमान जवाब देते–

तर्जुमा– *'बेशक हम तो इसके लाए हुए पैग़ाम पर ईमान रखते हैं।'*

(अल-आराफ़ 9 : 75)

तब ये क़ौम के इंकार करने वाले (समूद क़ौम) ग़ुस्से में कहते :

तर्जुमा– *'बेशक हम तो उस चीज़ को जिस पर तुम्हारा ईमान है, इंकार करते है।'*

(अल-आराफ़ 7 : 7)

बहरहाल हज़रत सालेह की मग़रूर व सरकश क़ौम ने उनकी पैग़म्बराना दावत व नसीहत को मानने से इंकार किया और अल्लाह के निशान (मोजज़े)

का मुतालबा किया, तब सालेह ने अल्लाह के दरबार में दुआ की और क़ुबूलियत के बाद अपनी क़ौम से फ़रमाया कि तुम्हारा मत्लूब निशान ऊंटनी की शक्ल में यहां मौजूद है। देखो, अगर तुमने इसको तक्लीफ़ पहुंचायी तो फिर यही हलाकत का सामान साबित होगा और अल्लाह ने तुम्हारे और उसके दर्मियान पानी के बारी तै कर दी है। एक दिन तुम्हारा है और एक दिन इसका, इसलिए इसमें फ़र्क़ न आए।

क़ुरआन मजीद ने इसे *'नाक़तुल्लाह'* (अल्लाह की ऊंटनी) कहा है, ताकि यह बात नज़रों में रहे कि यूं तो तमाम मख़लूक़ अल्लाह ही की मिल्कियत है, मगर समूद ने चूंकि उनको ख़ुदा की एक निशानी की शक्ल में तलब किया था, इसलिए उसको मौजूदा ख़ुसूसियत ने उसको 'अल्लाह की निशानी' का लकब दिलाया, साथ ही उसको *'लकुम आयातिही'* (तुम्हारे लिए निशानी) कहकर यह भी बताया कि यह निशानी अपने भीतर ख़ास अहमियत रखती है, लेकिन बदक़िस्मत क़ौम समूद ज़्यादा देर तक इसको बरदाश्त न कर सकी और एक दिन साज़िश करके ऊंटनी को हलाक कर डाला। हज़रत सालेह ﷺ को जब यह मालूम हुआ तो आंखों मे आंसू लाकर फ़रमाने लगे, बदबख़्त क़ौम! आख़िर तुझसे सब्र न हो सका। अब अल्लाह के अ़ज़ाब का इंतज़ार कर। तीन दिन के बाद न टलने वाला अ़ज़ाब आएगा और तुम सबको हमेशा के लिए तहस-नहस कर दिया जाएगा।

समूद पर अ़ज़ाब

समूद पर अ़ज़ाव आने की निशानियां अगलीं सुबह से ही शुरू हो गईं, यानी पहले दिन इन सवके चेहरे इस तरह पीले पड़ गए जैसा कि हर शुरूआती हालत में हो जाया करता है और दूसरे दिन सबके चेहरे लाल थे, गोया ख़ौफ़-दहशत का यह दूसरा दर्जा था और तीसरे दिन इन सवके चेहरे स्याह थे और अंधेरा छाया हुआ था। यह ख़ौफ़ व दहशत का वह तीसरा दर्जा है जिसके वाद मौत का दर्जा रह जाता है।

वहरहाल इन तीन दिनों के वाद वायदा किया गया वक़्त आ पहुंचा और रात के वक़्त एक हैवतनाक आवाज़ ने हर आदमी को उसी हालत में हलाक

कर दिया, जिस हालत में वह था। क़ुरआन मजीद ने हलाक कर देने वाली आवाज़ को किसी जगह साईक़ा (कड़कदार बिजली) और किसी जगह रजफ़ा (ज़लज़ला डाल देने वाली चीज़), किसी जगह ताग़िया (दहशतनाक) और कहीं सैहा (चीख़) फ़रमाया।

एक तरफ़ समूद पर यह अ़ज़ाब आया और उनकी बस्तियों को तबाह व बर्बाद करके सरकशों की सरकशी और घमंडियों का अंजाम ज़ाहिर हुआ, जबकि दूसरी ओर हज़रत सालेह ﷺ और उनकी पैरवी करने वाले मुसलमानों को अल्लाह ने अपनी हिफ़ाज़त में ले लिया और उनको इस अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखा।

कुछ इबरतें

अल्लाह की सुन्नत यही रही है (मगर अल्लाह की इस सुन्नत से नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहिस्सलाम की रिसालत का पैग़ाम अलग है। इसलिए कि आपने साफ़ कहा है कि मैंने अल्लाह से दुआ मांगी कि वह मेरी उम्मत (उम्मते दावत हो या उम्मते इजाबत) में अ़ज़ाब मुसल्लत न फ़रमाए और अल्लाह तआ़ला ने मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा ली।) क़ुरआन मजीद ने इसकी तस्दीक़ इस तरह की है–

तर्जुमा–*'ऐ रसूल! इस हाल में कि तू उनमें मौजूद है अल्लाह तआ़ला (इन काफ़िरों) पर आम अ़ज़ाब मुसल्लत न करेगा।'* (अल-अंफ़ाल : 33)

लेकिन जो क़ौम अपने नबी से इस वायदे पर निशान तलब करे कि अगर उनका मतलूब निशान ज़ाहिर हो गया, तो वे ज़रूर ईमान लाएंगे, फिर वे ईमान न लाए तो उस क़ौम की हलाकत यक़ीनी हो जाती है। अल्लाह तआ़ला उसको माफ़ नहीं करता, जब तक कि वह तौबा न कर ले और अल्लाह के दीन को क़ुबूल न कर ले या अल्लाह के अ़ज़ाब से सफ़्हा-ए-हस्ती से मिटकर दूसरों के लिए इबरत का सबब न बन जाए। यह मोहलिक ग़लती और नफ़्स का धोखा है कि इंसान ख़ुशऐशी, रफ़ाहियत और दुन्यिावी जाह व जलाल देखकर यह समझ बैठे कि जिस क़ौम या फ़र्द के पास यह सब कुछ मौजूद है, वह ज़रूर अल्लाह तआ़ला के साए में है और उनकी ख़ुशऐशी अल्लाह की ख़ुशनूदी की निशानी है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़िक्र क़ुरआन पाक में

क़ुरआन पाक के रुश्द व हिदायत का पैग़ाम चूं कि इब्राहीमी मिल्लत का पैग़ाम है, इसलिए क़ुरआन पाक में जगह-जगह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़िक्र किया गया है, जो मक्की-मदनी दोनों क़िस्म की सूरतों में मौजूद है, यानी 35 सूरतों की 63 आयतों में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़िक्र मिलता है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम

तारीख़ और तौरात दोनों हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम 'तारिख़' बताते हैं और क़ुरआन पाक के एतबार से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम 'आज़र' है। इस सिलसिले में उलेमा, तफ़्सीर लिखने वाले, मग़्रिबी मुश्तशरिक़ों और तहक़ीक़ करने वालों ने बड़ी-बड़ी, लंबी-लंबी बहसें की हैं लेकिन इनमें अख़्तियार की गई ठंडी ठंडी बातें हैं इसलिए कि क़ुरआन मजीद ने जब खोल-खोल कर आज़र को अब (इब्राहीम का बाप) कहा है तो फिर अंसाब के उलेमा और बाइबिल की तख़्मीनी अटकलों से मुतास्सिर होकर क़ुरआन मजीद की यक़ीनी ताबीर को मजाज़ कहने या इससे भी आगे बढ़कर क़ुरआन मजीद में क़वाइद की बातें मानने पर कौन-सी शरई और हक़ीक़ी ज़रूरत मजबूर करती है। साफ़ और सीधा रास्ता यह है कि जो क़ुरआन मजीद में कहा गया उसको मान लिया जाए, चाहे वह नाम हो या लक़ब हो।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और दूसरे अंबिया अलैहिमुस्सलाम

हज़रत इब्राहीम के हालात के साथ उनके भतीजे हज़रत लूत और उनके बेटों हज़रत इसमाइल अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम वाक़िआत भी वाबिस्ता हैं। इन तीनों पैग़म्बरों के तफ़्सीली हालात के इनके तज़्किरों में बयान किए गए हैं, यहां सिर्फ़ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के हालात के तहत कहीं कहीं ज़िक्र आएगा।

हज़रत इब्राहीम अ.स. की अज़्मत

हज़रत इब्राहीम की शान की इस अज़्मत के पेशेनज़र जो नबियों और रसूलों के दर्मियान उनको हासिल है क़ुरआन मजीद में उनके वाक़िआत को अलग-अलग उस्लूब के साथ जगह-जगह बयान किया गया है। एक जगह पर अगर थोड़े में ज़िक्र है, तो दूसरी जगह तफ़्सील से तज़्किरा किया गया है और कुछ जगहों पर उनकी शान और ख़ूबी को सामने रखकर उनकी शख़्सियत को नुमायां किया गया है।

तौरात यह बताती है कि हज़रत इब्राहीम इराक़ के क़स्बा 'उर' के वाशिंदे थे और अहले फ़द्दान में से थे और उनकी क़ौम बुत-परस्त थी, जबकि इंजील में साफ़ लिखा है कि उनके वालिद नज्जारी का पेशा करते और अपनी क़ौम के अलग-अलग क़बीलों के लिए लकड़ी के बुत बनाते और बेचा करते थे, मगर हज़रत इब्राहीम को शुरू ही से हक़ की बसीरत और रुश्द व हिदायत अता फ़रमाई और वे यह यक़ीन रखते थे कि बुत न देख सकते हैं न सुन सकते हैं और न किसी की पुकार का जवाब दे सकते हैं और न नफ़ा व नुक़्सान का उनसे कोई वास्ता है और न लकड़ी के खिलौनो और दूसरी बनी हुई चीज़ों के और उनके बीच कोई फ़र्क़ और इम्तियाज़ है। वे सुबह व शाम आंख से देखते थे कि इन बेजान मूर्तियों को मेरा बाप अपने हाथों से बनाता और गढ़ता रहता है और जिस तरह उसका दिल चाहता है नाक-कान आंखें गढ़ लेता है और फिर ख़रीदने वालों के हाथ बेच देता है, तो क्या ये ख़ुदा हो सकते हैं या ख़ुदा-जैसे या ख़ुदा के बराबर हो सकते हैं?

हज़रत इब्राहीम ने जब यह देखा कि क़ौम बुतपरस्ती, सितारापरस्ती और मज़ाहिर-परस्ती में ऐसी लगी हुई है कि ख़ुदा-ए-बरतर की क़ुदरते मुतलक़ा और उसके एक होने और समद होने का तसव्वुर भी उनके दिलों में बाक़ी न रहा और अल्लाह के एक होने के अक़ीदे से ज़्यादा कोई ताज्जुब की बात नहीं रही, तब उसने अपनी हिम्मत चुस्त की और ज़ाते वाहिद के भरोसे पर उनके सामने दीने हक़ का पैग़ाम रखा और ऐलान किया—

'ऐ क़ौम! यह क्या है जो मैं देख रहा हूं कि तुम अपने हाथ से बनाए हुए बुतों की परस्तिश में लगे हुए हो। क्या तुम इस क़दर ग़फ़लत के ख़्वाब

में हो कि जिस बेजान लकड़ी को अपने हथियारों से गढ़ कर मूर्तियां तैयार करते हो, अगर वे मर्ज़ी के मुताबिक़ न बनें, तो उनको तोड़ कर दूसरे बना लेते हो, बना लेने के बाद फिर उन्हीं को पूजने और नफ़ा-नुक़सान का मालिक समझने लगते हो, तुम इस खुराफ़ात से बाज़ आ जाओ, अल्लाह की तौहीद के नग़मे गाओ और उस एक हक़ीक़ी मालिक के सामने सरे नियाज़ झुकाओ जो मेरा, तुम्हारा और कुल कायनात का ख़ालिक व मालिक है। मगर क़ौम ने उसकी आवाज़ पर बिल्कुल ध्यान न धरा और चूंकि हक़ सुनने वाले कान और हक़ देखने वाली निगाह से महरूम थी, इसलिए उसने जलीलुलक़द्र पैग़म्बर की दावते हक़ का मज़ाक़ उड़ाया और ज़्यादा-से-ज़्यादा तमर्रुद व सरकशी का मुज़ाहरा किया।

बाप को इस्लाम की दावत और बाप-बेटे का मुनाज़रा

हज़रत इब्राहीम ﷺ देख रहे थे कि शिर्क का सबसे बड़ा मर्कज़ ख़ुद उनके अपने घर में क़ायम है और आज़र की बुतपरस्ती और बुतसाज़ी पूरी क़ौम के लिए एक धुरी बनी हुई है इसलिए फ़ितरत का तक़ाज़ा है कि हक़ की दावत और सच्चाई के पैग़ाम के फ़र्ज़ की अदाएगी की शुरूआत घर से ही होनी चाहिए, इसलिए हज़रत इब्राहीम ﷺ ने सब से पहले अपने वालिद 'आज़र' ही को मुख़ातब किया और फ़रमाया—

'ऐ बाप! ख़ुदापरस्ती और मारफ़ते इलाही के लिए जो रास्ता तूने अपनाया है और जिसे आप बाप-दादा का पुराना रास्ता बताते हैं, यह गुमराही और बातिलपरस्ती का रास्ता है और सीधा रास्ता (राहे हक़) सिर्फ़ वही है, जिसकी मैं दावत दे रहा हूं। ऐ बाप! तौहीद ही नजात का सरचश्मा है, न कि तेरे हाथ के बनाए गए बुतों की पूजा और इबादत। इस राह को छोड़कर हक़ और तौहीद के रास्ते को मज़बूती के साथ अख़्तियार कर, ताकि तुझको अल्लाह की रज़ा और दुनिया और आख़िरत की सआदत हासिल हो।

मगर अफ़सोस कि आज़र पर हज़रत इब्राहीम की नसीहतों का बिल्कुल कोई असर नहीं हुआ, बल्कि हक़ क़ुबूल करने के बजाए आज़र ने बेटे को धमकाना शुरू किया। कहने लगा कि इब्राहीम : अगर तू बुतों की बुराई से

बाज़ न आएगा, तो मैं तुझको पत्थर मार-मारकर हलाक कर दूंगा। हज़रत इब्राहीम ﷺ ने जब यह देखा कि मामला हद से आगे बढ़ गया और एक तरफ़ अगर बाप के एहतराम का मसला है तो दूसरी तरफ़ फ़र्ज़ की अदायगी हक़ की हिमायत और अल्लाह के हुक्म की इताअ़त का सवाल, तो उन्होंने सोचा और आख़िर वही किया जो ऐसे ऊंचे इंसान और अल्लाह की जलीलुलक़द्र पैग़म्बर के शायाने शान था। उन्होंने बाप की सख़्ती का जवाब सख़्ती से नहीं दिया। हक़ीर समझने और ज़लील करने का रवैया नहीं बरता वल्कि नर्मी, लुत्फ़ व करम और अच्छे अख़्लाक़ के साथ यह जवाब दिया ऐ वाप! अगर मेरी वात का यही जवाब है तो आज से मेरा-तेरा सलाम है। मैं अल्लाह के सच्चे दीन और उसके पैग़ामे हक़ को नहीं छोड़ सकता और किसी हाल में वुतों की परस्तिश नहीं कर सकता। मैं आज तुझसे जुदा होता हूं, मगर ग़ायवाना दरगाहे इलाही में बख़्शिश तलब करता रहूंगा, ताकि तुझको हिदायत नसीव हो और तू अल्लाह के अ़ज़ाब से नजात पा जाए।

क़ौम को इस्लाम की दावत और उससे मुनाज़रा

वाप और बेटे के दर्मियान जब मेल की कोई शक्ल न बनी और आज़र ने किसी तरह इब्राहीम की रुश्द व हिदायत को कुबूल न किया, तो हज़रत इब्राहीम ने आज़र से जुदाई अख़्तियार कर ली और अपनी हक़ की दावत और रिसालत के पैग़ाम को फैला दिया और अब सिर्फ़ आज़र ही मुख़ातब न रहा वल्कि पूरी क़ौम को मुख़ातब बना लिया, मगर क़ौम अपने वाप-दादा के दीन को कव छोड़ने वाली थी, उसने इब्राहीम की एक न सुनी और हक़ की दावत के सामने अपने वातिल माबूदों की तरह गूंगे, अंधे और वहरे बन गए और जव इब्राहीम ने ज़्यादा ज़ोर देकर पूछा कि यह तो वतलाओ कि जिनकी तुम पूजा करते हो, ये तुम्हें किसी क़िस्म का भी नफ़ा या नुक़्सान पहुंचाते हैं, कहने लगे कि इन वातों के झगड़े में हम पड़ना नहीं चाहते? हम तो यह जानते हैं कि हमारे वाप-दादा यही करते चले आए हैं, इसलिए हम भी वही कर रहे हैं। तव हज़रत इब्राहीम ने एक ख़ास अन्दाज़ से एक ख़ुदा की हस्ती की तरफ़ नवन्जोह दिलाई, फ़रमाने लगे, मैं तो तुम्हारे इन सव वुतों को अपना दुश्मन

जानता हूं, यानी मैं इनसे बे-ख़ौफ़ व खतर होकर इनसे जंग का एलान करता हूं कि अगर यह मेरा कुछ बिगाड़ सकते हैं तो अपनी हसरत निकाल लें।

अलबत्ता मैं उस हस्ती को अपना मालिक समझता हूं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है! जिसने मुझको पैदा किया और सीधा रास्ता दिखाया, जो मुझको खिलाता-पिलाता यानी रिज़्क़ देता है और जब मैं मरीज़ हो जाता हूं तो वह मुझको शिफ़ा बख़्शता है और मेरी ज़िंदगी और मौत दोनों का मालिक है और यानी ख़ताकारी के वक़्त जिससे यह लालच करता हूं कि वह क़ियामत के दिन मुझको बख़्श दे और मैं उसके हुज़ूर में यह दुआ करता रहता हूं, ऐ परवरदिगार! तू मुझको सही फ़ैसले की ताक़त अ़ता फ़रमा और मुझको नेकों की सूची में दाख़िल कर और मुझको ज़ुबान की सच्चाई अ़ता कर और जन्नते नईम के वारिसों में शामिल कर। मगर आज़र और आज़र की क़ौम के दिल किसी तरह हक़ क़ुबूल करने के लिए नर्म न हुए और उनका इंकार हद से गुज़रता ही गया।

सितारा परस्ती

हज़रत इब्राहीम ﷺ की क़ौम बुतपरस्ती के साथ-साथ सितारा-परस्ती भी करती थी और यह अ़क़ीदा था कि इंसानों की मौत और ह्यात, उनकी रोज़ी, उनका नफ़ा-नुक़्सान, ख़ुश्कसाली, क़हतसाली , जीत और कामियाबी और हार और पस्ती, ग़रज़ दुनिया के तमाम कारख़ाने का नज़्म व नस्क़ तारे और उनकी हरकतों की तासीर पर चल रहा है और यह तासीर उनकी ज़ाती सिफ़तों में से है, इसलिए इनकी ख़ुशनूदी ज़रूरी है और यह उनकी पूजा के बिना मुम्किन नहीं है।

इस तरह हज़रत इब्राहीम ﷺ जिस तरह उनको उनकी सिफ़ली, झूठे माबूदों की हक़ीक़त खोल करके हक़ के रास्ते की तरफ़ दावत दी, उसी तरह ज़रूरी समझा कि उनके झूठे बातिल माबूदों की बे-सबाती और फ़ना के मंज़र को पेश करके इस हक़ीक़त से भी आगाह कर दें कि तुम्हारा यह ख़्याल बिल्कुल ग़लत है कि इन चमकते हुए सितारों, चांद और सूरज को ख़ुदाई ताक़त हासिल है। हरगिज़ नहीं, यह बेकार का ख़्याल और बातिल अ़क़ीदा

है। मगर ये बातिल-परस्त जबकि अपने ख़ुद के गढ़े हुए बुतों से इतने डरे हुए थे कि उनको बुरा कहने वाले के लिए हर वक़्त यह सोचते थे कि उनके ग़ज़ब में आकर तबाह व बर्बाद हो जाएगा, तो ऐसे औहाम परस्तों के दिलों में बुलन्द सितारों की पूजा के ख़िलाफ़ जज़्बा पैदा करना कुछ आसान काम न था इसलिए हज़रत इब्राहीम ﷺ ने उनके दिमाग़ के मुनासिब एक अजीब और दिलचस्प तरीक़ा बयान व अख़्तयार किया।

तारों भरी रात थी, एक सितारा ख़ूब रोशन था। हज़रत इब्राहीम ﷺ ने उसको देखकर फ़रमाया 'मेरा रब यह है।' इसलिए अगर सितारे को रब मान सकते हैं तो यह उनमें सबसे मुमताज़ और रोशन है। लेकिन जब वह अपने तैशुदा वक़्त पर नज़र से ओझल हो गया और उसको यह मजाल न हुई कि एक घड़ी और रहनुमाई करा सकता और कायनात के निज़ाम से हट कर अपने पूजने वालों के लिए ज़ियारतगाह बना रहता, तब हज़रत इब्राहीम ﷺ ने फ़रमाया, मैं छुप जाने वालों को पसंद नहीं करता। यानी जिस चीज़ पर मुझसे भी ज़्यादा तब्दीलियों का असर पड़ता हो और जो जल्द-जल्द इन असरात को क़ुबूल कर लेता हो, वह मेरा माबूद क्यों हो सकता है?

फिर निगाह उठाई तो देखा कि चांद आब व ताब के साथ सामने मौजूद है, उसको देखकर फ़रमाया, 'मेरा रब यह है।' इसलिए यह ख़ूब रोशन है और अपनी ठंडी रोशनी से सारी दुनिया को नूर का गढ़ बनाए हुए है। पस अगर तारों को रब बनाना ही है तो इसी को क्यों न बनाया जाए, क्योंकि यही इसका ज़्यादा हक़दार नज़र आता है।

फिर जब सुबह का वक़्त होने लगा तो चांद के भी हल्के पड़ जाने और छुप जाने का वक़्त आ पहुंचा और जितना ही सूरज के उगने का वक़्त होता गया, चांद का जिस्म देखने वाले की नज़रों से ओझल होने लगा, तो यह देखकर हज़रत इब्राहीम ﷺ ने एक ऐसा जुम्ला फ़रमाया, जिससे चांद के रब होने की मनाही के साथ-साथ एक अल्लाह की हस्ती की तरफ़ क़ौम की तवज्जोह इस ख़ामोशी से फेर दी कि क़ौम इसका एहसास न कर सके और इस बात-चीत का एक ही मक़्सद है यानी 'सिर्फ़ एक अल्लाह पर ईमान', वह उनके दिलों में बग़ैर क़स्द व इरादे के बैठ जाए, फ़रमाया—

'अगर मेरा सच्चा पालनहार मेरी रहनुमाई न करता, तो मैं भी ज़रूर गुमराह क़ौम में से ही एक होता।'

पस इतना फ़रमाया और ख़ामोश हो गए, इसलिए कि इस सिलसिले की अभी एक कड़ी और बाक़ी है और क़ौम के पास अभी मुक़ाबले के लिए एक हथियार मौजूद है इसलिए इससे ज़्यादा कहना मुनासिब नहीं था।

तारों भरी रात ख़त्म हुई, चमकते सितारे और चांद सब नज़रों से ओझल हो गए, क्यों? इसलिए कि अब आफ़ताब आलमताब का रुख़े रोशन सामने आ रहा है। दिन निकल आया और वह पूरी आब व ताब से चमकने लगा।

हज़रत इब्राहीम ﷺ ने उसको देखकर फ़रमायाः यह है मेरा रब क्योंकि यह तारों में सबसे बड़ा है और निज़ामे फ़लकी में इससे बडा सितारा हमारे सामने दूसरा नहीं है।' लेकिन दिन भर चमकने और रोशन रहने और पूरी दुनिया को रोशन करने बाद मुक़र्रर वक़्त पर उसने भी इराक़ की सरज़मीन से पहलू बचाना शुरू कर दिया और अंधेरी रात धीरे-धीरे सामने आने लगी। आख़िरकार वह नज़रों से ग़ायब हो गया तो अब वक़्त आ पहुंचा कि इब्राहीम असल हक़ीक़त का एलान कर दें और क़ौम को लाजवाब बना दें कि उनके अ़क़ीदे के मुताबिक़ अगर इन तारों को रब और माबूद होने का दर्जा हासिल है, तो इसकी क्या वजह कि हमसे भी ज़्यादा इनमें तब्दीलियां नुमायाँ हैं और ये जल्द-जल्द उनके असरों से मुतास्सिर होते हैं और अगर माबूद हैं तो इनमें (उफ़ोल) (चमक कर फिर डूब जाना) क्यों है? जिस तरह चमकते नज़र आते थे उसी तरह क्यों न चमकते रहे, छोटे सितारों की रोशनी को चांद ने क्यों मांद कर दिया और चांद के चमकते रुख़ को आफ़ताब के नूर ने किसलिए बेनूर बना दिया?

पस ऐ क़ौम! मैं इन शिर्क भरे अ़क़ीदों से बरी हूं और शिर्क की ज़िंदगी से बेज़ार, बेशक मैंने अपना रुख़ सिर्फ़ उसी एक अल्लाह की ओर कर लिया है जो आसमानों और ज़मीनों का पैदा करने वाला है, मैं 'हनीफ़' (एक अल्लाह की इताअ़त के लिए यक्सू) हूं और मुश्रिक (शिर्क करने वाला) नहीं हूं।

अब क़ौम समझी कि यह क्या हुआ? इब्राहीम ने हमारे तमाम हथियार बेकार और हमारी तमाम दलीलें पामाल करके रख दीं। अब हम इब्राहीम की

इस मज़बूत और खुली दलील को किस तरह रद्द करें और उसकी रोशन दलील का क्या जवाब है? वे इसके लिए बिल्कुल बेबस और पस्त थे और जब कोई बस न चला तो क़ायल होने और हक़ की आवाज़ को क़ुबूल कर लेने के बजाए हज़रत इब्राहीम से झगड़ने लगे और अपने झूठे माबूदों से डराने लगे कि वे तेरी तौहीन का तुझसे ज़रूर बदला लेंगे और तुझको इसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

हज़रत इब्राहीम ﷺ ने फ़रमाया, क्या तुम मुझसे झगड़ते और अपने बुतों से मुझको डराते हो? हालांकि अल्लाह ने मुझ को सही रास्ता दिख दिया है और तुम्हारे पास गुमराही के सिवा कुछ नहीं, मुझे तुम्हारे बुतों की क़तई कोई परवाह नहीं, जो कुछ मेरा रब चाहेगा, वही होगा। तुम्हारे बुत कुछ नहीं कर सकते, क्या तुमको इन बातों से कोई नसीहत हासिल नहीं होती? तुम को तो अल्लाह की नाफ़रानी करने और उसके साथ बुतों को शरीक ठहराने में भी कोई डर नहीं होता? जिसके लिए तुम्हारे पास एक दलील भी नहीं है और मुझसे यह उम्मीद रखते हो कि एक अल्लाह का मानने वाला और दुनिया के अमन का ज़िम्मेदार होकर मैं तुम्हारे बुतों से डर जाऊंगा, काश कि तुम समझते कि फ़सादी कौन है और कौन है सुलहपसन्द और अमनपसन्द?

सही अमन की ज़िंदगी उसी को हासिल है जो एक अल्लाह पर ईमान रखता और शिर्क से बेज़ार रहता है और वही रास्ते पर है।

बहरहाल अल्लाह की यह शानदार हुज्जत थी जो उसने हज़रत इब्राहीम ﷺ की ज़ुबान से बुत-परस्ती के ख़िलाफ़ हिदायत व तब्लीग़ के बाद कवाकिब-परस्ती (तारा-परस्ती) के रद्द में ज़ाहिर फ़रमाई और उनकी क़ौम के मुक़ाबले में उनको रोशन और खुली दलीलों से सरबुलन्दी अ़ता फ़रमाई।

ग़रज़ इन तमाम रोशन और खुली दलीलों के बाद भी जब क़ौम ने इस्लाम की दावत क़ुबूल न की और बुतपरस्ती और कवाकिबपरस्ती में उसी तरह पड़ी रही तो हज़रत इब्राहीम ﷺ ने एक दिन जम्हूर के सामने जंग का एलान कर दिया कि मैं तुम्हारे बुतों के बारे में एक ऐसी चाल चलूंगा जो तुम को ज़िच कर के ही छोड़ेगी।

तर्जुमा– *'और अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे न होने पर ज़रूर तुम्हारे बुतों के साथ ख़ुफ़िया चाल चलूंगा।'*

(अल-अंबिया 21 : 79)

इस मामले से मुताल्लिक़ असल सूरते हाल यह है कि जब इब्राहीम ने आज़र और क़ौम के लोगों को हर तरह बुत-परस्ती के ऐबों को ज़ाहिर कर के उससे बाज़ रहने की कोशिश कर ली और हर क़िस्म की नसीहतों के ज़रिए उनको यह बताने में ताक़त लगा ली कि ये बुत न नफ़ा पहुंचा सकते हैं, न नुक़्सान और यह कि तुम्हारे काहिनों और पेशवाओं ने उनके बारे में तुम्हारे दिलों पर ख़ौफ़ बिठा दिया है कि अगर उनके इंकारी हो जाओगे तो ये ग़जबनाक हो कर तुमको तबाह कर डालेंगे, ये तो अपनी आई हुई मुसीबत को भी नहीं टाल सकते, मगर आज़र और क़ौम के दिलों पर मुतलक़ असर न हुआ और वे अपने देवताओं की ख़ुदाई ताक़त के अ़क़ीदे से किसी तरह बाज़ न आए, बल्कि काहिनों और सरदारों ने उनको और ज़्यादा पक्का कर दिया और इब्राहीम की नसीहत पर कान धरने से सख़्ती के साथ रोक दिया, तब हज़रत इब्राहीम ने सोचा कि मुझको रुश्द व हिदायत का ऐसा पहलू अख़्तियार करना चाहिए जिससे लोग यह देख लें कि वाक़ई हमारे देवता सिर्फ़ लकड़ियों और पत्थरों की मूर्तियां हैं, जो गूंगी भी हैं, बहरी भी हैं, और अंधी भी और दिलों में यह यक़ीन बैठ जाए कि जब तक उनके बारे में हमारे काहिनों और सरदारों ने जो कुछ कहा था वह बिल्कुल ग़लत और बे सर-पैर की बात थी और इब्राहीम ही की बात सच्ची है। अगर ऐसी कोई शक्ल बन गई तो फिर मेरे लिए हक़ की तब्लीग़ के लिए आसान राह निकल आएगी। यह सोचकर उन्होंने अ़मल का एक निज़ाम तैयार किया, जिसको किसी पर ज़ाहिर नहीं होने दिया और उसकी शुरूआ़त इस तरह की कि बातों-बातों में अपनी क़ौम के लोगों से यह कह गुज़रे कि, *'मैं तुम्हारे बुतों के साथ एक ख़ुफ़िया चाल चलूंगा।'*

गोया इस तरह उनको तंबीह करनी थी कि 'अगर तुम्हारे देवताओं में कुछ क़ुदरत है, जैसा कि तुम दावा करते हो तो वे मेरी चाल को बातिल और मुझको मजबूर कर दें कि मैं ऐसा न कर सकूं।

मगर चूंकि बात साफ़ न थी, इसलिए क़ौम ने इस ओर कुछ तवज्जोह न दी। इत्तिफ़ाक़ की बात कि क़रीब ही के ज़माने में क़ौम का एक मज़हबी मेला पेश आया। जब सब उसके लिए चलने लगे तो कुछ लोगों ने इब्राहीम

से इसरार किया कि वह भी साथ चलें। हज़रत इब्राहीम ने पहले तो इंकार किया और फिर जब इस तरफ़ से इसरार बढ़ने लगा तो सितारों की तरफ़ निगाह उठाई और फ़रमाने लगे, 'मैं आज कुछ बीमार-सा हूं।'

चूंकि इब्राहीम की क़ौम को कवाकिब-परस्ती की वजह से तारों में कमाल भी था और एतक़ाद भी इसलिए अपने अ़क़ीदे के लिहाज़ से वे यह समझे कि इब्राहीम किसी नहस सितारे के बुरे असर में फंसे हुए हैं और यह सोचकर और किसी तफ़्सील को जाने बग़ैर वे इब्राहीम को छोड़कर मेला चले गए।

अब जबकि सारी क़ौम, बादशाह, काहिन और मज़हबी पेशवा मेले में मसरूफ़ और शराब व कबाब में मशग़ूल थे, तो हज़रत इब्राहीम ﷺ ने सोचा कि वक़्त आ गया है कि अपने अ़मल के निज़ाम को पूरा करूं और आंखों से दिखाकर सब पर वाज़ेह कर दूं कि उनके देवताओं की हक़ीक़त क्या है? वह उठे और सबसे बड़े देवता के हैकल (मन्दिर) में पहुंचे। देखा तो वहां देवताओं के सामने क़िस्म-क़िस्म के हलवों, फलों, मेवों और मिठाइयों के चढ़ावे रखे थे। इब्राहीम ने तंज़ भरे लहजे में चुपके-चुपके इन मूर्तियों से ख़िताब करके कहा कि यह सब कुछ मौजूद है, उनको खाते क्यों नहीं और फिर कहने लगे। मैं बात कर रहा हूं, क्या बात है कि तुम जवाब नहीं देते? और फिर इन सब को तोड़-फोड़ डाला और सबसे बड़े बुत के कांधे पर तीर रखकर वापस चले गए।

तर्जुमा– *'पस चुपके से जा घुसा उनके बुतों में और कहने लगा (इब्राहीम) उनके देवताओं से, क्यों नहीं खाते? तुमको क्या हो गया? क्यों नहीं बोलते? फिर अपने दाहिने हाथ से उन सबको तोड़ डालो?'* (अस्साफ़्फ़ात 37 : 91-93)

तर्जुमा– *'पस कर दिया उनको टुकड़े-टुकड़े, मगर उनमें से बड़े देवता को छोड़ दिया, ताकि (अपने अ़क़ीदे के मुताबिक़) वे उसकी ओर रुजू करें (कि यह क्या हो गया?')* (अल-अंबिया 21 : 58)

जब लोग मेले से वापस आए तो हैकल (मन्दिर) में बुतों का यह हाल पाया, बहुत बिगड़े, और एक दूसरे से पूछने लगे कि यह क्या हुआ और किसने किया? इनमें वे भी थे, जिनके सामने हज़रत इब्राहीम *'तल्लाहि ल त-'अकीदन-न*

असनामकुम' (अल-अंबिया 21-57) कह चुके थे, उन्होंने फ़ौरन कहा कि यह उस आदमी का काम है, जिसका नाम इब्राहीम है। वही हमारे देवताओं का दुश्मन है।

तर्जुमा–'वे कहने लगे, यह मामला हमारे ख़ुदाओं के साथ किसने किया है? बेशक वह ज़रूर ज़ालिम है। (इनमें से कुछ) कहने लगे, हमने एक जवान की ज़ुबान से इन बुतों का (बुराई के साथ) ज़िक्र सुना है, उसको इब्राहीम कहा जाता है। (यानी यह उसका काम है) (अल-अंबिया 21 : 59-60)

काहिनों और सरदारों ने यह सुना तो ग़म व ग़ुस्से से लाल हो गए और कहने लगे, इसको मज्मे के सामने पकड़ कर लाओ, ताकि सब देखें कि मुजरिम कौन आदमी है?

इब्राहीम सामने लाए गए तो बड़े रौब व दाब से उन्होंने पूछाः क्यों इब्राहीम! तूने हमारे देवताओं के साथ यह सब कुछ किया है?

तर्जुमा–'उन्होंने कहाः इब्राहीम को लोगों के सामने लाओ ताकि वे देखें। वे कहने लगे, क्या इब्राहीम! तूने हमारे देवताओं के साथ यह किया है?' (अल-अंबिया 21 : 61-62)

इब्राहीम ने देखा कि अब वह बेहतरीन मौक़ा आ गया है, जिसके लिए मैंने यह तदबीर अख़्तियार की। मज्मा मौजूद है। लोग देख रहे हैं कि उनके देवताओं का क्या हश्र हो गया इसलिए अब काहिनों, मज़हबी पेशवाओं को लोगों की मौजूदगी में उनके बातिल अ़क़ीदे पर शर्मिंदा कर देने का वक़्त है, तो आम लोगों को आंखों देखतें मालूम हो जाए कि आज तक इन देवताओं से मुताल्लिक़ जो कुछ हमसे काहिनों और पुजारियों ने कहा था, यह सब उनका मक्र व फ़रेब था। मुझे उनसे कहना चाहिए कि यह सब उस बड़े बुत की कार्रवाई है, उससे मालूम करो? ला महाला वे यही जवाब देंगे कि कहीं बुत भी बोलते और बात करते हैं, तब मेरा मतलब हासिल है और फिर मैं उनके अ़क़ीदे का पोल लोगों के सामने खोलकर सही अ़क़ीदे की तलक़ीन कर सकूंगा और बताऊंगा कि किस तरह वे बातिल और गुमराही में मुब्तला हैं। उस वक़्त उन काहिनों और पुजारियों के साथ शर्मिन्दगी के सिवा क्या होगा, इसलिए हज़रत इब्राहीम ने जवाब दिया–

तर्जुमा–*'इब्राहीम ने कहा, बल्कि इनमें से इस बड़े बुत ने यह किया है। पस अगर ये (तुम्हारे देवता) बोलते हों, तो इनसे मालूम कर लो।'*

(अल-अंबिया, 21 : 63)

इब्राहीम की इस यक़ीनी हुज्जत और दलील का काहिनों और पुजारियों के पास क्या जवाब हो सकता था? वह शर्म से डूबे हुए थे, दिलों में ज़लील व रुस्वा थे और सोचते थे कि क्या जवाब दें?

आम लोग भी आज सब कुछ समझ गए और उन्होंने अपनी आंखों से यह मंज़र देख लिया जिसके लिए वे तैयार न थे, यहां तक कि छोटे और बड़े सभी को दिल में इक़रार करना पड़ा कि इब्राहीम ज़ालिम नहीं है, बल्कि ज़ालिम हम ख़ुद हैं कि ऐसे बेदलील और बातिल अ़क़ीदे पर यक़ीन रखते हैं, तब शर्म से सिर झुकाकर कहने लगे, 'इब्राहीम! तू ख़ूब जानता है कि इन देवताओं में बोलने की ताक़त नहीं है, ये तो बेजान मूर्तियां हैं।'

तर्जुमा–*'पस उन्होंने अपने जी में सोचा, फिर कहने लगे, बेशक तुम ही ज़ालिम हो। इसके बाद अपने-अपने सरों को नीचे झुका कर कहने लगे, (ऐ इब्राहीम!) तू ख़ूब जानता है कि ये बोलने वाले नहीं हैं।*

(अल-अंबिया, 21 : 56)

इस तरह हज़रत इब्राहीम की हुज्जत व दलील कामयाब हुई और दुश्मनों ने मान लिया कि ज़ालिम हम ही हैं और उनको तमाम लोगों के सामने ज़ुबान से इक़रार करना पड़ा कि हमारे ये देवता जवाब देने और बोलने की ताक़त नहीं रखते, नफ़ा व नुक़्सान का मालिक होना दूर की बात है, तो अब इब्राहीम ने थोड़े में, मगर जामे लफ़्ज़ों में उनको नसीहत भी की और मलामत भी और बताया कि जब ये देवता न नफ़ा पहुंचा सकते हैं, न नुक़्सान, तो फिर ये ख़ुदा और माबूद कैसे हो सकते हैं, अफ़सोस! तुम इतना भी नहीं समझते या अक़्ल से काम नहीं लेते? फ़रमाने लगे–

'क्या तुम अल्लाह तआ़ला को छोड़कर उन चीज़ों की पूजा करते हो जो तुमको न कुछ नफ़ा पहुंचा सकते हैं और न नुक़्सान दे सकते हैं, तुम पर अफ़सोस है और तुम्हारे इन झूठे माबूदों पर भी, जिनको तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो, क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते।' (अल-अंबिया 21 : 66-67)

तर्जुमा–'पस वे सब हल्ला करके इब्राहीम के गिर्द जमा हो गए। इब्राहीम ने कहा कि जिन बुतों को हाथ से गढ़ते हो, उन्हीं को फिर पूजते हो और असल यह है कि अल्लाह तआ़ला ही ने तुमको पैदा किया है और उनको भी जिन कामों को तुम करते हो।' (अस्साफ़्फ़ात, 37 : 95-96)

हज़रत इब्राहीम के इस वाज़ व नसीहत का असर यह होना चाहिए था कि तमाम क़ौम अपने बातिल अ़क़ीदे से तौबा करके मिल्लते हनीफ़ी को अख़्तियार कर लेती और टेढ़ा रास्ता छोड़कर सीधे रास्ते पर चल पड़ती, लेकिन दिलों का टेढ़, नफ़्स की सरकशी, घमंडी ज़ेहनियत और बातिनी ख़बासत व नीचपन ने इस ओर न आने दिया और इसके ख़िलाफ़ उन सबने इब्राहीम की अदावत व दुश्मनी का नारा बुलन्द कर दिया और एक दूसरे से कहने लगे कि अगर देवताओं की ख़ुशनूदी चाहते हो तो उसको इस गुस्ताख़ी और मुजरिमाना हरकत पर सख़्त सज़ा दो और धधकती आग में जला डालो, ताकि उसकी तब्लीग़ व दावत का क़िस्सा ही पाक हो जाए।

बादशाह को इस्लाम की दावत और उसका मुनाज़रा

अभी ये मश्विरे हो ही रहे थे कि थोड़ा-थोड़ा करके ये बातें वक़्त के बादशाह तक पहुंच गईं, उस ज़माने में इराक़ के बादशाह का लक़ब नमरूद होता था और ये पब्लिक के सिर्फ़ बादशाह ही नहीं होते थे, बल्कि ख़ुद को उनका रब और मालिक मानते थे और पब्लिक भी दूसरे देवताओं की तरह उसको अपना ख़ुदा और माबूद मानती और उसकी इस तरह पूजा करती थी, जिस तरह देवताओं की, बल्कि उनसे भी पास व अदब के साथ पेश आती थी, इसलिए कि वह अक़्ल व शऊर वाला भी होता था और ताज व तख़्त का मालिक भी।

नमरूद को जब यह मालूम हुआ तो आपे से बाहर हो गया और सोचने लगा कि उस आदमी की पैग़म्बराना दावत व तब्लीग़ की सरगर्मियां अगर इसी तरह जारी रहीं तो यह मेरे मालिक होने, रब होने, बादशाह होने और अल्लाह होने से भी सब पब्लिक को दूर कर देगा और इस तरह बाप-दादा के मज़हब के साथ-साथ मेरी यह हुकूमत भी गिर जाएगी, इसलिए इस क़िस्से का शुरू

ही में ख़त्म कर देना बेहतर है।

यह सोचकर उसने हुक्म दिया कि इब्राहीम को हमारे दरबार में हाज़िर करो। इब्राहीम से मालूम किया कि तू बाप-दादा के दीन की मुख़ालफ़त किस लिए करता है और मुझको रब मानने से तुझे क्यों इंकार है?

इब्राहीम ﷺ ने कहा कि मैं एक अल्लाह का मानने वाला हूं, उसके अलावा किसी को उसका शरीक नहीं मानता। सारी कायनात और तमाम आलम उसी की मख़्लूक़ हैं और वही इन सबका पैदा करने वाला और मालिक है। तू भी उसी तरह एक इंसान है, जिस तरह हम सब इंसान हैं, फिर तू किस तरह रब या ख़ुदा हो सकता है और किस तरह ये गूंगे-बहरे लकड़ी के बुत ख़ुदा हो सकते हैं? मैं सही राह पर हूं और तुम सब ग़लत राह पर हो, इसलिए मैं हक़ की तब्लीग़ को किस तरह छोड़ सकता हूं और तुम्हारे बाप-दादा के अपने गढ़े हुए दीन को कैसे अख़्तियार कर सकता हूं?

नमरूद ने इब्राहीम से मालूम किया कि अगर मेरे अलावा तेरा कोई रब है तो उसकी ऐसी ख़ूबी बयान कर कि जिसकी क़ुदरत मुझमें न हो?

तब इब्राहीम ने फ़रमाया, मेरा रब वह है जिसके क़ब्ज़े में मौत व ह्यात है, वही मौत देता है और वही ज़िंदगी बख़्शता है। टेढ़ी समझ वाला नमरूद, मौत व हयात की हक़ीक़त से ना आश्ना नमरूद कहने लगा, इस तरह मौत और ज़िंदगी तो मेरे क़ब्ज़े में भी है और यह कहकर उसी वक़्त एक बेक़सूर आदमी के बारे में जल्लाद को हुक्म दिया कि उसकी गरदन मार दो और मौत के घाट उतार दो। जल्लाद ने फ़ौरन हुक्म पूरा किया और क़त्ल की सज़ा पाये हुए मुज्रिम को जेल से बुलाकर हुक्म दिया कि जाओ हमने तुम्हारी जान बख़्शी की और फिर इब्राहीम की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगा— देखा, मैं भी किस तरह ज़िंदगी बख़्शता और मौत देता हूं, फिर तेरे अल्लाह की ख़ास बात क्या रही?

इब्राहीम समझ गए कि नमरूद या तो मौत और ज़िंदगी की असल हक़ीक़त नहीं जानता और या लोगों और पब्लिक को ग़लतफ़हमी में डाल देना चाहता है, ताकि वे इस फ़र्क़ को समझ न सकें कि ज़िंदगी बख़्शना इसका नाम नहीं है बल्कि न से हां करने का नाम ज़िंदगी बख़्शना है। और इसी तरह किसी

को क़त्ल या फांसी से बचा लेना मौत का मालिक होना नहीं है। मौत का मालिक वही है जो इंसानी रूह को उसके जिस्म से निकाल कर अपने क़ब्ज़े में कर लेता है, इसलिए बहुत से फांसी की सज़ा पाए हुए और तलवार की ज़द में आए हुए लोग ज़िंदगी पा जाते हैं और बहुत से क़त्ल व फांसी से बचाए हुए इंसान मौत के घाट चढ़ जाते हैं और कोई ताक़त उनको रोक नहीं सकती और अगर ऐसा हो सकता तो इब्राहीम से बातें करने वाला नमरूद गद्दी पर न बैठा होता, बल्कि उसके ख़ानदान का पहला आदमी ही आज भी उस ताज व तख़्त का मालिक नज़र आता, मगर न मालूम कि इराक़ के इस राज्य के कितने दावेदार ज़मीन के अन्दर दफ़न हो चुके हैं और अभी कितनों की बारी है।

फिर भी इब्राहीम ने सोचा कि अगर मैंने इस मौक़े पर मौत और ज़िंदगी के बारीक फ़लसफ़े पर वहस शुरू कर दी, तो नमरूद का मक़्सद पूरा हो जाएगा और लोगों को ग़लत रुख़ पर डालकर असल मामले को उलझा देगा और इस तरह मेरा नेक मक़्सद पूरा न हो सकेगा और हक़ की तब्लीग़ के सिलसिले में भरी मज्लिस में नमरूद को लाजवाब करने का मौक़ा हाथ से जाता रहेगा, क्योंकि वहस व मुबाहसा और जद्ल व मुनाज़रा मेरा असल मक़्सद नहीं है, वल्कि लोगों के दिल व दिमाग़ में एक अल्लाह का यक़ीन पैदा करना मेरा एक ही मक़्सद है, इसलिए उन्होंने इस दलील को नज़रंदाज़ करके समझाने का एक दूसरा तरीक़ा अपनाया और ऐसी दलील पेश की, जिसे सुबह व शाम हर आदमी आंखों से देखता और वग़ैर किसी मंतक़ी दलील के दिन व रात की ज़िंदगी में उससे दोचार होता रहता है।

इब्राहीम ने फ़रमाया: मैं उस हस्ती को 'अल्लाह' कहता हूं जो हर दिन सूरज को पूरव से लाता और मग़रिव की तरफ़ ले जाता है, पस अगर तू भी इसी तरह ख़ुदाई का दावा करता है, तो इसके ख़िलाफ़ सूरज को मग़रिव से निकाल और मशरिक़ में छिपा। यह सुनकर नमरूद घबरा गया और उससे कोई जवाव न वन पड़ा और इस तरह इब्राहीम عليه السلام की ज़ुबान से नमरूद पर अल्लाह की हुज्जत पूरी हुई।

नमरूद इस दलील से घवराया क्यों और उसके पास इसके मुक़ाबले में

ग़लत समझने की गुंजाइश क्यों न रही? यह इसलिए कि इब्राहीम की दलील का हासिल यह था कि मैं एक ऐसी हस्ती को अल्लाह मानता हूं, जिसके बारे में मेरा अ़क़ीदा यह है कि यह सारी कायनात और इसका सारा निज़ाम उस ही ने बनाया है और उसने इस पूरे निज़ाम को अपनी हिक्मत के क़ानून से ऐसा कस दिया है कि उसकी कोई चीज़ मुक़र्रर जगह से पहले अपनी जगह से हट नहीं सकती है और न इधर-उधर हो सकती है। तुम इस पूरे निज़ाम में से सूरज ही को देखो कि दुनिया उससे कितने फ़ायदे हासिल करती है। साथ ही अल्लाह ने उसके निकलने और डूबने का भी एक निज़ाम मुक़र्रर कर दिया है, पस अगर सूरज लाख बार भी चाहे कि वह इस निज़ाम से बाहर हो जाए तो इस पर उसे क़ुदरत नहीं है, क्योंकि उसकी बागडोर एक अल्लाह की क़ुदरत के क़ब्ज़े में है और उसको बेशक यह क़ुदरत है कि जो चाहे कर गुज़रे, लेकिन वह करता वही है जो उसकी हिक्मत का तक़ाज़ा है।

इसलिए अब नमरूद के लिए तीन ही शक्लें जवाब देने की हो सकती थीं, या वह यह कहे कि मुझे सूरज पर पूरी क़ुदरत हासिल है और मैंने भी यह सारा निज़ाम बनाया है, मगर उसने यह जवाब इसलिए नहीं दिया कि वह ख़ुद इसका क़ायल नहीं था कि यह सारी कायनात उसने बनाई है और सूरज की हरकत उसकी क़ुदरत के क़ब्ज़े में है, बल्कि वह तो ख़ुद को अपनी रियाया का रब और देवता कहलाता था और बस।

दूसरी शक्ल यह थी कि वह कहता, 'मैं इस दुनिया को किसी की पैदा की हुई नहीं मानता और सूरज तो मुस्तक़िल ख़ुद देवता है, उसके अख़्तियार में ख़ुद बहुत कुछ है, मगर उसने यह भी इसलिए न कहा कि अगर वह ऐसा कहता, तो इब्राहीम का वही एतराज़ सामने आ जाता जो उन्होंने सबके सामने सूरज के रब होने के ख़िलाफ़ उठाया था कि अगर वह 'रब' है तो इबादत करने वालों और पुजारियों से ज़्यादा इस माबूद और देवता में तब्दीलियां और फ़ना के असरात क्यों मौजूद हैं?' 'रब' को फना और तब्दीली से क्या वास्ता? और क्या उसकी क़ुदरत में यह है कि अगर वह चाहे तो मुक़र्रर वक़्त से पहले या बाद निकले या डूब जाए?

तीसरी शक्ल यह थी कि इब्राहीम के चैलेंज को क़ुबूल कर लेता और

मग़रिब से निकाल कर दिखा देता, मगर नमरूद चूंकि इन तीनों शक्लों में से किसी शक्ल में जवाब देने की क़ुदरत न रखता था, इसलिए परेशान और लाजवाब हो जाने के अलावा उसके पास कोई दूसरा रास्ता ही नहीं बचा।

ग़रज़ हज़रत इब्राहीम ﷺ ने सबसे पहले अपने वालिद आज़र से इस्लाम के सिलसिले की बात कही, हक़ का पैग़ाम सुनाया और सीधा रास्ता दिखलाया। इसके बाद आम लोग और सब लोगों के सामने हक़ को मान लेने के लिए फ़ितरत के बेहतरीन उसूल और दलील पेश किए, नर्मी से, मीठी बातों से मगर मज़बूत और रोशन हुज्जत व दलील के साथ उन पर हक़ को वाज़ेह किया और सबसे आख़िर में बादशाह नमरूद से मुनाज़रा किया और उस पर रोशन कर दिया कि रब होने और माबूद होने का हक़ सिर्फ़ एक अल्लाह ही के लिए सबसे मुनासिब है और बड़े-से-बड़े शहंशाह को भी यह हक़ नहीं है कि वह उसकी बराबरी का दावा करे, क्योंकि वह और कुल दुनिया उसी की मख़्लूक़ है और वजूद व अदम के क़ैद व बन्द में गिरफ़्तार, मगर इसके बावजूद कि बादशाह, आज़र और आम लोग, हज़रत इब्राहीम की दलीलों से लाजवाब होते और दिलों में क़ायल, बल्कि बुतों के वाक़िए में तो ज़ुबान से इक़रार करना पड़ा कि इब्राहीम जो कुछ कहता है, वही हक़ है और सही व दुरुस्त, फिर भी उनमें से किसी ने सीधे रास्ते को न अपनाया और हक़ क़ुबूल करने से बचते रहे और इतना ही नहीं, बल्कि इसके ख़िलाफ़ अपनी नदामत और ज़िल्लत से मुतास्सिर होकर बहुत ज़्यादा ग़ैज़ व ग़ज़ब में आ गए और बादशाह से रियाया तक सब ने एक होकर फ़ैसला कर लिया कि देवताओं की तौहीन और बाप-दादा के दीन की मुख़ालफ़त में इब्राहीम को धधकती आग में जला देना चाहिए, क्योंकि ऐसे सख़्त मुजरिम की सज़ा यही हो सकती है और देवताओं को हक़ीर समझने का बदला इसी तरह लिया जा सकता है।

आग का ठंडा हो जाना

इस मरहले पर पहुंच कर इब्राहीम ﷺ की जद्दोजेहद का मामला ख़त्म हो गया और अब दलीलों की ताक़त के मुक़ाबले में माद्दी ताक़त व सतवत ने मुज़ाहरा शुरू कर दिया, बाप उसका दुश्मन, लोग उसके मुख़ालिफ़ और

वक़्त का बादशाह उसे परेशान करने को तैयार, एक हस्ती और चारों ओर से मुख़ालफ़त की आवाज़, दुश्मनी के नारे और नफ़रत व हक़ारत के साथ कड़ा बदला और ख़ौफ़नाक सज़ा के इरादे, ऐसे वक़्त में उसकी मदद कौन करे और उसकी हिमायत का सामान कैसे जुटे?

मगर इब्राहीम ﷺ को न इसकी परवाह थी और न उसका डर। वह इसी तरह बे-ख़ौफ़ व ख़तर और मलामत करने वालों की मलामत से बेनियाज़, हक़ के एलान में मस्त और रुश्द व हिदायत की दावत में लगे हुए थे। अलबत्ता ऐसे नाज़ुक वक़्त में जब तमाम माद्दी सहारे ख़त्म, दुन्यवी अस्बाब नापैद और हिमायत व नुसरत के ज़ाहिरी अस्बाब मफ़्क़ूद हो चुके थे, इब्राहीम को उस वक़्त भी एक ऐसा बड़ा जबरदस्त सहारा मौजूद था, जिसको तमाम सहारों का सहारा और तमाम मददों का मदद करने वाला कहा ज़ाता है और वह एक अल्लाह का सहारा था। उसने अपने जलीलुल क़द्र पैग़म्बर, क़ौम के बड़े दर्जे के हादी और रहनुमा को बे-यार व मददगार न रहने दिया और दुश्मनों के तमाम मंसूबों को ख़ाक में मिला दिया।

हुआ यह कि नमरूद और क़ौम ने इब्राहीम की सज़ा के लिए एक मख़्सूस जगह पर कई दिन लगातार आग धधकाई यहां तक कि उसके शोलों से आस-पास की चीज़ें तक झुलसने लगीं। जब इस तरह बादशाह और क़ौम को पूरा इत्मीनान हो गया कि अब इब्राहीम के इससे बच निकलने की कोई शक्ल बाक़ी नहीं रही, तब एक गोफन में इब्राहीम को बिठा कर दधकती हुई आग में फेंक दिया गया।

उस वक़्त आग में जलाने की तासीर बख़्शने वाले ने आग को हुक्म दिया कि वह इब्राहीम पर अपने जलाने का असर न करे। नारी होते हुए और (आग के) अ़नासिर का मज्मूआ़ होते हुए भी उसके हक़ में सलामती के साथ सर्द पड़ जाए।

आग उसी वक़्त हज़रत इब्राहीम के हक़ में 'बरदंव-व सलामा' बन गई और दुश्मन उनको किसी क़िस्म का नुक़्सान न पहुंचा सके और इब्राहीम ﷺ दहकती आग में सालिम व महफ़ूज़ दुश्मनों के नरग़े से निकल गए।

'दुश्मन अगर क़वीस्त, निगहबां क़वी तरअस्त'

(दुश्मन अगर ताक़तवर है, निगहबान उससे ज़्यादा ताक़त वाला है)

इस जगह एक मज़हबी इंसान के दिल में इत्मीनान और सुकूने ख़ातिर के लिए यह काफ़ी है कि वह आग के 'बर्दव-व सलामा' (ठंडी और सलामती वाली) हो जाने को इसलिए सही और हक़ीक़त पर मब्नी समझे कि उसने अपनी अक़्ल और शऊर का एक तो इस मामले में इम्तिहान कर लिया है कि क़ुरआन अज़ीज़ की तालीम वह्य इलाही की तालीम है और उसको लाने वाली हस्ती की ज़िंदगी का हर पहलू पैग़म्बराना मासूमियत के साथ जुड़ा हुआ है और यह कि वह जिन मोजज़ाना हक़ीक़तों की इत्तिला देता और अल्लाह की वह्य के ज़रिए हम को सुनाता है, वे अक़्ल के लिए अगरचे हैरान कर देने वाली हैं, लेकिन अक़्ल की निगाह में महाल और नामुम्किन नहीं, इसलिए इस मुख़्बिरे सादिक़ (की जिसकी ज़िंदगी की सदाक़त का हर पहलू से इम्तिहान कराया गया है) कि इस क़िस्म की ख़बरें बेशक सही और हक़ हैं और क़ैसरे रूम हिरक़्ल आज़म (हरक्यूवस) के क़ौल के मुताबिक़ कि 'जो आदमी इंसानों के साथ झूठ नहीं बोलता और उससे दग़ा न फ़रेब नहीं करता, वह एक लम्हे के लिए भी अल्लाह की जानिब किसी ग़लत बात को मंसूब नहीं कर सकता और कभी उस पर झूठ बोलने की जुर्रात नहीं कर सकता।' और मज़हबी ज़िंदगी में साफ़ और सीधी राह भी यही है कि जिस मज़हब की मुकम्मल तालीम को अक़्ल की कसौटी पर परख कर हर तरह इत्मीनान के क़ाबिल पा लिया जाए, उसकी बताई हुई कुछ ऐसी बातों पर, जो अक़्ल के लिए सिर्फ़ हैरानी में डालने वाली हों, मगर इसके नज़दीक मुहाले ज़ाती और नामुम्किन जैसी न हों, फ़लसफ़ियाना छेड़ख़ानियों के बग़ैर ईमान ले आया जाए और साहिबे वह्य ﷺ की इस यक़ीनी और ग़ैर-मश्कूक इत्तिला को सूरज की रोशनी से ज़्यादा रोशन समझा जाए और यक़ीन रखा जाए कि तमाम चीज़ों में ख़वास और तासीरात पैदा करने वाले अल्लाह में यह भी क़ुदरत है कि जब चाहे, उनकी दी हुई तासीर और ख़ास्से को सलब कर ले और जब चाहे दूसरी कैफ़ियतों के साथ बदल डाले। माद्दापरस्तों के लिए अगर यह राह इत्मीनान वाली न हो और फ़लसफ़े के शैदाई मज़हब के इस मसूअले को भी फ़लसफ़ियाना मूशगाफ़ियों (बाल की खाल निकालने) से पाक न रहने देना

चाहते हों, तो उनके लिए भी इस मोजज़े से इंकार की कोई गुंजाइश नहीं है, इसलिए कि हम यह मान रहे हैं कि आग की तबई ख़ासियत जला देना है और जो चीज़ भी उसमें पड़ेगी, जल जाएगी, लेकिन इसकी क्या वजह कि कुछ कपड़े और वे चीज़ें जिनको 'फ़ायर प्रूफ़' कहा जाता है, आग की लपटों के अन्दर क्यों महफ़ूज़ रहती हैं और उनको आग जला कर क्यों नहीं ख़ाकस्तर (धूल में मिला देना) बना देती।

तुम कहोगे कि आग दस्तूर के मुताबिक़ जलाने की ख़ासियत रखती है, मगर कपड़े या चीज़ पर एक ऐसा मसाला लगा दिया गया है, जिस पर आग अपना असर नहीं कर सकती, यह नहीं कि आग ने अपने जलाने की ख़ासित ख़त्म कर दी है।

तो एक मज़हबी इंसान के लिए इसी तरह आपके फ़लसफ़ियाना रंग में यह जवाब देने का क्यों हक़ नहीं है कि नमरूद और उसकी क़ौम की धधकती आग में जलाने की ख़ासियत पहले की तरह वैसे ही बाक़ी थी, जैसे आग के अनासिर (तत्त्वों) में मौजूद है, मगर इब्राहीम के जिस्म के लिए बे-असर साबित हुई, फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि तुम्हारे 'फ़ायर प्रूफ़' में इंसान की सोची हुई तदबीरों का दख़ल है और इसलिए हर सीखने वाले को एक फ़न की तरह सीख लेने का मौक़ा हासिल है और इब्राहीम के जिस्म का आग से महफ़ूज़ हो जाना वे-वास्ता अल्लाह की तदबीर के ज़ेरे असर था और इस क़िस्म का अमल पैग़म्बर की सच्चाई और दुश्मनों के मुक़ाबले में उसकी बरतरी के लिए कभी-कभी हिक्मत के तक़ाज़ों के तौर पर उसकी तरफ़ से सामने आ जाता और शरीअ़त की इस्तिलाह में 'मोजज़ा' गिना जाता है। बेशक वह न फ़न होता है और न वसाइल व अस्बाब से पैदा की हुई तदबीरों का मोहताज, पस अल्लाह की मख़्लूक़ 'इंसान' को अगर यह क़ुदरत हासिल है कि किसी चीज़ की तबई ख़ासियतों को कुछ चीज़ों पर असरअंदाज़ न होने दे, तो चीज़ों के ख़्वास के पैदा करने वाले को क्यों यह क़ुदरत हासिल नहीं कि वह किसी ख़ास मौक़े पर चीज़ की तासीर को अमल से रोक दे।

और अगर आज साइंस की खोज के मुताबिक़ फ़िज़ा में ऐसी गैसें मौजूद हैं, जिनके बदन पर असर करने से आग के जलन से महफ़ूज़ रहा जा सकता

है, तो गैसों के पैदा करने वाले ख़ालिक़ के लिए कौन-सी ऐसी रुकावट है कि नमरूद की धधकती आग में उनको इब्राहीम तक न पहुंचा दे और इस तरह आग को इब्राहीम के हक़ में 'बरदंव-व सलामा' (ठंडी व सलामती) न बना दे।

आज भी हो जो ब्राहीम का ईमां पैदा
आग कर सकती है अन्दाज़े गुलिस्तां पैदा।

मुख़्तसर यह कि बदबख़्त क़ौम ने कुछ न सुना और किसी भी तरह रुश्द व हिदायत को क़ुबूल न किया और इब्राहीम की बीवी हज़रत सारा और उनके बिरादरज़ादा हज़रत लूत के अलावा कोई एक भी ईमान नहीं लाया। तमाम क़ौम ने हज़रत इब्राहीम को जला देने का फ़ैसला कर लिया और दहकती आग में डाल दिया, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने दुश्मनों के इरादों को ज़लील व रुसवा करके हज़रत इब्राहीम के हक़ में आग को 'बरदंव-व सलामा' बना दिया, तो अब हज़रत इब्राहीम ने इरादा किया कि किसी दूसरी जगह जाकर पैग़ामे इलाही सुनाएं और हक़ की दावत पहुंचाएं और यह सोचकर 'फ़िदान' आराम से हिजरत का इरादा कर लिया।

तर्जुमा–*'और इब्राहीम ने कहा, मैं जाने वाला हूं अपने परवरदिगार की तरफ़, क़रीब ही वह मेरी रहनुमाई करेगा।'* (अस्साफ़्फ़ात 37 : 99)

यानी अब मुझे किसी ऐसी आबादी में हिजरत करके चला जाना चाहिए, जहां अल्लाह की आवाज़ हक़ पसन्द कान से सुनी जाए, अल्लाह की ज़मीन तंग नहीं है, यह नहीं और सही, मेरा काम पहुंचाना है, 'अल्लाह अपने दीन की इशाअत का सामान ख़ुद पैदा कर देगा।

और किलदानीयीन की ओर हिजरत

बहरहाल हज़रत इब्राहीम अपने बाप आज़र और क़ौम से जुदा होकर फ़रात के पच्छिमी किनारे के क़रीब एक बस्ती में चले गए जो आज किलदानीयीन के नाम से मशहूर है। यहां कुछ दिनों क़ियाम किया और हज़रत लूत और हज़रत सारा दोनों सफ़र में साथ रहे। कुछ दिनों के बाद यहां से हरान या हारान की ओर चले गए और वहां 'दीने हनीफ़' की तब्लीग़ शुरू कर दी, मगर इस मुद्दत में बराबर अपने बाप आज़र के लिए बारगाहे इलाही में

इस्तग़फ़ार करते और उसकी हिदायत के लिए दुआ मांगते रहे और यह सब कुछ इसलिए किया कि वे निहायत दिल के नर्म, रहीम और बहुत ही नर्म दिल और बुर्दबार थे। इसलिए आज़र की ओर से हर क़िस्म की अ़दावत के मुज़ाहरों के बावजूद उन्होंने आज़र से यह वायदा किया था कि अगरचे मैं तुझसे जुदा हो रहा हूं और अफ़सोस कि तूने अल्लाह की रुश्द व हिदायत पर तवज्जोह न की, फिर भी मैं बराबर तेरे हक़ में अल्लाह की मग़्फ़िरत की दुआ करता रहूंगा। आख़िरकार हज़रत इब्राहीम को अल्लाह की वह्य ने मुत्तला किया कि आज़र ईमान लाने वाला नहीं है और यह उन्हीं लोगों में से है जिन्होंने अपनी नेक इस्तेदाद को फ़ना करके ख़ुद को उसका मिस्दाक़ बना लिया।

तर्जुमा– *'अल्लाह ने मोहर लगा दी उनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आंखों पर परदा है।'* (अल-बक़रः 2/7)

हज़रत इब्राहीम को जब यह मालूम हो गया तो आपने आज़र से अपने अलग होने का साफ़ एलान कर दिया।

फ़लस्तीन की ओर हिजरत

हज़रत इब्राहीम इस तरह तब्लीग़ करते-करते फ़लस्तीन पहुंचे। इस सफ़र में भी उनके साथ हज़रत सारा ﵂, हज़रत लूत ﵇ और लूत की बीवी थीं। हज़रत इब्राहीम फ़लस्तीन के पच्छिमी हिस्से में ठहरे, उस ज़माने में यह इलाक़ा कन्आनियों के इक़्तिदार में था, फिर क़रीब ही शीकम (नाबलस) में चले गए और वहां कुछ दिनों ठहरे रहे, इसके बाद यहां भी ज़्यादा दिनों क़ियाम नहीं फ़रमाया और मग़्रिब की तरफ़ ही बढ़ते चले गए, यहां तक कि मिस्र तक जा पहुंचे।

हज़रत इब्राहीम ﵇ से मुताल्लिक़ दूसरे मस्अले

हदीस की किताबों में हज़रत इब्राहीम ﵇ के ताल्लुक़ से इस तरह कहा गया है कि–

'नहीं झूठ बोला कभी हरगिज़ इब्राहीम ﵇, मगर तीन झूठ'

(बुख़ारी शरीफ़)

तफ़्सील यह है—

1. हज़रत इब्राहीम ﷺ की तबियत की ख़राबी—इब्राहीम के वाक़ियों में क़ुरआन ने इस मौक़े पर, जबकि इब्राहीम और क़ौम के कुछ लोगों के दर्मियान मेले की शिर्कत के लिए बात-चीत हो रही थी, इब्राहीम ﷺ का क़ौल नक़ल किया है—*'क़ा-ल इन्नी सक़ीम'* (इब्राहीम ने फ़रमाया, मैं बीमार हूं) इस जुम्ले से एक ख़ाली ज़ेहन इंसान एक लम्हे के लिए भी यह नहीं सोच सकता कि इसमें झूठ का भी हिस्सा हो सकता है, क्योंकि इसमें ज़िक्र 'तबियत की अ़लालत' का है, जिसको इब्राहीम ही ख़ूब जान सकते हैं। इसमें दूसरे को ख़ामख़ाही शक और तरद्दुद का कौन-सा मौक़ा है, यहां तक कि अगर एक आदमी ज़ाहिरी निगाहों में तन्दुरुस्त नज़र आता हो, तब भी ज़रूरी नहीं है कि वह वाक़ई तन्दुरुस्त है। हो सकता है, उसका मिज़ाज किसी वजह से एतदाल की हद पर न हो और ऐसी तक्लीफ़ में पड़ा हो जिसका इज़्हार किए बग़ैर दूसरा उसको न समझ सके।

2. बुतों की तोड़-फोड़—बुतों की तोड़-फोड़ के सिलसिले में जब इब्राहीम से मालूम किया गया तो हज़रत इब्राहीम का जवाब इस तरह नक़ल किया गया है—

तर्जुमा—'इब्राहीम ने कहा: *बल्कि इनमें से सबसे बड़े बुत ने किया है, पस इनसे पूछो, अगर ये बोल सकते हैं।'* (अंबिया 21 : 63)

इस जवाब में झूठ की मिलावट इसलिए नहीं हो सकती कि दो अलग-अलग ख़्याल वाले इंसानों में अगर मुनाज़रा और ख़्यालात के तबादल की नौबत आ जाती है तो मामूली हर्फ़ की आगाही रखने वाला भी इस हक़ीक़त को जानता है कि अपने दुश्मन को उसकी ग़लती पर मुतनब्बह करने और लाजवाब कर देने का बेहतरीन तरीक़ा यह है कि उसकी मानी हुई बातों में से किसी माने हुए अ़क़ीदे को सही फ़र्ज़ करके इस तरह उसका इस्तेमाल करे कि उसका फल और नतीजा दुश्मन के ख़िलाफ़ और अपने मुवाफ़िक़ ज़ाहिर हो। इब्राहीम ﷺ ने यही किया। उनकी क़ौम का यह अ़क़ीदा था कि उनके देवता सब कुछ सुनते और हमारी मुरादों को पूरा करते हैं, वे अपने पुजारियों और अपने से अक़ीदत रखने वालों से ख़ुश और अपने दुश्मनों और

मुख़ालिफ़ों से ज़बरदस्त बदला लेते हैं। इब्राहीम ने जब इन देवताओं को तोड़-फोड़ डाला तो बड़े बुत को छोड़ दिया। आख़िर जब पूछ-गछ की नौबत आई तो उन्होंने मुनाज़रे का वही तरीक़ा अख़्तियार किया, जिसका ज़िक्र हो चुका है। नतीजा यह निकला कि काहिनों, पुजारियों और सारी क़ौम को यह मानना पड़ा कि हम ही ग़लती पर हैं और बुतों में बोलने की ताक़त नहीं है। इसलिए अपनी तबियत की ख़राबी और बुतों की तोड़-फोड़ से मुताल्लिक़ जुम्लों में एक बात भी ऐसी नहीं है जिसको हक़ीक़त में या सूरत-शक्ल के एतबार से झूठ कहा जा सके।

3. हज़रत सारा से मुताल्लिक़ हज़रत इब्राहीम का बयान—तीसरी बात हज़रत अबू हुरैह ﷺ की हदीस से मुताल्लिक़ है, जिसमें ज़िक्र किया गया है कि इब्राहीम का जब मिस्र से गुज़र हुआ तो उन्होंने मिस्र पहुंचने से पहले अपनी पाक बीवी हज़रत सारा ﷺ से यह फ़रमाया कि यहां का बादशाह जाबिर व ज़ालिम है, अगर किसी हसीन औरत को देखता है तो उसको ज़बरदस्ती छीन लेता है और उसके साथी मर्द को, अगर वह औरत का शौहर है, तो क़त्ल कर डालता है और कोई दूसरा अज़ीज़ है, तो उससे कोई छेड़खानी नहीं करता, तुम चूंकि मेरी दीनी बहन हो और इस धरती पर मेरे और तुम्हारे अलावा दूसरा कोई मुसलमान नहीं है, इसलिए तुम उससे कह देना कि यह मेरा भाई है। चुनांचे ऐसा ही हुआ और जब रात में उसने बुरा इरादा किया तो उसका हाथ शल होकर रह गया और वह किसी तरह हज़रत सारा को हाथ न लगा सका। यह देखकर उसने हज़रत सारा से कहा: अपने अल्लाह से दुआ कर कि मेरा हाथ दुरुस्त हो जाए, तो मैं तुझको रिहा कर दूंगा।

सारा ﷺ ने दुआ की, मगर उसने फिर बुरा इरादा किया। दोबारा उसका हाथ शल हो गया। तीसरी बार फिर यही तमाम क़िस्सा पेश आया, तब उसने कहा कि मालूम होता है यह 'जिन्न' है, इंसान नहीं है। इसको मेरे पास से ले जाओ और साथ ही हाजरा को हवाला करके कहा कि इसको भी अपने साथ ले जा, मैंने तेरे हवाले किया। जब सारा ﷺ हाजरा ﷺ को साथ लेकर हज़रत इब्राहीम ﷺ के पास आईं, तो उन्होंने हाल मालूम किया और सारा ﷺ ने मुबारकबाद दी और कहा, 'शुक्र है अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल का कि उसने

हमको उस फ़ासिक़ व फ़ाजिर से नजात दी और आपके लिए एक ख़ादिम (ख़िदमत करने वाला) और साथ कर दिया।'

इस मज़्मून की हदीसें अलग-अलग हदीस की किताबों में नक़ल की गई हैं। मुसन्निफ़े (लेखक) किताब मौलाना मुहंम्मद हिफ़ज़ुर्रहमान स्योहारवी ने तफ़्सील से गुफ़्तगू करने के बाद पहले यह लिखा–

'सच बोलना अंबिया ﷺ की अकाट और नबी की अस्मत के लिए एक ज़रूरी सिफ़त है, फिर जबकि ख़ुसूसियत के साथ क़ुरआन मजीद ने इब्राहीम से मुताल्लिक़ नीचे लिखी ख़ास बातों का खुलकर ज़िक्र फ़रमा दिया है, तो उनके साथ देखने में भी झूठ की निस्बत कैसी?

'और याद करो किताब में इब्राहीम का ज़िक्र बेशक था, वह सिद्दीक़ नबी' (मरयम 19 : 41)

'सिद्दीक़' मुबालग़े का सेग़ा है और उसी हस्ती के लिए वह बोला जाता है 'सिद्दीक़' जिसकी ज़ाती और नफ़्सियाती सिफ़त हो। (इसके बाद मुसन्निफ़ मौसूफ़ (लेखक महोदय) अपनी राय लिखते हैं–

पैग़म्बर की इस्मत का मसूअला बेशक दीन के उसूल और अ़क़ीदा की मुहिम्मों में से है, बल्कि दीन व मज़हब की सच्चाई की बुनियाद सिर्फ़ इसी एक मसूअले पर क़ायम है, क्योंकि यह मान लेने के बाद कि कुछ हालतों में नबी और पैग़म्बर भी झूठ की कोई न कोई शक्ल व सूरत निकाल सकता है, भले ही वह हिमायत ही में क्यों न हो, उसकी लाई हुई तालीम से यह फ़र्क़ उठ जाएगा कि उसका कौन-सा हिस्सा अपनी हक़ीक़ी मुराद से जुड़ा हुआ है और कौन-सा झूठ के रंग में रंगा हुआ और अगर यह मान लिया जाए तो फिर दीन दीन नहीं रह सकता और न मज़हब, इसलिए क़ुरआन मजीद का यह मंसूस अ़क़ीदा 'इस्मते पैग़म्बर' अपनी जगह पर न डिगने वाला और न बदलने वाला मज़बूत अ़क़ीदा है और इसलिए बेशक जो इस अ़क़ीदे की सच्चाई पर हर्फ़ लाने की वजह बने, वह ख़ुद अपनी जगह या रद्द व इंकार के क़ाबिल है या अपनी ताबीर के बेहतर होने के लिए जवाबदेह।

हज़रत हाजरा रज़ि० की हैसियत

तमाम रिवायतों से इस क़दर यक़ीनी मालूम होता है कि हज़रत इब्राहीम ﷺ अपनी बीवी सारा और अपने भतीजे हज़रत लूत ﷺ के साथ मिस्र तशरीफ़ ले गए। यह वह ज़माना है जबकि मिस्र की हुकूमत ऐसे ख़ानदान के हाथ में थी जो सामी क़ौम से ताल्लुक़ रखता था और इस तरह हज़रत इब्राहीम से नसबी सिलसिले में वाबस्ता था। यहां पहुंच कर इब्राहीम और मिस्र के फ़िरऔन के दर्मियान ज़रूर कोई ऐसा वाक़िया पेश आया जिससे उसको यक़ीन हो गया कि इब्राहीम और उसका ख़ानदान ख़ुदा का मक़्बूल और बरगज़ीदा ख़ानदान है। यह देखकर उसने हज़रत इब्राहीम और उनकी बीवी हज़रत सारा का बहुत एज़ाज़ किया और उनको हर क़िस्म के माल व मताअ् से नवाज़ा और सिर्फ़ इसी पर इक्तिफ़ा नहीं किया बल्कि अपने क़दीम ख़ानदानी रिश्ते को मज़बूत और मुस्तहकम करने के लिए अपनी बेटी हाजरा को भी उनसे ब्याह दे दिया, जो उस ज़माने में रस्म व रिवाज के एतबार से पहली और बड़ी बीवी की ख़िदमतगुज़ार क़रार पाई। चुनांचे यहूदियों की एतबार वाली रिवायत के मुताबिक़ हज़रत हाजरा 'शाहे मिस्र' फ़िरऔन की बेटी थीं, लौंडी और बांदी नहीं थीं। तौरात का एक एतबार वाला मुफ़स्सिर बी सलूमलू इस्हाक़ किताबे पैदाइश बाब 16 आयत 1 की तफ़्सीर में लिखता है–

'जब उसने (रक़यून शाहे मिस्र ने) सारा की वजह से करामतों को देखा तो कहा: मेरी बेटी का इस घर में लौंडी होकर रहना दूसरे घर में मलका होकर रहने से बेहतर है।'

(अरजुल क़ुरआन, भाग 2, पृ० 41)

दूसरे अरबी भाषा में हाजरा के मानी के लिहाज़ से क़ियास के क़रीब ज़्यादा यही है कि चूंकि यह अपने वतन मिस्र से जुदा होकर या हिजरत करके हज़रत इब्राहीम की शरीके ह्यात और हज़रत सारा की ख़िदमत गुज़ार बनीं, इसलिए हाजरा कहलाईं और तौरात में हाजरा को सिर्फ़ इसीलिए लौंडी कहा गया कि शाहे मिस्र ने उनको सारा और हज़रत इब्राहीम ﷺ के सुपुर्द करते हुए यह कहा था कि वह सारा की ख़िदमत गुज़ार रहेगी, इस मतलब न था कि वह लौंडी ('जारिया' के मानी में) हैं।

सूरः मुम्तहिनः में हज़रत इब्राहीम की दुआ़

सूरः मुम्तहिनः में हज़रत इब्राहीम ﷺ की एक ख़ास दुआ़ इस तरह है–

तर्जुमा–*ऐ हमारे परवरदिगार! हमको उन लोगों के लिए 'फ़ित्ला' न बना, जो काफ़िर हैं।'* (अल-मुम्तहिना 60 : 5)

इस दुआ़ में तवज्जोह के क़ाबिल बात यह है कि इस दुआ़ से मुराद क्या है और वह (हज़रत इब्राहीम ﷺ) काफ़िरों के लिए फ़ितना बनने से मुताल्लिक़ क्या ख़्वाहिश रखते थे?

इस्तिलाह (पारिभाषिक शब्द के रूप) में इम्तिहान, आज़माइश और परख को फ़ित्ला कहा जाता है और इसलिए हज़रते इंसान पर जो परेशानियां और मुसीबतें आती हैं, वे उसी मुनासबत से 'फ़ित्ला' कहलाती हैं। क़ुरआन हकीम ने भी आल-औलाद और मंसब व जाह को इसी मानी के पेशेनज़र 'फ़ित्ला' कहा है और साफ़-साफ़ एलान किया है कि सच्चे और झूठे की जांच के लिए 'मोमिन' को इस कसौटी पर ज़रूर परखा जाता है।

उलेमा-ए-हक़ ने हज़रत इब्राहीम ﷺ की ऊपर लिखी दुआ़ से मुताल्लिक़ सवालों को कई तरह हल किया है। इन सबमें सबसे ज़्यादा तवज्जोह के क़ाबिल जवाब यह है कि हज़रत इब्राहीम ﷺ अपने इन जामे कलिमों में बारगाहे हक़ से इसकी तलब कर रहे हैं कि अल्लाह! तू हमको काफ़िरों के हाथों आज़माइश के लिए न छोड़ देना कि वे हमको ईमान से हटा दें और कुफ़्र के क़ुबूल करने के लिए तरह-तरह की मुसीबतों और तक्लीफ़ों का शिकार बनाएं और जब्र व ज़ुल्म के ज़रिए राह से बे-राह बनाने पर आमादा कर दिलेर हो जाएं, यानी यह एक बाख़ुदा इंसान, जलीलुल क़द्र पैग़म्बर, अज़ीमुलमरतबत हादी की दरगाहे इलाही में दुआ़ है, जो अपनी इंसानी कमज़ोरियों पर भी नज़र रखे हुए है और हक़ के सामने अपना हाथ फैला रहा है कि हम पर वह वक़्त कभी न आए कि कुफ़्र की शौकत व ताक़त इस तरह कुचल डाले कि तौहीद के परस्तार इस सख़्त और कड़ी आज़माइश में मुब्तला होकर हक़ व बातिल के दर्मियान इम्तियाज़ खो बैठें।

सूरः शुअ्रा में हज़रत इब्राहीम की दुआ़

सूरः शुअ्रा में हज़रत इब्राहीम की यह दुआ़ ज़िक्र की गई है–

तर्जुमा– *'(परवरदिगार!) और जिस दिन लोग दोबारा उठाए जाएं, तो उस दिन मुझको रुसवा न करना।'*

इस दुआ़ से मुताल्लिक़ एक हदीस का मज़्मून इस तरह से है कि–

'हज़रत इब्राहीम ﷺ क़ियामत के दिन अपने बाप (आज़र) को फटेहाल और रूस्याह देखेंगे, तो फ़रमाएंगे, परवरदिगार! दुनिया में तूने मेरी इस दुआ़ को क़ुबूल फ़रमा लिया था (यानी फिर यह रुसवाई कैसी कि हश्र के मैदान में अपने बाप को इस हाल में देख रहा हूं) अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाएगा, इब्राहीम! मैंने काफ़िरों पर जन्नत को हराम कर दिया है।' (बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर)

ऊपर लिखी हदीस और दूसरी मुताल्लिक़ रिवायतों के तफ़्सीली बयान के बाद हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० के जवाब का हासिल यह है कि क़ुरआन मजीद ने हज़रत इब्राहीम ﷺ की नुमायां ख़ुसूसियतों में से उस सिफ़त का भी एलान किया है, *'बेशक इब्राहीम अलबत्ता बड़े नर्मदिल और बुर्दबार थे।'* चुनांचे जब वह क़ियामत के दिन आज़र को परेशान देखेंगे तो उनकी मुरव्वत, रहमत जोश में आ जाएगी और उलुलअ़ज़्म पैग़म्बर की तरह हक़ीक़ते हाल से बाख़बर रहते हुए भी उनकी सिफ़ाते करीमाना का इस दर्जा फ़ितरी ग़लबा बरसरेकार आ जाएगा कि वह आज़र के लिए मग़्फ़िरत की तलब पर तैयार हो जाएंगे और अपनी इस दुआ़ की पनाह लेंगे जो दुनिया ही में क़ुबूलियत का शरफ़े दवाम हासिल कर चुकी थी और बाप की रुसवाई को अपनी रुसवाई ज़ाहिर करके दरगाहे हक़ में उस वायदे का ज़िक्र करेंगे, लेकिन अल्लाह तआ़ला उसके जवाब में यह कहकर कि 'काफ़िरों पर मैंने जन्नत को हराम कर दिया है' इब्राहीम की तवज्जोह इस ओर दिलाएगा कि अपनी इस फ़ितरी रहमत व राफ़्त के बावजूद तुमको यह न भूलना चाहिए कि यह अ़मल की दुनिया नहीं, बल्कि बदले का दिन है और आज मीज़ाने अ़द्ल क़ायम है, जिसके लिए हमारा यह न तब्दील होने वाला क़ानून हमेशगी का शरफ़ हासिल कर चुका है कि काफ़िर व मुश्रिक के लिए जन्नत में कोई जगह नहीं और यह कि 'मुश्रिक की रुसवाई हरगिज़ मोमिन की रुसवाई की वजह नहीं बन

सकती, चाहे इन दोनों के दर्मियान दुन्यवी ताल्लक़ के मज़बूत रिश्ते ही क्यों न क़ायम रहे हों।

ग़रज़ हज़रत इब्राहीम ﷺ का यह सवाल इसलिए न था कि वह (अल अयाज़ बिल्लाह) इस सूरतेहाल को 'ख़लफ़ेवाद' समझ रहे थे, बल्कि एक फ़ितरी तक़ाज़े के पेशेनज़र था जो अगरचे नतीजों और फलों को तो नहीं बदल सकता, मगर उस शख़्सियत की भली बातों और करीमाना सिफ़तों के नुमायां करने की वजह ज़रूर बन जाता है।

हज़रत इब्राहीम ﷺ की ज़िंदगी का एक अहम वाक़िया

हज़रत इब्राहीम ﷺ की ज़िंदगी के कुछ वाक़िए उनके बेटों हज़रत इस्माईल ﷺ और हज़रत इसहाक़ ﷺ से जुड़े हुए हैं। मुनासिब समझा गया कि इन वाक़ियों को उन दोनों नबियों के हालात में ही बयान किया जाए। यही हाल उन वाक़ियों का है जिनका ताल्लुक़ उनके भतीजे हज़रत लूत ﷺ से है, अलबत्ता 'हयात बादल ममात' (मरने के बाद की ज़िंदगी) से मुताल्लिक़ वाक़िया यहां बयान किया जाता है।

हज़रत इब्राहीम ﷺ को चीज़ों की हक़ीक़त मालूम करने की तलाश और तलब का तबई ज़ौक़ था और वह हर चीज़ की हक़ीक़त तक पहुंचने की कोशिश को अपनी ज़िंदगी का ख़ास मक़्सद समझते थे, ताकि उनके ज़रिए एक ही ज़ात (अल्लाह जल्ल जलालुहू) की हस्ती, उसके एक होने और उसकी मुकम्मल क़ुदरत के बारे में इल्मुलयक़ीन (यक़ीन की हद तक इल्म) के बाद हक़्क़ुल यक़ीन (यक़ीन ही हक़) हासिल कर लें, इसलिए हज़रत इब्राहीम ﷺ ने 'ह्यात बादल ममात' यानी मर जाने के बाद जी उठने से मुताल्लिक़ अल्लाह तआ़ला से यह सवाल किया कि वह किस तरह ऐसा करेगा? अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम से फ़रमाया, ऐ इब्राहीम! क्या तुम इस मस्अले पर यक़ीन और ईमान नहीं रखते? इब्राहीम ने फ़ौरन जवाब दिया क्यों नहीं? मैं बिना किसी संकोच के इस पर ईमान रखता हूं, लेकिन मेरा यह सवाल ईमान व यक़ीन के ख़िलाफ़ इसलिए नहीं है कि मैं इल्मुल-यक़ीन के साथ-साथ ऐनुल-यक़ीन और हक़्क़ुल यक़ीन (अगर किसी मस्अले के बारे में दलील व बुरहान के ज़रिए

ऐसा इल्म हासिल हो जाए कि शक व शुबहा जाता रहे तो इस कैफ़ियत को इल्मुल यक़ीन कहा जाता है और इसका दूसरा दर्जा यह है कि इस इल्म के मुशाहदों और महसूसात से भी तौसीक़ हो जाए, तो उसको ऐनुल-यक़ीन कहा जाता है। इसके बाद तीसरा और आख़िरी दर्जा हक़्क़ुल-यक़ीन का है। यह वह कैफ़ियत है, जब इस मस्अले से मुताल्लिक़ तमाम हक़ीक़तें वाज़ेह हो जाती हैं और आगे जुस्तजू की ख़्वाहिश बाक़ी नहीं रहती) का ख़्वास्तगार हूं। मेरी तमन्ना यह है कि तू मुझको आंखों से मुशाहदा करा दे कि 'मौत के बाद की ज़िंदगी' की क्या शक्ल होगी?

तब अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अच्छा, अगर तुमको उसके मुशाहद की तलब है तो कुछ परिंदे लो और उनके टुकड़े-टुकड़े करके सामने वाले पहाड़ पर डाल दो और फिर फ़ासले पर खड़े होकर उनको पुकारो। हज़रत इब्राहीम ने ऐसा ही किया। जब इब्राहीम ने उनको आवाज़ दी तो उन सबके टुकड़े अलग-अलग होकर फ़ौरन अपनी-अपनी शक्ल पर आ गए और ज़िंदा होकर हज़रत इब्राहीम के पास उड़ते हुए चले आए। यह वाक़िया, सूरः बक़रः रुकूअ् 35, आयत 260 में बयान हुआ है। इस सिलसिले में तावील करना बेकार की बात है, इन पर तवज्जोह नहीं दी जानी चाहिए।

हज़रत इब्राहीम ﷺ की औलाद और उम्र

हज़रत इब्राहीम के बड़े बेटे हज़रत इस्माईल की विलादत के वक़्त उनकी उम्र सत्तासी (87) साल थी और दूसरे बेटे हज़रत इस्हाक़ की विलादत के वक़्त उनकी उम्र पूरे सौ साल थी। हज़रत इब्राहीम ﷺ ने हज़रत सारा और हज़रत हाजरा के अलावा एक और शादी की, जिनसे उनके यहां छः बेटे हुए। उनकी नस्ल अपनी मां के नाम पर बनी क़तूरा कहलाई। हज़रत इब्राहीम ﷺ की कुल उम्र एक सौ पचहत्तर साल हुई। वह हबरून (यरूशलम के क़रीब एक जगह) में मदफ़ून (दफ़न किए गए) हैं।

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम

पैदाइश

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मिस्र से वापसी पर फ़लस्तीन में रिहाइश अख़्तियार की। इस इलाक़े को कनआ़न भी कहा जाता है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम उस वक़्त तक औलाद से महरूम थे। तौरात के मुताबिक़ हज़रत इब्राहीम ने अल्लाह की बारगाह में बेटे के लिए दुआ़ की और अल्लाह ने उनकी दुआ़ को क़ुबूल फ़रमा लिया और उनको तसल्ली दी। यह दुआ़ इस तरह क़ुबूल हुई कि हज़रत की छोटी बीवी मोहतरमा हज़रत हाजरा हामिला हुईं। जब हज़रत सारा को यह पता चला तो उन्हें बशर के तक़ाज़े के तौर पर रश्क पैदा हो गया। इस सूरतेहाल से मजबूर होकर हज़रत हाजरा उनके पास से चली गईं। तौरात के मुताबिक़ उनका गुज़र एक ऐसी जगह पर हुआ, जहां एक कुंवां था। उस जगह वह फ़रिश्ते से हमकलाम हुईं और कुंवें का नाम 'ज़िंदा नज़र आने वाले का कुंवां' रखा। थोड़े दिनों बाद हज़रत हाजरा के बेटा पैदा हुआ और फ़रिश्ते की बशारत के मुताबिक़ उसका नाम इस्माईल रखा गया।

बंजर घाटी और हाजरा व इस्माईल

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पैदाइश के बाद के हालात बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अ़ब्दुल्लाह विन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल की गई रिवायत में इस तरह बयान हुए हैं—

'इब्राहीम अलैहिस्सलाम हजारा और दूध पीते बच्चे इस्माईल अलैहिस्सलाम को लेकर चले और जहां आज काबा है, उस जगह एक बड़े पेड़ के नीचे ज़मज़म की मौजूदा जगह से ऊपरी हिस्से पर उनको छोड़ गए, वह जगह वीरान और ग़ैर-आबाद थी और पानी का नाम व निशान न था, इसलिए इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने एक मशक पानी और एक थैली खजूर भी उनके पास छोड़ दी और फिर मुंह फेर कर रवाना हो गए। हाजरा उनके पीछे-पीछे यह कहते हुए चलीं, ऐ इब्राहीम! तुम

हमको ऐसी घाटी में कहां छोड़कर चल दिए, जहां न आदमी है और न आदमी का वच्चा और न कोई मूनिस व ग़मख़्वार। हाजरा बराबर यह कहती जाती थीं, मगर इब्राहीम ख़ामोश चले जा रहे थे। आख़िर हाजरा ने मालूम किया क्या तेरे अल्लाह ने तुझको यह हुक्म दिया है? तब हज़रत इब्राहीम ने फ़रमायाः हां! अल्लाह के हुक्म से है।

हाजरा ने जब यह सुना तो कहने लगीं, अगर यह अल्लाह का हुक्म है तो बेशक वह हम को ज़ाया और बर्बाद नहीं करेगा और फिर वापस लौट आईं। इब्राहीम ﷺ चलते-चलते जब एक टीले पर ऐसी जगह पहुंचे कि उनके घर वाले निगाह से ओझल हो गए, तो उस ओर जहां काबा है, रुख़ किया और हाथ उठाकर यह दुआ मांगी–

तर्जुमा–'ऐ हम सबके परवरदिगार! (तू देख रहा है कि) एक ऐसे मैदान में जहां खेती का नाम व निशान नहीं, मैंने अपनी कुछ औलाद तेरे मोहतरम घर के पास लाकर बसाई है कि नमाज़ क़ायम रखें (ताकि यह मोहतरम घर एक ख़ुदा की इबादत करने वालों से ख़ाली न रहे) पस तू (अपने फ़ज़्ल व करम से) ऐसा कर कि लोगों के दिल उनकी तरफ़ मायल हो जाएं और उनके लिए ज़मीन की पैदावार से रिज़्क़ का सामान मुहैया कर दे, ताकि तेरे शुक्रगुज़ार हों।

(इब्राहीम 14 : 37)

'हाजरा कुछ दिनों तक मशक से पानी और खुरजी से खजूरें खातीं और इस्माईल को दूध पिलाती रहीं, लेकिन वह वक़्त भी आ गया कि पानी रहा न खजूरें, तब वह सख़्त परेशान हुईं। चूंकि वह भूखी-प्यासी थीं, इसलिए दूध भी न उतरता था और बच्चा भी भूखा-प्यासा रहने लगा, जब हालत बिगड़ने लगी और बच्चा बेताब होने लगा, तो हाजरा इस्माईल को छोड़कर दूर जा बैठीं, ताकि इस हालते ज़ार में उसको अपनी आंख से न देखें। कुछ सोचकर क़रीब की पहाड़ी सफ़ा पर चढ़ीं कि शायद कोई अल्लाह का बन्दा नज़र आ जाए या पानी नज़र आ जाए, मगर कुछ नज़र न आया। फिर बच्चे की मुहब्बत में दौड़कर घाटी मे आ गईं, इसके बाद दूसरी ओर की पहाड़ी मर्वः पर चढ़ गई और वहां भी जब कुछ नज़र न आया, तो फिर तेज़ी से लौट कर घाटी में बच्चे के पास आ गईं और इस तरह सात बार किया। नबी अकरम

ﷺ ने उस जगह पहुंच कर फ़रमाया कि यही वह 'सफ़ा और मर्वः के बीच की सई' है जो हज में लोग करते हैं। आख़िर में वह मरवः पर थीं तो कानों में एक आवाज़ आई, चौंकीं और दिल में कहने लगीं कि कोई पुकारता है, कान लगाया, तो फिर आवाज़ आई। हाजरा कहने लगीं, अगर तुम मदद कर सकते हो, तो सामने आओ, तुम्हारी आवाज़ सुनी गई, देखा तो अल्लाह का फ़रिश्ता (जिब्रील) है। फ़रिश्ते ने अपना पैर (या एड़) उस जगह मारा, जहां ज़मज़म है, उस जगह पानी उबलने लगा। हाजरा ने यह देखा तो पानी के चारों ओर बाड़ बनाने लगीं, मगर पानी बराबर उबलता रहा। उस जगह पहुंच कर नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला उम्मे इस्माईल पर रहम करे, अगर वह ज़मज़म को इस तरह न रोकतीं और उसके चारों तरफ़ बाड़ न लगातीं, तो आज वह ज़बरदस्त चश्मा होता। हाजरा ने पानी पिया और फिर इस्माईल को दूध पिलाया। फ़रिश्ते ने हाजरा से कहा, ख़ौफ़ और ग़म न कर, अल्लाह तआ़ला तुझको और इस बच्चे को ज़ाया न करेगा। यह मुक़ाम 'बैतुल्लाह' है, जिसकी तामीर इस बच्चे (इस्माईल) और इसके बाप इब्राहीम की क़िस्मत में मुक़द्दर हो चुकी है। इसलिए अल्लाह तआ़ला इस ख़ानदान को हलाक नहीं करेगा। बैतुल्लाह की यह जगह क़रीब की ज़मीन से नुमायां की, मगर पानी का सैलाब दाहिने-बाएं उस हिस्से को बराबर करता जा रहा था।

इसी दौरान बनी जुरहम का एक क़बीला इस घाटी के क़रीब आ ठहरा, देखा तो थोड़े से फ़ासले पर परिंदे उड़ रहे हैं। जुरहम ने कहा, यह पानी की निशानी है, जहां ज़रूर पानी मौजूद है। जुरहम ने भी क़ियाम की इजाज़त मांगी। हाजरा ने फ़रमाया, क़ियाम कर सकते हो, लेकिन पानी में मिल्कियत के हिस्सेदार नहीं हो सकते। जुरहम ने यह बात ख़ुशी से मंजूर कर ली। और वहीं मुक़ीम हो गए।

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि हाजरा भी आपसी उन्स व मुहब्बत और साथ के लिए यह चाहती थीं कि कोई आकर यहां ठहरे, इसलिए उन्होंने ख़ुशी के साथ बनी जुरहम को क़ियाम की इजाज़त दे दी। जुरहम ने आदमी भेजकर अपने बाक़ी ख़ानदान वालों को भी बुला लिया और यहां मकान बनाकर रहने-सहने लगे। इन्हीं में इस्माईल भी रहते और खेलते और उनसे

उनकी ज़ुबान सीखते। जब इस्माईल बड़े हो गए तो उनका तरीक़ा और अन्दाज़ और उनकी ख़ूबसूरती बनी जुरहम को बहुत भाई और उन्होंने अपने ख़ानदान की लड़की से उनकी शादी कर दी। इसके कुछ दिनों बाद हाजरा का इंतिक़ाल हो गया।'

यह लम्बी रिवायत बुख़ारी 'किताबुर्रोया और किताबुल अंबिया' में दो जगह नक़ल की गई है और दोनों से यही साबित होता है कि इस्माईल बंगर घाटी और बिन खेती की धरती मक्का में दूध पीते बच्चे की हालत में पहुंचे थे, लेकिन इब्राहीम ﷺ अगरचे हाजरा और इस्माईल को मक्का के बयाबान और सेहरा में छोड़ आए थे, लेकिन बाप थे, नबी और पैग़म्बर थे, बीवी और बेटे को कैसे भूल सकते थे और उनकी देख-भाल से कैसे बे-परवा हो सकते थे, वे बराबर इस बिना पानी के और हरियाली के मैदानी इलाक़े में आते रहते और अपने ख़ानदान की निगरानी करते कहते थे, जैसा कि इसी हदीस के आख़िरी हिस्से से ज़ाहिर होता है, जिसका ज़िक्र आगे आता है—

बहरहाल अगरचे क़ुरआन की किसी आयत से यह साबित नहीं होता कि इस्माईल (मक्का की) धरती पर किस सन में पहुंचाए गए, मगर ऊपर की रिवायतें कहती हैं कि यह ज़माना हज़रत इस्माईल के दूध पीने का ज़माना था और यही सही है।

नेक बीवी का किरदार

ऊपर ज़िक्र की गई हदीस में हज़रत इस्माईल की बीवियों के बारे में इस तरह बयान हुआ है—

'इब्राहीम बराबर अपने बाल-बच्चों को देखने आते रहते थे। एक बार तशरीफ़ लाए, तो इस्माईल घर पर न थे, उनकी बीवी से मालूम किया तो उन्होंने जवाब दिया कि रोज़ी की खोज में बाहर गए हैं। इब्राहीम ने मालूम किया, गुज़रान की क्या हालत है? वह कहने लगी, सख़्त मुसीबत और परेशानी में हैं और बड़े दुख और तक्लीफ़ में। इब्राहीम ने यह सुनकर फ़रमाया, इस्माईल से मेरा सलाम कह देना और कहना कि अपने दरवाज़े की चौखट तब्दील कर दो।

इस्माईल ﷺ वापस आए तो इब्राहीम ﷺ के नूरे नुबूवत के असरात पाए, पूछा : कोई आदमी यहां आया था? बीवी ने सारा क़िस्सा सुनाया और पैग़ाम भी। इस्माईल ने फ़रमाया कि वह मेरे बाप इब्राहीम थे और उनका मश्विरा है कि तुझको तलाक़ दे दूं, इसलिए मैं तुझको जुदा करता हूं।

इस्माईल ने फिर दूसरी शादी कर ली। एक बार इब्राहीम फिर इस्माईल की ग़ैर-मौजूदगी में आए और उसी तरह उनकी बीवी से सवाल किए। बीवी ने कहा, अल्लाह का शुक्र व एहसान है, अच्छी तरह गुज़र रही है। मालूम हुआ, खाने को क्या मिलता है? इस्माईल की बीवी ने जवाब दिया, गोश्त। इब्राहीम ने पूछा और पीने को? उसने जवाब दिया, पानी। तब हज़रत इब्राहीम ने दुआ मांगी, अल्लाह! इनके गोश्त और पानी में बरकत अ़ता फ़रमा। और चलते हुए यह पैग़ाम दे गए कि अपने दरवाज़े की चौखट को मज़बूत रखना।

हज़रत इस्माईल ﷺ आए तो उनकी बीवी ने तमाम वाक़िया दोहराया और पैग़ाम भी सुनाया, इस्माईल ने फ़रमाया कि यह मेरे बाप इब्राहीम ﷺ थे और उनका पैग़ाम यह है कि तू मेरी ज़िंदगी भर जीवन-साथी रहे।'

ख़त्ना

तौरात के बयान के मुताबिक़ जब इब्राहीम की उम्र निन्नान्वे साल हुई और हज़रत इस्माईल ﷺ की तेरह साल, तो अल्लाह तआ़ला का हुक्म आया कि ख़त्ना करो। इब्राहीम ने हुक्म की तामील में पहले अपनी की और इसके बाद इस्माईल ﷺ और तमाम ख़ानाज़ादों (घरवालों) और ग़ुलामों की ख़त्ना कराई। यही ख़त्ने की रस्म आज भी इब्राहीमी मिल्लत का शिआ़र है और सुन्नते इ़ब्राहीमी के नाम से मशहूर है।

ज़िब्हे अज़ीम

अल्लाह के मुक़र्रब बन्दों को इम्तिहान व आज़माइश की सख़्त-से-सख़्त मंज़िलों से गुज़रना पड़ता है। पहली मंज़िल वह थी जब उनको आग में डाला गया, तो उस वक़्त उन्होंने जिस सब्र और अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी होने का सबूत दिया, वह उन्हीं का हिस्सा था। इसके बाद जब इस्माईल को और

हाजरा को फ़ारान के बयाबान में छोड़ आने का हुक्म मिला, तो वह भी मामूली इम्तिहान न था। अब एक तीसरे इम्तिहान की तैयारी है जो पहले दोनों से भी ज़्यादा हिला देने वाला और जान लेने वाला इम्तिहान है, यही कि हज़रत इब्राहीम तीन रात बराबर ख़्वाब देखते हैं कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ इब्राहीम! तू हमारी राह में अपने इकलौते बेटे की क़ुरबानी दे।

नबियों का ख़्वाब 'सच्चा ख़्वाब' और वह्य इलाही होता है, इसलिए इब्राहीम रज़ा व तस्लीम बनकर तैयार हो गए कि अल्लाह के हुक्म की जल्द से जल्द तामील करें, चूंकि यह मामला अकेली अपनी ज़ात से मुताल्लिक़ न था, बल्कि इस आज़माइश का दूसरा हिस्सा वह 'बेटा' था, जिसकी क़ुरबानी का हुक्म दिया गया था, इसलिए बाप ने अपने बेटे को अपना ख़्वाब और अल्लाह का हुक्म सुनाया, बेटा इब्राहीम जैसे नबी और रसूल का बेटा था, तुरन्त हुक्म के आगे सर झुका दिया और कहने लगा, अगर अल्लाह की यही मर्ज़ी है, तो इन्शाअल्लाह आप मुझको सब्र करने वाला पाएंगे।

इस वात-चीत के बाद बाप-बेटे अपनी क़ुरबानी पेश करने के लिए जंगल रवाना हो गए। वाप ने बेटे की मर्ज़ी पाकर ज़िब्ह किए जाने वाले जानवर की तरह हाथ-पैर बांधे, छुरी को तेज़ किया और बेटे को पेशानी के बल पछाड़ कर ज़िब्ह करने को तैयार हो गए, फ़ौरन अल्लाह की वह्य इब्राहीम पर नाज़िल हुई, ऐ इब्राहीम! तूने अपना ख़्वाब सच कर दिखाया। बेशक यह बहुत सख़्त और कठिन आज़माइश थी। अव लड़के को छोड़ और तेरे पास जो यह मेंढा खड़ा है, उसको वेटे के बदले में ज़िब्ह कर, हम नेकों को इसी तरह नवाज़ा करते हैं। इब्राहीम ने पीछे मुड़कर देखा तो झाड़ी के क़रीब एक मेंढा खड़ा है। हज़रत इब्राहीम ﷺ ने अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए उस मेंढे को ज़िब्ह क़िया।

यह वह 'क़ुरवानी' है जो अल्लाह की वारगाह में ऐसी मक़्बूल हुई कि यादगार के तौर पर हमेशा के लिए मिल्लते इब्राहीमी का शिआ़र क़रार पाई और आज ज़िलहिज्जा की दसवीं तारीख़ को तमाम इस्लामी दुनिया में यह 'शिआर' उसी तरह मनाया जाता है मगर इस पूरे वाक़िए से यह नहीं साबित हुआ कि इब्राहीम की औलाद में से 'ज़बीह' कौन है—इस्माईल या इस्हाक़? क़ुरआन ने अगरचे 'ज़बीह' का नाम लिया, मगर जिस तरह इस वाक़िए का

तज़्किरा किया है, उससे बग़ैर किसी शक व शुबहे के यह ज़ाहिर होता है कि क़ुरआनी नस्स इस्माईल को ज़बीह बताती है और यही वाक़िया और हक़ीक़त है। सूरः अस-साफ़्फ़ात की आयतें 100 से 113 में इस वाक़िए को बयान किया गया है।

काबा की बुनियाद

हज़रत इब्राहीम ﷺ अगरचे फ़लस्तीन में ठहरे थे, मगर बराबर मक्का में हाजरा और इस्माईल को देखने आते रहते थे। इसी बीच इब्राहीम को अल्लाह का हुक्म हुआ कि 'अल्लाह के काबे' की तामीर करो। हज़रत ﷺ ने हज़रत इस्माईल ﷺ से ज़िक्र किया और दोनों बाब-बेटों ने अल्लाह के घर की तामीर शुरू कर दी।

एक रिवायत के मुताबिक़ बैतुल्लाह की सबसे पहली बुनियाद हज़रत आदम के हाथों रखी गई और अल्लाह के फ़रिश्तों ने उनको वह जगह बता दी थी, जहां काबे की तामीर होनी थी, मगर हज़ारों साल के हादसों ने उ:र्सा हुआ उसको बे-निशान कर दिया था, अलबत्ता अब भी वह एक टीला या उभरी हुई ज़मीन की शक्ल में मौजूद था। यही वह जगह है, जिसको अल्लाह की वह्य ने इब्राहीम ﷺ को बताया और उन्होंने इस्माईल की मदद से उसको खोदना शुरू किया तो पिछली तामीर की बुनियादें नज़र आने लगीं। इन्हीं बुनियादों पर बैतुल्लाह की तामीर की गई, अलबत्ता क़ुरआन पाक में पिछली हालत का कोई तज़्किरा नहीं है।

दूसरी तरफ़ यह हक़ीक़त है कि इस तामीर से पहले तमाम कायनात और दुनिया के कोने-कोने में बुतों और सितारों की पूजा के लिए हैकल और मन्दिर मौजूद थे, पर इन सबके उलट सिर्फ़ एक ख़ुदा की परस्तिश और उसकी यकताई के इक़रार में सरे नियाज़ झुकाने के लिए दुनिया के बुतकदों में पहला घर जो ख़ुदा का घर कहलाया, वह यही बैतुल्लाह है।

वह दुनिया में घर सबसे पहला ख़ुदा का
ख़लील एक मेमार था, जिस बिना का।

अज़ल से मशीयत ने था जिसको ताका,
कि उस घर से उगलेगा चश्मा हुदा का।

तर्जुमा–*बेशक सबसे पहला वह घर जो लोगों के लिए (ख़ुदा की याद के लिए) बनाया गया, अलबत्ता वह है जो मक्का में है, वह है सर से पैर तक बरकत और दुनिया वालों के लिए हिदायतों (का सर चश्मा)।*

(आले इमरान 3-97)

इसी तामीर को यह शरफ़ हासिल है कि इब्राहीम-जैसा जलीलुल क़द्र पैग़म्बर उसका मेमार है और इस्माईल जैसा नबी व ज़बीह उसका मज़दूर, बाप-बेटे बराबर उसकी तामीर में लगे हुए हैं और जब उसकी दीवारें ऊपर उठती हैं और बुज़ुर्ग बाप का हाथ ऊपर तामीर करने से माज़ूर हो जाता है, तो क़ुदरत की हिदायत के मुताबिक़ एक पत्थर को बाड़ बनाया जाता है, जिसको इस्माईल अपने हाथ से सहारा देते और इब्राहीम उस पर तामीर करते जाते हैं। यही वह यादगार है जो 'मक़ामे इब्राहीम' से जाना जाता है। जब तामीर इस हद पर पहुंची, जहां आज हजरे अस्वद नसब है तो जिब्रील अमीन ने उनकी रहनुमाई की और हजरे अस्वद को उनके सामने एक पहाड़ी से महफ़ूज़ निकाल कर दिया, जिसको जन्नत का लाया हुआ पत्थर कहा जाता है, ताकि वह नसब कर दिया जाए।

अल्लाह का घर तामीर हो गया तो अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम को बताया कि यह मिल्लते इब्राहीमी के लिए (क़िबला) और हमारे सामने झुकने का निशान है, इसलिए यह तौहीद का मर्कज़ क़रार दिया जाता है। तब इब्राहीम व इस्माईल ने दुआ़ मांगी कि अल्लाह तआ़ला उनको और उनकी ज़ुर्रियत (आल औलाद) को नमाज़ और जक़ात क़ायम करने की हिदायत दे और इस्तिक़ामत बख़्शे और उनके लिए फलों, मेवों और रिज़्क़ में बरकत दे और दुनिया के कोने-कोने में बसने वाले गिरोह में से हिदायत पाए हुए गिरोह को इस तरफ़ मुतवज्जह करे कि वे दूर-दूर से आएं और हज के मनासिक अदा करें और हिदायत व रुश्द के इस मर्कज़ में जमा होकर अपनी ज़िंदगी की सआ़दतों से दामन भरें।

क़ुरआन अज़ीज़ ने बैतुल्लाह की तामीर, तामीर के वक़्त इब्राहीम व

इस्माईल की मुनाजात, नमाज़ क़ायम करने और हज की रस्मों को अदा करने के लिए शौक़ व तमन्ना के इज़्हार और बैतुल्लाह के तौहीद का मर्कज़ होने के एलान का जगह-जगह ज़िक्र किया है और नए-नए उस्लूब और तर्ज़े अदा से उसकी अ़ज़्मत और जलालत व जबरूत को सूरः आलेइमरान 3:79, अल-बक़रः 2 : 125'129 और अल-हज्ज 22 : 26-33, 36 : 37 में वाज़ेह फ़रमाया है।

हज़रत इस्माईल की औलाद

तौरात के मुताबिक़ हज़रत इस्माईल के बारह बेटे थे जो बारह सरदार कहलाए और अरब के मुस्तक़िल क़बीलों के जद्दे क़बीला बने और एक लड़की थी, जिसका नाम बश्शामा या महल्लात था। उनके बेटे नाबित की नस्ल अस्हाबुल-हिज्र कहलाई। (नाबितीन के आसार पट्टा (जॉर्डन) में मौजूद हैं) और क़ीदार की नस्ल अस्हाबुर्रस्स के नाम से मशहूर हुई।

कुरआन में हज़रत इस्माईल ؑ का तज़्किरा

हज़रत इस्माईल का ज़िक्र कुरआन मजीद में कई बार हुआ है। सूरः मरयम में उनके नाम के साथ उनके औसाफ़े जमीला का भी ज़िक्र किया गया है।

तर्जुमा–और याद कर किताब में इस्माईल ؑ का ज़िक्र था, वह वायदे का सच्चा था और था नबी और हुक्म करता था अपने अह्ल को नमाज़ का और ज़कात का और था अपने परवरदिगार के नज़दीक पसन्दीदा।

(मरयम 19 : 54)

हज़रत इस्माईल ؑ की वफ़ात

हज़रत इस्माईल ؑ की उम्र जब एक सौ छत्तीस साल की हुई, तो उनका इंतिक़ाल हो गया, तौरात के मुताबिक़ हज़रत इस्माईल ؑ की वफ़ात फ़लस्तीन में हुई और फ़लस्तीन ही में उनकी क़ब्र बनी। अरब तारीख़ के माहिरों के मुताबिक़ वह और उनकी वालिदा हाजरा बैतुल्लाह के क़रीब हरम के अन्दर दफ़न हैं।

हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम

पैदाइश

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र सौ साल हुई तो अल्लाह तआ़ला ने उनको बशारत सुनाई कि सारा के पेट से भी तेरे एक बेटा होगा, उसका नाम इस्हाक़ रखना और क़ुरआन में है–

तर्जुमा–'पस हमने उसको इस्हाक़ की और उसके बाद (उसके बेटे) याक़ूब की बशारत दी। सारा कहने लगी, क्या मैं निगोड़ी बुढ़िया जनूंगी और जबकि यह इब्राहीम मेरा शौहर भी बूढ़ा है, वाक़ई यह तो बहुत अजीब बात है। फ़रिश्तों ने कहा, क्या तू अल्लाह की हुक्म पर ताज्जुब करती है? ऐ अह्ले बैत! तुम पर अल्लाह की बरकत व रहमत हो। बेशक अल्लाह तआ़ला हर तरह हम्द के क़ाबिल है और है बहुत बुज़ुर्ग।' (हूद 11 : 71-73)

तर्जुमा–'इब्राहीम ने कहा, क्या तूम मुझको इस बुढ़ापा आ जाने पर भी बशारत देते हो, यह कैसी बशारत दे रहे हो? फ़रिश्तों ने कहा, हम तुझको हक़ बात की बशारत दे रहे हैं, पस तू नाउम्मीद होने वालों में से न हो। इब्राहीम ने कहा और नहीं नाउम्मीद होते अपने परवरदिगार की रहमत से, मगर गुमराह।'

(अल-हिज्र 15 : 54 : 56)

ख़त्ना

हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम जब आठ दिन के हुए तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उनकी ख़त्ना करा दी।

इस्हाक़ की शादी

तौरात के एतबार से हज़रत इस्हाक़ की शादी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे की बेटी से हुई और उससे उनके यहां दो बेटे ईसू और याक़ूब पैदा हुए। ईसू की शादी हज़रत इस्माईल की साहबज़ादी बश्शामा या महल्लात से हुई और हज़रत याक़ूब अपने मामूं के यहां ब्याहे गए।

Maktab-e-Ashraf

इस्हाक़ का ज़िक्र क़ुरआन में

क़ुरआन पाक में हज़रत इस्हाक़ ﷺ का ज़िक्र सूरः अंबिया, सूरः मरयम, सूरः हूद और सूरः साफ़्फ़ात में आया है।

हज़रत लूत عليه السلام

हज़रत लूत व इब्राहीम عليه السلام

हज़रत लूत हज़रत इब्राहीम के भतीजे हैं और उनका बचपन हज़रत इब्राहीम ही की निगरानी में गुज़रा और उनकी नश्वनुमा हज़रत इब्राहीम ही की तर्बियत में हुई।

मिस्र से वापसी

हज़रत लूत और उनकी बीवी हज़रत इब्राहीम ﷺ की हिजरतों में हमेशा उनके साथ रहे हैं और जब हज़रत इब्राहीम मिस्र में थे, तो उस वक़्त भी यह हम सफ़र थे। मिस्र से वापसी पर हज़रत इब्राहीम फ़लस्तीन में आबाद हुए और हज़रत लूत ने शर्क़े उर्दुन के इलाक़े में सुकूनत अख़्तियार की। इस इलाक़े में दो मशहूर बस्तियां सदूम और आमूरा थीं।

क़ौमे लूत

हज़रत लूत ﷺ ने जब शर्क़े उर्दुन (ट्रांस जॉर्डन) के इलाक़े में सदूम में आकर क़ियाम किया तो देखा कि यहां बाशिंदे फ़वाहिश और मासियतों में इतने पड़े हुए हैं कि दुनिया में कोई बुराई ऐसी न थी जो उनमें मौजूद न हो। दूसरे ऐबों और फ़हश कामों के अलावा यह क़ौम एक ख़बीस अ़मल में मुब्तला थी, यानी अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों को पूरा करने के लिए वे औरतों के बजाए अमरद लड़कों से इख़्तिलात करते थे। दुनिया की क़ौमों में उस वक़्त तक इस अ़मल का क़तई रिवाज न था। यही बदबख़्त क़ौम है जिसने इस नापाक अ़मल की ईजाद की और इससे भी ज़्यादा शरारत, ख़बासत और

बेहयाई यह थी कि वे अपनी बदकिरदारी को ऐब नहीं समझते थे और ऐलानिया फ़ख़ व मुबाहात के साथ उसको करते रहते थे।

तर्जुमा–'और (याद करो) लूत का वाक़िया जब उसने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम ऐसे फ़हश काम में लगे हुए हो जिसको दुनिया में तुमसे पहले किसी ने नहीं किया, यह कि बेशक तुम औरतों के बजाए अपनी शहवत को मर्दों से पूरी करते हो, यक़ीनन तुम हद से गुज़रने वाले हो।'

(अल-आराफ़ 7 : 80-81)

हज़रत लूत और तब्लीग़े हक़

इन हालात में हज़रत लूत ने उनको उनकी बेहयाइयों और ख़बासतों पर मलामत की और शराफ़त और तहारत की ज़िंदगी की रग़बत दिलाई और नर्मी के साथ जो मुम्किन तरीक़े हो सकते थे, उनसे उनको समझाया और पिछली क़ौम की बदआमालियों के नतीजे बताकर इबरत दिलाई, मगर उन पर बिल्कुल असर न हुआ, बल्कि कहने लगे–

तर्जुमा–*'लूत की क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि कहने लगे इन (लूत और उसके ख़ानदान) को अपने शहर से निकाल दो। ये बेशक बहुत ही पाक लोग हैं।* (आराफ़ 7 : 72)

'बेशक ये पाक लोग हैं', क़ौमे लूत का यह मज़ाक़िया जुम्ला था, गोया हज़रत लूत ﷺ और उनके ख़ानदान पर तंज़ करते और उनका ठठ्ठा उड़ाते थे कि बड़े पाकबाज़ हैं, इनका हमारी बस्ती में क्या काम या मेहरबान नसीहत करने वाले की मेहरबान नसीहत से ग़ैज़ व ग़ज़ब में आकर कहते थे कि अगर हम नापाक और बेहया हैं और वे बड़े पाकबाज़ हैं, तो इनका हमारी बस्ती से क्या वास्ता, इनको यहां से निकलो।

हज़रत लूत ﷺ ने फिर एक बार भरी महफ़िल में उनको नसीहत की और फ़रमाया, 'तुमको इतना भी एहसास नहीं रहा है कि यह समझ सको कि मर्दों के साथ बेहयाई का ताल्लुक़, लूट-मार और इसी क़िस्म की बद-अख़्लाक़ियां बहुत बुरे आमाल हैं, तुम यह सब कुछ करते हो और भरी महफ़िलों और मज्लिसों में करते हो और शर्मिंदा होने के बजाए बाद में उनका ज़िक्र इस तरह

करते हो कि गोया ये कारे नुमायां हैं जो तुमने अंजाम दिए हैं।

तर्जुमा–*'क्या तुम वही नहीं हो कि तुम मर्दों से बदअ़मली करते हो, लोगों की राह मारते हो और अपनी मज्लिसों में और घर वालों के सामने फ़हश काम करते हो।'* (अल-अंकबूत 29/29)

क़ौम ने इस नसीहत को सुना तो ग़म व ग़ुस्से से तिलमिला उठी और कहने लगी, लूत! बस ये नसीहतें और इबरतें ख़त्म कर और अगर हमारे उन आमाल से तेरा ख़ुदा नाराज़ है तो वह अ़ज़ाब लाकर दिखा, जिसका ज़िक्र करके बार-बार हमको डराता है और अगर तू वाक़ई अपने क़ौल में सच्चा है तो हमारा और तेरा फ़ैसला अब हो जाना ही ज़रूरी है।

तर्जुमा–*'पस उस (लूत) की क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि वे कहने लगे, तू हमारे पास अल्लाह का अ़ज़ाब ले आ, अगर तू सच्चा है।'* (अल-अंकबूत 29/29)

हज़रत इब्राहीम ﷺ और अल्लाह के फ़रिश्ते

इधर यह हो रहा था और दूसरी तरफ़ हज़रत इब्राहीम ﷺ के साथ यह वाक़िया पेश आया कि हज़रत इब्राहीम जंगल में सैर कर रहे थे। उन्होंने देखा कि तीन लोग खड़े हैं। हज़रत इब्राहीम बड़े मुतवाज़ेअ़ और मेहमान नवाज़ थे और हमेशा उनका दस्तरख़्वान मेहमानों के लिए फैला रहता था, इसलिए इन तीनों को देखकर वह बहुत ख़ुश हुए और उनको अपने घर ले गए और बछड़ा ज़िब्ह करके तिक्के बनाए और भून कर मेहमानों के सामने पेश किए, मगर उन्होंने खाने से इंकार किया। यह देखकर हज़रत इब्राहीम ने समझा कि ये कोई दुश्मन हैं जो दस्तूर के मुताबिक़ खाने से इंकार कर रहे हैं और कुछ डरे कि ये आख़िर कौन हैं?

मेहमानों ने जब हज़रत इब्राहीम ﷺ की बेचैनी देखी तो उनसे हँस कर कहा कि आप घबराएं नहीं! हम अल्लाह के फ़रिश्ते हैं और क़ौमे लूत की तबाही के लिए भेजे गए हैं, इसलिए सदूम जा रहे हैं।

जब हज़रत इब्राहीम ﷺ को इत्मीनान हो गया कि ये दुश्मन नहीं हैं, बल्कि अल्लाह के फ़रिश्ते हैं, तो अब उनके दिल की रिक़्क़त, हमदर्दी का

जज़्बा और मुहब्बत व शफ़क़त की फ़रावानी ग़ालिब आई और उन्होंने क़ौमे लूत की ओर से झगड़ना शुरू कर दिया और फ़रमाने लगे कि तुम उस क़ौम को कैसे बर्बाद करने जा रहे हो, जिसमें लूत-जैसा अल्लाह का बरगज़ीदा नबी मौजूद है और वह मेरा भतीजा भी है और मिल्लते हनीफ़ का पैरो भी?

फ़रिश्ते ने कहा, हम यह सब कुछ जानते हैं, मगर अल्लाह का यह फ़ैसला है कि क़ौमे लूत अपनी सरकशी, बदअ़मली, बेहयाई और फ़ह्श बातों पर इसरार की वजह से ज़रूर हलाक की जाएगी और लूत और उसका ख़ानदान इस अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा, अलबत्ता लूत की बीवी क़ौम की हिदायत और उनकी बद-आ़मालियों और बदअ़क़ीदगियों में शिरकत की वजह से क़ौमे लूत ही के साथ अ़ज़ाब पाएगी।

ग़रज़ हज़रत लूत के हक़ पहुंचाने, भलाइयों का हुक्म देने और बुराइयों से मना करने का क़ौम पर मुतलक़ कुछ असर न हुआ और वह अपनी बद-अख़्लाक़ियों पर वैसे ही जमी रही। हज़रत लूत ﷺ ने यहां तक ग़ैरत दिलाई कि तुम इस बात को नहीं सोचते कि मैं रात-दिन जो इस्लाम और सीधे रास्ते की दावत और पैग़ाम के लिए तुम्हारे साथ हैरान व परेशान हूं, क्या कभी मैंने इस कोशिश का कोई मुआवज़ा तलब किया, क्या कोई उजरत मांगी, किसी नज़्र व नियाज़ का तलबगार हुआ। मेरी नज़रों में तो तुम्हारी दीनी व दुन्यवी फ़लाह व सआ़दत इस के सिवा और कुछ भी नहीं है, मगर तुम हो कि ज़रा भी तवज्जोह नहीं करते।

मगर उनके अंधेरे दिलों पर इस कहने का तनिक भर भी असर न हुआ और वे हज़रत लूत ﷺ को 'निकाल देने' और पत्थर मार-मार कर हलाक कर देने की धमकियां देते रहे। जब नौबत यहां तक पहुंची और उनकी बुरी क़िस्मत ने किसी तरह अख़्लाक़ी ज़िंदगी पर आमादा न होने दिया, तब उनको भी वही पेश आया जो अल्लाह के बनाए हुए क़ानूने जज़ा का यक़ीनी और हतमी फ़ैसला है, यानी बद किरदारियों और इसरार की सज़ा बर्बादी या हलाकत। ग़रज़ अल्लाह के फ़रिश्ते हज़रत इब्राहीम के पास से रवाना होकर सदूम पहुंचे और लूत के यहां मेहमान हुए। ये अपनी शक्ल व सूरत में हसीन व ख़ूबसूरत और उम्र में नवजवान लड़कों की शक्ल व सूरत के थे। हज़रत

लूत ने उन मेहमानों को देखा तो घबरा गए और डरे कि बदबख़्त क़ौम मेरे इन मेहमानों के साथ क्या मामला करेगी, क्योंकि अभी तक उनको यह नहीं बताया गया था कि ये अल्लाह के पाक फ़रिश्ते हैं।

अभी हज़रत लूत ﷺ इस हैस-बैस में थे कि क़ौम को ख़बर लग गई और लूत के मकान पर चढ़ आए और मुतालबा करने लगे कि तुम इसको हमारे हवाले करो। हज़रत लूत ﷺ ने बहुत समझाया और कहा, क्या तुम में कोई भी 'सलीमुल फ़ितरत इंसान' (रजुलुर्रशीद) नहीं है कि वह इंसानियत को बरते और हक़ को समझे? तुम क्यों इस लानत में गिरफ़्तार हो और नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरी करने के लिए फ़ितरी तरीक़ा छोड़कर और हलाल तरीक़ों से औरतों को जीवन-साथी बनाने की जगह इस मलऊन बेहयाई पर उतर आए हो? ऐ काश! मैं 'रुक्ने शदीद' की ज़बरदस्त हिमायत कर सकता!

हज़रत लूत की इस परेशानी को देखकर फ़रिश्तों ने कहा, आप हमारी ज़ाहिरी शक्लों को देखकर घबराइए नहीं, हम अ़ज़ाब के फ़रिश्ते हैं और अल्लाह के क़ानून 'जज़ा-ए-अ़मल' का फ़ैसला इनके हक़ में अटल है, वह अब इनके सर से टलने वाला नहीं। आप और आप का ख़ानदान अ़ज़ाब से बचा रहेगा, मगर आपकी बीवी बेहयाओं के साथ रहेगी और तुम्हारा साथ न देगी।

आख़िर अ़ज़ाबे इलाही का वक़्त आ पहुंचा, रात शुरू हुई तो फ़रिश्तों के इशारे पर हज़रत लूत ﷺ अपने ख़ानदान समेत दूसरी ओर से निकल कर सदूम से रुख़्सत हो गए और बीवी ने उनका साथ देने से इंकार कर दिया और रास्ते से ही लौट कर सदूम वापस आ गई, रात का आख़िर आया तो पहले तो एक हौलनाक चीख़ ने सदूम वालों को तह व बाला कर दिया और फिर आबादी का तख़्ता ऊपर उठाकर उलट दिया गया और ऊपर से पत्थरों की वारिश ने उनका नाम व निशान तक मिटा दिया और वही हुआ जो पिछली क़ौम की नाफ़रमानी और सरकशी का अंजाम हो चुका है।

हज़रत इब्राहीम मुजद्दिदे अंबिया (नवियों के मुजद्दिद)

इन लगातार वाक़िआ़त से बहुत-से सबक़ हासिल होने के अलावा एक

सबसे अहम बात यह ज़ाहिर होती है कि हज़रत इब्राहीम ﷺ की शख़्सियत नुबूवत व रिसालत के मंसब में भी ख़ास इम्तियाज़ी शान रखती है। यों तो अल्लाह का हर एक पैग़म्बर तौहीद की दावत देने वाला और शिर्क का दुश्मन है और इसलिए तमाम अंबिया ﷺ की तालीमात में ये बातें मुश्तरक क़द्र की हैसियत रखती हैं, बल्कि रूहानी दावत व इर्शाद की बुनियाद सिर्फ़ इन्हीं दो मस्अलों पर क़ायम है मगर यह ख़ुसूसियत हज़रत इब्राहीम ही के हिस्से में आई थी कि इस दुनिया में वह पहली हस्ती हैं, जिन्हें अज़ीमत के रास्ते में सख़्त से सख़्त आज़माइशों और कड़ी से कड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ा और वे इन मुसीबतों के मुक़ाबले में कामरान व कामयाब साबित हुए।

ग़ौर कीजिए बुढ़ापे और यास (मायूसी) की उम्र में हज़ारों दुआओं और लाखों आरज़ूओं के बाद एक बच्चा पैदा हुआ और अभी बच्चा दूध ही पी रहा है कि अल्लाह का हुक्म आता है—

'इसको और इसकी मां को अपने घर से जुदा करो और एक लक़ व दक़ बयाबान और बिन खेती की ज़मीन में 'जहां न पानी है, न सब्ज़ा' इन दोनों को छोड़ आओ।'

फिर क्या हुआ? क्या इब्राहीम ने एक लम्हा भी ताम्मुल किया? और इर्शाद की तामील में किसी क़िस्म का कोई उज़्र सामने आया? नहीं, हरगिज़ नहीं, बल्कि बे-चून व चूरा उन दोनों को मक्का की सरज़मीन पर छोड़ आए और इसके बाद जब वह बड़ा होता है और मां-बाप की आंखों का नूर और दिल का सुरूर बनता है, तो अब इब्राहीम को अल्लाह का हुक्म मिलता है कि उसको हमारे नाम पर क़ुरबान करो और अपनी फ़िदाकारी और इताअ़त शआ़री का सबूत दो। इस नाज़ुक वक़्त में एक फ़रमांबरदार से फ़रमांबरदार हस्ती के ईमान व यक़ीन की कश्ती किस तरह भंवर में आ जाती है, इसका अन्दाज़ा ख़ुद करो और फिर इब्राहीम की ओर देखो कि न अल्लाह की वह्य की जो 'ख़्वाब और सपने की शक्ल में' दिखाई गई थी, उन्होंने कोई ताव्वील की, न इसके लिए हीला-बहाना सोचा और उसको टालने के लिए कोई फ़िक्र व तरद्दुद किया, सुबह उठे और अपने बेटे को लिया और इर्शादे इलाही की तामील में वह कुछ किया जो उनके इंसानी हाथ कर सकते थे और इस तरह

अक़्ल को हैरान कर देने वाली अपनी वफ़ाकेशी का सबूत दिया।

और तीसरी बड़ी आज़माइश का वह वक़्त था कि जब बाप, क़ौम और वक़्त के बादशाह, सबने मुत्तफ़िक़ होकर यह फ़ैसला कर लिया कि इब्राहीम या अपने हक़ के पैग़ाम से बाज़ आ जाए, वरना तो उसको धधकती आग में डालकर ख़ाकस्तर कर दिया जाए, तब ज़ालिमों का यह फ़ैसला और इत्तिहाद क्या इब्राहीम के क़दम डगमगा सका? नहीं! बल्कि वह एक अ़ज़्म का पहाड़ बनकर उसी तरह अपनी जगह खड़ा रहा और हक़ का पैग़ाम और अल्लाह की रुश्द व हिदायत को उसी अ़ज़्म व सबात के साथ सुनाता रहा, जिस तरह शुरू से करता रहा, फिर दुश्मनों ने जो कुछ कहा था, आख़िर कर दिखाया और उसको धधकती आग में झोंक दिया, मगर इब्राहीम के सुकून व इत्मीनान में ज़रा भी कोई फ़र्क़ न आया, अलबत्ता दुश्मनों की दुश्मनी और उनके तमाम मक्र व फ़रेब को इब्राहीम के अल्लाह ने बेकार कर दिया और ख़ाक में मिला दिया और आग के शोले उसके लिए 'बरदंव-व सलामा' (ठंडक और सलामती) बन गए। इस तरह इब्राहीम अपने सबसे ताक़तवर निगहबान के साए में सआ़दत व हिदायत के फ़ैज़ान से ख़ुदा के बन्दों को बराबर मुनव्वर व रोशन करता रहा और हक़ की इशाअ़त और अल्लाह की दावत तेज़ तर हो गई।

इन तमाम सख़्त इम्तिहानों और आज़माइशों और फिर उनमें सबात क़दमी और इस्तिक़ामत के अलावा इब्राहीम की दूसरी इम्तियाज़ी ख़ुसूसियत यह थी कि उन्होंने शिर्क और तौहीद की मुतज़ाद ज़िंदगी के लिए एक ऐसा इम्तियाज़ क़ायम कर दिया जो उन्हीं जैसे जलीलुलक़द्र पैग़म्बर के शायाने शान था यानी उन्होंने अस्नाम-परस्ती (बुतपरस्ती) और कवाकिब-परस्ती (तारा परस्ती) की तर्दीद व तज़्लील और उनकी ख़राबियों का इज़्हार करते हुए तस्रीह फ़रमाई—

तर्जुमा—*'विला शुवहा मैंने अपना रुख़ उसी ज़ात की तरफ़ झुका दिया है जो आसमानों और ज़मीनों का पैदा करने वाला है, ख़ालिस होकर और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूं।* (अल-अनआम 6 : 79)

इब्राहीम ﷺ के इस इर्शाद का मतलब यह है कि अल्लाह के तसव्वुर की दो राहें हैं—एक सही और दूसरी ग़लत। ग़लत राह यह है कि यह अ़क़ीदा

क़ायम कर लिया जाए कि अल्लाह को राज़ी करने, उसको ख़ुश रखने और उसकी इबादत व परस्तिश के लिए ज़रूरी है कि बुतों और सितारों की पूजा की जाए, क्योंकि जब ये रूहें हमसे ख़ुश हो जाएंगी, तो अल्लाह को हमसे राज़ी कर देंगी। इस अ़क़ीदे का नाम 'शिर्क और साबईयत' है, क्योंकि इस अ़क़ीदे के मुताबिक़ माबूद और पूजा करने की वे तमाम इम्तियाज़ी बातें जो सिर्फ़ 'ज़ाते वाहिद' के लिए मख़्सूस रहनी चाहिए थी, दूसरों के लिए भी मुश्तरक हो जाती हैं और यही शिर्क की हक़ीक़त है।

इसके मुक़ाबले में सही राह यह है कि इस इल्म व यक़ीन को अ़क़ीदा बनाया जाए कि अल्लाह तआ़ला की रज़ामंदी और ख़ुशनूदी का तरीक़ा इसके अलावा दूसरा नहीं कि ख़ुद उसी की परस्तिश की जाए, उसी को हाजतरवा और मुश्किल कुशा समझा जाए, नफ़ा व नुक़्सान, सेहत व मरज़, ग़रीबी व ख़ुशहाली, रोज़ी का देना-लेना और मौत और ज़िंदगी, ग़रज़ तमाम मामलों में उसी को और सिर्फ़ उसी को मालिक व मुख़्तारे मुतलक़ मान लिया जाए और उसकी रज़ा व अ़द्मे रज़ा की मारफ़त के लिए उसके भेजे हुए सच्चे पैग़म्बरों और रसूलों की ही हिदायत व रुश्द पर अ़मल किया जाए, गोया दूसरे लफ़्ज़ों में यों कह दिया जाए कि अल्लाह को राज़ी रखने और उससे क़ुर्बत हासिल करने के लिए देवी-देवताओं को ज़रिया बनाने की ज़रूरत नहीं, बल्कि सिर्फ़ उस ज़ाते वाहिद की उबूदियत व बन्दगी और ज़िंदगी का सरमाया बनाया जाए, इसी अ़क़ीदे का नाम 'इस्लाम' और 'हनीफ़' है।

इसलिए यह पहला दिन था कि हज़रत इब्राहीम ﷺ ने पहली राह को 'शिर्क और साबइयत' और दूसरी राह को 'इस्लाम व हनीफ़' का नाम देकर दोनों राहों के दर्मियान मुस्तक़िल इम्तियाज़ क़ायम कर दिया और यह इम्तियाज़ ऐसा मक़्बूल हुआ कि आने वाली तमाम पैग़म्बराना तालीम व दावत की बुनियाद व असास इसी नाम से याद की गई, यहां तक कि ख़ातमुल अंबिया मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के आख़िरी पैग़ाम का नाम भी 'मिल्लते हनीफ़' और उसके पैरू का नाम 'मुस्लिम' क़रार पाया।

तर्जुमा–*'और पैरवी करो मिल्लते इब्राहीम की जो हनीफ़ था।'*

(अन-निसा 125)

तर्जुमा– *'उस इब्राहीम ने तुम्हारा नाम पहले ही से मुसलमान रखा और उस कुरआन में भी (यही नाम पसन्द रहा)।* (अल-हज्ज 22/78)

यही वजह है कि सूरः 'इब्राहीम' की यह ख़ुसूसियत है कि उसमें नबियों के आने और उनके हालात और ख़ास-ख़ास बातें और नतीजों को मजमूई तौर पर पेश किया गया है और बताया गया है कि पैग़म्बरों की रुश्द व हिदायत की दावत के मानने वालों और न मानने वालों के दर्मियान क्या फ़र्क़ है? और यह कि ख़ैर व शर, इताअ़त व बग़ावत और तस्लीम व इंकार में क्या ग़ैर-अल्लाह की ख़ुश्नूदी को भी कोई मक़ाम हासिल है या सिर्फ़ अल्लाह की रिज़ा का न होना ही असल ईमान है?

पस इन मज्मूई इब्राहीमी ख़ुसूसियतों के पेशे नज़र बेशक यह कहना सही है कि नबियों और रसूलों की मुक़द्दस ज़िंदगी में इब्राहीम का मक़ाम 'नबियों और रसूलों के मुजद्दिद' का मक़ाम है।

इन वाक़ियात से मुताल्लिक़ कुछ नसीहतें

1. जब इंसान किसी अ़क़ीदे को इल्म व यक़ीन की रोशनी में क़ायम कर लेता है और वह उसके दिल में बैठ जाता है, उसकी रूह में पैवस्ता हो जाता है और उसके सीने में पत्थर की लकीर बन जाता है, तो उसका फ़िक्र व ख़्याल, उसका सोच-विचार और उसका इस्तिग़राक़ (लग जाना) इस बारे में इस दर्जा ज़बरदस्त और साबित व रासिख़ हो जाता है कि काय़नात का कोई हादसा और दुनिया की कोई सख़्त-से-सख़्त मुसीबत भी उसको अपनी-अपनी जगह से नहीं हटा सकती। वह उसके लिए आग में बेख़तर कूद पड़ता, समुद्र में बे-झिझक छलांग मार देता और सूली के तख़्ते पर बे-ख़ौफ़ जान दे देता है। हज़रत इब्राहीम ﷺ के अ़ज़्म व सबात की मिसाल उसके लिए रोशन और ज़िंदा मिसाल है।

2. हक़ की हिमायत के लिए ऐसी दलीलें और सबूत पेश करने चाहिएं, जो दुश्मन और बातिल परस्त के क़ल्ब की तह में उतर जाएं और वह ज़ुबान से चाहे इक़रारे हक़ न करे, लेकिन उसका ज़मीर और उसका क़ल्ब हक़ के

इक़रार पर मजबूर हो जाए, बल्कि कभी-कभी ज़ुबान बेअख़्तियार हक़ के एलान से बाज़ न रह सके। क़ुरआन की आयत *'वजादिल हुम बिल्लती हि-य अहसनु'* इसी हक़ीक़त का एलान करती है।

3. पैग़म्बरों और रसूलों की राह यही है। वे लड़ाई-झगड़े की मंतक़ियाना राहों पर नहीं चलते, उनकी दलीलों की बुनियाद महसूसात व मुशाहदात पर होती है, या सादा विज्दानियात या अक़लियात पर, हज़रत इब्राहीम अ. का अस्नाम-परस्ती व कवाकिब परस्ती के बारे में जमहूर से मुनाज़रा और नमरूद का मुनाज़रा इसकी वाज़ेह मिसाल है।

4. किसी सही बात को साबित करने के लिए दलील में मुख़ालफ़त के बातिल अक़ीदे को फ़र्ज़ी तौर पर तस्लीम कर लेना झूठ या उस बातिल अक़ीदे का इक़रार नहीं है, बल्कि उसको 'झगड़े को ख़त्म करने के लिए 'बातिल को मान लेना' या 'मआरीज़' कहा जाता है और इस्तदलाल का यह तरीक़ा मुख़ालिफ़ को अपनी ग़लती के एतराफ़ पर मजबूर कर देता है।

हज़रत इब्राहीम अ. ने जम्हूर के साथ मुनाज़रे में दलील का यही पहलू अख़्तियार किया था, जिसने सनमपरस्तों को मजबूर कर दिया कि वे इक़रार कर लें कि बेशक बुत किसी हाल में भी न सुनते हैं और न जवाब दे सकते हैं।

5. अगर एक मुसलमान के मां-बाप मुश्रिक हों और किसी तरह शिर्क से बाज़ न आते हों तो उनकी मुश्रिकाना ज़िंदगी से बेज़ार और अलग रहते हुए भी उनके साथ दुन्यवी मामले और आख़िरत की नसीहतों में इज़्ज़त व हुर्मत का मामला करना चाहिए और सख़्ती और दुरुश्ती को काम में न लाना चाहिए। हज़रत इब्राहीम अ. का तर्ज़े अमल आज़र के साथ और नबी ﷺ का तर्ज़े अमल अबू तालिब के साथ इस मसअले के लिए क़तई और यक़ीनी गवाही है।

6. अगर मोमिन का दिल सही अक़ीदों पर इत्मीनाने क़ल्ब और ज़ुबान व क़ल्ब की मुताबक़त के साथ ईमान रखता है, मगर ऐनी और हक़ीक़ी मुशाहदा व महसूस के लिए या उसको हुक्कुल यक़ीन के दर्जे तक हासिल

करने के लिए किसी ईमानी या एतक़ादी मस्अले में भी सवाल व जुस्तजू की राह अख़्तियार करता और तमानियते क़ल्ब का तालिब होता है, तो यह जुस्तजू रैब व कुफ़्र नहीं है, बल्कि ऐन ईमान है। हज़रत इब्राहीम ﷺ के जवाब *'व ला किल्लि यत-मइन-न क़ल्बी'* से इसी हक़ीक़त का इंकिशाफ़ होता है।

7. दस्तरख़्वान की वुसअ़त अगर रिया व नुमूद से पाक हो और फ़ितरी तक़ाज़े के पेशेनज़र मेहमान-नवाज़ी में वुस्अते क़ल्ब और बड़ी हौसलगी पाई जाती हो तो अख़्लाक़े करीमाना में बहुत फ़ज़ीलत शुमार होती है और 'सख़ा-ए-नफ़्स' और 'करम' के नाम से मौसूम है।

कुछ किताबों में हज़रत इब्राहीम ﷺ की मेहमान-नवाज़ी के सिलसिले में एक अ़जीब वाक़िया नक़ल किया जाता है। कहते हैं कि एक बार दस्तूर के मुताबिक़ हज़रत इब्राहीम ﷺ किसी मेहमान के इन्तिज़ार में जंगल में खड़े थे, क्योंकि बग़ैर मेहमान के उनका न दस्तरख़्वान बिछता था, न वह खाना खाते थे। सामने से एक बहुत बूढ़ा आदमी नज़र पड़ा, जिसकी कमर भी झुक गई थी और वह लकड़ी के सहारे मुश्किल से चल रहा था, इब्राहीम आगे बढ़े और मसर्रत के साथ उसको सहारा देते हुए घर लाए, दस्तरख़्वान बिछा और खाना चुना गया। जब सब फ़ारिग़ हो गए, तो हज़रत इब्राहीम ﷺ ने फ़रमाया, उस पाक ज़ात का शुक्र अदा करो, जिसने हम सबको ये नेमतें अ़ता फ़रमाईं। बूढ़े ने ग़ुस्से में कहा, मैं नहीं जानता कि तेरा एक ख़ुदा कौन है, मैं तो अपने माबूद (बुत) का शुक्र अदा करता हूं जो मेरे घर में रखा है।

यह जवाब हज़रत इब्राहीम ﷺ को बहुत शाक़ गुज़रा और उसको फ़ौरन घर से रुख़्सत कर दिया, लेकिन कुछ देर न हुई थी कि इब्राहीम के दिल में अपने इस अंदाज़ से तक्लीफ़ हुई। उन्होंने सोचा कि जिस एक अल्लाह का शुक्र मैं उससे अदा कराना चाहता था, उसकी शान तो यह है कि उस बूढ़े की इस लम्बी उम्र में वह बराबर अपनी नेमतों से उसको नवाज़ता रहा और उसकी पुतपरस्ती, कुफ़्र और शिर्क से नाराज़ होकर एक वक़्त भी उस पर रिज़्क़ का दरवाज़ा बन्द न किया, फिर तुझको क्या हक़ था कि अगर उसने तेरी बात

न मानी और हक़ के कलिमे को क़ुबूल न किया, तो ख़फ़ा होकर उसको घर से निकाल दिया।

यह वाक़िया अपनी तारीख़ी हैसियत में क़ुबूल करने के क़ाबिल हो या न हो, लेकिन इस हक़ीक़त का ज़रूर एलान करता है, कि हज़रत इब्राहीम के अख़्लाक़े करीमाना की वह बुलन्दी, जो 'हक़ीक़ी मिस्ले आला' तक पहुंची हुई थी एक कहावत थी और सबकी ज़ुबान पर थी बेशक उनका यह फ़िक्र, हक़ के पैग़ाम और इस्लाम की दावत के लिए बेहतरीन उस्वा है।

8. अल्लाह जिन हस्तियों को अपना हक़ पहुंचाने के लिए चुन लेता है, उनके दिल व दिमाग़ को अपने नूर से इस दर्जा रोशन कर देता है कि उनके सामने हक़ और सच्चाई के इश्क़ के सिवा दूसरी कोई चीज़ बाक़ी ही नहीं रहती और इसलिए उनमें शुरू ही से यह इस्तेदाद दी हुई होती है कि वे बचपने ही से अपने साथियों में मुम्ताज़ और नुमायां नज़र आने लगते हैं और हक़ के रास्ते में आज़माइश और इम्तिहान को ख़ुशी से सहते और सब्र व रिज़ा का बेहतरीन नमूना पेश करते रहते हैं। इज़रत इस्माईल ﷺ का वाक़िया इसकी गवाही के लिए इंसाफ़ का गवाह और हज़ारों सबक़ और बड़प्पन की वजह बनता है।

9. हज़रत लूत ﷺ अगरचे हज़रत इब्राहीम ﷺ के भतीजे और उनके पैरू थे, मगर नबी भी बनाए जा चुके थे और अल्लाह के एलची बना लिए गए थे, इसलिए सदूम और आमूरा में हर क़िस्म की मुसीबतों और वतन से दूर दुश्मनों के घेरे रहने की तक्लीफ़ों के बावजूद उन्होंने सब्र व इस्तिक़ामत (जमाव) से काम लिया और अपने बुज़ुर्ग चाचा और ख़ानदान की मदद लेने के बजाए सिर्फ़ अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ही पर भरोसा रखते हुए उसके हुक्मों के सामने रज़ा व तस्लीम का सबूत दिया। यह मक़ाम 'अल्लाह से क़ुर्ब रखने वालों और नबियों का मक़ाम' है।

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम

नाम और ख़ानदान

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम हज़रत इसहाक़ के दूसरे बेटे और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पोते हैं। इबरानी भाषा में हज़रत याक़ूब का नाम इसराईल है। यह 'इसरा' (अब्द, ग़ुलाम) और ईल (अल्लाह) दो शब्दों में बना है और अरबी में इसका तर्जुमा अ़ब्दुल्लाह किया जाता है। इसी वजह से हज़रत इब्राहीम के बेटे हज़रत इस्हाक़ से जुड़ा ख़ानदान जो हज़रत याक़ूब यानी इसराईल की नस्ल से है, बनी इसराईल कहलाता है।

हज़रत याक़ूब का ज़िक्र क़ुरआन में

क़ुरआन में हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का नाम दस जगह आया है। सूरः यूसुफ़ में जगह-जगह ज़मीरों और औसाफ़ के लिहाज़ से, कुछ दूसरी सूरतों में औसाफ़ के एतबार से उनका तज़्किरा मौजूद है, असल में क़ुरआन पाक हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के जलीलुल-क़द्र नबी, साहिबे सब्र व अ़ज़ीमत और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बुज़ुर्ग बाप होने की तरफ़ तवज्जोह दिलाता है। हज़रत याक़ूब अल्लाह के बरगज़ीदा पैग़म्बर थे और कन्आ़नियों के लिए भेजे गए थे। उन्होंने वर्षों इस ख़िदमत को अंजाम दिया। उनके बारह लड़के थे। ख़ुद उनका और उनकी औलाद का ज़िक्र, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से जुड़ा हुआ है, इसलिए तफ़्सीलात हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़िक्र में मौजूद हैं, जो आगे आता है।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम

ख़ानदान

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के बेटे और हज़रत इब्राहीम के पड़पोते हैं। उनको यह शरफ़ हासिल है कि वह ख़ुद नबी, उनके वालिद नबी, उनके दादा नबी और परदादा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अबुल अंबिया (नबियों के बाप) हैं। क़ुरआन में इनका ज़िक्र छब्बीस बार आया है और इनको यह भी फ़ख़्र हासिल है कि इनके नाम पर एक सूरः (सूरः यूसुफ़) क़ुरआन में मौजूद है जो सबक़ और नसीहत का बेनज़ीर ज़ख़ीरा है, इसीलिए क़ुरआन अज़ीज़ में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के वाक़िए को 'अहसनुल क़सस' कहा गया है।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का ख़्वाब और यूसुफ़ के भाई

शुरू ज़िंदगी ही से हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की दिमाग़ी और फ़ितरी इस्तेदाद दूसरे भाइयों के मुक़ाबले में बिल्कुल जुदा और नुमायां थी। साथ ही हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की पेशानी का चमकता हुआ नूरे नुबूवत पहचानते और अल्लाह की वह्य के ज़रिए इसकी इत्तिला पा चुके थे। इन वजहों से वे अपनी तमाम औलाद में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से बेहद मुहब्बत रखते थे और यह मुहव्वत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों से बेहद शाक़ और नाक़ाबिले बरदाश्त थी और वे हर वक़्त इस फ़िक्र में लगे रहते थे कि या तो हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के दिल से इस मुहव्वत को निकाल डालें और या फिर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ही को अपने रास्ते से हटा दें, ताकि क़िस्सा पाक हो जाए। इन भाइयों के हसद भरे ख़्यालात को ज़बरदस्त ठेस उस वक़्त लगी, जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने एक ख़्वाब देखा कि ग्यारह सितारे और सूरज व चांद उनके सामने सज्दा कर रहे हैं। हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने यह ख़्वाब सुना तो सख़्ती के साथ उनको मना कर दिया कि अपना यह ख़्वाब किसी के सामने न दोहराना, ऐसा न हो कि उनको सुनकर तेरे भाई बुरी तरह पेश आएं, क्योंकि शैतान इंसान के पीछे लगा है

और तेरा ख़्वाब अपनी ताबीर में बहुत साफ़ और वाज़ेह है, लेकिन हसद की भड़कती हुई आग ने एक दिन यूसुफ़ के भाइयों को उनके ख़िलाफ़ साज़िश करने मजबूर कर ही दिया–

तर्जुमा–*'उनमें से एक ने कहा, यूसुफ़ को क़त्ल न करो और उसको गुमनाम कुएं में डाल दो कि उठा ले जाए उसको कोई मुसाफ़िर, अगर तुमको करना ही है।'* (यूसुफ़ 12 : 3)

इस मश्विरे के बाद सब जमा होकर हज़रत याक़ूब की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे–

तर्जुमा–*'(ऐ बाप!) क्या बात है कि तुझको यूसुफ़ के बारे में हम पर एतमाद नहीं है, हालांकि हम उसके ख़ैरख़्वाह हैं।'* (यूसुफ़ 12 : 12)

हज़रत याक़ूब समझ गए कि उनके दिलों में खोट है।

तर्जुमा–*'याक़ूब ने कहा, मुझे इससे रंज और दुख़ पहुंचता है कि तुम इसको (अपने साथ) ले जाओ और मुझे यह डर है कि उसको भेड़िया खा जाए और तुम ग़ाफ़िल रहो।'* (यूसुफ़ 12 : 13)

यूसुफ़ के भाई ने यह सुनकर एक जुबान होकर कहा–

तर्जुमा–*'अगर खा गया इसको भेड़िया, जबकि हम सब ताक़तवर हैं, तो बेशक इस शक्ल में तो हमने सब कुछ गंवा दिया।'* (यूसुफ़ 12 : 14)

कनआ़न का कुंवां

ग़रज़ यूसुफ़ ﷺ के भाई यूसुफ़ को सैर कराने के बहाने ले गए और मश्विरे के मुताबिक़ उसको एक ऐसे कुएं में डाल दिया, जिसमें पानी न था और मुद्दत से सूखा पड़ा था और वापसी में उसकी क़मीज़ को किसी जानवर के खून में तर करके रोते हुए हज़रत याक़ूब के पास आए और कहने लगे, 'ऐ बाप! अगरचे हम अपनी सच्चाई का कितना ही यक़ीन दिलाएं, मगर तुमको हरगिज़ यक़ीन न आएगा कि हम दौड़ में एक दूसरे से आगे निकलने में लगे हुए थे कि अचानक यूसुफ़ को भेड़िया उठाकर ले गया। हज़रत याक़ूब ने यूसुफ़ के लिबास को देखा तो ख़ून से लथपथ था, मगर किसी एक जगह से भी फटा हुआ न था और न चाक दामां था, फ़ौरन हक़ीक़त भांप गए मगर

भड़कने, तान व तश्नीअ़ करने और नफ़रत व हक़ारत का तरीक़ा अपनाने के बजाए पैग़म्बराना इल्म व फ़रासत के साथ यह बता दिया कि हक़ीक़त छिपाने की कोशिश के बावजूद तुम उसे छिपा न सके।

तर्जुमा–*'(हज़रत याक़ूब ﷺ) ने कहा, यह हरगिज़ नहीं, बल्कि बना दी है तुम्हारे नफ़्सों ने तुम्हारे लिए एक बात, अब सब्र ही बेहतर है और जो बात तुम ज़ाहिर करते हो, उस पर अल्लाह ही से मदद मांगता हूं।'*

(यूसुफ़ 12 : 18)

यूसुफ़ और ग़ुलामी

इधर ये बातें हो रही थीं, उधर हिजाज़ी इस्माईलियों का एक क़ाफ़िला शाम से मिस्र को ज़ा रहा था। कुंवां देखकर उन्होंने पानी के लिए डोल डाला। यूसुफ़ को देखकर जोश से शोर मचाया–

तर्जुमा–*'बशारत हो एक ग़ुलाम हाथ आया।'* (यूसुफ़ 12-19)

ग़रज़ इस तरह हज़रत यूसुफ़ ﷺ को इस्माईली ताजिरों के क़ाफ़िले ने अपना ग़ुलाम बना लिया और तिजारत के माल के साथ उनको भी मिस्र ले गए और बाज़ार में रिवाज के मुताबिक़ बेचने के लिए पेश कर दिया। उस वक़्त शाही ख़ानदान का एक रईस और मिस्री फ़ौजों का अफ़सर फ़ोतीफ़ार बाज़ार से गुज़र रहा था। उसने उनको ख़रीद लिया और अपने घर लाकर बीवी से कहा–

तर्जुमा–*'(देखो) इसको इ़ज़्ज़त से रखो, कुछ अजब नहीं कि यह हमको फ़ायदा बख़्शे या हम इसको अपना बेटा बना लें।* (यूसुफ़ 12-21)

फ़ोतीफ़ार ने हज़रत यूसुफ़ को औलाद की तरह इ़ज़्ज़त व एहतराम से रखा और अपने तमाम मामले और दूसरी ज़िम्मेदारियां उनके सुपुर्द कर दीं। यह सब कुछ अल्लाह की मंशा के मुताबिक़ हो रहा था।

तर्जुमा–*'और इसी तरह जगह दी हमने यूसुफ़ को उस मुल्क में और इस वास्ते कि उसको सिखाएं बातों का नतीजा और मतलब निकालना और अल्लाह ताक़तवर रहता है अपने काम में, लेकिन अक्सर आदमी ऐसे हैं जो नहीं जानते।'*

(यूसुफ़ 12-21)

अज़ीज़े मिस्र की बीवी और यूसुफ़

कुएं में डाले जाने और गुलामी के बाद अब हज़रत यूसुफ़ की एक और आज़माइश शुरू हुई, वह यह कि हज़रत यूसुफ़ ﷺ की जवानी का आलम था। हुस्न और ख़ूबसूरती का कोई ऐसा पहलू न था जो उनके अन्दर मौजूद न हो। अज़ीज़े मिस्र की बीवी दिल पर क़ाबू न रख सकी और यूसुफ़ पर परवानावार निसार होने लगी, मगर नुबूवत के लिए मुंतख़ब आदमी से भला यह कैसे मुम्किन था कि अ़ज़ीज़ की बीवी के नापाक इरादों को पूरा करे। क़ुरआन में पेश आने वाले वाक़िए का ज़िक्र इस तरह से है—

तर्जुमा—*'और फुसलाया यूसुफ़ को उस औरत ने, जिसके घर में वह रहते थे, उसके नफ़्स के मामले में और दरवाज़े बन्द कर दिए और कहने लगी, आ मेरे पास आ।' यूसुफ़ ने कहा, 'ख़ुदा की पनाह'।* (यूसुफ़ 12 : 23)

बहरहाल हज़रत यूसुफ़ दरवाज़े की तरफ़ भागे तो अ़ज़ीज़ की बीवी ने पीछा किया और दरवाज़ा किसी तरह खुल गया। सामने अ़ज़ीज़े मिस्र और औरत का चचेरा भाई खड़े थे। अज़ीज़े मिस्र की बीवी बोली—

तर्जुमा—'कहने लगी उस शख़्स की सज़ा क्या है जो तेरे अह्ल के साथ बुराई का इरादा रखता हो, मगर यह कि क़ैद कर दिया जाए या दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तला किया जाए। यूसुफ़ ने कहा, इसी ने मुझको मेरे नफ़्स के बारे में फुसलाया था और फ़ैसला किया औरत के ही घराने के एक आदमी ने कि अगर यूसुफ़ का पैरहन सामने से चाक है तो औरत सच्ची है और यूसुफ़ झूठा है और अगर पीछे से चाक है तो औरत झूठी है और यूसुफ़ सच्चा है। पस जब उसकी क़मीज़ को देखा गया तो पीछे से चाक था, कहा, बेशक ऐ औरत! यह तेरे मक्र व फ़रेब से है। बेशक तुम्हारा मक्र बहुत बड़ा है। यूसुफ़! तू इस मामले से दरगुज़र कर और ऐ औरत! तू अपने गुनाह की माफ़ी मांग, तू बेशक ख़ताकार है। (यूसूफ़ 12 : 25-29)

अज़ीज़े मिस्र ने अगरचे फ़ज़ीहत और रुस्वाई से बचने के लिए इस मामले को यहीं पर ख़त्म कर दिया, मगर बात छिपी न रह सकी। क़ुरआन मजीद में आता है—

तर्जुमा—'और (जब इस मामले का चर्चा फैला) तो शहर की कुछ औरतें

कहने लगीं, देखो अज़ीज़ की बीवी अपने ग़ुलाम पर डोरे डालने लगी कि उसे रिझा ले, वह उसकी चाहत में दिल हार गई हमारे ख़्याल में तो वह खुली बदचलनी में पड़ गई। पस जब अज़ीज़ की बीवी ने इन औरतों के मक्र को सुना, तो उनको बुला भेजा और उनके लिए मस्नदें तैयार कीं और (दस्तूर के मुताबिक़) हर एक को एक-एक छुरी पेश कर दी, फिर यूसुफ़ से कहा, इन सबके सामने निकल आओ। जब यूसुफ़ को इन औरतों ने देखा तो उसकी बड़ाई की क़ायल हो गईं, उन्होंने अपने हाथ काट लिए और (बे-अख़्तियार) पुकार उठी, यह तो इंसान नहीं, ज़रूर एक फ़रिश्ता है, बड़े रुत्बे वाला फ़रिश्ता। (अज़ीज़ की बीवी) बोली : तुमने देखा, यह है वह आदमी जिसके बारे में तुमने मुझे ताने दिए। (यूसुफ़ 12 : 30 से 33 तक)

अज़ीज़ की बीवी ने यह भी कहा कि बेशक मैंने उसका दिल अनपे क़ाबू में लेना चाहा था, मगर वह बे-क़ाबू न हुआ, मगर मैं कहे देती हूं कि अगर इसने मेरा कहा न माना तो यह होकर रहेगा कि वह क़ैद किया जाए और बेइज़्ज़ती में पड़े।

हज़रत यूसुफ़ ने जब यह सुना और फिर अज़ीज़े मिस्र की बीवी के अलावा और सब औरतों के चरित्र अपने बारे में देखे तो अल्लाह के हुज़ूर में हाथ फैलाकर दुआ की और कहने लगे–

तर्जुमा–'यूसुफ़ ने कहा, ऐ मेरे पालनहार! जिस बात की तरफ़ यह मुझको बुलाती है, मुझे उसके मुक़ाबले में क़ैदख़ाने में रहना ज़्यादा पसन्द है और अगर तूने उनके मक्र को मुझसे न हटा दिया और मेरी मदद न की, तो मैं कहीं उनकी ओर झुक न जाऊं और नादानों में से हो जाऊं। पस उसके रब ने उसकी दुआ क़ुबूल की और उससे उनका मक्र हटा दिया। बेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है।'

(यूसुफ़ 12 : 33-34)

अब अज़ीज़े मिस्र ने यूसुफ़ की तमाम निशानियां देखने और समझने के बाद अपनी बीवी की फ़ज़ीहत व रुसवाई होती देखकर यह तै कर ही लिया कि यूसुफ़ को एक मुद्दत के लिए क़ैदख़ाने में बन्द कर दिया जाए, ताकि यह मामला लोगों के दिलों से निकल जाए, ये चर्चे बन्द हो जाएं, इस तरह हज़रत यूसुफ़ ﷺ को जेल जाना पड़ा।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जेल में

तौरात में है कि यूसुफ़ के इल्मी और अ़मली जौहर क़ैदख़ाने में भी न छिप सके और क़ैदख़ाने का दारोग़ा उनके हलक़ा-ए-इरादत में दाख़िल हो गया और जेल का तमाम इन्तिज़ाम व इन्सिराम उनके सुपुर्द कर दिया और वह क़ैदख़ाने के बिल्कुल मुख़्तार हो गए।

क़ैदख़ाने में दावत व तब्लीग़

एक अच्छा इत्तिफ़ाक़ देखिए कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के साथ दो नवजवान और क़ैदख़ाने में दाख़िल हुए। उनमें से एक शाही साक़ी था और दूसरा था शाही बावर्चीख़ाने का दारोग़ा। एक दिन दोनों नवजवान हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उनमें से साक़ी ने कहा कि मैंने यह ख़्वाब देखा है कि मैं शराब बनाने के लिए अंगूर निचोड़ रहा हूं और दूसरे ने कहा, मैंने यह देखा है कि मेरे सर पर रोटियों का ख़्वान है और परिंदे उसे खा रहे हैं।

यह सुनकर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला ने जो बातें मुझे तालीम फ़रमाई हैं, उनमें से एक इल्म यह भी अ़ता फ़रमाया है। मैं इससे पहले कि तुम्हारा मुक़र्ररा खाना तुम तक पहुंचे, तुम्हारे ख़्वाबों की ताबीर बता दूंगा, मगर तुमसे एक बात कहता हूं, ज़रा इस पर भी ग़ौर करो और समझो-बूझो।

तर्जुमा–'ऐ मज्लिस के साथियो! (तुमने इस पर भी ग़ौर किया कि) जुदा-जुदा माबूदों का होना बेहतर है या एक अल्लाह का जो अकेला और सब पर ग़ालिब है। तुम इसके सिवा जिन हस्तियों की बन्दगी करते हो, उनकी हक़ीक़त इससे ज़्यादा क्या है कि सिर्फ़ कुछ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं। हुकूमत तो अल्लाह ही के लिए है। उसका फ़रमान यह है कि सिर्फ़ उसकी बन्दगी करो और किसी की न करो, यही सीधा दीन है, मगर अक्सर आदमी ऐसे हैं जो नहीं जानते।' (यूसुफ़ 12 : 39-40)

रुश्द व हिदायत के इस पैग़ाम के बाद हज़रत यूसुफ़ उनके ख़्वाबों की

ताबीर की तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़रमाने लगे—

'दोस्तो! जिसने देखा है कि वह अंगूर निचोड़ रहा है, वह फिर आज़ाद होकर बादशाह के साथी की ख़िदमत अंजाम देगा और जिसने रोटियों वाला ख़्वाब देखा है, उसको सूली दी जाएगी और परिंदे उसके सर को नोच-नोच कर खाएंगे।'

हज़रत यूसुफ़ जब ख़्वाब की ताबीर से फ़ारिग़ हो गए तो साक़ी से, यह समझकर कि वह नजात पा जाएगा, फ़रमाने लगे, 'अपने बादशाह से मेरा ज़िक्र करना।' साक़ी को जब रिहा किया गया तो उसको अपनी मश्ग़ूलियतों में कुछ भी याद न रहा और कुछ साल तक और यूसुफ़ को जेल में रहना पड़ा।

फ़िरऔन का ख़्वाब

हज़रत यूसुफ़ अभी जेल ही में थे कि वक़्त के फ़िरऔन ने एक ख़्वाब देखा कि सात मोटी गाएं हैं और सात दुबली गाएं, दुबली गाएं मोटी गायों को निगल गईं और सात सरसब्ज़ व शादाब बालियां हैं और सात सूखी बालियों ने हरी बालियों को खा लिया। बाशाह सुबह उठा और फ़ौरन दरबार के मुशीरों से अपना ख़्वाब कहा। दरबारी इस ख़्वाब को सुनकर तरद्दुद में पड़ गए। इस बीच साक़ी को अपना ख़्वाब और हज़रत यूसुफ़ की दी हुई ताबीर का वाक़िया याद आ गया। उसने बादशाह की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि अगर कुछ मोहलत दीजिए तो मैं उसकी ताबीर ला सकता हूं। बादशाह की इजाज़त से वह क़ैदख़ाना पहुंचा और हज़रत यूसुफ़ को बादशाह का ख़्वाब सुनाया और कहा कि आप इसको हल कीजिए। हज़रत यूसुफ़ ने उसी वक़्त ख़्वाब की ताबीर दी और सही तदबीर भी बतला दी जैसा कि क़ुरआन में ज़िक्र किया गया है—

तर्जुमा—'कहा, तुम खेती करोगे सात बरस जम कर, सो जो काटो उसको छोड़ दो उसके बाली में, मगर थोड़ा-सा जो तुम खाओ, फिर आएंगे इसके बाद सात वर्ष सख़्ती के, खा जाएंगे जो रखा तुमने उसके वास्ते मगर थोड़ा तो रोक रखोगे बीज के वास्ते, फिर आएगा, एक वर्ष उसके पीछे उसमें वर्षा होगी लोगों पर और उसमें रस निचोड़ेंगे।'

(यूसुफ़ 12 : 47-49)

साक़ी ने यह सब मामला बादशाह के सामने जा सुनाया। बादशाह ने ख़्वाब की ताबीर का मामला देखकर कहा कि ऐसे आदमी को मेरे पास लाओ। जब बादशाह का दूत हज़रत यूसुफ़ के पास पहुंचा तो हज़रत यूसुफ़ ने क़ैदख़ाने से बाहर आने से इंकार कर दिया और फ़रमाया कि इस तरह तो मैं जाने को तैयार नहीं हूं, तुम अपने आक़ा के पास जाओ और उससे कहो कि वह यह जांच करे कि इन औरतों का मामला क्या था, जिन्होंने हाथ काट लिए थे? पहले यह बात साफ़ हो जाए कि उन्होंने कैसी कुछ मक्कारियां की थीं और मेरा परवरदिगार तो उनकी मक्कारियों को ख़ूब जानता है।

ग़रज़ बादशाह ने जब यह सुना तो उन औरतों को बुलवाया और उनसे कहा कि साफ़-साफ़ और सही-सही बताओ कि इस मामले की सही हक़ीक़त क्या है, जबकि तुमने यूसुफ़ पर डोरे डाले थे, ताकि तुम उसको अपनी तरफ़ मायल कर लो? वह एक ज़ुबान होकर बोलीं–

तर्जुमा–'बोलीं : माशाअल्लाह! हमने इसमें बुराई की कोई बात नहीं पाई? (यूसुफ़ 12-51)

मज्मा में अ़ज़ीज़ की बीवी भी थी और अब वह इश्क़ व मुहब्बत की भट्टी में ख़ाम न थी, कुन्दन थी और ज़िल्लत व रुस्वाई के डर से आगे निकल चुकी थी। उसने जब यह देखा कि यूसुफ़ की ख़्वाहिश है कि हक़ीक़ते हाल सामने आ जाए तो बे-अख़्तियार बोल उठी–

तर्जुमा–*'जो हक़ीक़त थी, वह अब ज़ाहिर हो गई, हां! वह मैं ही थी, जिसने यूसुफ़ पर डोरे डाले कि अपना दिल हार बैठे। बेशक वह (अपने बयान में) बिल्कुल सच्चा है।'* (यूसुफ़ 12 : 51)

इस तरह अब वह वक़्त आ गया कि तोहमत लगाने वालों की ज़ुबान से ही साफ़ हो जाए, चुनांचे वाज़ेह और ज़ाहिर हो गया यानी शाही दरबार में मुजिरमों ने जुर्म का एतराफ़ करके यह बता दिया कि यूसुफ़ का दामन हर क़िस्म की आलूदगियों से पाक है। फ़िरऔन पर जब हक़ीक़त वाज़ेह हो गई तो उसके दिल में हज़रत यूसुफ़ की अ़ज़्मत व जलालत का सिक्का बैठ गया, वह कहने लगा–

तर्जुमा–'उसको (जल्द) मेरे पास लाओ कि मैं उसको ख़ास अपने कामों

के लिए मुक़र्रर करूं।'

(यूसुफ़ 12 - 53)

फ़िरऔन के इस हुक्म की तामील में हज़रत यूसुफ़ ﷺ बादशाह के दरबार में तशरीफ़ लाए, तो फ़िरऔन ने कहा–

तर्जुमा–'बेशक आज के दिन तू हमारी निगाहों में बड़े इक़्तिदार वाला और अमानतदार है।'

(यूसुफ़ 12 : 54)

और उनसे मालूम किया कि मेरे ख़्वाब में अकाल का ज़िक्र है, उसके बारे में मुझको क्या-क्या उपाय करने चाहिए। हज़रत यूसुफ़ ने जवाब दिया–

तर्जुमा–'अपने राज्य के ख़ज़ानों पर आप मुझे मुख़्तार (अख़्तियार वाला) कर दीजिए, मैं हिफ़ाज़त कर सकता हूं और मैं इस काम का जानने वाला हूं।'

(यूसुफ़ 12 : 55)

चुनांचे बादशाह नें ऐसा ही किया और हज़रत यूसुफ़ को अपने पूरे राज्य का मुकम्मल ज़िम्मेदार बना दिया और शाही ख़ज़ाने की कुंजियां उनके हवाले करके मुख़्तारे आ़म कर दिया। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने अ़ज़ीज़ के कारोबार का मुख़्तार बनाकर यूसुफ़ के लिए यह फ़रमाया था कि हमने उसको *'तम्कीन फ़िल अर्ज़ि'* (ज़मीन का पूरा मालिक व मुख़्तार) अ़ता कर दी। सूरः यूसुफ़ में 'तम्कीन फ़िल अर्ज़ि' की ख़ुशख़बरी दो बार सुनाई गई है। ग़रज़ हज़रत यूसुफ़ ने मिस्र राज्य के मुख़्तारे कुल होने के बाद ख़्वाब से मुताल्लिक़ वे तमाम तदबीरें शुरू कर दीं जो चौदह साल के अन्दर फ़ायदेमंद हो सकें और पब्लिक अकाल के दिनों में भी भूख और परेशानहाली से बची रह सके।

अकाल और याक़ूब ﷺ का ख़ानदान

ग़रज़ जब अकाल का ज़माना शुरू हुआ तो मिस्र और उसके आस-पास के इलाक़े में सख़्त अकाल पड़ा और कनआ़न में हज़रत याक़ूब ने साहबज़ादों से कहा कि मिस्र में अ़ज़ीज़े मिस्र ने एलान किया है कि उसके पास ग़ल्ला हिफ़ाज़त से रखा हुआ है, तुम सब जाओ और ग़ल्ला ख़रीद कर लाओ। चुनांचे बाप के हुक्म के मुताबिक़ यह कनआ़नी क़ाफ़िला मिस्र के अ़ज़ीज़ से ग़ल्ला लेने के लिए मिस्र रवाना हुआ–

तर्जुमा–*'और यूसुफ़ के भाई (ग़ल्ला ख़रीदने मिस्र) आए। वे जब यूसुफ़*

के पास पहुंचे तो उसने फ़ौरन उनको पहचान लिया और वे यूसुफ़ को न पहचान सके।'
(यूसुफ़ 12 : 58)

तौरात का बयान है कि यूसुफ़ के भाइयों पर जासूसी का इलज़ाम लगाया गया और इस तरह उनको यूसुफ़ के सामने हाज़िर होकर आमने-सामने बात करने का मौक़ा मिला और उन्होंने अपने बाप (हज़रत याक़ूब), सगे भाई (बिनयमीन) और घर के हालात को ख़ूब कुरेद-कुरेद कर पूछा और–

तर्जुमा–*'और जब यूसुफ़ ने उनका सामान मुहैया कर दिया तो कहा, अब आना तो अपने सौतेले भाई बिन यमीन को भी साथ लाना। तुमने अच्छी तरह देख लिया है कि मैं तुम्हें (ग़ल्ला) पूरी तौल देता हूं और बाहर से आने वालों के लिए बेहतर मेहमान नवाज़ हूं, लेकिन अगर तुम उसे मेरे पास न लाए तो फिर याद रखो, न तुम्हारे लिए मेरे पास ख़रीद व फ़रोख़्त होगी, न तुम मेरे पास जगह पाओगे।'*
(यूसुफ़ 12 - 59-60)

फिर यूसुफ़ के भाई जब हज़रत यूसुफ़ से रुख़्सत होने आए, तो उन्होंने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि ख़ामोशी के साथ उनके कजावों में उनकी वह पूंजी भी रख दो जो उन्होंने ग़ल्ले की क़ीमत के नाम से दी है, ताकि जब घर जाकर उसको देखें, तो अजब नहीं कि फिर दोबारा आएं।

जब यह क़ाफ़िला कनआन वापस पहुंचा तो उन्होंने अपने तमाम हालात अपने बाप याक़ूब को सुनाए और उनसे कहा कि मिस्र के वाली (ज़िम्मेदार मालिक) ने साफ़-साफ़ हमसे कह दिया है कि उस वक़्त तक यहां न आना और न ग़ल्ले की ख़रीद का ध्यान करना, जब तक कि अपने सौतेले भाई बिन यमीन को साथ न लाओ, इसलिए अब आपको चाहिए कि उनको हमारे साथ कर दें, हम उसके हर तरह के निगहबान और हिफ़ाज़त करने वाले हैं। इस मौक़े पर हज़रत याक़ूब ने कहा–

तर्जुमा–*कहा, क्या मैं तुम पर (बिन यमीन) के बारे में ऐसा ही एतमाद करूं जैसा कि इससे पहले उसके भाई (यूसुफ़) के बारे में कर चुका हूं, सो अल्लाह ही बेहतरीन हिफ़ाज़त करने वाला है और वह ही सबसे बढ़कर रहम करने वाला है।*
(यूसुफ़ 12 : 64)

इस बात-चीत से फ़ारिग़ होने के बाद अब उन्होंने अपना सामान खोलना

शुरू किया, तो देखा, उनकी पूंजी उन्हीं को वापस कर दी गई है। यह देखकर वे कहने लगे, ऐ बाप! इससे ज़्यादा और क्या हमको चाहिए? अब हमें इजाज़त दें कि हम दोबारा उसके पास जाएं और घर वालों के लिए रसद लाएं और बिन यमीन को भी हमारे साथ भेज दे, हम उसकी पूरी हिफ़ाज़त करेंगे।

हज़रत याक़ूब ने फ़रमाया कि मैं बिन यमीन को हरगिज़ तुम्हारे साथ नहीं भेजूंगा, जब तक तुम अल्लाह के नाम पर मुझसे अ़ह्द न करो। ग़रज़ अ़ह्द व पैमान के बाद यूसुफ़ के भाइयों का क़ाफ़िला दोबारा मिस्र को रवाना हुआ और इस बार बिनयमीन भी साथ था। हज़रत याक़ूब ने उनको रुख़्सत करते वक़्त नसीहतें फ़रमाईं—

तर्जुमा—*फिर जब ये मिस्र में उसी तरह दाख़िल हुए जिस तरह उनके बाप ने उनको हुक्म दिया, तो यह (एहतियात) उनको अल्लाह की मशीयत के मुक़ाबले में कुछ काम न आई, मगर यह एक ख़्याल था याक़ूब के जी में जो उसने पूरा कर लिया और बेशक वह इल्म वाला था और हमने ही उसको यह इल्म सिखाया था, लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते।'* (यूसुफ़ 12 : 68)

इस बीच यह सूरत पेश आई कि जब यूसुफ़ के भाई कनआ़न से रवाना हुए, तो रास्ते में बिनयमीन को तंग करना शुरू कर दिया। कभी उसको बाप की मुहब्बत का ताना देते और कभी इस बात पर हसद करते कि अज़ीज़े मिस्र ने ख़ास तौर पर उसको क्यों बुलाया है और जब ये लोग मंज़िले मक़्सूद पर पहुंचे तो—

तर्जुमा—*'और जब ये सब यूसुफ़ के पास पहुंचे तो उसने अपने भाई (बिन यमीन) को अपने पास बिठा लिया और उससे (धीरे से) कहा, मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूं पस जो बदसुलूकी ये तेरे साथ करते आए हैं, तू उस पर ग़मगीन न हो।'*

(यूसुफ़ 12 : 69)

कनआ़नी क़ाफ़िला कुछ दिनों के क़ियाम के बाद जब रुख़्सत होने लगा तो यूसुफ़ ﷺ ने हुक्म दिया कि उनके ऊंटों को इस क़दर लाद दो, जितना ये ले जा सकें। हज़रत यूसुफ़ ﷺ की यह ख़्वाहिश थी कि किसी तरह अपने प्यारे भाई बिनयमीन को अपने पास रोक लें, लेकिन मिस्र की हुकूमत के क़ानून के मुताबिक़ किसी ग़ैर-मिस्री को बग़ैर किसी माक़ूल वजह के रोक लेना

सख़्त मना था और हज़रत यूसुफ़ उस वक़्त हक़ीक़त खोलना नहीं चाहते थे, इसलिए जब क़ाफ़िला रवाना होने लगा तो किसी को इत्तिला किए बग़ैर शाही पैमाने को बिन यमीन की ख़ुरजी में रख दिया, (ताकि भाई के पास एक निशानी रहे।)

तर्जुमा–*'उस (यूसुफ़ ने अपने भाई बिन यमीन) के कजावे में कटोरा रख दिया।'* (यूसुफ़ 12 : 70)

कनआ़न के इस क़ाफ़िले ने अभी थोड़ा ही फ़ासला तै किया होगा कि यूसुफ़ के कारिंदों ने शाही बरतनों की देख-भाल की, तो उसमें प्याला न मिला, समझे कि शाही महल में कन्आ़नियों के सिवा दूसरा कोई नहीं आया, इसलिए उन्होंने ही चोरी की है, फ़ौरन दौड़े और चिल्लाए।

तर्जुमा–'फिर पुकारा पुकारने वाले ने, ऐ क़ाफ़िले वालो! तुम तो अलबत्ता चोर हो। वे कहने लगे उनकी ओर मुंह करके तुम्हारी क्या चीज़ गुम हो गई? वे कारिन्दे बोले, हम नहीं पाते बादशाह (यूसुफ़) का पैमाना (कटोरा) और जो कोई उसको लाए उसको मिले एक ऊंट का बोझ (ग़ल्ला) और मैं हूं उसका ज़ामिन। वे बोले, ख़ुदा की क़सम! तुमको मालूम है कि हम शरारत करने को नहीं आए मिस्र के मुल्क में और न हम कभी चोर थे। वे (कारिंदे) बोले, फिर क्या सज़ा है उसकी अगर तुम निकले झूठे। कहने लगे, उसकी सज़ा यह है कि जिनके सामानों में हाथ आए, वही उसके बदले में जाए। हम यही सज़ा देते हैं ज़ालिमों को।' (यूसुफ़ 12 : 71-75)

इस मरहले के बाद यह मामला अ़ज़ीज़े मिस्र के सामने पेश हुआ और उनकी तलाशी ली गई तो बिनयमीन के कजावे में वह प्याला मौजूद था।

तर्जुमा–'फिर यूसुफ़ ने उनकी ख़ुर्जियां देखनी शुरू कीं। आख़िर में वह बरतन निकाला अपने भाई की ख़ुरजी से।' (यूसुफ़ 12 : 76)

इसके बाद अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–

तर्जुमा–'यों ख़ुफ़िया तदबीर कर दी हमने यूसुफ़ के लिए। वह हरगिज़ न ले सकता था अपने भाई यमीन को उस बादशाह (मिस्र) के तरीक़े के मुताबिक़, मगर यह कि अल्लाह तआ़ला ही चाहे। (यूसुफ़ 12 : 76)

इस तरह बिन यमीन को मिस्र में रोक लिया गया और यूसुफ़ के भाइयों

ने जब यह रंग देखा तो बाप का अ़ह्द व पैमान याद आ गया और ख़ुशामद भरे अ़र्ज़-मारूज़ करके अ़ज़ीज़े मिस्र को बिनयमीन की वापसी की तर्ग़ीब दिलाई। यह तरीक़ा भी कामियाब न हो सका तो आपस में मश्विरे से यह तै पाया कि वालिद बुज़ुर्गवार को सही सूरत बतला दी जाए और कहा कि वे इस वाक़िए की तस्दीक़ दूसरे क़ाफ़िले वालों से भी कर लें। इस मश्विरे के मुताबिक़ यूसुफ़ के भाई कनआ़न वापस आए और हज़रत याक़ूब से बिना कुछ घटाए-बढ़ाए सारा वाक़िया कह सुनाया। हज़रत याक़ूब यूसुफ़ के मामले में उनकी सदाक़त का तजुर्बा कर चुके थे, इसलिए फ़रमाया : 'तुम्हारे जी ने एक बात बना ली है, वाकिया यों नहीं है—बिन यमीन और चोरी? यह नहीं हो सकता, ख़ैर अब सब्र के सिवा कोई चारा नहीं, ऐसा सब्र कि बेहतर से बेहतर हो। अल्लाह तआ़ला के लिए नामुम्किन तो नहीं कि एक दिन इन गुम लोगों को फिर जमा कर दे और एक साथ इन दोनों को मुझसे मिला दे। बेशक वह दाना है और हिक्मत वाला है और उनकी ओर से रुख़ फेर लिया और फ़रमाने लगे—

'आह! यूसुफ़ की जुदाई का ग़म!'

हज़रत याक़ूब عليه السلام की आंखें ग़म की ज़्यादती की वजह से रोते-रोते सफ़ेद पड़ गई थीं और सीना ग़म की जलन से जल रहा था, मगर सब्र के साथ अल्लाह पर तकिया किए बैठे थे।

बेटे यह हाल देखकर कहने लगे—

'ख़ुदा की क़सम! तुम हमेशा इसी तरह यूसुफ़ की याद में घुलते रहोगे या इसी ग़म में जान दे दोगे!'

हज़रत याक़ूब ने यह सुनकर फ़रमाया, 'मैं कुछ तुम्हारा शिकवा तो नहीं करता और न तुमको सताता हूं—

तर्जुमा—'बल्कि मैं तो अपनी हाजत और ग़म अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ करता हूं। मैं अल्लाह की ओर से वह बात जानता हूं, जो तुम नहीं जानते।' (यूसुफ़ 12 : 86)

बहरहाल हज़रत याक़ूब ने अपने बेटों से फ़रमाया : देखो, एक बार फिर मिस्र जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की तलाश करो और अल्लाह की

रहमत से नाउम्मीद और मायूस न हो, इसलिए कि अल्लाह की रहमत से ना उम्मीदी काफ़िरों का शेवा है।'

यूसुफ़ के भाइयों ने तीसरी बार फिर मिस्र का इरादा किया और शाही दरबार में पहुंच कर अपनी परेशानी बयान की और ख़ुसूसी लुत्फ़ व करम की दरख़्वास्त भी की। हज़रत यूसुफ़ ने परेशानी का हाल सुना तो दिल भर आया और आपसे ज़ब्त न हो सका कि ख़ुद को छिपाएं और राज़ ज़ाहिर न होने दें। आख़िर फ़रमाने लगे—

तर्जुमा—'क्यों जी, तुम जानते हो कि तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या मामला किया, जबकि तुम जिहालत में डूबे हुए थे?'

(यूसुफ़ 12 : 89)

भाइयों ने यह उम्मीद के ख़िलाफ़ सुनकर कहा—

तर्जुमा—'क्या तू वाक़ई यूसुफ़ ही है?' (यूसुफ़ 12-87)

हज़रत यूसुफ़ ने जवाब दिया—

तर्जुमा—'हां, मैं यूसुफ़ हूं और यह (बिनयमीन) मेरा मांजाया भाई है। अल्लाह ने हम पर एहसान किया और जो आदमी भी बुराइयों से बचे और (मुसीबतों में) साबित क़दम रहे, तो अल्लाह नेक लोगों का अज्र बर्बाद नहीं करता।'

(यूसुफ़ 12-90)

यूसुफ़ के भाई यह सुनकर कहने लगे—

तर्जुमा—'ख़ुदा की क़सम, इसमें शक नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने तुझको हम पर बरतरी व बुलन्दी बख़्शी और बेशक हम पूरी तरह क़ुसूरवार थे।'

(यूसुफ़ 12 : 91)

हज़रत यूसुफ़ ने अपने सौतले भाइयों की ख़स्ताहाली और पशेमानी को देखा तो पैग़म्बराना रहमत और अ़फ़्व व दरगुज़र के साथ फ़ौरन फ़रमाया—

तर्जुमा—आज के दिन मेरी ओर से तुम पर कोई फटकार नहीं। अल्लाह तुम्हारा क़ुसूर बख़्शे और वह तमाम रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाला है।

(यूसुफ़ 12-92)

हज़रत यूसुफ़ ने यह भी फ़रमाया—

तर्जुमा—'अब तुम कनआ़न वापस जाओ और मेरा पैरहन लेते जाओ, यह

वालिद की आंखों पर डाल देना, इन्शाअल्लाह यूसुफ़ की ख़ुश्बू उनकी आंखों को रोशन कर देगी और तमाम ख़ानदान को मिस्र ले आओ।'

(यूसुफ़ 12-93)

इधर यूसुफ़ के भाइयों का क़ाफ़िला कनआ़न को यूसुफ़ का पैरहन लेकर चला, तो उधर हज़रत याक़ूब को वह्य इलाही ने यूसुफ़ की ख़ुश्बू से महका दिया। फ़रमाने लगे, ऐ याक़ूब के ख़ानदान! अगर तुम यह न समझो कि बुढ़ापे में उसकी अ़क़्ल मारी गई है, तो मैं यक़ीन के साथ कहता हूं कि मुझको यूसुफ़ की महक आ रही है। वे सब कहने लगे, 'ख़ुदा की क़सम! तुम तो अपने उसी पुराने ख़ब्त में पड़े हो, यानी इस क़दर मुद्दत गुज़र जाने के बाद भी, जबकि यूसुफ़ का नाम व निशान भी बाक़ी नहीं रहा, तुम्हें यूसुफ़ ही की रट लगी हुई है।'

कनआ़न का क़ाफ़िला वापस पहुंचा, तो वही हुआ जिसकी ओर हज़रत यूसुफ़ ने इशारा किया था—

तर्जुमा—'फिर जब बशारत देने वाला आ पहुंचा, तो उसने यूसुफ़ ﷺ के पैरहन को याक़ूब के चेहरे पर डाल दिया, पस उसकी आंखें रोशन हो गईं। याक़ूब ने कहा, क्या मैं तुमसे न कहता था कि मैं अल्लाह की ओर से वह बात जानता हूं, जो तुम नहीं जानते।' (यूसुफ़ 12 : 96)

यूसुफ़ के भाइयों के लिए यह वक़्त बहुत कठिन था, शर्म व नदामत में डूबे हुए, सर झुकाये हुए बोले, ऐ बाप! आप अल्लाह की जनाब में हमारे गुनाहों की मग़्फ़िरत के लिए दुआ़ फ़रमाइए, बेशक हम ख़ताकार और क़ुसूरवार हैं।

हज़रत याक़ूब ﷺ ने फ़रमाया—

तर्जुमा—'बहुत जल्द मैं अपने रब से तुम्हारी मग़्फ़िरत की दुआ़ करूंगा, बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला, रहम करने वाला है।' (यूसुफ़ 12 : 98)

याक़ूब का ख़ानदान मिस्र में

ग़रज़ हज़रत याक़ूब ﷺ अपने सब ख़ानदान को लेकर मिस्र रवाना हो गए। तौरात के मुताबिक़ मिस्र आने वाले सत्तर लोग थे। जब हज़रत यूसुफ़ ﷺ को इत्तिला हुई कि उनके वालिद ख़ानदान समेत शहर के क़रीब पहुंच

गए तो वह फ़ौरन इस्तिक़बाल के लिए बाहर निकले। हज़रत याक़ूब ने एक लम्बी मुद्दत के बाद बेटे को देखा तो सीने से चिमटा लिया। हज़रत यूसुफ़ ﷺ ने वालिद से अ़र्ज़ किया कि अब आप इ़ज़्ज़त व एहतराम और अम्न व हिफ़ाज़त के साथ शहर में तशरीफ़ ले चलें। हज़रत यूसुफ़ ने वालिद माजिद और तमाम ख़ानदान को शाही सवारियों में बिठा कर शहर और शाही महल में उतारा। इसके बाद एक दरबार सजाया गया। हज़रत यूसुफ़ ﷺ के वालिद को शाही तख़्त पर जगह दी गई। इसके बाद ख़ुद हज़रत यूसुफ़ शाही तख़्त पर बैठे। उस वक़्त दरबारी 'हुकूमत के दस्तूर के मुताबिक़' तख़्त के सामने ताज़ीम के लिए सज्दे में गिर पड़े। (ताज़ीम का यह तरीक़ा शायद पिछले नबियों में जायज़ रहा हो। नबी अकरम ﷺ ने इस क़िस्म की ताज़ीम को अपनी उम्मत के लिए हराम क़रार दिया है और उसको ज़ाते इलाही ही के लिए मख़्सूस बनाया है) यूसुफ़ ﷺ के तमाम ख़ानदान वालों ने भी यही अ़मल किया। यह देखकर हज़रत यूसुफ़ ﷺ को अपने बचपन का ज़म'ना याद आ गया और अपने वालिद से कहने लगे–

तर्जुमा–'और यूसुफ़ (ﷺ) ने कहा, ऐ बाप! यह है ताबीर उस ख़्वाब की जो मुद्दत हुई, मैंने देखा था, मेरे परवरदिगार ने उसे सच्चा साबित कर दिया।' (यूसुफ़ 12 : 100)

ऊपर के वाक़ियात के अच्छे ख़ात्मे से मुतास्सिर होकर यूसुफ़ बे-अख़्तियार हो गए और अल्लाह की जनाब में इस तरह दुआ़ की–

तर्जुमा–ऐ परवदिगार! तूने मुझे हुकूमत अ़ता फ़रमाई और बातों का मतलब और नतीजा निकालना तालीम फ़रमाया। ऐ आसमान व ज़मीन के बनाने वाले! तू ही मेरा कारसाज़ है, दुनिया में भी और आख़िरत में भी। तो यह भी कीजियो कि दुनिया से जाऊं तो तेरी फ़रमांबरदारी की हालत में जाऊं और उन लोगों में दाख़िल हो जाऊं जो तेरे नेक बन्दे हैं। (यूसुफ़ 12 : 101)

तौरात के मुताबिक़ इस वाक़िए के बाद हज़रत यूसुफ़ का तमाम ख़ानदान मिस्र ही में आबाद हो गया।

वफ़ात

हज़रत यूसुफ़ ﷺ ने अपनी ज़िंदगी के लम्बे अ़र्से को मिस्र ही में गुज़ारा और जब उनकी उम्र 110 साल की हुई तो उनकी वफ़ात हो गई तो उनको हुनूत (मम्मी) करके ताबूत में महफ़ूज़ रख दिया और उनकी वसीयत के मुताबिक़ जब मूसा के ज़माने में बनी-इसराईल मिस्र से निकले तो उस ताबूत को भी साथ लेते गए और अपने बाप-दादा की सरज़मीन ही में ले जाकर सुपुर्दे ख़ाक कर दिया। बताया गया है कि इनकी क़ब्र नाबलस के आस-पास है, यह कनआ़न का इलाक़ा है जिस पर अब इसराईल का क़ब्ज़ा है।

अहम अख़्लाक़ी बातें

1. अगर किसी आदमी का निजी मिज़ाज उम्दा हो और उसका माहौल भी पाक, मुक़द्दस, और लतीफ़ हो, तो उस आदमी की ज़िंदगी अख़्लाक़े करीमाना में नुमायां और अच्छी सिफ़तों में मुम्ताज़ होगी और वह हर क़िस्म के शरफ़ व मज्द का हामिल होगा।

2. अगर किसी आदमी में अल्लाह पर ईमान मज़बूत और साफ़-सुथरा हो और उस पर यक़ीन पक्का और मज़बूत हो तो फिर इस राह की तमाम परेशानियां और मुश्किलें उस पर आसान बल्कि आसानतर हो जाती हैं और हक़ देख-समझ लेने के बाद तमाम ख़तरे और मुसीबतें बेकार होकर रह जाती हैं।

3. इब्तिला और आज़माइश मुसीबत व हलाकत की शक्ल में हो या दौलत व सरवत और नफ़्सानी अस्बाब की सूरत में, हर हालत में इंसान को अल्लाह की जानिब ही रुजू करना चाहिए और उसी से इल्तिजा करनी चाहिए कि वह हक़ मामले पर साबित क़दम रखे।

4. जब अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत और उसका इश्क़, दिल की गहराइयों में उतर जाता है, तो फिर इंसान की ज़िंदगी का तमामतर मक़्सद वही बन जाता है और उसके दीन की दावत व तब्लीग़ का इश्क़ हर वक़्त रग-रग में दौड़ता रहता है।

5. दयानत और अमानत एक ऐसी नेमत है कि उसको इंसान को दीनी व दुन्यवी सआ़दतों की कुंजी कहना चाहिए।

6. ख़ुदएतमादी इंसान की बुलन्द सिफ़तों से एक बड़ी सिफ़त है। अल्लाह ने जिस आदमी को यह दौलत दी है, वही दुनिया की मुसीबतों और दुखों से गुज़र कर दुनिया और दीन दोनों की बुलन्दियों को हासिल कर सकता है।

7. सब्र एक शानदार 'ख़ुल्क़' है और बहुत-सी बुराइयों के लिए सपर और ढाल का काम देता है। क़ुरआन करीम में सबसे ज़्यादा जगहों पर उ़सकी फ़ज़ीलत का एलान किया गया है और अल्लाह तआ़ला ने ऊंचे रुत्बे और बुलन्द दर्जे का मदार इसी फ़ज़ीलत पर रखा है।

8. तक्लीफ़ पहुंचाने वाले भाइयों की नदामत के वक़्त सब्र का अख़्तियार करना यानी दिल की वुस्अ़त का सबूत है।

9. बेहतरीन अख़्लाक में शुक्र भी सबसे बेहतर अख़्लाक़ है, इसलिए यह अल्लाह के अख़्लाक़ में सबसे बुलन्द है।

10. हसद (जलन) और बुग़्ज़ (द्वेष) का अंजाम हसद करने वाले और बुग़्ज़ रखने वाले के हक़ ही में नुक़्सानदेह होता है और अगरचे कभी जिससे हसद और बुग़्ज़ किया गया है, उसको भी दुनिया का नुक़्सान पहुंच जाना मुम्किन है, लेकिन हसद करने वाला किसी हाल में भी फ़लाह नहीं पाता और वह दुनिया और आख़िरत में घाटा उठाने वाला जैसा हो जाता है, अलावा इसके कि तौबा कर ले और हसद वाली ज़िंदगी को छोड़ दे।

11. सदाक़त, दयानत, अमानत, सब्र और शुक्र जैसी ऊंची सिफ़तों वाली ज़िंदगी ही हक़ीक़ी और कामयाब ज़िंदगी है और अगर इंसान में ये सिफ़तें नहीं पाई जातीं, तो फिर वह इंसान नहीं, बल्कि हैवान है, बल्कि उससे भी बुरा।

हज़रत यूसुफ़ ﷺ की पूरी ज़िंदगी ऊपर लिखे अख़्लाक़ी मसलों पर गवाह है और इस दुआ़ के लिए दावत दे रही है—

'ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा मददगार है, तू मुझे अपनी इताअ़त पर मौत दीजियो और नेक लोगों के साथ शामिल कीजियो। (यूसुफ़ 12/101)

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम

शुऐब की क़ौम

हज़रत शुऐब मदयन या मदयान की ओर भेजे गए थे। मदयन एक क़बीले का नाम है, जो हज़रत इब्राहीम के बेटे मदयन की नस्ल से था। शुऐब भी चूंकि उसी नस्ल और उसी क़बीले से थे, इसलिए उनके भेजे जाने के बाद यह कौम 'शुऐब की क़ौम' (क़ौमे शुऐब) कहलाई।

मदयन या अस्हाबे ऐकः

क़ुरआन मजीद में इस क़बीले से मुताल्लिक़ हमको दो बातें बताई गई हैं—

तर्जुमा–'एक यह कि वह इमामे मुबीन पर आबाद था और लूत की क़ौम और मदयन दोनों बड़ी शाहराहें पर आबाद थे।' (15-79)

अरब के भूगोल में जो शाहराह (Main Road) हिजाज़ के ताजिर क़ाफ़िलों को शाम, फ़लस्तीन, यमन, बल्कि मिस्र तक ले जाती और लाल सागर के पूर्वी किनारे से होकर गुज़रती थी, क़ुरआन उसी को 'इमामे मुबीन' (खुला और साफ़ रास्ता) कहता है, जहां तक अस्हाबे ऐकः का ताल्लुक़ है, तो अरबी में 'ऐका' हरी-भरी झाड़ियों को कहते हैं जो झांदले की शक्ल अख़्तियार कर लेती है। इन दोनों बातों के जान लेने के बाद मदयन की आबादी के बारे में यही कहा जा सकता है कि मदयन का क़बीला लाल सागर के पूर्वी किनारे और अरब के उत्तर पश्चिम में ऐसी जगह आबाद था जो शाम से मिले हुए हिजाज़ का आख़िरी हिस्सा कहा जा सकता है। कुछ विद्वानों ने मदयन और अस्हाबे ऐका में फ़र्क़ किया हैं, लेकिन तर्जीही बात यही है कि मदयन और अस्हाबे ऐकः एक ही क़बीला है जो बाप की निस्बत से मदयन कहलाया और ज़मीन की तबई और जुग़राफ़ियाई (भौगोलिक) हैसियत से अस्हाबे ऐका कहलाया।

Maktab-e-Ashraf

हक़ की दावत

बहरहाल शुऐब जब अपनी क़ौम में भेजे गए तो उन्होंने देखा कि अल्लाह की नाफ़रमानी और बड़े गुनाह के काम सिर्फ़ कुछ लोगों में ही नहीं पाए जाते, बल्कि सारी क़ौम इसकी शिकार है और अपनी बद-आ़मालियों में इतनी मस्त है कि एक लम्हे के लिए भी उनको यह एहसास नहीं होता कि यह जो कुछ हो रहा है, अल्लाह की नाफ़रमानी और गुनाह है बल्कि ये अपने इन आमाल को फ़ख़्र की वजह समझते हैं।

उनकी बहुत-सी नाफ़रमानियों और बद-अख़्लाक़ियों से हटकर जिन गंदे कामों ने ख़ास तौर से उनमें रिवाज पा लिया था, वे यह थे—

1. बुतपरस्ती और मुश्रिकाना रस्म और अ़क़ीदे,

2. ख़रीदे-बेचने में पूरा लेना और कम तौलना, यानी दूसरे को उसके हक़ से कम देना और अपने लिए हक़ के मुताबिक़ लेना, बल्कि उससे ज़्यादा।

3. तमाम मामलों में खोट और डाकाज़नी।

क़ौमों के आम रिवाज के मुताबिक़ असल में उनकी तनआसानी, ऐश परस्ती, दौलत की ज़्यादती, ज़मीन और बाग़ों की ज़रख़ेज़ी और हरियाली ने उनको इतना घमंडी बना दिया था कि वे इन तमाम चीज़ों को अपनी ज़ाती मीरास और अपना ख़ानदानी हुनर समझ बैठे थे और एक लम्हे के लिए भी उनके दिल में यह ख़तरा नहीं गुज़रता था कि यह सब कुछ अल्लाह की अ़ता और बख़्शिश है कि शुक्रगुज़ार होते और सरकशी से बाज़ रहते, ग़रज़ उनकी ख़ुशहाली ने उनमें तरह-तरह की बद-अख़्लाक़ियां और क़िस्म-क़िस्म के ऐब पैदा कर दिए थे।

आख़िर हक़ की ग़ैरत हरकत में आई और अल्लाह की सुन्नत के मुताबिक़ उनको हक़ का रास्ता दिखाने, नाफ़रमानियों और ग़लत और गन्दे कामों से बचाने और अमीन व मुत्तक़ी और अख़्लाक़ वाला बनाने के लिए उन्हीं में से एक हस्ती को चुन लिया और नुबूवत व रिसालत से नवाज़ कर उसको इस्लाम की दावत और हक़ के पैग़ाम का इमाम बनाया। यह हस्ती हज़रत शुऐब की ज़ाते गरामी थी।

अल्लाह की तौहीद और शिर्क से बेज़ारी का एतक़ाद तो तमाम नबियों (अ़लैहिमुस्सलाम) की तालीम की मुश्तरक बुनियाद और असल है जो हज़रत शुऐब ﷺ के हिस्से में भी आई थी, मगर क़ौम की मख़्सूस बद-अख़्लाक़ियों पर तवज्जोह दिलाने और उनको सीधे रास्ते पर लाने के लिए उन्होंने इस क़ानून को भी अहमियत दी कि बेचने-ख़रीदने के मामले में यह हमेशा नज़रों में रहना चाहिए कि जो जिसका हक़ है, वह पूरा-पूरा उसको मिले कि दुन्यवी मामलों में यही एक ऐसी बुनियाद है जो डगमगा जाने के बाद हर क़िस्म के ज़ुल्म, फ़िस्क़ व फ़ुजूर और मुख़्लिक ख़राबियों और बद-अख़्लाक़ियों की वजह बनती है।

ख़ुलासा यह है कि हज़रत शुऐब ﷺ ने भी अपनी क़ौम की बद-आ़मालियों को देखकर बड़ा दुख महसूस किया और रुश्द व हिदायत की तालीम देते हुए क़ौम को उन्हीं उसूलों की तरफ़ बुलाया जो नबियों की दावत व इर्शाद का ख़ुलासा है—

उन्होंने फ़रमाया : 'ऐ क़ौम! एक अल्लाह की इबादत कर, उसके अलावा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं है और ख़रीदने-बेचने में नाप-तौल को पूरा रख और लोगों के साथ मामलों में खोट न कर, कल तक मुम्किन है कि तुझको उन बद-अख़्लाक़ियों और बुराइयों का हाल मालूम न हुआ हो, मगर आज तेरे पास अल्लाह की हुज्जत, निशानी और बुरहान आ चुका, अब जह्ल व नादानी, अक़्ल व दरगुज़र के क़ाबिल नहीं है, हक़ को क़ुबूल कर और बातिल से बाज़ आ कि यही कामियाबी और कामरानी की राह है और अल्लाह की ज़मीन में फ़ित्ना व फ़साद न कर, जबकि अल्लाह तआ़ला ने उसकी सलाह व ख़ैर के तमाम सामान जुटा दिए, अगर तुझमें ईमान व यक़ीन की सदाक़त मौजूद है तो समझ कि यही फ़लाह व बहबूदी की राह है और देख ऐसा न कर कि हक़ की दावत के रास्ते को रोकने और लोगों को लूटने के लिए हर राह पर जा बैठे और जो आदमी भी ईमान ले आए उसको अल्लाह का रास्ता अख़्तियार करने पर धमकियां देने लगे और उसमें टेढ़ पैदा करने पर उतर आए। ऐ क़ौम के लोगो! उस वक़्त को याद करो और अल्लाह का एहसान मानो कि तुम बहुत थोड़े थे, फिर उसने अम्न व आ़फ़ियत देकर तुम्हारी

तायदाद को ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ा दिया—

'ऐ मेरी क़ौम! ज़रा इस पर भी ग़ौर कर कि जिन लोगों ने अल्लाह की ज़मीन में फ़साद फैलाने का तरीक़ा अख़्तियार किया था, उनका अंजाम कितना इबरतनाक हुआ, और अगर तुममें से एक जमाअ़त मुझ पर ईमान ले आई और एक जमाअ़त ईमान नहीं ले आई तो सिर्फ़ इतनी ही बात पर मामला ख़त्म हो जाने वाला नहीं, बल्कि सब्र के साथ इंतिज़ार कर, यहां तक कि अल्लाह तआ़ला हमारे दर्मियान आख़िरी फ़ैसला कर दे और वही बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है।'

हज़रत शुऐब बड़े फ़सीह व बलीग़ मुक़र्रिर (स्पष्ट और उत्साहवर्धक वक्ता) थे। शीरीं कलामी (बातों में मिठास) हुस्ने ख़िताबत (सुन्दर वक्तव्य) तर्ज़ेबयान (वर्णन-शैली) और तलाक़ते लिसानी (भाषा-विद्वता) में बहुत नुमायां इम्तियाज़ रखते थे, इसलिए मुफ़स्सिर (टीकाकार) उनको ख़तीबुल अंबिया के लक़ब से याद करते हैं। पस उन्होंने निहायत नर्म-गर्म हर तरीक़े से रुश्द व हिदायत के ये कलिमे कहे, पर उस बदबख़्त क़ौम पर ज़रा भी कोई असर न हुआ और कुछ कमज़ोर और बूढ़े लोगों के अलावा किसी ने हक़ के पैग़ाम पर कान न धरा, वे ख़ुद भी इसी तरह बद-आ़माल (दुष्कर्मी) रहे और दूसरों का रास्ता भी मारते रहे, वे रास्तों में बैठ जाते और हज़रत शुऐब के पास आने जाने वालों को हक़ क़ुबूल करने से रोकते और अगर मौक़ा लग जाता तो लोगों को लूट लेते। अगर इस पर भी कोई ख़ुशक़िस्मत हक़ पर लब्बैक कह देता, तो उसको डराते-धमकाते और तरह-तरह से टेढ़े रास्ते पर चलने पर आमादा करते, लेकिन इन तमाम बातों के बावजूद हज़रत शुऐब ﷺ की हक़ की दावत का सिलसिला बराबर जारी रहा, तो उनमें से बड़े क़िस्म के लोगों ने, जिन में अपनी शौकत और ताक़तवर पर घमंड था, हज़रत शुऐब ﷺ से कहाः ऐ शुऐब! दो बातों में से एक बात ज़रूर होकर रहेगी या हम तुझको और तुझ पर ईमान लाने वालों को अपनी बस्ती में से निकाल देंगे और तेरा देस निकाला करेंगे या तुझको मजबूर करेंगे कि फिर हमारे दीन में वापस आ जाओ।'

हज़रत शुऐब ﷺ ने फ़रमाया : 'अगर हम तुम्हारे दीन को ग़लत और

बातिल समझते हों, तब भी ज़बरदस्ती मान लें, यह तो बड़ा ज़ुल्म है? और जबकि हमको अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे उस दीन से नजात दे दी तो फिर हम उसकी तरफ़ लौट जाएं, तो इसका मतलब तो यह होगा कि हमने झूठ बोलकर अल्लाह तआ़ला पर बोहतान बांधा, यह नामुम्किन है। हां, अगर अल्लाह की (जो कि हमारा परवरदिगार है) यही मर्ज़ी हो तो वह जो चाहेगा करेगा, हमारे रब का इल्म तमाम चीज़ों पर छाया हुआ है, हमारा तो सिर्फ़ उसी पर भरोसा है। ऐ परवरदिगार! तू हमारे और हमारी क़ौम के दर्मियान हक़ और सच्चाई के साथ फ़ैसला कर दे, तू ही बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। क़ौम के सरदारों ने जब हज़रत शुऐब ﷺ का यह अ़ज़्म व इस्तिक़लाल देखा तो उन से चेहरा फेर कर अपनी क़ौम के लोगों से कहने लगा : 'ख़बरदार! अगर तुमने शुऐब का कहना माना तो तुम हलाक व बर्बाद हो जाओगे।'

हज़रत शुऐब ﷺ ने यह भी फ़रमाया : देखो, अल्लाह तआ़ला ने मुझको इसलिए भेजा है कि मैं अपनी ताक़त भर तुम्हारी इस्लाह की कोशिश करूं और मैं जो कुछ कहता हूं उसकी सदाक़त और सच्चाई के लिए अल्लाह की हुज्जत और दलील और निशानी भी पेश कर रहा हूं। मगर अफ़सोस तुम इस वाज़ेह हुज्जत को देखकर भी सरकशी और नाफ़रमानी पर क़ायम हो और मुख़ालफ़त का कोई पहलू ऐसा नहीं है जो तुमसे छूटा हुआ हो, फिर मैं तुमसे अपनी इस रुश्द व हिदायत के बदले में कोई उजरत भी नहीं मांगता और न कोई दुनिया के नफ़ा को तलब कर रहा हूं। मेरा बदला तो अल्लाह के पास है और अगर तुम अब भी न मानोगे, तो मुझे डर है कि कहीं अल्लाह का अ़ज़ाब तुमको हलाक व बर्बाद न कर डाले, उसका फ़ैसला अटल है और किसी की मजाल नहीं कि उसको रद्द कर दे।

क़ौम के सरदार त्यौरी चढ़ा कर बोले : शुऐब! क्या तेरी नमाज़ हमसे यह चाहती है कि हम अपने बाप-दादा के देवताओं को पूजना छोड़ दें और उसको अपने माल व दौलत में यह अख़्तियार न रहे कि जिस तरह चाहें, मामला करें, अगर हम कम तौलना छोड़ दें, लोगों के कारोबार में खोट न करें तो ग़रीब और क़ल्लाश होकर रह जाएं पस क्या ऐसी तालीम देने में तुझको कोई संजीदा और सच्चा रहबर कह सकता है?

हज़रत शुऐब ﷺ ने बड़ी दिलसोज़ी और मुहब्बत के साथ फ़रमायाः 'ऐ क़ौम! मुझे यह डर लग रहा है कि तेरी ये बेबाकियां और अल्लाह के मुक़ाबले में नाफ़रमानियां कहीं तेरा भी वह अंजाम न कर दें, जो तुझसे पहले क़ौमे नूह, क़ौमे हूद, क़ौम सालेह और क़ौमे लूत का हुआ। अब भी कुछ नहीं गया, अल्लाह के सामने झुक जा और अपनी बद-किरदारियों के लिए बख़्शिश का तलबगार बन और हमेशा के लिए उनसे तौबा कर ले। बेशक मेरा परवरदिगार रहम करने वाला और बहुत ही मेहरबान है। वह तेरी तमाम ख़ताएं बख़्श देगा।

क़ौम के सरदारों ने यह सुनकर जवाब दिया, शुऐब! हमारी समझ में कुछ नहीं आता कि तू क्या कहता है? तू हम सबसे कमज़ोर और ग़रीब है। अगर तेरी बातें सच्ची होतीं, तो तेरी ज़िंदगी हम सबसे अच्छी होती और हमको सिर्फ़ तेरे ख़ानदान का डर है, वरना तुझको संगसार करके छोड़ते, तू हरगिज़ हम पर ग़ालिब नहीं आ सकता।

हज़रत शुऐब ने फ़रमाया : 'अफ़सोस है तुम पर! क्या तुम्हारे लिए अल्लाह के मुक़ाबले में मेरा ख़ानदान ज़्यादा डर की वजह बन रहा है, हालांकि मेरा रब तुम्हारे तमाम कामों का एहाता किए हुए है और वह दाना व बीना है।'

'ख़ैर, अगर तुम नहीं मानते तो तुम जानो, तो वह सब कुछ करते रहो जो कर रहे हो, बहुत जल्द अल्लाह का फ़ैसला बता देगा कि अज़ाब का हक़दार कौन है और कौन झूठा और काज़िब है, तुम भी इन्तिज़ार करो और में भी इन्तिज़ार करता हूं?'

आख़िर वही हुआ जो अल्लाह के क़ानून का अबदी व सरमदी फ़ैसला है, 'यानी हुज्जत व बुरहान की रोशनी आने के बाद भी जब बातिल पर इसरार हो और उसकी सच्चाई का मज़ाक़ उड़ाया जाए और उसकी इशाअत में रुकावटें डाली जाएं, तो फिर अल्लाह का अज़ाब इस मुजरिमाना ज़िंदगी का ख़ात्मा कर देता है और आने वाली क़ौमों के लिए उसको इबरत व मौइज़त बना दिया करता है।

अ़ज़ाब की क़िस्में

क़ुरआन अज़ीज़ कहता है कि नाफ़रमानी और सरकशी के बदले में शुऐब की क़ौम को दो क़िस्म के अ़ज़ाब ने आ घेरा—एक ज़लज़ले का अ़ज़ाब और दूसरा आग की बारिश का अ़ज़ाब यानी जब वे अपने घरों में आराम कर रहे थे तो यकायक एक हौलनाक ज़लज़ला आया। अभी यह हौलनाकी ख़त्म भी न हुई थी कि ऊपर से आग बरसने लगी और नतीजा यह निकला कि सुबह को देखने वालों ने देखा कि कल के सरकश और मग़रूर आज घुटनों के बल औंधे झुलसे हुए पड़े हैं—

तर्जुमा—'फिर आ पकड़ा उनको ज़लज़ले ने, पस सुबह को रह गए अपने-अपने घरों के अन्दर औंधे पड़े।' (अल-आ़राफ़ 7 : 78)

तर्जुमा—'फिर उन्होंने शुऐब को झुठलाया, पस आ पकड़ा उनको बादल वाले अ़ज़ाब ने (जिसमें आग थी) बेशक वह बड़े हौलनाक दिन का अ़ज़ाब था।' (अश-शुअ़रा 26 : 189)

हज़रत शुऐब अ़ल० की क़ब्र

हज़रमौत में एक क़ब्र है, वहां के बाशिंदों का दावा है कि यह हज़रत शुऐब ﷺ की क़ब्र है, जो मदयन की हलाकत के बाद यहां बस गए थे और यहीं उनकी वफ़ात हुई।

सबक़ भरी नसीहतें

1. इस्लाम में बन्दों के हक़ की हिफ़ाज़त, समाजी दुरुस्तकारी और मामलों में दयानत व अमानत को इस दर्जा अहम समझा गया है कि अल्लाह ने जलीलुलक़द्र पैग़म्बर को भेजे जाने का मक़्सद इसी को क़रार दिया और इन्हीं मामलों की इस्लाह के लिए रसूल बनाकर भेजा।

2. ख़रीदने-बेचने में दूसरे के हक़ को पूरा न देना इंसानी ज़िंदगी में ऐसा रोग लगा देता है कि यह बद-अख़्लाक़ी बढ़ते-बढ़ते बन्दों के तमाम हक़ों के बारे में हक़ मारने की ख़स्लत पैदा कर देती है और इस तरह इंसानी शराफ़त

और आपसी भाईचारा और मुहब्बत के रिश्ते को काट करके लालच, लोभ, ख़ुदग़रज़ी और कंजूसी जैसे ख़राब कामों वाला बना देती है।

3. नाप-तौल में इंसाफ़ सिर्फ़ चीज़ों के ख़रीदने-बेचने तक महदूद नहीं है, बल्कि इंसानी किरदार का यह कमाल होना चाहिए कि अल्लाह और उसके बन्दे के तमाम हक़ और फ़र्ज़ में इस असल को काम की बुनियाद बनाए और किसी मौक़े पर किसी हालत में भी अ़द्ल व इंसाफ़ के तराज़ू को हाथ से जाने न दे।

4. ख़रीदने-बेचने के दर्मियान नाप-तौल में कमी न करना और इंसाफ़ को बाक़ी रखना, गोया एक कसौटी है कि जो इंसानी ज़िंदगी के मामूली लेन-देन में अ़द्ल व इंसाफ़ नहीं बरतता, उससे क्या उम्मीद हो सकती है कि वह अहम दीनी और दुन्यवी मालों में अ़द्ल व इंसाफ़ को काम में लाएगा?

5. सुधार के बाद अल्लाह की ज़मीन में फ़साद पैदा करने से बढ़कर कोई जुर्म नहीं है, इसलिए कि ज़ुल्म, किब्र, क़त्ल और इस्मतरेज़ी जैसे बड़े-बड़े जुर्मों की बुनियाद और असल यही रज़ीला (गन्दे और घटिया काम) हैं।

6. नबियों और उनके मानने वालों की ज़िंदगी के पढ़ने से पता चलता है कि नबियों के रोशन दलील देने, आयातुल्लाह यानी अल्लाह की निशानियां दिखाने, मुहब्बत और रहम के जज़्बों को ज़ाहिर करने और अपनी दावत व तब्लीग़ पर किसी क़िस्म का अज्र तलब न करने का इत्मीनान दिलाते रहे हैं मगर इसके बावजूद दूसरी तरफ़ यानी बातिल पर क़ायम रहने वालों की तरफ़ से यही जवाब मिलता रहा है कि तुमको संगसार कर दिया जाएगा, क़त्ल कर दिया जाएगा। अल्लाह के पैग़म्बरों के वजूद तक को बरदाश्त नहीं किया गया और यहां तक कहा गया कि अगर सच्चे हो तो जिस अ़ज़ाब से डराते हो, वह अभी ले आओ, वरना तो हमेशा के लिए तुम्हारा और तुम्हारे मिशन का ख़ात्मा कर दिया जाएगा?

7. हक़ व बातिल का यही वह आख़िरी मरहला है जिसके बाद अल्लाह तआ़ला का वह क़ानून जिसको 'अ़मल के बदले का क़ानून' कहा जाता है, ऐसी सरकश और तकब्बुर भरी क़ौमों के लिए दुनिया ही में लागू हो जाता है और उनको हलाक व तबाह करके आने वाली नस्लों और क़ौमों के लिए

इबरत और नसीहत का सामान जुटा देता है।

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम का ज़िक्र कुरआन पाक में

कुरआन हकीम में हज़रत शुऐब और उनकी क़ौम का तज़्किरा आराफ़, हूद और शुअ्रा में कुछ तफ़्सील से किया गया है और हिज्र व अंकबूत में थोड़े में है।

हज़रत मूसा व हारून अ़लैहिमस्सलाम

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शुरूआती ज़िंदगी

बनी इसराईल मिस्र में

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के क़िस्से में बनी इसराईल का ज़िक्र सिर्फ़ इसी क़दर किया गया था कि हज़रत याक़ूब और उनका ख़ानदान हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से मिलने मिस्र में आए, मगर उसके सदियों बाद फिर एक बार क़ुरआन करीम बनी इसराईल के वाक़िए तफ़्सील के साथ सुनाता है जिनसे मालूम होता है कि बनी इसराईल हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने में मिस्र ही में बस गए थे। तौरात से और तफ़्सील मालूम होती है और यह भी कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़िरअ़ौन से अपने बाप और ख़ानदान के लिए अर्ज़े जाशान (Goshen) तलब की जो फ़िरअ़ौन ने ख़ुशी-ख़ुशी उनके सुपुर्द कर दी। बहरहाल इन तफ़्सीलों से यह वात साफ़ हो जाती है कि बनी इसराईल हज़रत यूसुफ़ और हज़रत मूसा की दर्मियानी सदियों में मिस्र में आबाद रहे और उनकी तायदाद लगभग छः लाख हो गई थी। ('नेशनल ज्योग्रेफ़िक' जनवरी 1078 ई. के मुताबिक ये छः सौ ख़ानदान यानी पन्द्रह हज़ार लोगों से कुछ कम ही हो सकते हैं।)

फ़िरअ़ौन

शुरू ही में यह साफ़ कर देना ज़रूरी है कि 'फ़िरअ़ौन' मिस्र के बादशाहों

का लक़ब है, किसी ख़ास हुक्मराँ या बादशाह का नाम नहीं है। तारीख़ी एतबार से तीन हज़ार साल क़ब्ल मसीह से शुरू होकर सिकन्दर आज़म के ज़माने तक फ़िरऔनों के 31 ख़ानदान मिस्र पर हुक्मरां रहे हैं। हज़रत मूसा के ज़माने में मिस्र का हुक्मरां (फ़िरऔन) कौन था और उसका क्या नाम था, यक़ीन के साथ नहीं कहा जा सकता, इसलिए यहां फ़िरऔन को उस वक़्त के मिस्र का हुक्मरां (शासक) समझा जाए।

फ़िरऔन का ख़्वाब

तौरात में है और तारीख़ के माहिर भी कहते हैं कि फ़िरऔन को बनी इसराईल के साथ इसलिए दुश्मनी हो गई थी कि उस ज़माने के काहिनों, नजूमियों और क़याफ़ागरों ने उसको बताया था कि उसकी हुकूमत का ज़वाल एक इसराईली लड़के के हाथ से होगा और कुछ तारीख़ी रिवायतों में है कि फ़िरऔन ने एक भयानक ख़्वाब देखा था, जिसकी ताबीर दरबार के ज्योतिषियों और काहिनों ने वही दी थी, जिसका ज़िक्र गुज़र चुका है। इस पर फ़िरऔन ने एक जमाअ़त को इसलिए मुक़र्रर किया कि वह तफ़्तीश और तलाश के साथ इसराईली लड़कों को क़त्ल कर दे और लड़कियों को छोड़ दिया करे।

हज़रत मूसा ﷺ की पैदाइश

हज़रत मूसा का नसब (वंश) कुछ वास्तों से हज़रत याक़ूब तक पहुंचता है। उनके वालिद का नाम इमरान और वालिदा का नाम यूकाबुद था। इमरान के घर में मूसा की पैदाइश ऐसे ज़माने में हुई जबकि फ़िरऔन इसराईली लड़कों के क़त्ल का फ़ैसला कर चुका था। बहरहाल जूं-जूं करके तीन माह तक उनके पैदा होने की किसी को मुतलक़ ख़बर न होने दी। इस सख़्त और नाज़ुक वक़्त में आख़िर अल्लाह तआ़ला ने मदद की और मूसा की वालिदा के दिल में यह बात डाल दी कि एक ताबूत की तरह का सन्दूक़ बनाओ, जिस पर राल और रोग़न पालिश कर दो, ताकि पानी अन्दर असर न कर सके और उसमें उस बच्चे को हिफ़ाज़त से रख दो और फिर उस सन्दूक़ को नील नदी के बहाव

पर छोड़ दो।

मूसा की मां ने ऐसा ही किया और साथ ही अपनी बड़ी लड़की यानी मूसा की बहन को लगाया कि वह इस सन्दूक़ के बहाव के साथ किनारे-किनारे चलकर सन्दूक़ को निगाह में रखे और देखे कि अल्लाह उसकी हिफ़ाज़त का वायदा किस तरह पूरा करता है, क्योंकि मूसा की वालिदा को अल्लाह तआ़ला ने यह बशारत पहले ही सुना दी थी कि हम इस बच्चे को तेरी ही तरफ़ वापस कर देंगे और यह हमारा पैग़म्बर और रसूल होगा।

फ़िरऔन के घर में तर्बियत

हज़रत मूसा ﷺ की बहन बराबर सन्दूक़ के बहाव के साथ-साथ किनारे-किनारे निगरानी करती जा रही थीं कि उन्होंने देखा सन्दूक तैरते हुए शाही महल के किनारे आ लगा और फ़िरऔन के घराने में से एक औरत ने ख़ादिमों के ज़रिए उसको उठवा लिया और शाही महल में ले गई। हज़रत मूसा ﷺ की हमशीरा (बहन) यह देखकर बहुत ख़ुश हुई और हालात की सही तफ़्सील मालूम करने के लिए शाही महल की नौकरानियों में शामिल हो गई।

यहां यह बात हो रही थी, उधर हज़रत मूसा ﷺ की वालिदा लतीफ़ा ग़ैबी के इन्तिज़ार में आंखें फैलाए हुए थीं कि लड़की (हज़रत मूसा ﷺ की बहन) ने आकर पूरी दास्तान कह सुनाई और कहा कि अब तुम चलकर अपने बच्चे को सीने से लगाओ और आंखें ठंडी करो और उसका शुक्र अदा करो कि उसने अपना वायदा पूरा कर दिया। इस तरह अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा ﷺ की परवरिश का पूरा इन्तिज़ाम कर दिया।

मूसा का मिस्र से निकलना

हज़रत मूसा ﷺ एक अ़र्से तक शाही तर्बियत में बसर करते-करते जवानी के दौर में दाख़िल हुए तो निहायत मज़बूत, कड़यल और बहादुर जवान निकले। चेहरे से रौब टपकता और बातों से एक ख़ास वक़ार और अज़मत की शान ज़ाहिर होती थी। उनको यह भी मालूम हो गया था कि वह इसराईली

हैं और मिस्री ख़ानदानों से इनकी कोई रिश्तेदारी नहीं है। उन्होंने यह भी देखा कि बनी इसराईल पर बड़े ज़ुल्म हो रहे हैं और वे मिस्र में बड़ी ज़िल्लत और ग़ुलामी की ज़िंदगी बसर कर रहे हैं। यह देखकर उनका ख़ून खौलने लगता और मौक़े-मौक़े से इबरानियों की हिमायत व मदद में पेश पेश हो जाते।

एक बार शहरी आबादी से एक किनारे जा रहे थे कि देखा एक मिस्री एक इसराईली को बेगार के लिए घसीट रहा है। इसराईली ने मूसा को देखा तो लगा फ़रियाद करने और मदद चाहने। हज़रत मूसा को मिस्री की इस जाबिराना हरकत पर सख़्त ग़ुस्सा आया और उसको बाज़ रखने की कोशिश की, मगर मिस्री न माना, मूसा ने ग़ुस्से में आकर एक तमांचा रसीद कर दिया। मिस्री इस मार को सह न सका और उसी वक़्त मर गया। हज़रत मूसा ने यह देखा तो बहुत अफ़सोस किया, क्योंकि उनका इरादा बिल्कुल उसके क़त्ल का न था और नदामत व शर्मिन्दगी के साथ दिल में कहने लगे कि बेशक यह शैतान का काम है। वही इंसान को ग़लत रास्ते पर लगाता है और अल्लाह की दरगाह में अ़र्ज़ करने लगे कि यह जो कुछ हुआ, अनजाने में हुआ, मैं तुझसे माफ़ी चाहता हूं। अल्लाह ने भी उनकी ग़लती को माफ़ कर दिया और मग़्फ़िरत की बशारत से नवाज़ा।

इधर शहर में मिस्री के क़त्ल की ख़बर फैल गई, मगर क़ातिल का कुछ पता न चला। आख़िर फ़िरऔन के पास मदद तलब की कि यह काम किसी इसराईली का है, इसलिए आप मदद फ़रमाएं। फ़िरऔन ने कहा कि इस तरह सारी क़ौम से बदला नहीं लिया जा सकता, तुम क़ातिल का पता लगाओ, मैं उसको ज़रूर पूरी सज़ा दूंगा।

बुरा इत्तिफ़ाक़ कहिए या अच्छा इत्तिफ़ाक़ कि दूसरे दिन भी हज़रत मूसा शहर के किनारे पर सैर फ़रमा रहे थे कि देखा वही इसराईली एक क़िब्ती से झगड़ रहा है और क़िब्ती ग़ालिब है। मूसा को देखकर कल की तरह उसने आज भी फ़रियाद की और मदद चाही।

इस वाक़िए को देखकर हज़रत मूसा ﷺ ने दोहरी नागवारी महसूस की, एक तरफ़ क़िब्ती का ज़ुल्म था और दूसरी तरफ़ इसराईली का शोर व

ग़ोग़ा और पिछले वाक़िए की याद थी, इसी झुंझलाहट में एक तरफ़ उन्होंने मिस्री को बाज़ रखने के लिए हाथ बढ़ाया और साथ ही इसराईली को भी झिड़कते हुए फ़रमाया *'इन्न-क ल-ग़वीयुन अमीन०'* (तू भी बेशक खुला हुआ गुमराह है) यानी ख़्वामख़ाही झगड़ा मोल लेकर दाद व फ़रियाद करता रहता है।

इसराईली ने हज़रत मूसा को हाथ बढ़ाते और फिर अपने मुताल्लिक़ नागवार और कड़वे अलफ़ाज़ कहते सुना तो यह समझा कि यह मुझको मारने के लिए हाथ बढ़ा रहे हैं और मुझको पकड़ में लेना चाहते हैं, इसलिए शरारत भरे अन्दाज़ में कहने लगा—

तर्जुमा—*'जिस तरह कल तूने एक जान (क़िब्ती) को हलाक किया था, उसी तरह आज मुझको क़त्ल कर देना चाहता है।'* (28 : 19)

मिस्री ने जब यह सुना तो उस वक़्त फ़िरऔनियों से जाकर सारी दास्तान कह सुनाई। उन्होंने फ़िरऔन को इत्तिला दी कि मिस्री का क़ातिल मूसा है। फ़िरऔन ने यह सुना तो जल्लाद को हुक्म दिया कि मूसा को गिरफ़्तार करके हाज़िर करे। मिस्रियों के इस मज्मे में एक मुअज़्ज़ज़ शहरी वह भी था जो दिल व जान से हज़रत मूसा से मुहब्बत रखता और इसराईली मज़हब को हक़ जानता था। यह फ़िरऔन ही के ख़ानदान का आदमी था और दरबार का हाज़िर-बाश। उसने फ़िरऔन का यह हुक्म सुना तो फ़िरऔनी जल्लादों से पहले ही दरबार से निकल कर दौड़ता हुआ हज़रत मूसा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उनसे सारा क़िस्सा बयान किया और उनको मश्विरा दिया कि इस वक़्त मस्लहत यही है कि ख़ुद को मिस्रियों से नजात दिलाइए और किसी ऐसे मक़ाम पर हिजरत कर जाइए जहां उनकी पकड़ न हो सके। हज़रत मूसा ने उसके मश्विरे को क़ुबूल फ़रमाया और अर्ज़े मदयन की तरफ़ ख़ामोशी के साथ रवाना हो गए।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की मिस्र से मदयन के लिए हिजरत

मूसा और मदयन का इलाक़ा

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के वाक़ियों में मदयन का ज़िक्र आ चुका है। मदयन की आबादी मिस्र से आठ मंज़िल पर वाक़े थी। हज़रत मूसा चूंकि फ़िरऔन के डर से भागे थे, इसलिए उनके साथ न कोई रफ़ीक़ और रहनुमा था और न ही रास्ते का ख़र्च और तेज़ भागने की वजह से नंगे पैर थे। इस परेशान हाली में मूसा मदयन के इलाक़े में दाख़िल हुए।

मदयन का पानी

जब मदयन की सरज़मीन में क़दम रखा तो देखा कि कुएं के सामने पानी के हौज़ (प्याऊ) पर भीड़ लगी हुई है और जानवरों को पानी पिलाया जा रहा है, मगर इस जमाअ़त से थोड़ी दूरी पर दो लड़कियां खड़ी हैं और अपने जानवरों को पानी पर जाने से रोक रही हैं।

बहरहाल हज़रत मूसा से यह हालत न देखी गई और आगे बढ़कर लड़कियों से मालूम किया : 'तुम क्यों नहीं पानी पिलातीं, पीछे किस लिए खड़ी हो?' दोनों ने जवाब दिया, हम मजबूर हैं, अगर जानवरों को लेकर आगे बढ़ते हैं तो ये ताक़तवर ज़बरदस्त हम को पीछे हटा देते हैं और हमारे वालिद बहुत बूढ़े हैं। अब उनमें यह ताक़त नहीं है कि उनके रोक को दूर कर सकें, पस जब ये सब पानी पिलाकर वापस हो जाएंगे, तब हम बचा हुआ पानी पिलाकर लौटेंगे, यही हमारा रोज़ का दस्तूर है।'

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जोश आ गया और आगे बढ़कर तमाम भीड़ को चीरते हुए कुएं पर जा पहुंचे और कुएं का बड़ा डोल उठाया और तंहा खींच कर लड़कियों के मवेशियों को पानी पिला दिया। हज़रत मूसा जब भीड़ को चीरते

हुए दर्राना घुसने लगे, तो अगरचे लोगों को नागवार गुज़रा, लेकिन उनकी जलाली सूरत और जिस्मानी ताक़त से मर्ऊब हो गये और डोल को तंहा खींचते हुए देखकर उसी ताक़त से हार मान गए जिसके बलबूते पर कमज़ोरों और नातवानों को पीछे हटा दिया करते और उनकी ज़रूरतों को पामाल करते रहते थे।

ग़रज़ जब इन लड़कियों के जानवरों ने पानी पी लिया तो वे घर को वापस चलीं, घर पहुंचीं तो आदत के ख़िलाफ़ जल्द वापसी पर उनके बाप को बड़ा ताज्जुब हुआ, पूछने पर लड़कियों ने गुज़रा हुआ माजरा कह सुनाया कि किस तरह उनकी एक मिस्री ने मदद की। बाप ने कहा, 'जाओ और उसको मेरे पास लेकर आओ।'

यहां तो बाप-बेटी के दर्मियान यह बात-चीत हो रही थी और उधर हज़रत मूसा पानी पिलाने के बाद क़रीब ही एक पेड़ के साए में बैठकर सुस्ताने लगे। मुसाफ़रत, अजनबीपन और भूख-प्यास, इस हालत में उन्होंने दुआ की–

तर्जुमा– *'परवरदिगार! इस वक़्त जो भी बेहतर सामान मेरे लिए तू अपनी क़ुदरत से नाज़िल करे, मैं उसका मुहताज हूं।'* (28 : 24)

लड़की वहां पहुंची तो देखा कि कुएं के क़रीब ही हज़रत मूसा ﷺ बैठे हुए हैं। शर्म व हया के साथ नज़रें नीचे किए लड़की ने कहा, 'आप हमारे घर चलिए, वालिद बुलाते हैं। वह आपके इस एहसान का बदला देंगे।'

हज़रत मूसा ﷺ यह सुनकर उठ खड़े हुए और लड़की की रहनुमाई में चल पड़े और लड़कियों के बाप की ख़िदमत में हाज़िर होकर मुलाक़ात का शरफ़ हासिल किया। उन बुज़ुर्ग ने पहले तो खाना खिलाया और उनके हालात सुने। हज़रत मूसा ने ठीक ठीक अपनी पैदाइश और फ़िरऔन के बनी इसराईल पर मज़ालिम से शुरू करके आख़िर तक सारी दास्तान कह सुनाई। बुज़ुर्ग ने हज़रत मूसा को तसल्ली दी और फ़रमाया कि अल्लाह का शुक्र अदा करो कि अब तुमको ज़ालिमों के पंजे से निजात मिल गई। अब कोई डरने की बात नहीं है। क़ुरआन करीम ने उन बुज़ुर्ग को शेख़े कबीर कहा है।

शेख़ की बेटी से निकाह का रिश्ता

ऊपर की बातों के दौरान उस लड़की ने, जो हज़रत मूसा ﷺ को बुलाने

गई थी, अपने बाप से कहा–

तर्जुमा–*'ऐ बाप! आप उस मेहमान को अपने मवेशियों के चराने और पानी मुहैया करने के लिए अज्र पर रख लीजिए। अज्र पर किसी बेहतर आदमी को रखा जाए, जो मज़बूत भी हो और अमानतदार भी।'*(अल-क़सस 28 : 26)

बुज़ुर्ग बाप ने बेटी की इन बातों को सुना तो बहुत मसरूर हुए और हज़रत मूसा से कहा कि अगर तुम आठ साल तक मेरे पास रहो और मेरी बकरियां चराओ तो मैं अपनी इस बेटी को तुमसे शादी करने को तैयार हूं और अगर तुम इस मुद्दत को दो साल बढ़ाकर दस साल कर दो तो और भी बेहतर है। यही इस लड़की का महर होगा। हज़रत मूसा ﷺ ने इस शर्त को मंज़ूर कर लिया और फ़रमाया कि यह मेरी ख़ुशी पर छोड़ दीजिए कि मैं इन दोनों मुद्दतों में से जिसको चाहूं पूरा कर दूं। आपकी तरफ़ से मुझ पर इस बारे में कोई जब्र न होगा। दोनों तरफ़ की इस आपसी रज़ामंदी के बाद बुज़ुर्ग मेज़बान ने मूसा से उस बेटी की शादी कर दी।

नोट–हज़रत मौलाना स्युहारवी रह० ने यह वाज़ेह किया है कि हज़रत मूसा ﷺ के ससुर जिनको क़ुरआन पाक ने 'शेख़ कबीर' कहा है, हज़रत शुऐब ﷺ न थे, क्योंकि उनका ज़माना कई सदियां पहले का है।

मुक़द्दस वादी

शादी के बाद हज़रत मूसा अपने ससुर के यहां मुक़र्रर की हुई मुद्दत पूरी करने, यानी बकरियां चराने के लिए ठहरे रहे। तफ़्सीर लिखने वाले मुस्तनद रिवायतों के पेशेनज़र फ़रमाते हैं कि मूसा ने पूरी मुद्दत यानी दस साल की मुद्दत पूरी की। क़ुरआन मजीद ने यह नहीं बताया कि मुद्दत पूरी होने के किस क़दर बाद तक मूसा अपने ससुर के पास ठहरे रहे। बहरहाल हज़रत मूसा ﷺ ने मदयन में एक मुद्दत तक क़ियाम किया और इस पूरी मुद्दत में अपने ससुर के मवेशियों की देख-भाल करते रहे।

इस बीच एक बार हज़रत मूसा ﷺ अपने घर वालों समेत बकरियां चराते-चराते मदयन से बहुत दूर निकल गए। जानवरों के चरने-चराने का काम करने वाले क़बीलों के लिए यह बात ताज्जुब की न थी, मगर रात ठंडी थी,

इसलिए सर्दी आग की खोज के लिए मजबूर कर रही थी, सामने सीना पर्वत का सिलसिला नज़र आ रहा था, यह सीना का पूर्वी कोना था और मदयन से एक दिन के फ़ासले पर लाल सागर की दो शाखाओं के दर्मियान मिस्र को जाते हुए वाक़े था। हज़रत मूसा ने चक़माक़ इस्तेमाल किया, मगर कड़ी ठंडक थी, उसने काम न किया। सामने की घाटी (ऐमन की घाटी) में निगाह दौड़ाई तो एक शोला चमकता हुआ नज़र पड़ा। बीवी से कहा कि तुम यहीं ठहरो, मैं आग ले आऊं, तापने का भी इन्तिज़ाम हो जाएगा और अगर वहां कोई रहबर मिल गया तो भटकी हुई राह का भी पता लग जाएगा।

तर्जुमा–*'फिर मूसा ने अपनी बीवी से कहा, तुम यहां ठहरो, मैंने आग देखी है, शायद उसमें से कोई चिंगारी तुम्हारे लिए ला सकूं या वहां अलाव पर किसी रहबर को पा सकूं।'* (ताहा 20 : 10)

रसूल बनाए गए

अल्लाह के फ़ज़्ल का हाल मूसा से पूछिए
आग लेने को जाएं पयम्बरी मिल जाए।

हजरत मूसा ने देखा कि अजब आग है, पेड़ पर रोशनी नज़र आती है, मगर न पेड़ को जलाती है, न गुल ही होती है। यह सोचते हुए आगे बढ़े, ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाते थे, आग और दूर होती जाती थी। यह देखकर मूसा को डर-सा पैदा हुआ और उन्होंने इरादा किया कि वापस हो जाएं। ज्यों ही वह पलटने लगे, आग क़रीब आ गई और क़रीब हुए तो सुना कि यह आवाज़ आ रही है–

तर्जुमा–*'ऐसा मूसा! मैं हूं अल्लाह, परवरदिगार दुनियाओं का।'*

(क़सस 28 : 30)

तर्जुमा–*'पस जब मूसा उस (आग) के क़रीब आए तो पुकारे गए, ऐ मूसा! मैं हूं तेरा परवरदिगार पस अपनी जूती उतार दे, तू तुवा की मुक़द्दस वादी में खड़ा है और देख! मैंने तुझको अपनी रिसालत के लिए चुन लिया है, पस जो कुछ वह्य की जाती है, उसे कान लगाकर सुन।* (ताहा 20 : 11-13)

हज़रत मूसा ﷺ ने जब अल्लाह की उस आवाज़ को सुना और उनको

यह मालूम हुआ कि आज उनके नसीब में वह दौलत आ गई है जो इंसानी शराफ़त की इम्तियाज़ी शान और अल्लाह की मुहब्बत का आख़िरी निशान है, तो फूले न समाए और बेपनाह लगाव होने की शक्ल में मूर्ति की तरह हैरान खड़े रह गए। आख़िर फिर उसी तरफ़ से शुरूआत हुई और पूछा गया—

तर्जुमा—*'मूसा! तेरे दाहिने हाथ मैं यह क्या है?'* (ताहा 20 : 17)

पस फिर क्या था हक़ीक़ी महबूब का सवाल सच्चे इश्क़ जैसा होता है—

'यह नसीब अकबर! लूटने की जाए है।'

इश्क़ की इंतिहा में यह भी ख़्याल न रहा कि सवाल के पैमाने पर ही जवाब को तौला जाए और जो कुछ पूछा गया है, सिर्फ़ उसी क़दर जवाब दिया जाए। बोले—

तर्जुमा—*'यह मेरी लाठी है। इस पर (बकरियां चराते वक़्त) सहारा लिया करता हूं और अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ लेता हूं।'* (ताहा 20 : 18)

अल्लाह! दिल के वलवले और रूह की बेताबियां तो चाहती हैं कि कहे जाऊं और उस बेपनाह लुत्फ़ की लज़्ज़त को हासिल किए जाऊं, लेकिन अदब और हक़ीक़त देखने वाली आंख का हुक्म है कि ख़ामोश हो जाऊं, इसलिए क़िस्सा कोताह करता हूं, वरना दास्ताने इश्क़ बहुत लम्बी है।

इश्क़ कहता है, जुनूं का जोश रहना चाहिए
ज़ब्त की ताकीद है, ख़ामोश रहना चाहिए।
क़िस्सा-ए-मूसा सबक़ है होश वालों के लिए
किस तरह उश्शाक़ को ख़ामोश रहना चाहिए।

अल्लाह की निशानियां

अब अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया—

तर्जुमा—*'मूसा! अपनी इस लाठी को ज़मीन पर डाल दो।'* (ताहा 19-20)

और मूसा ने इस इर्शाद की तामील की—

तर्जुमा—*'मूसा ने लाठी को ज़मीन पर डाल दिया, पस यकायक वह अजगर बनकर दौड़ने लगा।'* (ताहा 20 : 21)

हज़रत मूसा ने जब हैरत में डाल देने वाला यह वाक़िया देखा, तो घबरा

गए और बशर होने के तक़ाज़े का असर लेकर भागने लगे। पीठ फेरकर भागे ही थे कि आवाज़ आई–

तर्जुमा–*'(अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया) मूसा! इसको पकड़ लो और ख़ौफ़ न खाओ, हम इसको इसकी असल हालत पर लौटा देंगे।'*

(ताहा 20 : २१)

हज़रत मूसा की लकड़ी दो शाख़ा थी। अब वही दो शाख़ा अजगर का मुंह नज़र आ रहा था। सख़्त परेशान थे, मगर अलाह की क़ुर्बत ने तमानियत व सुकून की हालत पैदा कर दी और उन्होंने बे-ख़ौफ़ होकर उसके मुंह पर हाथ डाल दिया। इस अ़मल के साथ ही फ़ौरन वह दो शाखा फिर लाठी बन गया।

अब मूसा को दोबारा पुकारा गया और हुक्म हुआ कि अपने हाथ को गरेबान के अन्दर ले जाकर बग़ल से मस कीजिए और फिर देखिए, वह मरज़ से पाक बे-दाग़ चमकता हुआ निकलेगा–

तर्जुमा–*'और मिला दे अपने हाथ को अपनी बग़ल के साथ, निकल आएगा वह रोशन, बग़ैर किसी मरज़ के (यानी बर्स से पाक) यह दूसरी निशानी है।'*

(ताहा 20-22)

मूसा! यह हमारी ओर से तुम्हारी नुबूवत व रिसालत के दो बड़े निशान हैं। ये सच्चाई के तुम्हारे पैग़ाम और हक़ की दलीलों की जबरदस्त ताईद करेंगे, पस जिस तरह हमने तुमको नुबूवत व रिसालत से नवाज़ा, उसी तरह तुमको ये दो अ़ज़ीमुश्शान निशान (मोजज़े) भी अ़ता किए–

तर्जुमा–*ताकि हम तुझको अपनी बड़ी निशानियों का मुशाहदा करा दें।'*

(ताहा 20-23)

तर्जुमा–*'पस मेरे परवरदिगार की ओर से फ़िरऔ़न और उसकी जमाअ़त के मुक़ाबले में तेरे लिए ये दो 'बुरहान' हैं। बेशक वह फ़िरऔ़न और उसकी जमाअ़त नाफ़रमान क़ौम हैं।'*

(ताहा 28-32)

अब जाओ फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम को हिदायत की राह दिखाओ। उन्होंने बहुत सकरशी और नाफ़रमानी अख़्तियार कर रखी है और अपने ग़ुरूर व तकब्बुर और बेइंतिहा ज़ुल्म के साथ उन्होंने बनी इसराईल को ग़ुलाम बना रखा है। सो उनको ग़ुलामी से नजात दिलाओ।'

हज़रत मूसा ने जनाबे बारी में अ़र्ज़ किया, 'परवदिगार! मेरे हाथ से एक मिस्री क़त्ल हो गया था, इसलिए यह ख़ौफ़ है कि कहीं वे मुझको क़त्ल न कर दें। मुझे यह भी ख़्याल है कि वे मुझे बहुत ज़ोर से झुठलाएंगे और मुझे झूठा कहेंगे, यह ऊंचा मंसब जब तूने दिया है तो मेरे सीने को फ़राख़ी और नूर से भर दे और इस अहम ख़िदमत को मेरे लिए आसान बना दे और ज़ुबान में पड़ी हुई गिरह को खोल दे, ताकि लोगों को मेरी बात समझने में आसानी हो। चूंकि मेरी बातों में रवानी नहीं है और मेरे मुक़ाबले में मेरा भाई हारून मुझसे ज़्यादा निखरी ज़ुबान में बातें करता है, इसलिए उसको भी अपनी इस नेमत (नुबूवत) से नवाज़ कर मेरे कामों में शरीक बना दे।

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा को इत्मीनान दिलाया कि तुम हमारा पैग़ाम लेकर ज़रूर जाओ और उनको हक़ का रास्ता दिखाओ, वे तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। हमारी मदद तुम्हारे साथ है और जो निशान हमने तुमको दिए हैं, वे तुम्हारी कामियाबी की वजह होंगे और नतीजे के तौर पर तुम्हीं ग़ालिब रहोगे। हम तुम्हारी दरख़्वास्त मंज़ूर करते हैं और तुम्हारे भाई हारून को भी तुम्हारा शरीकेकार बनाते हैं। देखो, तुम दोनों फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम को जब हमारे सही रास्ते की ओर बुलाओ, तो उस पैग़ामे हक़ में नर्मी और मिठास के साथ पेश आना, क्या अजब है कि वे नसीहत क़ुबूल कर लें और ख़ुदा का ख़ौफ़ करते हुए ज़ुल्म से बाज़ आ जाएं।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की एक नबी की हैसियत से मिस्र को वापसी और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को रिसालत का मंसब अ़ता किया जाना

मिस्र में दाख़िला

जब हज़रत मूसा नुबूवत के मंसब से सरफ़राज़ होकर कलामे रब्बानी से फ़ैज़याब बनकर और दावत और हक़ की तब्लीग़ में कामियाबी व कामरानी की ख़ुशख़बरी पाकर मुक़द्दस वादी से उतरे, तो अपनी बीवी के पास पहुंचे,

जो वादी के सामने जंगल में उनके इंतिज़ार में रास्ता देख रही थीं। उनको साथ लिया और यहीं से हुक्मे इलाही की तामील के लिए मिस्र रवाना हो गए। मंज़िलें तै करते हुए जब मिस्र पहुंचे तो रात हो गई थी। ख़ामोशी के साथ मिस्र में दाख़िल होकर अपने मकान पहुंचे, अन्दर दाख़िल हुए और मां के सामने एक मुसाफ़िर की हैसियत में ज़ाहिर हुए। यह बनी इसराईल में मेहमानवाज़ घर था। हज़रत मूसा की ख़ूब ख़ातिर मदारत की गई। इसी बीच उनके बड़े भाई हज़रत हारून आ पहुंचे। यहां पहुंचने से पहले ही हारून को अल्लाह की तरफ़ से रिसालत का मंसब दिया जा चुका था, इसलिए उनको वह्य के ज़रिए हज़रत मूसा का सारा क़िस्सा बता दिया गया था। वह भाई से आकर लिपट गए और फिर उनके घर वालों को घर के अन्दर ले गए और मां को सारा हाल सुनाया। तब सब ख़ानदान के लोग आपस में गले मिले और बिछड़े हुए भाई एक दूसरे की बीती ज़िंदगी के हालात से वाक़िफ़ हुए और मां की दोनों आंखों ने ठंडक हासिल की।

फ़िरऔन के दरबार में हक़ की दावत

बहरहाल हज़रत मूसा ﷺ व हज़रत हारून ﷺ के दर्मियान जब मुलाक़ात और बात-चीत का सिलसिला ख़त्म हुआ, तो अब दोनों ने तै किया कि अल्लाह का हुक्म पहुंचाने के लिए फ़िरऔन के पास चलना और उसको अल्लाह का पैग़ाम सुनाना चाहिए। इस ग़रज़ से दोनों भाई यानी अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर व नबी फ़िरऔन के दरबार में पहुंचे और बग़ैर कोई डर और ख़तरा महसूस किए दाख़िल हो गए। जब फ़िरऔन के तख़्त के क़रीब पहुंचे तो हज़रत मूसा व हारून ने अपने आने की वजह बयान की और बात-चीत शुरू हुई।

तर्जुमा– *'और मूसा ने कहा, ऐ फ़िरऔन! मैं जहानों के परवरदिगार का भेजा हुआ एलची हूं। मेरे लिए किसी तरह ज़ेबा नहीं कि अल्लाह पर हक़ और सच के अलावा कुछ और कहूं, बेशक मैं तुम्हारे लिए, तुम्हारे परवरदिगार के पास से दलील और निशान लाया हूं, पस तू मेरे साथ बनी इसराईल को भेज दे।'*

(अल-आराफ़ 7 : 104-405)

फ़िरऔन ने जवाब में कहा–

तर्जुमा–*क्या हमने तुझको अपने यहां लड़का-सा नहीं पाला और तू हमारे यहां एक मुद्दत तक नहीं रहा और तूने उस ज़माने में जो कुछ काम किया वह तुझे ख़ुद भी मालूम है और तू नाशुक्रगुज़ार है।'* (26 : 19)

हज़रत मूसा ने कहा–

तर्जुमा–*'मैंने वह काम (मिस्री का क़त्ल) ज़रूर किया और मैं चूक जाने वालों में से हूं, फिर यहां से तुम्हारे ख़ौफ़ से भाग गया, फिर मेरे रब ने मुझको सही फ़ैसले की समझ दी और मुझको अपने पैग़म्बरों में से बना लिया (ये उसकी हिक्मत की करिश्मासाज़ियां हैं) और मेरी (परवरिश) का यह एहसान जिसको तू मुझ पर जता रहा है, क्या ऐसा एहसान है कि तू बनी इसराईल को ग़ुलाम बनाए रखे?'* (26 : 22)

फ़िरऔन बोला–

तर्जुमा–*'बोला फ़िरऔन क्या मानी हैं परवरदिगारे आलम के?'* (26-23)

हज़रत मूसा ﷺ ने फ़रमाया, 'रब्बुल आलमीन' वह हस्ती है, जिसके रब होने के असर से तेरा और तेरे बाप का वजूद भी ख़ाली नहीं है, यानी जिस वक़्त तू वजूद में न आया था, तो तुझको पैदा किया और तेरी तर्बियत की और इसी तरह वह तुझसे पहले तेरे बाप-दादा को आ़लमे वजूद में लाया और उनको अपने रब होने से नवाज़ा।

फ़िरऔन ने जब इस ख़ामोश कर देने वाली और ज़बरदस्त दलील को सुना और कोई जवाब न बन पड़ा तो दरबारियों से कहने लगा, मुझे ऐसा मालूम होता है कि यह जो ख़ुद को तुम्हारा पैग़म्बर और रसूल कहता है, मजनूं और पागल है।' हज़रत मूसा ﷺ ने जब यह देखा कि उससे अब कोई जवाब नहीं बन पड़ता तो सोचा यह बेहतर है कि ज़्यादा दिलनशीं अन्दाज़े बयान में अल्लाह के रब होने को वाज़ेह किया जाए, इसलिए फ़रमाया : 'यह जो पूरब और पच्छिम और उसके बीच सारी कायनात नज़र आती है उसका रब होना उसकी क़ुदरत में है, उसी को मैं 'रब्बुल आलमीन' कहता हूं। तुम अगर ज़रा भी अक़्ल से काम लो तो इस हक़ीक़त को आसानी से पा सकते हो।

एक बार फिर हज़रत मूसा ﷺ ने फ़िरऔन को यद दिलाया कि जो

रास्ता तूने अख़्तियार किया है, यह सही नहीं है, बल्कि रब्बुल-आलमीन ही वह ज़ात है, जो परस्तिश के लायक़ है और उसके मुक़ाबले में किसी इंसान का रब होने का दावा करना खुला हुआ शिर्क है। ऐ फ़िरऔन! तू इससे बाज़ आ, क्योंकि उस हस्ती ने जिसको मैं रब्बुल-आलमीन कह रहा हूं, हम पर यह वह्य उतारी है कि जो आदमी हक़ के इस क़ौल की ख़िलाफ़वर्ज़ी करेगा और झुठलाएगा और उससे मुंह मोड़ेगा, वह अल्लाह के अ़ज़ाब का हक़दार ठहरेगा।

तर्जुमा– *'जो कोई सरताबी करे तो हम पर वह्य उतर चुकी कि उसके लिए अ़ज़ाब का पयाम है।'* (ताहा 20-48)

फ़िरऔन ने फिर वही सवाल दोहराया–

तर्जुमा– *'अगर ऐसा ही है तो बतलाओ तुम्हारा परवरदिगार कौन है? मूसा!'* (ताहा 20 : 49)

मूसा ने कहा–

'हमारा परवरदिगार वह है जिसने हर चीज़ को उसका वजूद बख़्शा और उस पर (ज़िंदगी व अ़मल की) राह खोल दी।' (ताहा 20 : 50)

तर्जुमा– *'फिर उनका क्या हाल होता है जो पिछले ज़मानों में गुज़र चुके हैं?'* (ताहा 20-51)

मूसा ने कहा–

तर्जुमा– *'इस बात का इल्म मेरे परवरदिगार के पास नविश्ते में है, मेरा परवरदिगार ऐसा नहीं कि खोया जाए या भूल में पड़ जाए, वह परवरदिगार जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन बिछौने की तरह बिछा दी, चलने-फिरने के लिए उसमें राहें निकाल दीं, आसमान से पानी बरसाया, उसकी सिंचाई से हर तरह की वनस्पति के जोड़े पैदा कर दिए, ख़ुद भी खाओ और मवेशी भी चराओ, इस बात में अक़्ल वालों के लिए कैसी खुली निशानियां हैं? उसने इस ज़मीन से तुम्हें पैदा किया, उसी में लौटना है और फिर उसी से दूसरी बार उठाए जाओगे।'* (ताहा 20 : 52-55)

हज़रत हारून का किरदार

तफ़्सीर के उलेमा लिखते हैं कि फ़िरऔन और मूसा के इन मुकालमों में

हज़रत हारून दोनों के दर्मियान तर्जुमान होते और हज़रत मूसा ﷺ की दलीलों और सबूतों को बड़े ही असरदार अंदाज़ के साथ अदा फ़रमाते थे।

फ़िरऔ़न का रद्देअ़मल (प्रतिक्रिया)

अलग-अलग मज्लिसों में बात-चीत का यह सिलसिला जारी रहा और फ़िरऔ़न ने बहस के सिलसिले को ख़त्म करने के लिए दूसरे तरीक़े अख़्तियार किए। आख़िरकार उसने अपनी क़ौम को मुख़ातब करते हुए कहा–

तर्जुमा–*'और फ़िरऔ़न ने कहा, ऐ जमाअ़त! मैं तुम्हारे लिए अपने सिवा कोई ख़ुदा नहीं जानता।'* (क़सस 28 : 38)

और फिर (अपने वज़ीर मुशीर को) हुक्म दिया–

तर्जुमा–*'ऐ हामान! मेरे लिए एक बुलन्द इमारत तैयार कर, ताकि मैं आसमानों की बुलन्दियों और उनके ज़रियों तक दस्तरस हासिल कर सकूं और इस तरह मूसा के ख़ुदा का हाल मालूम कर सकूं और मैं तो उसको झूठा समझता हूं।'* (40 : 36-37)

हामान

हामान के बारे में क़ुरआन ने साफ़ नहीं किया कि यह शख़्सियत का नाम है या ओहदे और मंसब का और न उसने इस पर रोशनी डाली कि हामान ने इमारत तैयार कराई या नहीं। तौरात भी इस बारे में ख़ामोश है।

फ़िरऔ़न के दरबार में मुज़ाहरा

ग़रज़ फ़िरऔ़न का ख़दशा बढ़ता ही रहा और नौबत यहां तक पहुंची कि–

तर्जुमा–*'फ़िरऔ़न ने कहा, अगर तूने मेरे सिवा किसी को माबूद बनाया तो मैं तुझे ज़रूर क़त्ल कर दूंगा।'* (26-29)

मूसा ने कहा,

तर्जुमा–*अगरचे मैं तेरे पास ज़ाहिर निशान लाया हूं, तब भी?* (शुअरा 30)

फ़िरऔन ने कहा,

तर्जुमा–*'अगर तू सच्चा है, तो वह निशान दिखा।'*

हज़रत मूसा आगे बढ़े और भरे दरबार में फ़िरऔन के सामने अपनी लाठी को ज़मीन पर डाला। उसी वक़्त उसने अजगर की शक्ल अख़्तियार कर ली और यह हक़ीक़त थी, नज़र का धोखा न था और फिर हज़रत मूसा ने अपने हाथ को गरेबान के अन्दर ले जाकर बाहर निकाला तो वह एक रोशन सितारे की तरह चमकता हुआ नज़र आ रहा था। यह दूसरी निशानी और दूसरा मोजज़ा था।

फ़िरऔन के दरबारियों ने जब इस तरह एक इसराईली के हाथों अपनी क़ौम और अपने बादशाह की हार को देखा, तो तिलमिला उठे और कहने लगे, बेशक यह बहुत बड़ा माहिर जादूगर है और उसने यह सब ढोंग इसलिए रचाया है कि तुम पर ग़ालिब आकर तुमको तुम्हारी सरज़मीन (मिस्र) से बाहर निकाल दे, इसलिए अब हमको सोचना है कि उसके बारे में क्या होना चाहिए। आख़िर फ़िरऔन और फ़िरऔनियों के आपसी मश्विरे से यह तै पाया कि फ़िलहाल तो इसको और हारून को मोहलत दो और इस मुद्दत में पूरे राज्य से माहिर जादूगरों को राजधानी में जमा करो और फिर मूसा का मुक़ाबला कराओ, यह हार खा जाएगा और इसके तमाम इरादे ख़ाक में मिल जाएंगे, तब फ़िरऔन ने हज़रत मूसा से कहा, मूसा! हम समझ गए कि तू इस हीले से हमको मिस्र की धरती से बेदख़ल करना चाहता है, इसलिए तेरा इलाज अव इसके सिवा कुछ नहीं कि बड़े-बड़े माहिर जादूगरों को जमा करके तुझको हार दिला दी जाए। अब तेरे और हमारे दर्मियान मुक़ाबले के दिन का समझौता होना चाहिए और फिर न हम उससे टलेंगे और न तुम वादाख़िलाफ़ी करना।' हज़रत मूसा ﷺ ने फ़रमाया कि इस काम के लिए सबसे बेहतर वक़्त 'यौमुज़्ज़ीना' (जश्न का दिन) है, उस दिन सूरज बुलन्द होने पर हम सबको मौजूद होना चाहिए।

नोट : मिस्रियों की ईद का दिन जो 'वफ़ाउन्नैल' के नाम से मशहूर है, क्योंकि उनके यहां तमाम ईदों में सबसे बड़ी ईद का दिन यही था।

ग़रज़ हज़रत मूसा और फ़िरऔन के दर्मियान 'यौमुज़्ज़ीना' तै पाया और

फ़िरऔन ने उसी वक़्त अपने ज़िम्मेदारों और दरबारियों के नाम हुक्म जारी कर दिए कि पूरे राज्य में जो भी मशहूर और माहिर जादूगर हों, उनको जल्द-से-जल्द राजधानी रवाना कर दो।

जादूगरों की हार और फ़िरऔन का रद्देअ़मल (प्रतिक्रिया)

बहरहाल जश्न का दिन आ पहुंचा, जश्न के मैदान में तमाम शाहाना कर्र व फ़र्र के साथ फ़िरऔन तख़्तनशीं है और दरबारी भी दर्जे के एतबार से क़रीने से बैठे हैं और लाखों इंसान हक़ व बातिल के मारके का नज़ारा करने को जमा हैं। एक तरफ़ मिस्र के मशहूर जादूगरों का गिरोह अपने साज़ व सामान से लैस खड़ा है और दूसरी तरफ़ अल्लाह के रसूल, हक़ के पैग़म्बर, सच्चाई और रास्ती के पैकर हज़रत मूसा व हारून खड़े हैं। ऐसी हालत में—

तर्जुमा—*'जादूगर फ़िरऔन के पास आए और कहने लगे, क्या अगर हम मूसा पर ग़ालिब आ जाएं, तो हमारे लिए इनाम व इकराम है? फ़िरऔन ने कहा, हां, ज़रूर और यही नहीं बल्कि तुम शाही दरबार के मुक़र्रब बनोगे।'*

(7-113-114)

जादूगरों ने जब इस तरफ़ से इत्मीनान कर लिया तो हज़रत मूसा की तरफ़ मुतवज्जह हुए और हज़रत मूसा ने कहा—

तर्जुमा—*'अफ़सोस तुम पर देखो, अल्लाह पर झूठी तोहमत न लगाओ, ऐसा न हो कि वह कोई अज़ाब भेजकर तुम्हारी जड़ उखाड़ दे। जिस किसी ने झूठ बात बनाई, वह नामुराद हुआ।'* (20 : 61)

जादूगरों ने कहा—

तर्जुमा—*ऐ मूसा! या तो तुम अपनी लाठी फेंको या फिर हम फेंकें। मूसा ने कहा, तुम ही पहले फेंको। फिर जब जादूगरों ने जादू की बनाई हुई लाठियां और रस्सियां फेंकीं, तो लोगों की निगाहें जादू से मार दीं और अपने करतबों से उनमें दहशत फैला दी और बहुत बड़ा जादू बना लाए।*

(आराफ़ 7 : 115-116)

तर्जुमा—*'और उस वक़्त हमने मूसा पर वह्य की कि तुम भी अपनी लाठी डाल दो। ज्यों ही उसने लाठी फेंकी तो अचानक क्या हुआ कि जो कुछ झूठी*

नुमाइश जादूगरों की थी, सब उसने निगल कर नाबूद कर दी, पस हक़ क़ायम हो गया और वे जो अ़मल कर रहे थे, बातिल होकर रह गया। पस इस मौक़े पर वे मग़्लूब हो गए।' (आराफ़ 7 : 117-118)

जादूगरों ने जब मूसा के असा का यह करिश्मा देखा तो–

तर्जुमा–*'सब जादूगर सज्दे में गिर पड़े, कहने लगे, हम तो जहानों के परवरदिगार पर ईमान ले आए, जो मूसा व हारून का परवरदिगार है।'* (आराफ़ 7 : 120-122)

इस हालत को देखकर फ़िरऔन ने कहा–

तर्जुमा–*तुम बग़ैर मेरे हुक्म के मूसा पर ईमान लाए, ज़रूर यह तुम्हारा सरदार है, जिसने तुम्हें जादू सिखाया है, अच्छा देखो, मैं क्या करता हूं। मैं तुम्हारे हाथ-पांव उलटे-सीधे कटवा दूंगा और खजूर के तनों पर सूली दूंगा।* (ताहा 71)

मगर सच्चा ईमान जब किसी को नसीब हो जाता है 'भले ही वह एक लम्हे ही का क्यों न हो' वह ऐसी बेपनाह रूहानी क़ूवत पैदा कर देता है कि कायनात की कोई ज़बरदस्त से ज़बरदस्त ताक़त भी उसको मऊब नहीं कर सकती।

इसलिए जादूगरों को फ़िरऔन की जाबिराना धमकियां मऊब न कर सकीं और उन्होंने कहा–

तर्जुमा–*'हम यह कभी नहीं कर सकते कि सच्चाई की जो रोशन दलीलें हमारे सामने आ गई हैं और जिस अल्लाह ने हमें पैदा किया है, उससे मुंह मोड़ कर तेरा हुक्म मान लें, तू जो फ़ैसला करना चाहता है, कर गुज़र, तू ज़्यादा से ज़्यादा जो कुछ कर सकता है वह यही है कि दुनिया की इस ज़िंदगी का फ़ैसला कर दे। हम तो अपने परवरदिगार पर ईमान ला चुके कि वह हमारी ख़ताएं बख़्श दे, ख़ास तौर से जादूगरी की ख़ता कि जिस पर तूने हमें मजबूर किया था। हमारे लिए अल्लाह ही बेहतर है और वही बाक़ी रहने वाला है।'* (ताहा 72-73)

ग़रज़ हक़ व बातिल की इस कशमकश में फ़िरऔन और उसके दरबारियों को ज़बरदस्त हार का मुंह देखना पड़ा और वे खुलेआम ज़लील व

रुसवा हुए और हज़रत मूसा ﷺ पर अल्लाह का वायदा पूरा हुआ और कामियाबी का सेहरा उन्हीं के सर रहा और जादूगरों के अलावा एक छोटी सी जमाअ़त इसराईली नवजवानों में से भी मुसलमान हो गई।

तर्जुमा–*'फिर मूसा पर कोई ईमान नहीं लाया मगर सिर्फ़ एक गिरोह जो उसकी क़ौम के नवजवानों का गिरोह था, वह भी फ़िरऔ़न और उसके सरदारों से डरता हुआ कि कहीं किसी मुसीबत में न डाल दे।'* (यूनुस 10 : 83)

हज़रत मूसा की इस महदूद कामियाबी से मुतास्सिर होकर–

तर्जुमा–*फ़िरऔ़न की क़ौम में से एक जमाअ़त ने फ़िरऔ़न से कहा, क्या तू मूसा और उसकी क़ौम को यों ही छोड़ देगा कि वह ज़मीन (मिस्र) में फ़साद करते फिरें और तुझको और तेरे देवताओं को ठुकरा दें। फ़िरऔ़न ने कहा हम उनके लड़कों को क़त्ल कर देंगे और उनकी लड़कियों को (बांदिया बनाने के लिए) जिंदा रखेंगे।* (आराफ़ : 127)

यह फ़िरऔ़न का दूसरा एलान था जो बनी इसराईल के बच्चों के क़त्ल से मुताल्लिक़ किया गया–

बनी इसराईल की बेचैनी

हज़रत मूसा ﷺ को जब फ़िरऔ़न और उसके दरबारियों की बात-चीत का हाल मालूम हुआ, तो उन्होंने बनी इसराईल को जमा करके सब्र और अल्लाह पर भरोसा करने की तलक़ीन की, बनी इसराईल ने सुनकर जवाब दिया कि मूसा, हम पहले ही से मुसीबतों में गिरफ़्तार थे, अब तेरे आने पर कुछ उम्मीद बंधी थी, मगर तेरे आने के बाद भी वही मुसीबत बाक़ी रही, यह तो सख़्त आफ़त का सामना है। हज़रत मूसा ﷺ ने तसल्ली दी कि अल्लाह का वायदा सच्चा है, घबराओ नहीं, तुम्हीं कामयाब रहोगे और तुम्हारे दुश्मन को हलाकत का मुंह देखना पड़ेगा। ज़मीन का मालिक फ़िरऔ़न या उसकी क़ौम नहीं है, बल्कि रब्बुल आलमीन है जो मुख़्तारे मुतलक़ है, पस वह अपने बन्दों में से जिसको चाहे उसका मालिक बना दे और अंजामेकार यह इनाम मुत्तक़ियों ही का हिस्सा है।

इसके बाद हज़रत मूसा ﷺ ने मुसमलानों से कहा कि फ़िरऔ़न के

ज़ुल्मों का सिलसिला अभी ख़त्म नहीं हुआ और वह बनी इसराईल और क़िब्ती मोमिनों को आज़ादी के साथ मिस्र से चले जाने पर राज़ी नहीं है और साथ ही अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ़ की, ऐ अल्लाह! फ़िरऔ़न और फ़िरऔनियों को जो तूने दौलत व सरवत अ़ता फ़रमाई है; उस पर शुक्र अदा करने के बजाए वे तेरे बन्दों पर जब्र और ज़ुल्म व सितम करने पर आमादा हो गए हैं और हक़ के तेरे रास्ते को न ये ख़ुद क़ुबूल करते हैं और न दूसरों को क़ुबूल करने देते हैं, बल्कि जब्र व तशद्दुद से काम लेकर उनके आड़े आते हैं, इसलिए अब तो उनके ज़ुल्मों का मज़ा उनको चखा और उनकी दौलत व सरवत को तबाह व हलाक कर दे, जिस पर उन्हें घमंड है और जिस तरह ये ईमान की सच्चाई को ठुकराते हैं, तू भी उनको ईमान की दौलत के बजाए अब ऐसा दर्दनाक अ़ज़ाब दे कि उनकी दास्तान दूसरों के लिए इबरत बन जाए।

फ़िरऔ़न की जवाबी कार्रवाई

फ़िरऔ़न ने अपने सरदारों से अगरचे इत्मीनान का इज़्हार कर दिया था, लेकिन हज़रत मूसा के रूहानी ग़लबे का ख़्याल उसको अन्दर ही अन्दर घुलाए डालता था और बनी इसराईल के लड़कों के क़त्ल के हुक्म से भी उनके क़ल्ब को सुकून नसीब न था, आख़िरकार उसने कहा—

तर्जुमा—*'मुझे मूसा को क़त्ल ही कर लेने दो और उसको चाहिए कि अपने रब को पुकारे।'* (मोमिन 3)

हज़रत मूसा को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने कहा—

तर्जुमा—*'मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह चाहता हूं, हर उस घमंडी से जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं लाता।'* (मोमिन 3)

मिस्री मर्दे मोमिन

फ़िरऔ़न और उसके सरदार जब उस बात-चीत में लगे हुए थे, तो उस मज्लिस में एक मिस्री 'मर्दे मोमिन' भी था, जिसने अभी तक अपने इस्लाम को छिपा रखा था। उसने जब यह सुना तो अपनी क़ौम के उन लोगों के मुक़ाबले में हज़रत मूसा ﷺ की ओर से बचाव करने की कोशिश शुरू की,

और उनको समझाया कि तुम एक ऐसे आदमी को क़त्ल करने चले हो जो सच्ची बात कहता है कि मेरा परवरदिगार अल्लाह है और जो तुम्हारे सामने अपनी सच्चाई पर बेहतरीन दलील और निशानियां लाया है। मान लीजिए अगर वह झूठा है तो उसके झूठ से तुमको कुछ नुक़्सान नहीं पहुंच रहा है और वह सच्चा है तो फिर उसकी उन धमकियों से डरो जो वह तुमको अल्लाह की ओर से सुनाता है।

फ़िरऔन ने मर्दे मोमिन की बात काटते हुए कहा कि मैं तुमको वही मश्विरा दे रहा हूं, जिसको अपने ख़्याल में दुरुस्त समझता हूं और तुम्हारी भलाई की बात कह रहा हूं।

मर्दे मोमिन ने आख़िरी नसीहत के तौर पर कहा : 'ऐ मेरी क़ौम! मुझे यह डर है कि हमारा हाल कहीं उन पिछली क़ौमों का-सा न हो जाए जो नूह-आ़द और समूद की कौमों के नाम से मशहूर हैं या उनके बाद क़ौमें आईं। अल्लाह अपने बन्दों पर कभी जुल्म नहीं करता, बल्कि उन क़ौमों की हलाकत ख़ुद अपने इसी क़िस्म के आ़माल की बदौलत पेश आई थी जो आज तुम मूसा के ख़िलाफ़ सोच रहे हो तो तुम आज दुनिया में 'बड़े' होने की सोच में पड़े हो और मैं तुम्हारे लिए उस दिन से डर रहा हूं जब क़ियामत का दिन होगा और सब एक दूसरे को पुकारेंगे, मगर उस वक़्त तुम्हें कोई अल्लाह के अ़ज़ाब से बचाने वाला न होगा।

ऐ क़ौम के सरदारो! तुम्हारा हाल तो यह है कि इस सरज़मीन में जब हज़रत यूसुफ़ ﷺ ने अल्लाह का पैग़ाम सुनाया था तंब भी तुम यानी तुम्हारे बाप-दादा इसी शक और तरद्दुद में पड़े रहे और इन पर ईमान न लाए और जब इनकी वफ़ात हो गई, तो कहने लगे कि अब अल्लाह अपना कोई रसूल न भेजेगा। अब यही मामला तुम मूसा के साथ कर रहे हो। ख़ुदा के लिए समझो और सीधी राह अपनाओ।

जब फ़िरऔन और उसके सरदारों ने उस मर्दे मोमिन की ये बातें सुनीं तो उनका रुख़ मूसा से हटकर उसकी तरफ़ हो गया और फ़िरऔनियों ने चाहा कि पहले उसकी ही ख़बर लें और उसको क़त्ल कर दें, मगर अल्लाह तआ़ला ने इस नापाक इरादे में उनको कामयाब न होने दिया।

तर्जुमा–*'सो अल्लाह तआ़ला ने उनको उनकी़ तदबीरों के शर से बचा लिया।'* (अल-मोमिन 45)

फ़िरऔ़न का एलान

ग़रज़ जब फ़िरऔ़न और उसके सरदारों को मूसा को हराने में नाकामी हुई तो फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम में एलान किया।

तर्जुमा–*ऐ क़ौम! क्या मैं मिस्र के ताज व तख़्त का मालिक नहीं हूं और मेरी हुकूमत के क़दमों के नीचे ये नहरें बह रही हैं? क्या तुम (मेरे इस जाह व जलाल को) नहीं देखते? (अब बताओ) क्या मैं बुलन्द व बाला हूं या वह जिसको न इ़ज़्ज़त नसीब और जो बात भी साफ़ न कर सकता हो? (अगर यह अपने ख़ुदा के यहां इ़ज़्ज़त वाला है) तो क्यों उस पर (आसमान से) सोने के कंगन नहीं गिरते या फ़रिश्ते ही उसके सामने परे बांध कर खड़े नहीं होते?'* (अज़-जुख़रुफ़ 51-53)

मिस्रियों पर ख़ुदा का क़हर

ग़रज़ हज़रत मूसा ﷺ की रुश्द व हिदायत का फ़िरऔ़न और उसके सरदारों पर मुतलक़ असर नहीं हुआ और कुछ को छोड़कर आम मिस्रियों ने भी उन्हीं की पैरवी की और सिर्फ़ यही नहीं, बल्कि फ़िरऔ़न के हुक्म से बनी इसराईल की नरीना औलाद यानी लड़के क़त्ल किए जाने लगे। मूसा की तौहीन व तज़्लील होने लगी और फ़िरऔ़न ने अपने रब और माबूद होने की ज़ोर-शोर से तब्लीग़ शुरू कर दी। तब हज़रत मूसा पर वह्य आई कि फ़िरऔ़न को मुत्तला कर दो कि अगर तुम्हारा यही तौर-तरीक़ा रहा, तो बहुत जल्द तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब नाज़िल होने वाला है।

चुनांचे उन्होंने जब इस पर भी ध्यान न दिया तो अब एक के बाद एक अल्लाह के अ़ज़ाब आने लगे। यह देखकर फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम ने यह तरीक़ा अख़्तियार किया कि जब अल्लाह का अ़ज़ाब किसी एक शक्ल में ज़ाहिर होता, तो फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़न की क़ौम हज़रत मूसा से वायदा करने

लगती, अच्छा हम ईमान ले आएंगे, तू अपने ख़ुदा से यह दुआ कर कि यह अ़ज़ाब जाता रहे और जब वह अ़ज़ाब जाता रहता, तो फिर सरकशी और नाफ़रमानी पर उतर आते, फिर अ़ज़ाब जब दूसरी शक्ल में आता तो कहते कि अच्छा हम बनी इसराईल को आज़ाद करके तेरे साथ रवाना कर देंगे। दुआ कर कि यह अ़ज़ाब ख़त्म हो जाए और जब हज़रत मूसा की दुआ से उनको फिर मोहलत मिल जाती और अ़ज़ाब ख़त्म हो जाता, तो फिर उसी तरह मुख़ालफ़त पर उतर आते और इस तरह अल्लाह की ओर से अलग-अलग क़िस्म के निशान ज़ाहिर हुए और फ़िरऔन और फ़िरऔन की क़ौम को बार-बार मोहलत दी जाती रही। क़ुरआन उन सात अ़ज़ाब की निशानियों का इस तरह ज़िक्र करता है—

तर्जुमा—*'और हमने पकड़ लिया फ़िरऔन वालों को अकालों में और मेवों के नुक़्सान में ताकि वे नसीहत मानें। फिर हमने भेजा उन पर तूफ़ान और टिडडी चीचड़ी और मेंढक और ख़ून, बहुत-सी निशानियां अलग-अलग दीं।*

(अल-आराफ़ : 130-133)

इन आयतों में बयान की गई निशानियों में जूं और मेंढक के बारे में तफ़्सीर लिखने वालों ने लिखा है कि इन चीज़ों की यह हालत थी कि बनी इसराईल के खाने-पीने, पहनने और बरतने की कोई चीज़ ऐसी न थी, जिनमें ये वजूद नज़र न आते हों और ख़ून के बारे में लिखा है कि नील नदी का पानी लहू के रंग का हो गया था और उसके मज़े ने उसका पीना मुश्किल कर दिया था और पानी में मछलियां तक मर गई थीं।

नोट : -'क़ुम्मल' डिक्शनरी के एतबार से बहुत मानी रखने वाला लफ़्ज़ है। इन तमाम मानी की जांच-पड़ताल इस तरह हो सकती है कि अल्लाह ने फ़िरऔनियों पर यह अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाया कि इंसानों पर जुएं मुसल्लत कर दीं, खाने-पीने की चीज़ों में छोटी मक्खियों को फैला दिया। इन जानवरों में हलाक करने वाला कीड़ा पैदा कर दिया, अनाज और ग़ल्ले में सुरसुरी पैदा कर दी। इन सब हलाक करने वाले कीड़ों को क़ुरआन ने एक लफ़्ज़ क़ुम्मल से ताबीर किया है।

बनी इसराईल का मिस्र से लौटना

बनी इसराईल की रवानगी

जब मामला इस हद तक पहुंच गया कि अ़ज़ाब की बातें भी फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़न की क़ौम पर असर न डाल सकीं, तो अल्लाह ने हज़रत मूसा को हुक्म दिया कि अब वक़्त आ गया है कि तुम बनी इसराईल को मिस्र से निकाल कर बाप-दादा की सरज़मीन की तरफ़ ले जाओ। इसलिए हज़रत मूसा और हारून बनी इसराईल को लेकर रातों रात लाल सागर के रास्ते पर हो लिए और रवाना होने से पहले मिस्री औरतों के ज़ेवरात और क़ीमती चीज़ें जो एक त्यौहार में उधार लिए थे, वह भी वापस न कर सके कि कहीं मिस्रियों पर असल हाल न खुल जाए।

फ़िरऔ़न का डूबना

हज़रत मूसा ने उनको तसल्ली दी और फ़रमाया : डरो नहीं, अल्लाह का वायदा सच्चा है, वह तुमको नजात देगा और तुम ही कामयाब होगे और फिर अल्लाह की बारगाह में हाथ फैलाकर दुआ़ करने लगे। अल्लाह की वह्य ने मूसा को हुक्म दिया कि अपनी लाठी को पानी पर मारो ताकि पानी फटकर बीच में रास्ता निकल आए। चुनांचे मूसा ने ऐसा ही किया, जब उन्होंने समुद्र पर अपना डंडा मारा तो पानी फटकर दोनों तरफ़ दो पहाड़ों की तरह खड़ा हो गया और बीच में रास्ता निकल आया और हज़रत मूसा के हुक्म से तमाम बनी इसराईल उसमें उतर गए और सूखी ज़मीन की तरह उससे पार हो गए। फ़िरऔ़न ने यह देखा तो अपनी क़ौम से मुख़ातब होकर कहने लगा, यह मेरी करिश्मासाज़ी है कि बनी इसराईल को तुम जा पकड़ो, इसलिए बढ़े चलो, चुनांचे फ़िरऔ़न और उसकी पूरी फ़ौज बनी इसराईल के पीछे उसी रास्ते पर चल पड़ी लेकिन अल्लाह तआ़ला की करिश्मासाज़ी देखिए कि जब बनी इसराईल का हर आदमी दूसरे किनारे पर सलामती के साथ पहुंच गया, तो पानी अल्लाह के हुक्म से फिर अपनी असली हालत पर आ गया और फ़िरऔ़न

और उसकी तमाम फ़ौज जो अभी बीच ही में थी, डूब गयी।

जब फ़िरऔन डूबने लगा और अ़ज़ाब के फ़रिश्ते सामने नज़र आने लगे, तो पुकार कर कहने लगा, 'मैं उसी एक ख़ुदा पर जिसका कोई शरीक नहीं, ईमान लाता हूं, जिस पर बनी इसराईल ईमान लाए हैं और मैं फ़रमांबरदारों में से हूं।' मगर यह ईमान चूंकि हक़ीक़ी ईमान न था, बल्कि पिछले फ़रे-बकारियों की तरह नजात हासिल करने के लिए यह भी एक डांवाडोल बात थी, इसलिए अल्लाह की तरफ़ से यह जवाब मिला—

तर्जुमा—*'अब यह कह रहा है, हालांकि इससे पहले जब इक़रार का वक़्त था, उसमें इंकार और ख़िलाफ़ ही करता रहा और हक़ीक़त में तू फ़साद पैदा करने वालों में से है।'* (यूनुस 91)

यानी अल्लाह को ख़ूब मालूम है कि तू 'मुस्लिमीन' में से नहीं, बल्कि फ़साद पैदा करने वालों में से है।

हक़ीक़त में फ़िरऔन की यह पुकार ऐसी पुकार थी जो ईमान लाने और यक़ीन हासिल करने के लिए नहीं, बल्कि अल्लाह के अ़ज़ाब को देख लेने के बाद इज़्तिरारी और बे-अख़्तियारी की हालत में निकलती है और अ़ज़ाब के देखने के वक़्त 'ईमान व यक़ीन' की यह सदा हज़रत मूसा ﷺ की इस दुआ़ का नतीजा थी, जिसका ज़िक्र पिछले पन्नों में पढ़ चुके हैं।

तर्जुमा—*'पस ये उस वक़्त तक ईमान न लाएं जब तक अपनी हलाकत और अ़ज़ाब को आंखों से देख न लें। अल्लाह ने कहा, बेशक तुम दोनों की दुआ़ क़ुबूल कर ली गई।'* (यूनुस 88-89)

इस मौक़े पर फ़िरऔन की पुकार पर अल्लाह की ओर से यह भी जवाब दिया गया—

तर्जुमा—*आज के दिन हम तेरे जिस्म को उन लोगों के लिए जो तेरे पीछे आने वाले हैं, नजात देंगे कि वह (इबरत का) निशान है।* (यूनुस 92)

फ़िरऔन की लाश

मिस्रवाद (Egyptiology) के मिस्री चिड़ियाघर में एक लाश आज तक महफ़ूज़ है। ऐसा मालूम होता है कि समुद्र में डूबे रहने की वजह से उसकी

नाक को मछली ने खा लिया है। कहा जाता है कि यह लाश मूसा के दौर के फ़िरऔन (Mernepatah) की है। (अल्लाह बेहतर जाने) बहरहाल यह हर आम व ख़ास की तामाशागाह है।

समुद्र का फटना

क़ुरआन मजीद नें बनी इसराईल के रवाना होने, फ़िरऔन के डूबने और बनी इसराईल की नजात के वाक़िए को बहुत थोड़े में बयान किया है और उसने उसके सिर्फ़ ज़रूरी हिस्सों का ही ज़िक्र किया है। अलबत्ता इससे मुताल्लिक़, इबरत, नसीहत, बसीरत, मौअ्ज़त के मामले थोड़ा तफ़्सील के साथ ज़िक्र किए गए हैं।

चुनांचे अल्लाह फ़रमाता है–

तर्जुमा–*'और (फिर देखो) हमने मूसा पर वह्य भेजी थी कि (अब) मेरे बन्दों को रातों-रात (मिस्र से) निकाल ले जा, फिर समुद्र में उनके गुज़रने के लिए ख़ुश्की का रास्ता निकाल ले, तुझे न तो पीछा करने वालों का डर होगा और न किसी तरह का ख़तरा, फिर (जब मूसा अपनी क़ौम को लेकर निकल गया तो) फ़िरऔन ने अपने लश्कर के साथ उसका पीछा किया, पस पानी का रेला (जैसा कुछ उन पर छाने वाला था) छा गया (यानी जो कुछ उन पर गुज़रनी थी, गुज़र गई) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम पर (नजात का) रास्ता गुम कर दिया, तो उन्हें सीधा रास्ता न दिखाया।'* (ताहा 77-79)

तर्जुमा–*'और इस तरह (ऐ पैग़म्बर!) तेरे परवरदिगार का पसन्दीदा फ़रमान बनी इसराईल के हक़ में पूरा हुआ कि (हिम्मत व सबात के साथ जमे रहे थे) और फ़िरऔन और उसका गिरोह (अपनी ताक़त व शौकत के लिए) जो कुछ बनाता रहा था और जो कुछ (इमारतों की) बुलन्दियां उठाई थीं, वे सब दरहम बरहम कर दीं।* (अल-आराफ़ 137)

तर्जुमा–*'और बुराई करने लगे वह और उसकी फ़ौज मुल्क में नाहक़ और समझे कि वे हमारी ओर फिरकर न आएंगे, फिर पकड़ा हमने और उसके लश्करों को, फिर फेंक दिया हमने उनको दरिया में, सो देख ले कैसा अंजाम हुआ गुनाहगारों का।'* (अल-क़सस 40)

तर्जुमा– *'बहुत से छोड़ गए बाग़ और चश्मे और खेतियां और घर उम्दा और आराम का सामान जिनमें बातें बनाया करते थे, यों ही हुआ और वह सब हाथ लगा दिया हमने एक दूसरी क़ौम के, फिर न रोया उन पर आसमान और ज़मीन और न मिली उनको ढील।'* (अद-दुख़ान 27-28)

बड़ा मोजज़ा

क़ुरआन साफ़ कहता है कि लाल सागर में फ़िरऔन के डूबने और मूसा के नजात मिलने का यह वाक़िया मूसा की ताईद में एक बड़ा ही शानदार मोजज़ा था, जिसने माद्दी क़हरमानियत और सामाने इस्तब्दादियत को एक लम्हे में हरा कर मज़्लूम क़ौम को ज़ालिम क़ौम के पंजे से नजात दिलाई।

'वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०'

तर्जुमा– *'और हमने मूसा और उसके तमाम साथियों को नजात दी, फिर दूसरों को (यानी उनके दुश्मनों को) डुबो दिया। बेशक इस वाक़िए में (अल्लाह का ज़बरदस्त) निशान (मोजज़ा) है और उनके अक्सर ईमान नहीं लाते और इक़रार नहीं करते और बेशक तेरा रब ही (सब पर) ग़ालिब, रहमत वाला है।'* (अश-शुअरा 65 : 67)

फ़िरऔन, फ़िरऔन की क़ौम और क़ियामत का अ़ज़ाब

फ़िरऔन और हज़रत मूसा ﷺ का यह वाक़िया हक़ व बातिल के मारके में एक शानदार मारका है—एक ओर ग़ुरूर व घमंड, जब्र व ज़ुल्म, तो दूसरी ओर मज़्लूमियत, ख़ुदापरस्ती और सब्र व इस्तिक़ामत की फ़त्ह व कामरानी का अजीब व ग़रीब मुरक़्क़ा। इसलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔन और फ़िरऔन की क़ौम को दुनिया की हलाकत के बाद इबरत व बसीरत के लिए इस तरफ़ भी तवज्जोह दिलाई है कि इस क़िस्म के लोगों के लिए आख़िरत में किस क़दर सख़्त अ़ज़ाब और फिटकार के कैसे इबतरनाक सामान मुहैया हैं—

तर्जुमा– *'और उलट पड़ा फ़िरऔन वालों पर बुरी तरह का अ़ज़ाब वह आग है कि दिखला देते हैं उनको सुबह व शाम और जिस दिन क़ायम होगी*

क़ियामत, हुक्म होगा दाख़िल करो फ़िरऔन वालों को सख़्त से सख़्त अ़ज़ाब में।' (अल-मोमिन : 45 : 46)

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और बनी इसराईल समुद्र पार करने के बाद

बनी इसराईल की पहली मांग—

हज़रत मूसा और बनी इसराईल ने सलामती के साथ लाल सागर पार करने के बाद शोर बयाबान से होते हुए सीना की राह ली। सीना के मूर्ति-घरों में बुत के पुजारी, बुतों की पूजा में लगे हुए थे। बनी इसराईल ने यह मंज़र देखा तो कहने लगे, मूसा! हमको भी ऐसे माबूद बना दे, ताकि हम भी इसी की तरह इनकी पूजा करें। हज़रत मूसा ने क़ौम की ज़ुबानी यह शिर्क भरी मांग सुनी, तो बहुत ज़्यादा नाराज़ हुए और बनी इसराईल को डांटा और इतनी शर्म दिलाई और मलामत की कि बदबख़्तो! एक अल्लाह की पूजा छोड़कर बुतों की पूजा की तरफ़ झुकाव है और अल्लाह की उन तमाम नेमतों को भूल बैठे जिन्हें अपनी आंखों से देख चुके हो।

बनी इसराईल पर अल्लाह के इनाम और खुली निशानियां

चश्मों का जारी होना

बनी इसराईल अब सीना की घाटी में थे, यहां बहुत तेज़ गर्मी पड़ती है। दूर-दूर तक हरियाली और पानी का पता नहीं। बनी इसराईल हज़रत मूसा से फ़रियाद करने लगे, तब हज़रत मूसा ने अल्लाह के दरबार में इल्तिजा की और अल्लाह की वह्य ने उनको हुक्म दिया कि अपना डंडा ज़मीन पर मारो। हज़रत मूसा ने इर्शाद की तामील की तो फ़ौरन बारह सोते उबल पड़े और बनी इसराईल के बारह क़बीलों के लिए अलग-अलग चश्मे जारी हो गए।

मन्न व सलवा

पानी के इस तरह जुटाए जाने के बाद बनी इसराईल ने भूख की

शिकायत की। हज़रत मूसा ने फिर रब्बुल आलमीन से दुआ की। हज़रत मूसा की दुआ क़ुबूल हुई और ऐसा हुआ कि जब रात बीत गई और सुबह हुई तो बनी इसराईल ने देखा कि ज़मीन और पेड़ों पर जगह-जगह सफ़ेद ओले के दाने की तरह ओस की शक्ल में आसमान से कोई चीज़ बरस कर गिरी हुई है। खाया, तो बहुत मीठे हलवे की तरह थी। यह 'मन्न' था और दिन में तेज़ हवा चली और थोड़ी देर में बटेरों के झुंड के झुंड ज़मीन पर उतरे और फैल गए। बनी इसराईल उनको भूनकर खाने लगे, यह 'सलवा' था।

बादलों का साया

अब बनी इसराईल ने गर्मी की तेज़ी और साएदार पेड़ों और मकानों की राहत मयस्सर न होने की शिकायत की, तो फिर हज़रत मूसा ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की, जो क़ुबूल हुई और आसमान पर बादलों के परे के परे बनी इसराईल पर साया फ़गन हो गए और बनी इसराईल जहां भी जाते, बादल साया फ़गन रहते।

बनी इसराईल की नाशुक्री

अल्लाह की इन मेहरबानियों और बख़्शिशों का बनी इसराईल शुक्र तो क्या अदा करते, एक दिन जमा होकर कहने लगे, 'मूसा! हम रोज़-रोज़ एक ही खाना खाते रहने से घबरा गए हैं, हमको को इस 'मन्न व सलवा' की ज़रूरत नहीं है। अपने अल्लाह से दुआ कर कि वह हमारे लिए ज़मीन से बाक़ला, खीरा, ककड़ी, मसूर, लहसुन, प्याज़ जैसी चीज़ें उगाए ताकि हम ख़ूब खाएं। जवाब में हज़रत मूसा عليه السلام ने कहा–

तर्जुमा–*'क्या तुम बेहतर और उम्दा चीज़ के बदले में घटिया चीज़ की ख़्वाहिश करते हो, किसी शहर में जा क़ियाम करो, बेशक वहां यह सब कुछ मिल जाएगा, जिसके तुम तलबगार हो।'* **(अल-बक़रः 61)**

तूर पर एतिकाफ़

हज़रत मूसा से अल्लाह का वायदा था कि जब बनी इसराईल ग़ुलामी

से आज़ाद हो जाएंगे, तुमको 'शरीअ़त' दी जाएगी। अब हज़रत मूसा अल्लाह की वह्य के इशारे तूर पर पहुंचे और वहां अल्लाह की इबादत के लिए एतिकाफ़ किया।

तर्जुमा–*'और हमने मूसा से तीस रातों का वायदा किया था, फिर दस रातें बढ़ाकर उसे पूरा (चिल्ला) कर दिया। इस तरह परवरदिगार के हुज़ूर आने की मुक़र्रर की हुई मीयाद यानी चालीस रातों की मीयाद पूरी हो गई।'*

(अल-आराफ़ 142)

जब हज़रत मूसा तूर पर चिल्लाकशी के लिए तशरीफ़ ले गए तो–

तर्जुमा–*और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, तू मेरे पीछे मेरी क़ौम में नायब रहना और उनकी इस्लाह का ख़्याल करना और फ़साद पैदा करने वाले की राह पर न चलना।* (अल-आराफ़ 142)

तजल्ली-ए-ज़ात

जब चिल्ला पूरा हो गया तो अल्लाह ने हज़रत मूसा को हम कलामी का शरफ़ बख़्शा, तो वह पुकार उठे–

तर्जुमा–*'परवरदिगार! मुझे अपना जमाल दिखा कि तेरी तरफ़ नज़र कर सकूं। हुक्म हुआ, तू मुझे नहीं देख सकेगा, मगर हां, इस पहाड़ की तरफ़ देख! अगर यह (तजल्ली-ए-हक़ की ताब ले आया और) अपनी जगह टिका रहा, तो मुझे देख सकेगा, फिर जब उसके परवरदिगार ने तजल्ली की तो उस तजल्ली ने पहाड़ रेज़ा-रेज़ा कर दिया और मूसा ग़श खाकर गिर पड़ा। जब मूसा होश में आया, तो बोला, 'अल्लाह! तेरे लिए हर तरह की तक़्दीस हो। मैं तेरे हुज़ूर तौबा करता हूं और सबसे पहले यक़ीन करने वालों में हूं।'*

(अल-आराफ़ 143)

तौरात का उतरना

इस राज़ व नियाज़ के बाद मूसा को तौरात अ़ता की गई।

तर्जुमा–*'और हमने उसके लिए तौरात की तख़्तियों पर हर क़िस्म की नसीहत और (अह्काम में से) हर चीज़ की तफ़्सील लिख दी है, पस इसको क़ूवत के साथ पकड़ और अपनी क़ौम को हुक्म कर कि वे उनको अच्छी तरह*

अख़्तियार करें।' (अल-आराफ़ 145)

बहरहाल हज़रत मूसा को (तख़्तियों की शक्ल में) तौरात अ़ता हुई और साथ-साथ यह भी बता दिया गया कि हमारा 'क़ानून' यह है कि जब कोई क़ौम हिदायत पहुंचने और उसकी सच्चाई पर दलील और रोशन हुज्जत आ जाने के बावजूद भी समझ से काम नहीं लेती और गुमराही और बाप-दादा की बुरी रस्म पर ही क़ायम रहती है और उस पर इसरार करती है, तो फिर हम भी उसको उस गुमराही में छोड़ देते हैं और हमारे हक़ के पैग़ाम में उनके लिए कोई हिस्सा बाक़ी नहीं रहता, इसलिए कि उन्होंने हक़ क़ुबूल करने की इस्तेदाद अपनी सरकशी के बदौलत बर्बाद कर दी।

बनी इसराईल की गौशालापरस्ती

इसी बीच एक और अ़जीब व ग़रीब वाक़िया पेश आया, वह यह कि कोहे तूर पर एतिकाफ़ में फैलाव से फ़ायदा उठाकर एक आदमी सामरी [सामरी के बारे में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने वज़ाहत की है कि वह बनी इसराईल में से न था, बल्कि वह सुमैरी क़ौम का आदमी था और सामरी उसका नाम नहीं है, बल्कि उसकी क़ौमियत की तरफ़ इशारा है (Sumarian) ने जो ज़ाहिर में मुसलमान था, बनी इसराईल से कहा कि अगर तुम वह तमाम ज़ेवर मेरे पास ले आओ जो तुमने मिस्रियों से उधार लिए थे और फिर वापस न कर सके, तो मैं तुम्हारे फ़ायदे की एक बात कर दूं। बनी इसराईल ने तमाम ज़ेवर सामरी के हवाले कर दिए। उसने उनको गलाकर बछड़े का जिस्म तैयार किया और फिर अपने पास से एक मुट्ठी मिट्टी उसके लिए डाल दी। इस तर्कीब से उसमें ज़िंदगी के निशान पैदा हो गए और उससे बछड़े की आवाज़ 'भाएं-भाएं' आने लगी। अब सामरी ने बनी इसराईल से कहा कि मूसा से ग़लती हो गई, तुम्हारा माबूद तो यह है। सामरी की इस तर्ग़ीब से बनी इसराईल ने उसकी पूजा शुरू कर दी।

हज़रत हारून ने यह देखा तो बनी इसराईल को समझाया कि ऐसा न करो। यह तो गुमराही का रास्ता है, मगर उन्होंने हारून की बात मानने से इंकार कर दिया और कहने लगे कि जब तक मूसा न आ जाएं, हम इससे बाज़

आने वाले नहीं।

यहां जब यह नौबत पहुंची तो अल्लाह तआ़ला की मस्लहत का तक़ाज़ा हुआ कि हज़रत मूसा ﷺ को इस वाक़िए की इत्तिला दे दे, इसलिए हज़रत मूसा से पूछा, मूसा! तुमने क़ौम को छोड़कर यहां आने में इतनी जल्दी क्यों की? हज़रत मूसा ﷺ ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! इसलिए कि तेरे पास जल्द हाज़िर होकर क़ौम के लिए हिदायत हासिल करूं?' अल्लाह तआ़ला ने उस वक़्त उनको बताया कि जिसकी हिदायत के लिए तुम इस क़दर बेचैन हो, वह इस गुमराही में मुब्तला है। हज़रत मूसा ने यह सुना तो उनको सख़्त रंज हुआ। और ग़ुस्से और नदामत के साथ क़ौम की तरफ़ वापस हुए और क़ौम से मुख़ातब होकर फ़रमाया : तुमने यह क्या किया? मुझसे ऐसी कौन-सी देर हो गई थी जो तुमने यह आफ़त खड़ी कर दी।' यह फ़रमाते जाते थे और ग़ैज़ व ग़ज़ब से कांप रहे थे, यहां तक कि हाथ की लौहें (तख़्तियां) भी गिर गईं।

बनी इसराईल ने कहा: हमारा तो कोई क़ुसूर नहीं। मिस्रियों के ज़ेवरों का जो बोझ हम साथ लिए फिर रहे थे, वह सामरी ने हमसे मांग कर यह स्वांग बना लिया और हमको गुमराह कर दिया।

'शिर्क' नुबूवत के मंसब के लिए एक बर्दाश्त न करने के क़ाबिल चीज़ है, इसलिए और फिर इसलिए भी कि हज़रत मूसा बहुत गर्म मिज़ाज थे। उन्होंने अपने भाई हारून की गरदन पकड़ ली और दाढ़ी की तरफ़ हाथ बढ़ाया तो हज़रत हारून ने फ़रमाया, 'ब्रादर! मेरी मुतलक़ ख़ता नहीं है। मैंने उन्हें हर पहलू से समझाया, मगर उन्होंने किसी तरह नहीं माना और कहने लगे कि जब तक मूसा न आ जाएं, हम तेरी बात सुनने वाले नहीं, बल्कि उन्होंने मुझको कमज़ोर पाकर मेरे क़त्ल का इरादा कर लिया था। जब मैंने यह हालत देखी तो ख़्याल किया कि अगर इनसे लड़ाई की जाए और पूरे ईमान वालों और उनके दर्मियान लड़ाई छिड़ जाए तो कहीं मुझ पर यह इलज़ाम न लगाया जाए कि मेरे पीछे क़ौम में फूट डाल दी, इसलिए मैं ख़ामोशी के साथ तेरे इंतिज़ार में रहा। प्यारे भाई! तू मेरे सर के बाल न नोच और न दाढ़ी पर हाथ चला और इस तरह दूसरों को हंसने का मौक़ा न दे।'

हारून की यह माक़ूल दलील सुनकर हज़रत मूसा का ग़ुस्सा उनकी तरफ़

से ठंडा हो गया और अब सामरी की तरफ़ मुख़ातब होकर फ़रमाया—

'सामरी! तूने यह क्या स्वांग बनाया है?

सामरी ने जवाब दिया कि मैंने ऐसी बात देखी जो इन इसराईलियों में से किसी ने नहीं देखी थी, यानी फ़िरऔन के डूबने के वक़्त जिब्रील घोड़े पर सवार इसराईलियों और फ़िरऔनियों के दर्मियान रोक बने हुए थे। मैंने देखा कि उनके घोड़े की सुम की ख़ाक में ज़िंदगी का असर पैदा हो जाता है और सूखी ज़मीन पर सब्ज़ा उग आता है, तो मैंने जिब्रील के घोड़े के क़दमों की ख़ाक से एक मुट्ठी भर ली और उस ख़ाक को इस बछड़े में डाल दिया और उसमें ज़िंदगी की निशानियां पैदा हो गईं और यह 'भां-भां' करने लगा।

हज़रत मूसा ﷺ ने फ़रमाया—

अच्छा, अब दुनिया में तेरे लिए यह सज़ा तज्वीज़ की गई है कि तू पागलों की तरह मारा-मारा फिरे और जब कोई इंसान तेरे क़रीब आए तो उससे भागते हुए यह कहे कि देखना, मुझको हाथ न लगाना, यह तो दुनिया वाला अ़ज़ाब है और क़ियामत में ऐसे नाफ़रमानों और गुमराहों के लिए जो अ़ज़ाब मुक़र्रर है, वह तेरे लिए अल्लाह के वायदे की शक्ल में पूरा होने वाला है।

ऐ सामरी! यह भी देख कि तूने जिस गौशाला को माबूद बनाया था और उसकी समाधि लगाकर बैठा था, हम अभी उसको आग में डालकर ख़ाक किए देते हैं और इस ख़ाक को दरिया में फेंके देते हैं कि तुझको और तेरे इन बेवक़ूफ़ मुक़्तदियों को मालूम हो जाए कि तुम्हारे माबूद की क़द्र व क़ीमत और ताक़त व क़ूवत का यह हाल है कि वह दूसरों पर इनायत व करम तो क्या करता, ख़ुद अपनी ज़ात को हलाकत व तबाही से न बचा सका।

बनी इसराईल को माफ़ी

ग़ुस्सा कम होने पर हज़रत मूसा ﷺ ने तौरात की तख़्तियों को उठा लिया और अल्लाह की तरफ़ रुजू किया कि अब बनी इसराईल की इस बेदीनी और इर्तिदाद की सज़ा अल्लाह के नज़दीक क्या है? जवाब मिला कि जिन लोगों ने यह शिर्क किया, उनको अपनी जान से हाथ धो लेना पड़ेगा।

नसई में रिवायत है कि हज़रत मूसा ने बनी इसराईल से कहा कि तुम्हारी तौबा की सिर्फ़ एक शक्ल मुक़र्रर की गई है कि मुज्रिमों को अपनी जान को इस तरह ख़त्म कराना चाहिए कि जो आदमी रिश्ते में जिससे सबसे ज़्यादा क़रीब है, वह अपने अ़ज़ीज़ को अपने हाथ से क़त्ल करे यानी बाप बेटे को और बेटा बाप को और भाई भाई को, आख़िरकार बनी इसराईल को इस हुक्म के आगे सर झुका देना पड़ा। काफ़ी तायदाद में बनी इसराईल क़त्ल हुए, जब नौबत यहां तक पहुंची तो हज़रत मूसा अल्लाह के दरबार में सज्दे में गिर पड़े और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! अब इन पर रहम फ़रमा कर इनकी ख़ताओं को बख़्श दे। हज़रत मूसा ﷺ की दुआ क़ुबूल हुई और अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हमने क़ातिल व मक़्तूल दोनों को बख़्श दिया और जो ज़िंदा और क़ुसूरवार हैं, उनकी भी ख़ता माफ़ कर दी। तुम उनको समझा दो कि आगे शिर्क के क़रीब भी न जाएं।

सत्तर सरदारों का इंतिख़ाब

जब बनी इसराईल का यह जुर्म माफ़ कर दिया गया तो अब हज़रत मूसा ने उनसे फ़रमाया कि मेरे पास जो ये 'अलवाह' (तख़्तियां) हैं, यह किताब है, जो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी हिदायत और दीनी व दुन्यवी ज़िंदगी की फ़लाह के लिए मुझको अ़ता फ़रमाई है, यह तौरात है। अब तुम्हारा फ़र्ज़ है कि इस पर ईमान ले आओ और इसके हुक्मों को पूरा करो।

बनी इसराईल बहरहाल बनी इसराईल थे, कहने लगे, मूसा! हम कैसे यक़ीन करें कि यह अल्लाह की किताब है? सिर्फ़ तेरे कहने से तो हम नहीं मानेंगे, हम तो जब उस पर ईमान लाएंगे कि अल्लाह को बे-परदा अपनी आंखों से देख लें और वह हमसे यह कहे कि यह तौरात मेरी किताब है, तुम इस पर ईमान लाओ।

हज़रत मूसा ने उनको समझाया, यह बेवक़ूफ़ी का सवाल है, इन आंखों से अल्लाह को किसने देखा है जो तुम देखोगे? यह नहीं हो सकता, मगर बनी इसराईल का इसरार बराबर क़ायम रहा।

हज़रत मूसा ﷺ ने जब यह देखा तो कुछ सोचकर इर्शाद फ़रमाया कि

यह तो नामुम्किन है कि तुम लाखों की तायदाद में मेरे साथ हुरैब (तूर) पर इसकी तस्दीक़ के लिए जाओ, मुनासिब यह है कि तुममें से कुछ सरदार चुनकर साथ लिए जाता हूं, वे अगर वापस आकर तस्दीक़ कर दें तो फिर तुम भी तस्लीम कर लेना और चूंकि अभी गौशाला परस्ती करके एक बहुत बड़ा गुनाह कर चुके हो, इसलिए नदामत के इज़्हार के लिए और अल्लाह से आगे नेकी के अह्द के लिए भी यह मौक़ा मुनासिब है। क़ौम इस पर राज़ी हो गई और हज़रत मूसा ने तमाम अस्बात से सत्तर सरदारों को चुन लिया और तूर पर जा पहुंचे। तूर पर एक सफ़ेद बादल की तरह 'नूर' ने हज़रत मूसा को घेर लिया और अल्लाह से हमकलामी शुरू हो गई। हज़रत मूसा ﷺ ने अल्लाह के दरबार में अर्ज़ किया कि तू बनी इसराईल के हालात का दाना व बीना है, मैं उनकी ज़िद पर सत्तर आदमी इंतिख़ाब कर लाया हूं, क्या अच्छा हो कि वे भी इस 'हिजाबे' नूर से मेरी और तेरी हमकलामी को सुन ले और क़ौम के पास जाकर तस्दीक़ करने के क़ाबिल हो जाए? अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा की दुआ़ मंज़ूर फ़रमा ली और उनको 'हिजाबे नूर' में लिया गया और उन्होंने हज़रत मूसा और अल्लाह रब्बुल आलमीन की हमकलामी (आपस की बात-चीत) को सुना।

सरदारों की हठधर्मी, अ़ज़ाबे इलाही और नई ज़िंदगी

लेकिन जब नूर का परदा हट गया और हज़रत मूसा और उन सरदारों के दर्मियान आमना-सामना हुआ तो सरदारों ने वही अपना पहला इसरार क़ायम रखा कि जब तक बे-परदा अल्लाह को न देख लें, हम ईमान लाने वाले नहीं।

इस बेवक़ूफ़ी के इसरार और ज़िद पर अल्लाह की ग़ैरत ने उनको यह सज़ा दी कि एक हैबतनाक चमक, कड़क और ज़लज़ले ने उनको आ लिया और जला कर ख़ाक कर दिया। हज़रत मूसा ने जब यह देखा तो अल्लाह के दरबार में आजिज़ी के साथ दुआ़ मांगी, इलाही! ये बेवक़ूफ़ अगर बेवक़ूफ़ी कर बैठे तो क्या तू हम सब को हलाक कर देगा। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से तू इनको माफ़ कर दे। अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा की दुआ़ को सुना और

उन सबको दुबारा ताज़ा ज़िंदगी बख़्शी और फिर जब वे ज़िंदगी का लिबास पहन रहे थे तो एक दूसरे की ताज़ा ज़िंदगी को आंखों से देख रहे थे।

तर्जुमा– *'और जब तुमने कहा: ऐ मूसा! हम तुझ पर उस वक़्त तक ईमान नहीं लाएंगे जब तक अल्लाह को बे-परदा अपनी आंखों से न देख लें, पस आंखों देखते तुम को बिजली की कड़क ने आ पकड़ा फिर हमने तुम को मौत के बाद ज़िंदा किया ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो।'* (अल-बक़र: 55)

बनी इसराईल का फिर इंकार और तूर पहाड़ का सरों पर बुलन्द होना

बहरहाल जब ये सत्तर सरदार दोबारा ज़िंदगी पाकर क़ौम की तरफ़ वापस हुए तो उन्होंने क़ौम से तमाम क़िस्सा कह सुनाया और बताया कि मूसा जो कुछ कहते हैं वह हक़ है और बेशक वे अल्लाह के भेजे हुए हैं।

अब सलीम फ़ितरत का तक़ाज़ा तो यह था कि ये सब अल्लाह तआ़ला का शुक्र बजा लाते और उसके ज़्यादा-से-ज़्यादा फ़ज़्ल व करम को देखते हुए फ़रमांबरदारी और उबूदयित के साथ उसके सामने सर झुका देते, मगर हुआ यह कि उन्होंने अपनी टेढ़ को बाक़ी रखा और अपने नुमाइन्दों की तस्दीक़ के बावजूद तौरात के क़ुबूल करने में ठुकराने और क़ुबूल न करने का रवैया अपना लिया और हज़रत मूसा के इर्शाद पर कान न धरा।

जब हज़रत मूसा ने यह देखा तो ख़ुदा के दरबार में रुजू करते हुए क़ौम की बेराहरवी की शिकायत की। ख़ुदा के दरबार से हुक्म हुआ कि इन नाफ़रमानों के लिए मैं तुझको एक हुज्जत (मोजज़ा) और अ़ता करता हूं और वह यह कि जिस पहाड़ (तूर) पर तू मुझसे हमकलाम हुआ है और जिस पर तेरी क़ौम के चुने हुए सरदारों ने हक़ का मुशाहदा किया है, उसी पहाड़ को हुक्म देता हूं कि वह अपनी जगह से हरकत करे और साइबान की तरह बनी इसराईल के सरों पर छा जाए और जुबाने हाल से यह सवाल करे कि मूसा अल्लाह का सच्चा पैग़म्बर है और तौरात बेशक अल्लाह की सच्ची किताब है और अगर ये दोनों हक़ व सदाक़त का मज़हर न होते तो, यह शानदार 'निशान' तुम न देखते, जिसका ज़ाहिर होना अल्लाह की क़ुदरत के सिवा और किसी तरह भी नामुम्किन है।

चुनांचे ज्योंही अल्लाह का यह फ़ैसला हुआ, तूर उनके सरों पर सायबान की तरह नज़र आने लगा और ज़ुबाने हाल से कहने लगा कि ऐ बनी इसराईल! अगर तुममें अक़्ल और होश बाक़ी है और हक़ व बातिल की पहचान मौजूद है तो कान खोल कर सुनो कि मैं अल्लाह का निशान बनकर तुमको यक़ीन दिलाता हूं और गवाही देता हूं कि मूसा ने कई बार मेरी पीठ पर बैठ कर अल्लाह तआ़ला के साथ बात करने का शरफ़ हासिल किया है और तुम्हारी रुश्द व हिदायत का क़ानून (तौरात) भी उसको मेरी पीठ ही पर अ़ता हुआ है और ऐ ग़फ़लत व सरकशी में मस्त लोगो! मेरी यह हैबत (रौब व दबदबा), जो तुम्हारे लिए हैरान करने वाली बन रही है, इस बात की गवाही है कि जब इंसान के सीने में दिल की नर्मी सख़्ती से बदल जाती है, तो फिर वह पत्थर का टुकड़ा, बल्कि इससे भी ज़्यादा सख़्त बन जाता है और रुश्द व हिदायत उसमें किसी ओर से दाख़िल नहीं हो पाती। देखो, मैं पत्थर के टुकड़ों का मज्मूआ़ 'पहाड़' हूं, लेकिन अल्लाह के हुक्म के सामने किस तरह बन्दगी ज़ाहिर कर रहा हूं, मगर तुम हो कि अना (मैं) और ख़ुदी के घमंड में किसी हालत में भी 'नहीं' को 'हां' से बदल देने को तैयार नहीं, सच है—

तर्जुमा—*'फिर तुम्हारे दिल सख़्त हो गए, सो वे हो गए जैसे पत्थर या उनसे भी सख़्त।'* (अल-बक़रः 74)

बनी इसराईल ने जब यह 'निशान' देखा तो अब उसे वक़्ती ख़ौफ़ व दहशत का फल समझिए या खुली आंखों अल्लाह के शानदार 'निशान' के मुशाहदे का नतीजा, यक़ीन कीजिए कि बनी इसराईल तौरात की तरफ़ मुतवज्जह हुए और हज़रत मूसा के सामने उसके अह्काम की तामील का इक़रार किया, तब अल्लाह का फ़रमान हुआ कि ऐ बनी इसराईल! हमने जो तुझे दिया है, उसको मज़बूती के साथ लो और जो अह्काम इस (तौरात) में दर्ज हैं उनकी तामील करो, ताकि तुम परहेज़गार और मुत्तक़ी बन सको।

मगर अफ़सोस कि बनी इसराईल का यह अह्दे मीसाक़ हंगामी साबित हुआ और ज़्यादा दिनों तक वे उस पर क़ायम न रह सके और आदत के मुताबिक़ फिर ख़िलाफ़वर्ज़ी शुरू कर दी। क़ुरआन मजीद ने इन वाक़ियों को बहुत ही थोड़े में, मगर साफ़ और खुले लफ़्ज़ों में इस तरह बयान किया है।

तर्जुमा—*'और जब हमने तुमसे अह्द लिया और तुम्हारे सर पर तूर को*

ऊंचा किया (और कहा) जो हमने तुमको दिया है, उसको ताक़त से पकड़ो और जो कुछ उसमें है, उसको याद करो, ताकि परहेज़गार बनो। फिर इस के बाद तुमने (इस तौरात से) पीठ फेर ली, पस अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो बेशक तुम नुक़्सान उठाने वालों में हो जाते।'

(अल-बक़रः 63 : 64)

तर्जुमा–*'और जब हमने उनके (बनी इसराईल के) सरों पर पहाड़ बुलन्द कर दिया, गोया कि वह सायबान है और उन्होंने यक़ीन कर लिया कि वह उन पर गिरने वाला है, (तो हमने कहा) जो हमने तुमको दिया है, उसको ताक़त से लो और जो कुछ उसमें है, उसको याद करो, ताकि तुम परहेज़गार बनो।*

(अल-आराफ़ 170)

इन आयतों में साफ़ किया गया है कि बनी इसराईल ने जब तौरात के क़ुबूल करने में आनाकानी की, बल्कि इंकार कर दिया तो अल्लाह तआ़ला ने उनके सरों पर तूर को बुलन्द कर दिया और इस तरह अल्लाह की निशानी ज़ाहिर करके उनको तौरात क़ुबूल करने पर तैयार किया।

अर्ज़े मुक़द्दस का वायदा और बनी इसराईल

नोट–(अर्ज़े मुक़द्दस से वह इलाक़ा मुराद है जो पहले कनआ़न कहलाया, फिर फ़लस्तीन)

सीना के जिस मैदान में, उस वक़्त बनी इसराईल मौजूद थे, वह सरज़मीन फ़लस्तीन से क़रीब थी और उनके बाप-दादा हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्हाक़, और हज़रत याक़ूब से अल्लाह का वायदा था कि तुम्हारी औलाद को फिर उस सरज़मीन का मालिक बनाएंगे और वह वहां फूले-फलेगी। इसलिए हज़रत मूसा की मारफ़त अल्लाह का हुक्म हुआ कि अपनी क़ौम से कहो कि अ़र्ज़े मुक़द्दस में दाख़िल हों और वहां के ज़ालिम व जाबिर हुक्मरानों को निकाल कर अ़दल व इंसाफ़ की ज़िंदगी बसर करें। हम वायदा करते हैं कि फ़त्ह तुम्हारी होगी और तुम्हारे ज़ालिम दुश्मन नाकाम होंगे। हज़रत मूसा ने इससे पहले कि बनी इसराईल को अर्ज़े मुक़द्दस में दाख़िल होने के लिए आमादा करें, बारह आदमियों को तफ़्तीशे हाल के लिए भेजा। वह फ़लस्तीन के क़रीबी शहर अरीहा (Jericho) में दाख़िल हुए और तमाम हालात को ग़ौर

से देखा, जब वापस आए तो हज़रत मूसा को बताया कि बहुत जसीम और तन व तोश के ज़बरदस्त हैं और बहुत क़वी हैकल हैं।

हज़रत मूसा ने फ़रमाया कि जिस तरह तुमने मुझसे उनके बारे में कहा है, क़ौम के सामने न कहना इसलिए कि एक लम्बे अ़र्से की ग़ुलामी ने उनके हौसले पस्त कर दिए हैं और उनकी शुजाअ़त, ख़ुददारी और ऊंची हिम्मत की जगह बुज़दिली, ज़िल्लत और पस्त हिम्मती ने ले ली है, मगर आख़िर ये भी उसी क़ौम के लोग थे, न माने और ख़ामोशी के साथ क़ौम के सामने दुश्मन की ताक़त का ख़ूब बढ़ा-चढ़ा कर ज़िक्र किया, अलबत्ता सिर्फ़ दो आदमी यूशेअ़ बिन नून और कालिब बिन यफ़ना ने हज़रत मूसा के हुक्म की पूरी-पूरी तामील की और उन्होंने बनी इसराईल से ऐसी कोई बात नहीं कही कि जिससे उनकी हिम्मत टूटे।

अब हज़रत मूसा ने बनी इसराईल से कहा कि तुम इस बस्ती (अरीहा) में दाख़िल हो और दुश्मन का मुक़ाबला करके उस पर क़ाबिज़ हो जाओ, अल्लाह तुम्हारे साथ है।

तर्जुमा– *'और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ क़ौम! तुम पर जो अल्लाह का एहसान रहा है, उसको याद करो कि उसने तुममें नबी और पैग़म्बर बनाए और तुमको बादशाह और हुक्मरां बनाया और वह कुछ दिया जो जहानों में किसी को नहीं दिया। ऐ क़ौम! उस मुक़द्दस सरज़मीन में दाख़िल हो जिसको अल्लाह तआ़ला ने तुम पर फ़र्ज़ कर दिया है और पीठ फेरकर न लौटो (कि नतीजा यह निकले) कि तुम घाटा और नुक़्सान उठाने वाले बनकर लौटो।*

(अल-माइदा 20-21)

बनी इसराईल की नाफ़रमानी और उसका नतीजा

बनी इसराईल ने यह सुनकर जवाब दिया कि, 'मूसा! वहां तो बड़े ज़ालिम लोग रहते हैं। हम तो उस वक़्त तक उस बस्ती में दाख़िल न होंगे जब तक वे वहां से निकल नं जाएं।

अफ़सोस बदबख़्तों ने यह न सोचा कि जब तक हिम्मत व बहादुरी के साथ तुम उनको वहां से न निकालोगे, तो वे ज़ालिम ख़ुद कैसे निकल जाएंगे?

यूशेअ़ और कालिब ने जब यह देखा तो क़ौम को हिम्मत दिलाई और कहा, शहर के फाटक से गुज़र जाओ, कुछ मुश्किल नहीं, चलो और उनका

मुक़ाबला करो। हमको पूरा यक़ीन है कि तुम ही ग़ालिब रहोगे।

तर्जुमा–*'इन डरने वालों में से दो ऐसे आदमियों ने जिन पर अल्लाह ने अपना फ़ज़्ल और इनाम किया कि तुम इन जाबिरों पर दरवाज़े की तरफ़ से दाख़िल हो जाओ। बस जिस वक़्त तुम दाख़िल हो जाओगे, तुम बेशक ग़ालिब रहोगे और (यह भी कहा) कि अल्लाह ही पर भरोसा रखो, अगर तुम ईमान लाए हो।'*

(अल-माइदा : 23)

लेकिन बनी इसराईल पर इस बात का कुछ भी असर न हुआ और वे पहले की तरह अपने इंकार पर क़ायम रहे और जब हज़रत मूसा ने ज़्यादा ज़ोर दिया तो अपने इंकार पर इसरार करते हुए कहने लगे–

तर्जुमा–*'उन्होंने कहा, ऐ मूसा! हम कभी इस शहर में उस वक़्त तक दाख़िल नहीं होंगे, जब तक वे उसमें मौजूद हैं। पस तू और तेरा रब दोनों जाओ और उनसे लड़ो, हम तो यहीं बैठे हैं। (यानी तमाशा देखेंगे)*

(अल-माइदा 24)

हज़रत मूसा ﷺ ने जब यह ज़लील और बेहूदा बात सुनी तो बहुत दुखी हुए और इंतिहाई रंज व मलाल के साथ अल्लाह के हुज़ूर अर्ज़ किया, 'ऐ अल्लाह! मैं अपने और हारून के सिवा किसी पर क़ाबू नहीं रखता, सो हम दोनों हाज़िर हैं। अब तू हमारे और इस नाफ़रमान क़ौम के दर्मियान जुदाई कर दे, ये तो सख़्त ना अह्ल हैं।'

अल्लाह ने हज़रत मूसा पर वह्य नाज़िल फ़रमाई, 'मूसा! तुम ग़मगीन न हो, इनकी नाफ़रमानी का तुम पर कोई बोझ नहीं। अब हमने इनके लिए यह सज़ा मुक़र्रर कर दी है कि ये चालीस साल इसी मैदान में भटकते फिरेंगे और इनको अर्ज़े मुक़द्दस में जाना नसीब न होगा। हमने उन पर अर्ज़े मुक़द्दस को हराम कर दिया है।'

तर्जुमा–(अल्लाह तआ़ला ने) *कहा: 'बेशक उन पर अर्ज़े मुक़द्दस का दाख़िला चालीस साल तक हराम कर दिया गया। इस मुद्दत में ये इसी मैदान में भटकते रहेंगे। बस तू नाफ़रमान क़ौम पर ग़म न खा और अफ़सोस न कर।'*

(5 : 26)

(सीना घाटी को 'तीह' इसलिए कहते हैं कि क़ुरआन ने बनी इसराईल के लिए कहा है कि *'यतीहू-न फ़िलअर्ज़'* (ये उसमें भटकते फिरेंगे) जब कोई आदमी रास्ते से भटक जाए तो अरबी में कहते हैं 'ता-ह फ़्लां'

Maktab-e-Ashraf

इस सूरतेहाल के बाद हज़रत मूसा और हज़रत हारून को भी उसी मैदान में रहना पड़ा और वे भी अर्ज़े मुक़द्दस में दाख़िल न हो सके, क्योंकि ज़रूरी था कि बनी इसराईल की रुश्द व हिदायत के लिए अल्लाह का पैग़म्बर उनमें मौजूद रहे।

हज़रत हारून की वफ़ात

ऊपर लिखे हालात में जब बनी इसराईल 'तीह' के मैदान में फिरते-फिराते पहाड़ की उस चोटी के क़रीब पहुंचे, जो 'हूर' के नाम से मशहूर थी, तो हज़रत हारून को मौत का पैग़ाम आ पहुंचा। वह और हज़रत मूसा ﷺ अल्लाह के हुक्म से 'हूर' पर चढ़ गए और वहीं कुछ दिनों अल्लाह की इबादत में लगे रहे और जब हज़रत हारून का वहां इंतिक़ाल हो गया तो हज़रत मूसा ﷺ उनको कफ़नाने-दफ़नाने के बाद नीचे उतरे और बनी इसराईल को हारून ﷺ की वफ़ात से मुत्तला किया।

हज़रत मूसा ﷺ की वफ़ात

हज़रत मूसा ﷺ से रिवायत की गई एक हदीस के मुताबिक़ जब हज़रत मूसा की वफ़ात का वक़्त क़रीब आ गया, तो मौत का फ़रिश्ता उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। फ़रिश्ते से कुछ बात-चीत के बाद हज़रत मूसा ﷺ ने अल्लाह तआ़ला से अर्ज़ किया कि अगर लम्बी से लम्बी ज़िंदगी का आख़िरी नतीजा मौत ही है, तो फिर वह चीज़ आज ही क्यों न आ जाए और दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! इस आख़िरी वक़्त में अर्ज़े मुक़द्दस से क़रीब कर दे। हज़रत मूसा की दुआ़ के मुताबिक़ उनकी क़ब्र अरीहा[1] की बस्ती में कसीबे अह्मर (लाल टीला) पर वाक़े है, जिसका ज़िक्र एक हदीस में भी आया है। वाज़ेह रहे कि 'तीह' मैदान के सबसे क़रीब वादी मुक़द्दस का इलाक़ा अरीहा की बस्ती है, गोया अल्लाह पाक ने उनकी आख़िरी दुआ़ को भी शरफ़े क़ुबूलियत बख़्शा।

---

1. अरीहा को रीहू भी कहा गया है और आजकल Dericeo भी कहा जाता है। यह जगह जॉर्डन नदी के पच्छिम में युरूशलम से कुछ मील के फ़ासले पर है और यहां एक क़ब्र 'वनी मूसा' के नाम से मशहूर है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की नुबूवत के ज़माने से मुताल्लिक़ दूसरे वाक़िए

गाय के ज़िब्ह का वाक़िया

एक बार ऐसा हुआ कि बनी इसराईल में एक क़त्ल हो गया, मगर क़ातिल का पता न चला। आख़िर शुबहा ने तोहमत की शक्ल अख़्तियार कर ली और आपसी इख़्तिलाफ़ की ख़ौफ़नाक शक्ल पैदा हो गई। हज़रत मूसा ने अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू किया और अर्ज़ किया इस वाक़िए ने क़ौम में सख़्त इख़्तिलाफ़ रूनुमा कर दिया। तू ख़ुद जानने वाला और हिक्मत वाला है, मेरी मदद फ़रमा।

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि इनसे कहो, पहले एक गाय ज़िब्ह करें और इसके बाद गाय के एक हिस्से को मक़्तूल के जिस्म से मस करें। अगर वे ऐसा करेंगे तो हम उसको ज़िंदगी बख़्श देंगे और यह मामला साफ़ हो जाएगा। हज़रत मूसा ने बनी इसराईल से जब 'गाय के ज़िब्ह' करने के बारे में फ़रमाया तो उन्होंने अपनी टेढ़ी बातों और बहानेबाज़ियों की आदत के मुताबिक़ बहस शुरू कर दी और कहने लगे, मूसा! तू हमसे मज़ाक़ करता है? यानी मक़्तूल के वाक़िए से गाय ज़िब्ह करने के वाक़िए से क्या ताल्लुक़? अच्छा, अगर यह वाक़ई अल्लाह का हुक्म है तो यह गाय कैसी हो? उसका रंग कैसा हो? इसकी कुछ और तफ़्सीली बातें मालूम होनी चाहिए।

हज़रत मूसा ने जब अल्लाह की वह्य की मारफ़त उनके तमाम सवाला के जवाब दे दिए और बहानेबाज़ी का उनके लिए कोई मौक़ा न रहा, तब वे हुक्म की तामील पर तैयार हुए और अल्लाह की वह्य के मुताबिक़ मामला पूरा किया। अल्लाह तआ़ला के हुक्म से वह मक़्तूल ज़िंदा हो गया और उसने तमाम वाक़िए, जैसे कि वे थे, बयान कर दिए। और इस तरह न सिर्फ़ यह कि क़ातिल का पता चल गया, बल्कि क़ातिल को भी इक़रार के बग़ैर चारा

न रहा और आपस के इख़्तिलाफ़ दूर हो गए और इन मामलों का अच्छे ढंग से ख़ात्मा हुआ।

कुरआन ने इस वाक़िए से मुताल्लिक़ सिर्फ़ इसी क़दर बतलाया है और बेशक यह वाक़िया अल्लाह की उन मुसलसल निशानियों में से एक निशानी थी जो यहूदियों की सख़्त, तेज़ तबियत व आदत के मुक़ाबले में हक़ की ताईद के लिए अल्लाह की हिक्मत के पेशेनज़र ज़ुहूर में आयी।

हज़रत मूसा और क़ारून

बनी इसराईल में एक बहुत बड़ा धनवान आदमी था। कुरआन ने उसका नाम क़ारून बताया है। उसके ख़ज़ाने ज़र व जवाहर से भरे हुए थे और बेइंतिहा मज़बूत मज़दूरों की जमाअ़त मुश्किल ही से उसके ख़ज़ाने की कुंजियां उठा सकती थी। इस ख़ुशहाली और सरमायादारी ने उसको बेहद मग़रूर (घमंडी) बना दिया था। क़ारून दौलत के नशे में इस क़दर चूर था कि अपने अज़ीज़ों, रिश्तेदारों और क़ौम के लोगों को हक़ीर और ज़लील समझता और उनसे हक़ारत के साथ पेश आता था।

हज़रत मूसा और उनकी क़ौम ने एक बार उसको नसीहत की कि अल्लाह तआ़ला ने तुझको बेपनाह दौलत और पूंजी दे रखी है और इ़ज़्ज़त और हश्मत अ़ता फ़रमाई है, इसलिए उसका शुक्र अदा कर और माली हक़ 'ज़कात व सदक़ात' देकर ग़रीबों, फ़क़ीरों और मिस्कीनों की मदद कर, 'अल्लाह को भूल जाना और उसके हुक्मों की ख़िलाफ़वर्ज़ी करना' अख़्लाक़ व शराफ़त दोनों लिहाज़ से सख़्त नाशुक्री और सरकशी है। उसकी दी हुई इ़ज़्ज़त का बदला यह नहीं होना चाहिए कि तू कमज़ोरों और बूढ़ों को हक़ीर व ज़लील समझने लगे और घमंड और नख़वत में चूर होकर ग़रीबों और अज़ीज़ों के साथ नफ़रत से पेश आए।

क़ारून के अपने बड़े होने के जज़्बे को हज़रत मूसा की यह नसीहत पसन्द न आई और उसने ग़ुरूर भरे अन्दाज़ में कहा—मूसा! मेरी यह दौलत व सरवत तेरे ख़ुदा की दी हुई नहीं है, यह तो मेरे अ़क़्ली तजुर्बों और इल्मी काविशों का नतीजा है। मैं तेरी नसीहत को मानकर अपनी दौलत को इस